कृष्णदास संस्कृत सीरीज २१३

आचार्यवररुचिप्रणीतः

# प्राकृत-प्रकाशः

पदच्छेद, पदार्थ, सूत्रानुवाद, 'मनोरमा' वृत्त्युपेतः,
'शशिप्रभा' हिन्दी-व्याख्या, परिशिष्टः समन्वितश्च

सम्पादक
डॉ. जमुना पाठक

व्याख्याकार
डॉ. कृष्णदत्त मिश्र

चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

कृष्णदास संस्कृत सीरीज

२१३

***

आचार्यवररुचिप्रणीतः

# प्राकृत-प्रकाशः

पदच्छेद, पदार्थ, सूत्रानुवाद, 'मनोरमा'वृत्त्युपेतः,
'शशिप्रभा' हिन्दी-व्याख्या, परिशिष्टः समन्वितश्च

सम्पादक

**डॉ० जमुना पाठक**

एम. ए., पी-एच्. डी. (संस्कृत)

संस्कृत-विभाग, कला-सङ्काय

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

वाराणसी

व्याख्याकार

**डॉ. कृष्णदत्त मिश्र**

एम. ए., पी-एच्. डी. (संस्कृत)

रीडर, संस्कृत-विभाग

महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ

वाराणसी



चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

**प्रकाशक** : चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी
**मुद्रक** : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी
**संस्करण** : प्रथम, वि. सं. २०६४, सन् २००७

**ISBN** : 81-218-0230-X



के० ३७/११८, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० ११२८, वाराणसी–२२१००१ (भारत)
फोन : (०५४२) २३३३४५८ P.P. & २३३५०२०

*अपरं च प्राप्तिस्थानम्*

**चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस**

के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन
गोलघर (मैदागिन) के पास
पो० बा० नं० १००८, वाराणसी—२२१००१ (भारत)
फोन : (आफिस) (०५४२) २३३३४५८
(आवास) (०५४२) २३३५०२०, २३३४०३२
Fax : 0542 - 2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
web-site : www.chowkhambaseries.com

KRISHNADAS SANSKRIT SERIES
213

***

# PRĀKṚTA PRAKĀŚA

OF

## Ācārya Vararuci

With 'Manoramā' Sanskrit, 'Śaśiprabhā' Hindi Commentaries

By
**Dr. Jamuna Pathak**
M. A., Ph. D. (Sanskrit)
Department of Sanskrit, Faculty of Arts
Banaras Hindu University, Varanasi

Translated By
**Dr. Krishnadutta Mishra**
M. A., Ph. D. (Sanskrit)
Reader, Department of Sanskrit
Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, Varanasi

**CHOWKHAMBA KRISHNADAS ACADEMY**
VARANASI

**Publisher** : Chowkhamba Krishnadas Academy, Varanasi
**Printer** : Chowkhamba Press, Varanasi

**ISBN :** 81-218-0230-X


Oriental Publishers & Distributors
K. 37/118, Gopal Mandir Lane
Post Box No. 1118, Varanasi- 221001
( INDIA )
Phone : (0542) 2333458 P.P. & 2335020

*Also can be had from :*
**CHOWKHAMBA SANSKRIT SERIES OFFICE**
Publishers and Oriental and Foreign Book-sellers
K . 37/99, Gopal Mandir Lane
At the North Gate of Gopal Mandir
Near Golghar ( Maidagin )
Post Box No. 1008, Varanasi- 221001 ( India )
Phone { Office : (0542) 2333458
Resi. : (0542) 2334032, 2335020
Fax : 0542-2333458
e-mail : cssoffice@satyam.net.in
web-site : www.chowkhambaseries.com

# सम्पादकीय

मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषाओं को तीन भागों में विभक्त किया जाता है— प्राचीनप्राकृत, मध्यकालीनप्राकृत और परकालीनप्राकृत। प्राचीनप्राकृत में ई०पू० तृतीय शताब्दी से ई०पू० प्रथम शताब्दी तक के शिलालेखों, पालि में लिखित बौद्धग्रन्थों की भाषा और अश्वघोष के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृतभाषा का समावेश किया जाता है। मध्यकालीनप्राकृत को साहित्यिकप्राकृत भी कहा जाता है। इस काल में प्राकृत का विकसित साहित्यिकरूप प्राप्त होता है। इस काल की प्राकृतभाषा में क्षेत्र के अनुसार भेद भी हो गया था जिसमें मागधी, अवन्तिका, प्राच्या, शौरसेनी, अर्धमागधी, बाह्लीका और महाराष्ट्री प्राकृत प्रमुख है। परकालीनप्राकृत के अन्तर्गत अपभ्रंश का समाहार होता है। इसके नागर, उपनागर और व्राचड-ये तीन भेद किये जाते हैं।

प्राकृतभाषा के सभी प्राचीन वैयाकरणों ने प्राकृतभाषा का उद्गम संस्कृत से माना है। संस्कृतभाषा को ही आधार मानकर उन्होंने ध्वनिभेद इत्यादि का विवेचन किया है। प्रकृति का अर्थ है—मूलभाषा = संस्कृत। उसी प्रकृति से निष्पन्न होने के कारण इसे प्राकृत कहा जाता है। कतिपय विद्वानों के अनुसार प्राकृत प्राचीनकाल में प्रचलित जनभाषा थी—'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्'। उनके अनुसार प्राकृत ही मूल भाषा थी। इसी प्राकृत का संस्कारित रूप संस्कृत भाषा है। कतिपय विद्वानों के मत में दोनों भाषाएँ स्वतन्त्र हैं। वस्तुतः संस्कृत से ही प्राकृत का उद्भव हुआ है। ई०पू० तक संस्कृत भाषा ही जनभाषा रही है। इसके दो रूप थे—साहित्यिक और जनभाषा। साहित्यिक भाषा में परिवर्तन बहुत कम होते हैं किन्तु लोकभाषा वाली संस्कृत में स्वाभाविक रूप से परिवर्तन होता रहा। इसमें ध्वनिभेद, शब्दभेद आदि प्रचुर मात्रा में होते रहे। इसीलिए पतञ्जलि ने कहा है—'यर्वाणस्तर्वाणो नाम ऋषयो बभूव'। यद्वा नः, तद्वा नः के स्थान पर यर्वाणः, तर्वाणः, कहने के कारण इन ऋषियों का नाम यर्वाण और तर्वाण हो गया। यज्ञादि में ऐसा अशुद्ध प्रयोग नहीं होता था। इस प्रकार स्पष्ट है कि संस्कृत बोलचाल के रूप में परिवर्तित होकर प्राकृतों के रूप में प्रख्यात हुई।

भाषा की उत्पत्ति के पश्चात् जब साहित्य के रूप में कविजन उसे प्रयोग में लाने लगते हैं तब उसको नियमित करने के लिए भाषाशास्त्री वैयाकरण तत्सम्बन्धी व्याकरण की रचना करते हैं। प्राकृत ने भी जब साहित्य के क्षेत्र में अपना प्रभुत्व स्थापित किया तब उस भाषा को वैयाकरणों ने अपने व्याकरण ग्रन्थों से नियमित किया। प्राकृतभाषा के व्याकरण के क्षेत्र में तीन महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय व्याकरण ग्रन्थ हैं—वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश, हेमचन्द्रकृत शब्दानुशासन और मार्कण्डेयकृत प्राकृत-सर्वस्व।

वररुचिकृत प्राकृतप्रकाश प्राकृतभाषा का सर्वाङ्गिण और सुपुष्ट व्याकरण है जो सूत्ररूप में उपनिबद्ध है। ये वररुचि कात्यायन नाम से भी प्रसिद्ध हैं; जो वार्त्तिककार कात्यायन से भिन्न और तैत्तिरीयप्रातिशाख्य के भाष्यकार भी हैं। इनका समय ५वीं शताब्दी माना जाता है। इनका व्याकरण प्राकृतभाषा के व्याकरणों में सर्वप्राचीन है। इनका व्याकरण १२ परिच्छेदों में विभक्त है। जिसके पूर्ववर्ती ९ अध्यायों में महाराष्ट्री प्राकृत से सम्बन्धित नियम है। दशम अध्याय में सौरसेनी के आधार पर पैशाची, एकादश अध्याय में सौरसेनी के आधार पर मागधी और द्वादश अध्याय में संस्कृत के आधार पर सौरसेनी की विशिष्टताओं का विवेचन हुआ है। इस प्रकार प्राकृत के व्याकरण के क्षेत्र इसकी महनीयता स्वत: सिद्ध है। इसकी प्रसिद्धि इस ग्रन्थ उपलब्ध इसकी व्याख्या पर सम्पत्ति से स्पष्ट हो जाती है।

सूत्र-ग्रन्थों के सम्यग्बोध के लिए उनके भाष्यों की उपयोगिता सर्वविदित है। भाष्यों के अभाव में उनका ज्ञान श्रमसाध्य, दुरूह और कठिन हो जाता है। प्राकृतप्रकाश की चार टीकाएँ उपलब्ध हैं जो आचार्य बलदेव उपाध्याय के सम्पादकत्व में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित हैं। इन टीकाओं में भामहकृत मनोरमा सर्वप्राचीन, प्राकृतप्रकाश को समझने के लिए पूर्णत: उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है। इसी टीका के साथ इस संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

सम्प्रति प्राकृतग्रन्थों के अवबोध के लिए प्राकृत के साथ-साथ उसकी हिन्दी का होना आवश्यक है। यद्यपि सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से प्रकाशित संस्करण में हिन्दी है; किन्तु परिशिष्ट के रूप में होने के कारण अध्येता को प्राकृतप्रकाश के सूत्र अन्यत्र, भाष्य अन्यत्र और हिन्दी अन्यत्र होने से कठिनायी होती है। हिन्दी के साथ प्राकृत-प्रकाश का एक संस्करण चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी से भी प्रकाशित है किन्तु उसमें सूत्रशब्दानुसारी हिन्दी तथा भाष्य में उदाहृत लक्ष्यों की सिद्धि न होने के कारण पाठकों की जिज्ञासा पूर्णरूप से शान्त नहीं हो पाती। इन्हीं अल्पताओं की सम्पूर्ति हेतु डॉ० कृष्णदत्त मिश्र, रीडर, संस्कृत विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी ने यह संस्करण तैयार किया गया है। इस संस्करण में सूत्रों को पदों को अलग-अलग करके उनका हिन्दी शब्दार्थ के साथ-साथ सूत्रों का अनुवाद दिया है जिससे जिज्ञासु सूत्र में प्रयुक्त पदों और सूत्रों की हिन्दी समझ सकता है। इसके अतिरिक्त व्याख्या में सूत्रों के भाव को स्पष्ट करते हुए मनोरमा में उदाहृत लक्ष्य पदों तथा उस प्रकार के अन्य पदों की भी सिद्धि देकर संस्करण को अतिशय उपयोगी बना दिया है जिससे जिज्ञासुओं को सूत्रों का भाव समझने में तथा शब्दों की सिद्धि में सरलता होगी—ऐसा मेरा विश्वास है।

**—सम्पादक**

# भूमिकास्थविषयानुक्रमणी



# विषयानुक्रमणी

# भूमिका

'व्याक्रियन्ते शब्दाऽनेनेति व्याक़रणम्' के अनुसार शब्दों की व्युत्पत्ति बतलाने वाले शास्त्र को व्याकरण कहा जाता है। शब्दों की व्युत्पत्ति के ज्ञान के बिना शब्दार्थ-निर्धारण में भी कठिनाई होती है। किसी भी भाषा के सम्यग् ज्ञान के लिए उस भाषा के व्याकरण का ज्ञान अपरिहार्य है। यहीं कारण है कि तत्तद्भाषाशास्त्रियों ने तत्तद्भाषा को नियमित करने के लिए उस भाषा-विशेष के व्याकरण की रचना किया है, जिससे अध्येताओं को उस भाषा का सम्यग् ज्ञान हो सके। प्राकृतभाषा भी भारत की साहित्यिक संवर्धना के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान रखती है अत: इस भाषा के वैयाकरणों ने भी इसके सम्यगवबोध के लिए व्याकरणों की रचना किया है।

प्राचीन काल में भारत में संस्कृत भाषा का ही साम्राज्य था। अनेक शताब्दियों तक वह देश की लोकभाषा रहीं है। कालान्तर में वह शिष्ट लोगों की भाषा के रूप में विद्यमान रहकर अनेक शताब्दियों तक विद्वानों की भाषा के रूप में विद्यमान थी। जब संस्कृत लोकव्यवहार से सङ्कुचित होकर केवल शिष्टजनों तक सीमित हो गयी तब उसका स्थान प्राकृत ने ग्रहण किया और लोकव्यवहार में प्रचलित हो गयी। यह भाषा लगभग दो सहस्राब्दियों–ई०पू० ५०० से १५०० ईस्वी तक मोटे तौर पर विभिन्न रूपों में सर्वोपरि बनी रही। उस कालक्रम में संस्कृत से अन्य जितनी भी भाषाएँ लोकव्यवहार और साहित्य में प्रयुक्त होती थीं, उन सभी को समवेत रूप से प्राकृत नाम से अभिहित किया जाता है। कालक्रमानुसार प्राकृत को तीन भागों में विभक्त किया जाता है—**(१) प्रारम्भिक प्राकृत**—इसके अन्तर्गत बौद्ध–त्रिपिटकों की भाषा पालि, जैन–अङ्गों की भाषा आर्षप्राकृत अथवा अर्धमागधी और अशोक की धर्मलिपियों में प्रयोग की गयी शिलालेखी भाषा मुख्य रूप से समाहित की जाती है। **(२) मध्यकालीन प्राकृत**—इसके अन्तर्गत संस्कृत नाटकों में तथा प्राकृत-महाकाव्यों–सेतुबन्ध, गउडवहो आदि में तथा कर्पूरमञ्जरी आदि सट्टकों में प्रयुक्त महाराष्ट्री, सौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिका पैशाची तथा इनकी विभिन्न विभाषाओं का समाहार किया जाता है। **(३) उत्तरकालीन प्राकृत**—इसके अन्तर्गत नागर, ब्राचड, सूरसेन आदि में विख्यात अपभ्रंश भाषाओं का समाहार होता है। वस्तुत: मध्यकालीन प्राक़ृत ही विशुद्ध रूप से साहित्य में प्रवृत्ति हुई है, अत: कुछ लोग उसी को प्राकृत-भाषा के रूप में अभिहित करते हैं। वस्तुत: प्राकृतभाषा के व्याकरण-ग्रन्थ उसी मध्यकालिक प्राकृत को दृष्टि में रखकर लिखे गये हैं।

**प्राकृत की व्युत्पत्ति और उद्भव-स्रोत**—प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति और उद्भव स्रोत के सन्दर्भ में आचार्यों में दो मत है। कतिपय आचार्य प्राकृत-भाषा से संस्कृत-भाषा का उद्भव मानते हैं और कतिपय संस्कृत-भाषा को प्राकृत का उद्गमस्रोत मानते हैं।

**प्रथम मत**—'प्राक्कृतम् प्राकृतम्' के आधार का कतिपय आचार्या प्राचीनकाल में कृत भाषा को प्राकृत कहते हैं जो बालक, महिला आदि संस्कार-विहीन लोगों द्वारा बाली जाती थी और बाद में व्याकरण के नियमों द्वारा संस्कारित करके संस्कृत के रूप में परिवर्तित की गयी। वस्तुतः इस मत के समर्थक जैनधर्मावलम्बी आचार्य हैं। जिस प्रकार बौद्ध धर्मावलम्बी अपनी धर्मभाषा पालि को मूलभाषा के रूप में स्वीकारते हैं उसी प्रकार जैनधर्म के अनुयायी अपनी धर्मभाषा प्राकृत को सभी भारतीय भाषाओं का स्रोत मानते हैं। जैनयति नेमिसाधु के अनुसार जिस प्रकार मेघ द्वारा बरसाया गया जल एकाकार और एक समान स्वरूप वाला होते हुए भी स्थल-विशेष और संस्कार-विशेष के कारण विशेषरूप को धारण कर लेता है उसी प्रकार प्राकृत भी संस्कार विशेष (व्याकरण से नियामित होने) के कारण संस्कृत के रूप में परिवर्तित हुई है। गडडवहो के रचयिता वाक्यपतिराज के अनुसार भी प्राकृत ही सभी भाषाओं का उद्गम स्थल है। उनका कथन है कि जिस प्रकार समुद्र से ही नदियाँ निकलती हैं और उसी में अन्त में विलीन हो जाती हैं उसी प्रकार प्राकृत ही सभी भाषाओं का उद्गम है और अन्त में वहीं समाहित हो जाती हैं—

**समलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ।**
**एंति समुद्दं चिअ णेंति सायराओ च्चिअ जलाइं।।** (गउडवहो)

इन आचार्यों का मत एकदेशीय होने के कारण सर्वमान्य नहीं हैं।

**द्वितीय मत**—प्राकृत भाषा के वैयाकरणों के अनुसार संस्कृत प्राकृतभाषा का स्रोत है। उनके अनुसार 'प्रकृतेः आगतम् प्राकृतम्' अर्थात् प्रकृति = संस्कृत से आयी हुई भाषा को प्राकृत कहा जाता है। विभिन्न वैयाकरणों ने प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार किया है—

१. हेमचन्द्र के अनुसार—**प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्**। अर्थात् संस्कृत भाषा प्रकृति है और उस संस्कृत से उत्पन्न होने के कारण यह प्राकृत है।

२. मारकण्डेय के अनुसार—**प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते तद्भवं तत्समं चेति द्विधा**। अर्थात् संस्कृत प्रकृति है और उस (संस्कृत) से होने वाली (भाषा) प्राकृत कहलाती है; वह तत्सम और तद्भव के रूप में दो प्रकार की होती है।

३. त्रिविक्रमदेव के अनुसार—**प्रकृतेः संस्कृतात्साध्यमानात् सिद्धाच्च यद्भवेत्। प्राकृतस्यास्य लक्ष्यानुरोधिलक्ष्य प्रचक्ष्महे** ॥ अर्थात् प्रकृति = संस्कृत से साध्यमान और सिद्ध होने के कारण जो प्राकृत निष्पन्न है, उस प्राकृत के लक्ष्य को नियमित करने वाले लक्षण को कहा जा रहा है। इस प्रकार संस्कृत को प्राकृत का मूल होना स्पष्ट है। नरसिंह के अनुसार—**प्रकृतेः संस्कृतायाः तुविकृतिः प्राकृती मता**। अर्थात् प्रकृति = संस्कृत की विकारभूता (भाषा) प्राकृत मानी जाती है। इस प्रकार इन आचार्यों के उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि संस्कृत प्रकृति और प्राकृत उसकी विकृति है। प्रकृति होने के कारण संस्कृत से विकृति प्राकृत का उद्गम होना स्पष्ट होता है।

भाषावैज्ञानिकों की दृष्टि में आर्यभाषाओं के विकासक्रम के अन्तर्गत वैदिक भाषा से संस्कृत की उत्पत्ति हुई और उस संस्कृत से प्राकृत का उद्भव हुआ। इसीलिए भाषावैज्ञानिक प्राकृत का अस्तित्व संस्कृत से बाद में मानते हैं। भाषा के विकास का क्रम भी यही है। संस्कारित भाषा को शिष्टजन प्रयोग करते हैं किन्तु अनपढ़ गवार लोग इसी संस्कारित भाषा को तोड़-मरोड़ कर व्यवहार में लाते हैं जिससे भाषा के मूलरूप में परिवर्तन हो जाता है। प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ जन-सामान्य या स्वभाव होता है अर्थात् प्राकृत जन-साधारण की भाषा है। प्राचीन भारतीय आर्यभाषा काल से ही आन्त-र्प्रदेशिक भाषाओं का सम्मिश्रण होता आ रहा है। अत एव वैदिक-भाषा के साथ-साथ जनभाषा का अस्तित्त्व स्वयमेव सिद्ध है। उस जनभाषा को स्वरूप और प्रकृति के आधार पर प्राकृत कहा जा सकता है।

प्राकृत का विकास वैदिक-भाषा से माना जाता है; क्योंकि प्राकृत की प्रकृति वैदिक-भाषा से मिलती-लुलती है। प्राकृत-भाषा में वैदिक-भाषा के शब्दों का प्रयोग प्राप्त होता है। इस विषय में ये तथ्य ध्यातव्य हैं—

(१) वैदिक-भाषा में व्यञ्जनान्त पदों की दो स्थितियों प्राप्त होती है—कहीं उनका अस्तित्व रहता है और कहीं-कहीं उनका लोप हो जाता है। जैसे–उच्चात् के स्थान पर उच्चा और नीचात् के स्थान पर नीचा (तै०सं०-१.२.१४); पश्चात् के स्थान पर पश्चा (अ०सं०-१०.१४.१)। युष्मान् के स्थान पर युष्मा (वा०सं०-१.१३.१) यह प्रवृत्ति प्राकृत में सर्वत्र दिखलायी पड़ती है। प्राकृत में पदान्त व्यञ्जन या तो स्वरयुक्त हो जाता है या लुप्त हो जाता है।

(२) वैदिक-भाषा में अकारान्त शब्दों के तृतीया बहुवचन में भिस् के स्थान पर भिस् और ऐस्, दोनों रूप प्राप्त होते हैं। जैसे–देवेभिः (ऋ०सं०-१.१.१) इत्यादि। प्राकृत में भी यह प्रत्यय दृष्टिगोचर होता है केवल नियमानुसार भकार के स्थान पर हकार हो जाता है—देवेहि।

(३) वैदिक-भाषा में चतुर्थी के लिए षष्ठी का प्रयोग बहुलता से होता है। प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति का पूर्णत: अभाव है।

(४) संस्कृत में पूर्वकालिक क्रिया के लिए त्वा प्रत्यय का ही प्रयोग होता है। उपसर्ग पूर्व में होने पर ल्यप् प्रत्यय प्रयुक्त होता है। इस विषय में प्राकृत-भाषा के पूर्वकालिक प्रत्ययों का वैदिक-भाषा के त्वाय और त्वान प्रत्यय के साथ साम्य है।

वस्तुत: प्राकृत का उद्‌गम क्षेत्र केवल पाणिनि द्वारा संस्कारित संस्कृत-भाषा तक ही सीमित नहीं है प्रत्युत वैदिक-भाषा तक विस्तृत है। संस्कृत से ही प्राकृत का उद्‌गम मानना समीचीन है। उस संस्कृत में वैदिक-संस्कृत और लौकिक-संस्कृत दोनों का समाहार है।

## प्राकृत-भाषा के वैयाकरण

प्राकृत-भाषा का सर्वाधिक प्राचीन विवरण भरतमुनि के नाट्य-शास्त्र में उपलब्ध होता है। प्राकृत जन-भाषा होने से प्रारम्भ में इसका कोई व्याकरण नहीं लिखा गया। वर्तमान में प्राकृत-भाषा के अनुशासन सम्बन्धी जितने व्याकरण ग्रन्थ उपलब्ध होते हैं। वे सभी संस्कृत-भाषा में लिखे गये हैं प्राकृत में नहीं। रचना का शीर्षक भी संस्कृत भाषा में ही है। इसका अर्थ है कि संस्कृत ही उस काल की शास्त्रीय, शिष्ट और शास्त्रीय विचार का माध्यम थी लेकिन कुछ विद्वानों का कथन है कि प्राकृत-भाषा का व्याकरण प्राकृत में लिखा अवश्य गया था, परन्तु वह आज उपलब्ध नहीं है।

ऐसे कुछ वैयाकरणों का नाम प्राप्त हैं जिन्होंने प्राकृत के विषय में लिखा है लेकिन उनके व्याकरण उपलब्ध नहीं है। इनके पश्चात् वे वैयाकरण आते हैं जिनके नाम से ग्रन्थ उपलब्ध हैं इनमें प्रथम नाम चण्ड का है जिनके द्वारा रचित प्राकृत व्याकरण का नाम प्राकृत-लक्षण है।

वे आचार्य जिन्होंने प्रारम्भ में प्राकृत-भाषा के विषय में जानकारी दी है उनमें सर्वप्रथम भरत का नाम आता है। भरत तथा जिन अन्यों ने प्राकृत का संक्षिप्त ज्ञान दिया है उनके नाम एवं कार्य इस प्रकार निम्नलिखित हैं—

**भरतमुनि**—भरतमुनि ने नाट्य-शास्त्र के १८वें अध्याय में प्राकृत-भाषा के सामान्य नियमों का वर्णन किया है जैसे–प्राकृत भाषा के शब्दों का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया गया है—(१) समान शब्द (तत्सम), (२) विभ्रष्ट (या तद्भव शब्द), (३) देशीगत (प्रादेशिक मूल के शब्द)। इस काल में आधुनिक भारतीय भाषाओं की भाँति विदेशी 'शब्द' का उल्लेख नहीं है।

भरत ने 'वर्णपरिवृत्ति' विषयक नियमों का उल्लेख किया है। जिनकी सहायता से प्राकृत शब्द भली-भाँति बोधगम्य हो जाते हैं। विभ्रष्ट का लक्षण भरत ने इस

प्रकार दिया है—

वे वर्णाः संयोगात् स्वरवर्णा न्यत्वन्यूनतां वापि ।
गच्छन्ति पदन्यस्तास्ते विभ्रष्टा इति ज्ञेयाः ॥ (ना०शा०-१७/५)

आशय यह है कि पद में न्यस्त होने पर जो वर्ण (स्वर अथवा व्यञ्जन) अन्यत्व को अथवा न्यूनत्व को प्राप्त करता है उसे 'विभ्रष्ट' कहा जाता है । इसी 'वर्ण विभ्रंश' के दिखलाने के लिए भरत ने स्पष्ट रूप से विभ्रष्ट (प्राकृत) पदों का उदाहरण दिया है । भरत के काल में जो सात प्राकृत भाषाएँ उपलब्ध थीं भरत ने उनके नाम इस प्रकार दिये हैं । तत्पश्चात् नाटकों में पात्रों द्वारा इनके उपयोग के नियम भी बतायें हैं । प्राकृत की मुख्य भाषायें ये हैं—(१) मागधी, (२) आवन्ती (अवन्तिआ, (३) प्राच्या, (४) शौरसेनी (सूरसेनी), (५) अर्धमागधी, (६) बाह्लीका, (७) दाक्षिणात्या (दाक्षिणात्य देशों में महाराष्ट्र प्रदेश का नाम भी है । इसके अतिरिक्त भरत ने नाटक में प्रयुक्त छः 'विभाषाओं' का भी नाम निर्देश तथा उपयोग तथा उपयोग-नियम बतलाया है । जैसे—(१) शाकारी, (२) आभीरी, (३) चाण्डाली, (४) शाबरी, (५) द्राविडी, (६) उद्रजा (ओड्री अथवा पाठ भेद से आन्ध्रजा, आन्ध्री) । इसके भी उपयोग के नियम बताये हैं ।

प्राकृत के अन्य आचार्यों के विषय में 'प्राकृत-कल्पतरु' तथा 'प्राकृत-सर्वस्व' के अध्ययन से प्राकृत के प्राचीन अज्ञात अथवा अल्पज्ञात आचार्यों के मतों का परिचय मिलता है । इससे सिद्ध होता है कि इनके एतद् विषयक कोई ग्रन्थ अवश्य थे जिनमें निम्नलिखित मतों का निर्देश है ।

**(१) अनिरुद्धभट्ट**—मार्कण्डेय के अनुसार 'दाक्षिणात्या' का लक्षण तथा उदाहरण कहीं उपलब्ध नहीं होता । इस प्रसङ्ग में 'अनिरुद्धभट्ट' के दाक्षिणात्या-काव्य का लक्षण इस प्रकार किया गया है (पृ०-१०४)—

दाक्षिणात्यापदालम्बि संस्कृताङ्ग विजृम्भितम् ।
काव्यपीयूषनिष्यन्दि दाक्षिणामितीरितम् ॥

भरत ने ना०शा० १३.३३-३५ में दाक्षिणात्या प्राकृत की परिसीमा बताया है ।

**(२) कपिल**—मार्कण्डेय के मतानुसार 'ग्रह' धातु का सर्वत्र शौरसेनी में 'गेण्ह' रूप में परिवर्तन होता है, परन्तु कपिल के मत में 'क्त', 'क्तवतु' तथा 'तव्य' प्रत्ययों के योग में 'गेण्ह' आदेश नहीं होता (पृ०-९४) फलतः 'गेण्हिदं' के स्थान पर 'गहिदं तथा 'गेण्हिदव्वं' के स्थान पर 'गहिदव्वं' होता है ।

**(३) कोहल**—कोहल का 'मागधी' के नाटकीय उपयोग में इनका मत उल्लिखित है—**राक्षस-भिक्षु-क्षपणकचेटाद्या मागधी प्राहुः इति कोहलः** । सम्भवतः यह वचन इनके किसी नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ से उद्धृत हैं जहाँ भरत के समान इन्होंने भी

प्राकृत-भाषा का विवरण उपन्यस्त किया होगा।

**(४) शाकल्य**—(क) शौरसेनी में 'भू' धातु को 'भो' आदेश होता है (मार्कण्डेय) परन्तु शाकल्य के मत में 'हो' आदेश होता है, जिससे 'होदि' रूप बनता है।

(ख) प्राकृत-कल्पतरु (पृ०-१८) में इनका मत इस प्रकार निर्दिष्ट हैं—

अता सणेहो-वि इता सिणेहो
पक्खे वि णेहो चिह्न होन्ति चिण्हं।
अता सणाणं पि इता सिणाणं
ण्हाणं पि सकल्लमतं वितिण्णं॥

शाकल्य के मत में 'स्नेह' तथा 'स्नान' शब्दों के प्राकृत रूपों के ये प्रकार हैं—

विकर्ष करने पर पूर्व में अकार योग = सिणेहो, सणाणं। विकर्ष के अभाव में = णेहो, ण्हाणं।

**(५) माण्डव्य**—'प्राकृतकल्पतरु' में दो स्थानों पर शाकल्य के साथ 'माण्डव्य' के मत का उल्लेख किया गया है। (क) प्राकृत में स्वार्थ-प्रत्ययों के विधान के अवसर पर इनके मत का निर्देश (पृ०-२४) स्वार्थ में 'ह' प्रत्यय होता है। पुत्र एव = पुत्तहो। (ख) इन दोनों आचार्यों के मत में 'त्त्वा' के स्थान पर 'तु' प्रताय का प्रयोग विहित है (पृ०-२५) तथा 'दट्टूं खणं ने णऊणं फल्लिं' यहाँ 'दट्टूं' का अर्थ है—दृष्ट्वा। यह विशेष प्रयोग इन्हीं आचार्यों के मत में होता है।

**(६) हरिश्चन्द्र**—प्राकृतसर्वस्व के अनुसार (पृ०-११०) संस्कृत तथा शौरसेनी के अन्योन्य मिश्रण को टाक्की कहते हैं। टाक्की विभाषा का एक भेद है। परन्तु हरिश्चन्द्र के मत में टाक्की प्राकृत न होकर अपभ्रंश है और इस अपभ्रंश का प्रयोग विद्वान् लोग नाटक में सर्वदा करते हैं—

हरिश्चन्द्रस्त्विमां भाषामपभ्रंश इतीच्छति।
अपभ्रंशो हि विद्वदभिर्नाटकादौ प्रयुज्यते॥

इस मत का कारण यह प्रतीत है कि टाक्की में प्रथमा में विकल्प से 'उ' प्रत्यय जोड़ा जाता है (उत् स्यात् पदान्ते बहुलम्) और यह वैशिष्ट्य अपभ्रंश भाषा में उपलब्ध होता है। इसलिए हरिश्चन्द्र के पूर्वोक्त मत की सङ्गति है।

प्राकृतभाषा के उन वैयाकरणों के विषय में निम्नलिखित रूप से स्पष्ट किया है जिनके प्राकृत व्याकरण हैं।

## प्राकृत वैयाकरण

इस श्रेणी में वे प्राकृत वैयाकरण हैं जिन्होंने कुछ विशेष प्रकार के प्राकृत के नियम क्रम से तथा सूक्ष्म दृष्टि से परिवर्तन को देखकर दिए हैं तथा प्राकृत-व्याकरण की रचना

की है। इनमें प्रथम चण्ड तथा द्वितीय वररुचि हैं। व्याकरण लेखकों की श्रेणी में वैयाकरणों का कालक्रम सुनिश्चित किया गया है उनके प्राकृत-व्याकरण और प्राकृतेत्तर ग्रन्थों के नाम भी दिए हैं—

**(१) चण्ड**—चण्ड प्राकृत के प्रथम वैयाकरण माने जाते हैं। प्राकृत-व्याकरण के क्षेत्र इनका व्याकरण-ग्रन्थ 'प्राकृत-लक्षण' सर्वप्राचीन है। यह उपलब्ध प्राकृत-व्याकरणों में लङ्केश्वर-रचित प्राकृतकामधेनु को छोड़कर संक्षिप्ततम है जिसमें कुल ९९ या १०३ सूत्र हैं। ग्रन्थ के प्रारम्भ में वीर (महाबीर) तीर्थङ्कर को प्रणाम तथा सूत्र २४ और ४६ में अर्हन्त और ४८ में जिनवर के उल्लेख से प्रतीत होता है कि चण्ड जैन थे। इस ग्रन्थ में सामान्य प्राकृत का विधान किया गया है जो अशोक की धर्मलिपियों की भाषा से उत्तरवर्ती तथा वररुचि द्वारा निरूपित प्राकृतभाषा से पूर्ववर्ती है। इसमें प्रयुक्त भाषा अश्वघोष और भास के नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत से समानता रखती है। इसलिए इनके ग्रन्थ का रचना-काल ईसा की दूसरी तीसरी शताब्दी माना जाता है। इस ग्रन्थ में तीन परिच्छेद हैं जिनमें वर्ण-परिवर्तन, रूपसिद्धि इत्यादि विषयों का संक्षिप्त विवेचन किया गया है। ग्रन्थ के अन्त के चार शूत्रों में अपभ्रंश, पैशाची, मागधिका और शौरसेनी के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित किया गया है। अनेक विद्वानों ने इसमें लक्षित प्राकृत को जैन धर्म-ग्रन्थों की भाषा मानते हैं जो आर्य-प्राकृत नाम से अभिहित की गयी है।

**(२) वररुचि**—इनका विस्तृत परिचय इसी ग्रन्थ की भूमिका में आगे किया जाएगा।

## पौरस्य सम्प्रदाय के व्याकरण

**पुरुषोत्तमदेव**—बंगाल के प्राकृत वैयाकरणों में पुरुषोत्तम देव का स्थान महत्त्व-पूर्ण है। इनके प्राकृत व्याकरण का नाम प्राकृतानुशासन है, जो हस्तलेखों के छिन्न-भिन्नता के कारण अधूरा ही प्राप्त हुआ है। जिस हस्तलेख के आधार पर यह प्रकाशित किया गया है, उसमें ग्रन्थ के आदिम दो अध्याय तथा तृतीय अध्याय का लगभग आधा भाग उपलब्ध नहीं है। पूरा ग्रन्थ बीस अध्यायों में विभक्त है तथा सूत्रबद्ध है। इसके विषय का परिचय अधोलिखित विवरण से मिल सकता है।

तृतीय अध्याय (३२ सूत्र) का विषय युक्त-विधि है। चतुर्थ अध्याय (३७ सूत्र) सन्ध्यादि विधि, पञ्चम अध्याय (८७ सूत्र) सुप्-विधि, षष्ठ अध्याय (४४ सूत्र) तिङ्विधि, सप्तम अध्याय (३२ सूत्र) धात्वादेश, अष्टम अध्याय (१२ सूत्र) निपात-विधि का विवरण उपस्थित करते हैं। अष्टम अध्याय तक महाराष्ट्री भाषा का विवरण है। ग्रन्थकार ने स्वयं इस प्राकृत को महाराष्ट्री नाम्ना उल्लिखित किया है। केवल एक

अध्याय (नवम अध्याय, सूत्र ९६) में शौरसेनी भाषा का विवेचन है। यह विवेचन प्राकृत-प्रकाश की अपेक्षा अधिक पूर्ण तथा पुष्ट है, जिसमें वर्णव्यत्यय के अतिरिक्त सुप्विधि और तिङ्विधि का भी प्रतिपादन विशेषरूप से किया गया है। प्राच्य (१० अध्याय, १४ सूत्र) शौरसीनी की विकृति बतलायी गयी है। अवन्ती (११ अध्याय, १० सूत्र) महाराष्ट्री तथा शौरसेनी की एकता धारण करने वाली कही गयी हैं। इन दोनों की अपेक्षा मागधी का विवरण (१२ अध्याय, ३८ सूत्र) अधिक विस्तृत है। कतिपय वैशिष्ट्यों को छोड़ देने पर मागधी शौरसेनीप्राया होती है। शाकारी (१३ अध्याय, १५ सूत्र) मागधी की विभाषा, चाण्डाली (१४ अध्याय, ९ सूत्र) मागधी की विकृति, शाबरी (१५ अध्याय, ७ सूत्र) मागधीविशेष, संस्कृत और शौरसेनी के मिश्रण से उत्पन्न टाक्की (१६ अध्याय, १० सूत्र) दोनों की विभाषा मानी गयी है। पुरुषोत्तम देव ने किसी हरिश्चन्द्र नामक आचार्य की सम्मति यहाँ दी है (१६ अध्याय, १० सूत्र), जिनके अनुसार टाक्की (टक्कभाषा) अपभ्रंश है, प्राकृत नहीं। इसी मत का उल्लेख मार्कण्डेय कवीन्द्र ने भी प्राकृतसर्वस्व (१६।२) में किया है, जिससे उस युग में हरिश्चन्द्र की प्रचुर प्रख्याति का पता चलता है।

दो अध्याय (१७-१८ अध्याय) अपभ्रंश का विवरण देते हैं। नागर अपभ्रंश वस्तुतः अपभ्रंश के अन्य प्रकारों में प्रधान माना गया है। अतएव उसके महत्त्व के अनुसार १७वें अध्याय में उसका पुष्ट विवरण ९० सूत्रों में दिया गया है। १८वें अध्याय (२३ सूत्र) में व्राचड अपभ्रंश का विवरण मिलता है। अन्तिम दो अध्यायों में पैशाची भाषा का प्रतिपादन है—१९वें अध्याय में कैकेय पैशाचिक का २४ सूत्रों में तथा अन्तिम २०वें अध्याय में शौरसेन पैशाचिक का २० सूत्रों में। इस प्रकार पुरुषोत्तमदेव ने अपने महत्त्वपूर्ण व्याकरण ग्रन्थ में प्राकृत के दोनों रूपों का (भाषा तथा विभाषा) तथा अपभ्रंश का प्रामाणिक प्रतिपादन एकत्र कर भाषाविदों का बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ में केवल सूत्र ही मिलते हैं, उनकी व्याख्या नहीं। यदि अपभ्रंश भाग की सोदाहरण व्याख्या कहीं उपलब्ध होती, तो हम पूर्वाञ्चल के लोककाव्यों की भी अच्छी बानगी पा सकते।

पुरुषोत्तमदेव बंगाल के गण्यमान्य वैयाकरण तथा कोषकार थे। इन्होंने 'त्रिकाण्ड-शेष' और 'हाराबली' जैसे बड़े कोषों का तथा वर्यदेशना, एकाक्षर कोश और द्विरूप कोश जैसे लघुकोशों का निर्माण कर कोशविद्या के अभ्युदय में विशेष योग दिया था। 'भाषावृत्ति' नाम से इन्होंने अष्टाध्यायी के वैदिक सूत्रों को छोड़कर लौकिक सूत्रों की वृत्ति रखी थी। इस ग्रन्थ के टीकाकार सृष्टिधराचार्य के कथनानुसार भाषावृत्ति का निर्माण राजा लक्ष्मणसेन (११७०-१२०० ई०) के आदेश से किया गया था; परन्तु कोशों की रचना उससे पूर्व ही की गयी थी। सर्वानन्द ने अमरकोश की अपनी व्याख्या

(टीकासर्वस्व, रचनाकाल ११५९ ई०) में पुरुषोत्तमदेव के पूर्वोक्त कोशों का बहुल निर्देश किया है। पुरुषोत्तम सर्वानन्द के ज्येष्ठ समसामयिक लेखक प्रतीत होते हैं। अत एव उनका आविर्भावकाल १२वीं शती के मध्य भाग में मानना सर्वथा उचित सिद्ध होता है (११२५ ई० से लेकर ११८० ई० तक)। इसी युग में उन्होंने प्राकृतभाषा का यह महनीय व्याकरण लिखकर इस साहित्य को समृद्ध बनाया।

**लङ्केश्वर या रावण**—लङ्केश्वर रावण रचित 'प्राकृतकामधेनुका' नामक ग्रन्थ ३४ सूत्रों वाला नितान्त लघुकाय है—ग्रन्थ के आरम्भ में लेखक ने अपना उद्देश्य प्रकट किया है। इन्होंने कोई विस्तृत ग्रन्थ प्राकृत-व्याकरण के विषय में लिखा था। अल्प ज्ञान वालों के लिए इसका यह संक्षेप है—

विस्तराद् गदितं पूर्वं सङ्क्षेपाद् अधुनोच्यते।
बालबोधकरं सूत्रं दध्नो यादृङ् नवोद्धतम्॥

इसमें प्राकृत के तद्भव शब्दों की विशेष व्याख्या है। इसके बहुत से सूत्र अस्पष्ट और दुरुह हैं। ११वाँ सूत्र (उ पदान्ते अकारस्य च) 'अ' के स्थान पर 'उ' का परिवर्तन बतलाकर अपभ्रंश की ओर सङ्केत किया गया है। इसकी रचना के काल का पता नहीं चलता। नवें सूत्र की व्याख्या में लेखक ने 'भाषा या होइ सा होइ उत्तिविसेसो कत्वो' को उद्धृत किया है, जो राजशेखर की कर्पूरमञ्जरी की प्रख्यात उक्ति है। फलतः इनका समय १०वीं शती के अनन्तर कभी भी हो सकता है परन्तु कब? इसका यथार्थ उत्तर देना कठिन है।

**रामतर्कवागीश भट्टाचार्य**—पौरस्य प्राकृत सम्प्रदाय का सर्वाधिक विषय प्रस्तुत करने वाला 'प्राकृतकल्पतरु' नामक ग्रन्थ है। ग्रन्थ की पुष्पिका के अनुसार इसके रचयिता का नाम 'रामतर्कवागीश भट्टाचार्य' है। ग्रन्थ के विस्तार तथा प्रौढ़ता का परिचय इसके वर्ण्य-विषयों के अनुशीलन से सम्यग्रूपेण प्राप्त होता है। प्राकृतकल्पतरु में तीन शाखाएँ हैं, प्रत्येक शाखा के अवान्तर भाग 'स्तबक' नाम्ना अभिहित हैं और प्रत्येक स्तबक के अन्तर्गत 'कुसुम' हैं। पूरा ग्रन्थ पद्यबद्ध है और ये पद्य की 'कुसुम' नाम्ना निर्दिष्ट किये गये हैं। समग्र विषयों का विवेचन इस प्रकार है—

**प्रथम शाखा** (महाराष्ट्री का विवरण)

| **स्तबक** | **विषय** | **कुसुम-संख्या** |
|---|---|---|
| १ | अच्-विधान | ४२ |
| २ | हल्-विधान | १६ |
| ३ | युक्त-विधान | १९ |
| ४ | द्वित्व-विधान | ४ |

| | | |
|---|---|---|
| ५ | सन्धि-विधान | २७ |
| ६ | सुबन्त-विधान | ३५ |
| ७ | तिङन्त-विधान | १५ |
| ८ | धात्वादेश-विधान | ४२ |
| ९ | निपात-विधान | १० |
| | **योग—** | **१९२** |

**द्वितीय शाखा**

| **स्तबक** | **विषय** | **कुसुम-संख्या** |
|---|---|---|
| १ | शौरसेनी-विधान | ३८ |
| २ | प्राच्यादि-विधान (प्राच्या, आवन्ती, वाह्लीकी, मागधी, अर्धमागधी, दाक्षिणात्या—भाषाओं का विधान) | ३२ |
| ३ | विभाषा-विधान (शाकारिकी, चाण्डालिका, शाबरी, आभीरिका, टाक्की—विभाषाओं का विधान) | ३१ |
| | **योग—** | **१०१** |

**तृतीय शाखा**

| **स्तबक** | **विषय** | **कुसुम-संख्या** |
|---|---|---|
| १ | नागरापभ्रंश-विधान | ३१ |
| २ | व्राचड-अपभ्रंश-विधान | १३ |
| ३ | पैशाचिक-विधान | १५ |
| | **योग—** | **५९** |

इस विषय-निर्देश में ग्रन्थ की पुष्पिका से विरोध पड़ रहा है। रामशर्मा के अनुसार समग्र ग्रन्थ में ३५७ कुसुमों की सत्ता है, जबकि पूर्वोक्त गणना के अनुसार यह संख्या केवल ३५२ ही सिद्ध होती है। द्वितीय विप्रतिपत्ति यह है कि ग्रन्थकार के अनुसार प्रथम शाखा में दश स्तबक होने चाहिए, जबकि मूल में केलव ९ ही स्तबक उपलब्ध हैं। भूमिका (पृ० १५) बतलाती है कि इस ग्रन्थ में 'स्वरूपनिरूपण' नामक स्तबक था, जो आज अधूरा ही उपलब्ध हो रहा है। इसके १४ कुसुमों (पद्यों) में से केवल साढ़े

पाँच पद्य ही उपलब्ध होते हैं। प्राकृत-भाषा के स्वरूप का वर्णनपरक यह स्तबक ग्रन्थ के आदि में प्रथम स्तबक होना चाहिए। इस प्रकार प्रथम शाखा के स्तबकों की संख्या इस स्वरूपनिरूपणपरक स्तबक के जोड़ने पर ग्रन्थ-निर्दिष्ट संख्या तक पहुँच जाती है; परन्तु पद्यों की संख्या में विप्रतिपत्ति बनी ही रहती है। उपलब्ध ३५२ कुसुमों में आदिम स्तबक के १४ कुसुमों को जोड़ देने पर कुसुमों की संख्या ३५२ + १४ = ३६६ पहुँच जाती है। फलतः इस विप्रतिपत्ति के निराकरण के लिए नवीन हस्तलेखों की उपलब्धि की अपेक्षा है। तब तक पुष्पिका में निर्दिष्ट 'सप्तपञ्चाशत्-त्रिशती' का उल्लेख प्रमाण-विरहित ही माना जाएगा।

श्रीराम शर्मा ने स्वरूपनिरूपण वाले स्तबक में लङ्केश्वर-विरचित प्राकृत-व्याकरण को अपने ग्रन्थ के लिए आधारभूत माना है। उनका कथन है कि लङ्केश्वर-भाषित प्राकृत भाषाओं में कौतूलहशाली जिज्ञासुओं के प्रमोद के निमित्त उनकी यह कृति पदार्थ का विवेचन करने वाली है—

**एतासु लङ्केश्वरभाषितासु भाषासु कौतूहलशानिनी ये।**
**तेषां प्रमोदाय कृतिर्ममैषा सेत्वादिकाव्यानि पदार्थकारी॥**

इससे प्रतीत होता है कि लङ्केश्वर-रचित कोई प्राकृत का विवरण उपलब्ध था जिसकी ओर इस पद्य में सङ्केत है। इधर लङ्केश्वर-विरचित 'प्राकृतकामधेनु' नामक ग्रन्थ उपलब्ध हुआ है और प्रकाश में भी आया है; परन्तु यह इतना लघुकाय है कि श्रीराम-शर्मा के बृहत्काय 'कल्पतरु' का आधार यह ग्रन्थ कथमपि नहीं हो सकता। इसमें केवल ३४ सूत्र हैं जिनमें एक ही प्राकृत का और तीस पर अव्यवस्थित ढङ्ग से, सामान्य विवरण मिलता है। इस कामधेनु को कल्पतरु का आधार-ग्रन्थ कथमपि माना नहीं सकता। श्रीरामशर्मा ने 'शकल्य' और 'माण्डव्य' नामक प्राचीन परन्तु विस्मृतप्राय आचार्यों का उल्लेख किया है; परन्तु लङ्केश्वर के मत का उल्लेख ग्रन्थ के भीतर कहीं नहीं है।

पुरुषोत्तम देव के 'प्राकृतानुशासन' का प्रभाव 'प्राकृतकल्पतरु' पर विशेष रूप से दृष्टिगोचर होता है। श्रीरामशर्मा ने अपने ग्रन्थ में प्राकृत-भाषाओं के क्रम का व्यवस्थापन 'प्राकृतानुशासन' के ढङ्ग से ही किया है। अन्तर केवल इतना ही है कि उन्होंने सूत्रों को कारिका के रूप में निबद्ध करने का प्रयत्न किया है। कहीं अनावश्यक होने से सूत्रों का वर्जन कर दिया है; परन्तु साम्य का अतिशय 'प्राकृतकल्पतरु' को 'प्राकृतानुशासन' का आधार सिद्ध कर रहा है।

'प्राकृतकल्पतरु' के रचनाकाल का निर्देश ग्रन्थकार ने कहीं नहीं किया; परन्तु उस काल का निर्णय अनुमानतः किया जा सकता है। श्रीरामशर्मा के ग्रन्थ पर 'प्राकृतानुशासन'

के अत्यधिक प्रभाव का उल्लेख ऊपर किया गया है। फलतः उनका समय १२वीं शती के मध्यकाल से परवर्ती होना चाहिए। डॉ० ग्रियर्सन की कल्पना निराधार नहीं कही जा सकती कि मार्कण्डेय कवीन्द्र श्रीरामशर्मा के विवरणों के ऋणी हैं। मार्कण्डेय कवीन्द्र का समय १७वीं शती का उत्तरार्ध है। फलतः कल्पतरु का समय १२वीं के मध्यकाल में कभी होना चाहिए। सामान्यतः इस ग्रन्थ को १५वीं शती की रचना मानना इतिहास-विरुद्ध नहीं होगा।

प्राकृत के व्याकरण साहित्य में 'प्राकृतकल्पतरु' अपनी विशिष्टता रखता है। डॉ० ग्रियर्सन ने इस ग्रन्थ को आधार मानकर प्राकृत-व्याकरण के पौरस्त्य सम्प्रदाय की कल्पना को दृढ़ किया और इस सम्प्रदाय के ग्रन्थों में 'कल्पतरु' नितान्त व्यापक और प्रचुर सामग्री से मण्डित है। तथ्य तो यह है कि प्राकृत के नाना प्रकारों के साथ ही साथ अपभ्रंश का वर्णन करने वाला यह ग्रन्थ इतनी पूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है, जो अन्यत्र नितान्त दुर्लभ है। ग्रन्थकार की अपने व्याख्या से समन्वित होने का भी गौरव इस ग्रन्थरत्न को प्राप्त है। यह व्याख्या केवल प्रथम शाखा के आठ स्तबकों के ही ऊपर प्राप्त होती है; परन्तु जितनी भी प्रकाशित है उतनी ही नवीन तथ्यों को समझाने के लिए पर्याप्त है। व्याख्या की विशेषता है—पद्य-खण्डों का उद्धरण। ग्रन्थकार ने प्राकृत नियमों के उदाहरण के लिए पद्य-खण्डों को उद्धृत किया है, जो लोककाव्यों के उद्धरण प्रतीत होते हैं। ध्यान देने की बात है कि ये समग्र उद्धरण कृष्णचरित से सम्बन्ध रखते हैं, विशेषतः गोपीलीला से। मध्ययुग में राधाकृष्ण की लीला बंगाल के वैष्णव कवियों का प्रिय विषय था। बहुत सम्भव है कि यह परम्परा और भी प्राचीन हो और सम्भव है कि प्राकृत में भी बंगीय कवियों ने इस लीला का गायन किया हो और कृष्णकाव्यों का प्रणयन किया हो। ये पद्यखण्ड निश्चित रूप से किसी विशिष्ट प्राकृत-काव्य के उद्धरण प्रतीत हो रहे हैं।

**मार्कण्डेय कवीन्द्र**—प्राकृतसर्वस्य प्राकृत के पौरस्त्य व्याकरण-समप्रदाय का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसके कर्त्ता मारकण्डेय कवीन्द्र हैं। इस ग्रन्थ के ऊपर 'प्राकृतकल्पतरु' के सम्भावित प्रभाव पड़ने की चर्चा पूर्व ही की गयी है। इसमें १६ भाषाओं के विवरण देने का महनीय कार्य प्रणेता ने किया है। इन भाषाओं के अन्तर्गत ५ प्रकार की भाषा (महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती तथा मागधी); ५ प्रकार की विभाषा (शकारी, चाण्डाली, शाबरी, आभीरिका तथा टाक्की); ३ प्रकार का अपभ्रंश (नागर, ब्राचड तथा उपनागर) तथा ३ प्रकार की पैशाची (केकय, शौरसेन तथा पाञ्चाल) का शास्त्रीय विश्लेषण किया गया है; परन्तु महाराष्ट्री का विश्लेषण विस्तृत तथा विशद है। ग्रन्थ के आदि में लगभग चार पञ्चमांशों में तो महाराष्ट्री का विस्तृत विवरण ९ पादों में किया गया है, केवल एक पञ्चमांश में इतर समग्र भाषाएँ वर्णित हैं। पूरा

ग्रन्थ २० पादों में विभक्त है, जो एकाकार न होकर छोटे-बड़े हैं। नियम पद्यों में दिये गये हैं। वृत्ति भी मूल ग्रन्थ का अविभाज्य अङ्ग है। उदाहरणों के लिए प्राचीन-ग्रन्थों तथा ग्रन्थकारों से उद्धरण दिये गये हैं, जिनमें मुख्य ये हैं—काव्यादर्श, भट्टिकाव्य, सेतुबन्ध, कर्पूरमञ्जरी, मालतीमाधव, गउडवहो, वेणीसंहार, शाकुन्तल, मृच्छकटिक, भोजदेव, बृहत्कथा, प्राकृतपिङ्गल।

मार्कण्डेय के समयनिरूपण के साधन विद्यमान है। उनके द्वारा उद्धृत ग्रन्थों में सर्वाधिक अर्वाचीन प्राकृतपिङ्गल है। अपभ्रंश के विवरण में इस ग्रन्थ से ग्रन्थकार ने अनेक उद्धरण दिये हैं। 'छन्द के अनुरोध से वर्णों में गुरुलाघव होता है'—इहच्छन्दोऽनुरोधेन वर्णानां गुरुलाघवम् (पृ०-११२)। इस नियम के दृष्टान्त के लिए मार्कण्डेय ने यह उदाहरण दिया है, जो 'प्राकृतपिङ्गल' (१/५०) का प्रसिद्ध पद्य है—

अर रे वाहइ काण्ह नाव छोडि उगमग कुगति ण देहि।
तुहुं एहुं णइ सन्तार देइ जं चाहसि तं लेहि॥

प्राकृतपिङ्गल का रचनाकाल १४वीं शती का मध्यकाल है, १३५० ई० के आसपास। फलतः यह 'प्राकृतसर्वस्व' की रचना की पूर्वतम अवधि है। मार्कण्डेय ने अपने समसामयिक नरेश का उल्लेख ग्रन्थ के अन्त में इस पद्य में किया है—

श्रीमद्वीरमुकुन्देवनृपतौ दोःस्तम्भकुम्भीनस-
क्रीडाग्रस्तसमस्तशात्रवकुलप्राणानिले धर्मतः।
शासत्युत्कलमेदिनीं रघुपतौ साक्षादयोध्यामिव
ग्रामे वीरवरप्रतापनृपतेः पूर्णो निबन्धो नवः॥

पद्य में निर्दिष्ट मुकुन्ददेव का समय १६६६-१६९९ ई० तक ऐतिहासिकगण बतलाते हैं। फलतः मार्कण्डेय कवीन्द्र उत्कलनिवासी विद्वान् थे और उनका समय १७वीं शती का उत्तरार्ध है।

मार्कण्डेय ने इस व्याकरण ग्रन्थ के निर्माण के लिए प्राचीन-साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया था। उनकी विद्वत्ता का परिचय ग्रन्थ की आलोचना से भली-भाँति प्राप्त होता है। उन्होंने 'विलासवती' नामक सट्टक का भी प्रणयन किया था, जिसका उद्धरण प्राकृतसर्वस्व के ५२वें पृष्ठ पर दिया गया है। उनकी विवेचन-शक्ति आदरणीय है। संस्कृत 'क्रिया' का प्राकृत रूपान्तर 'किरिआ' रूप में होता है। ऐसी दशा में राजशेखर का 'किआ' शब्द का कर्पूरमञ्जरी में प्रयोग—झाणेण बेदपढेणेण कदुक्किआहिं (१।/३४) अपपाठ ही है—यह मार्कण्डेय का कथन है (पृ०-२७)। उसी प्रकार 'ऐरावण' शब्द के ऊपर उनका कथन है कि यह संस्कृत के अतिरिक्त अपभ्रंश का शब्द है, प्राकृत का नहीं; क्योंकि प्राकृत में ऐकार का सर्वथा अभाव ही होता है।

फलत: 'भाषासमक' के अवसर पर भट्टि का यह प्रयोग—'ऐरावणमदपरिमलगन्धवहाबद्धदन्तिकुलसंरम्भम्' (भट्टिकाव्य-१३।३३)।

यहाँ संस्कृत के अपभ्रंश का समावेश है, प्राकृत का नहीं (द्रष्टव्य प्राकृतसर्वस्व, पृ०-९)। इसी प्रकार 'आरीणं लवणजलम्' (भट्टिकाव्य-१३।४) में संस्कृत के साथ शौरसेनी का समावेश है, महाराष्ट्री का नहीं; क्योंकि यहाँ 'लोण' ही होता है, 'लवण' नहीं। विभाषाओं के विश्लेषण में कवीन्द्र की विद्वत्ता स्पष्टत: प्रतीत होती है। 'प्राकृत-सर्वस्व' इस प्रकार प्राकृत के शास्त्रीय विवेचन की दृष्टि से नितान्त प्रशंसनीय तथा श्लाघनीय रचना है।

## पाश्चात्य सम्प्रदाय के वैयाकरण

**(१) हेमचन्द्र**—आचार्य हेमचन्द्र १२वीं शताब्दी विक्रम संवत् के बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न विशिष्टतम विद्वान् हैं। उनका व्यक्तित्व असाधारण और कृतित्व अभूतपूर्व और अनूठा रहा है। उनकी साहित्य-साधना बहुत ही विशाल और व्यापक रही है। उन्होंने भूगोल, खगोल, ज्योतिष, इतिहास, न्याय, नीति, धर्म, दर्शन, कथा, कोश, व्याकरण, काव्य आदि सभी विषयों पर साधिकार लेखनी चलाया और बहुत ही मार्मिक एवं विशाल साहित्य का सृजन कर जीवन को प्रबुद्ध और प्रगतिशील बनाया। वे एक समर्थ और सफल साहित्यकार थे। उनके द्वारा रचित साहित्य इतना रोचक, मर्मस्पर्शी और सजीव है कि पाश्चात्य विचारक भी उन पर मुग्ध हुए बिना न रहे और उन्होंने उनको ज्ञान का महान् सागर कहा है। उनकी प्रत्येक रचना में नया दृष्टिकोण, नयी शैली और नया चिन्तन है। उनके अगाध पाण्डित्य और गम्भीर चिन्तन के कारण ही उन्हें 'कलिकालसर्वज्ञ' की उपाधि से अलङ्कृत किया गया।

संस्कृत, प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य के मूर्धन्य प्रणेता कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचन्द्र का जन्म (जन्म के विषय में तिथि के विवेचन में मत भिन्नता नहीं है) गुजरात के प्रधान नगर अहमदाबाद से ६० मील दक्षिण पश्चिम कोण में स्थित 'धुंधुका नगर' में विक्रम संवत् ११४५ में कार्तिकी पूर्णिमा (१०८८ ई०) की रात्रि में हुआ था। संस्कृत ग्रन्थों में इसे 'धुंधुक्कनगर' या 'धुंधुकपुर' भी कहा गया है। यह प्राचीनकाल में ख्यातिपूर्ण एवं समृद्धिशाली नगर था।

आचार्य हेमचन्द्र के पिता मोढवंशोत्पन्न 'चाचिग' नाम के व्यापारी (सेठ) और माता पाहिणी देवी थीं। इनके वंशजों का निकास मोढेरा ग्राम से हुआ था, अत: ये मोढवंशी कहलाते थे। आज भी इस वंश के वैश्य 'श्री मोढ वणिये, कहे जाते हैं। इनकी कुलदेवी 'चामुण्डा' और कुलपक्ष 'गोनस' था अत: माता-पिता ने देवता प्रतीत्यर्थ उक्त दोनों देवताओं के आद्यन्त अक्षर लेकर बालक का नाम 'चाङ्गदेव' रखा। यही चाङ्गदेव आगे चलकर सूरीपद प्राप्त होने पर हेमचन्द्र कहलाया।

जन्म से पूर्व ही माता को गर्भस्थ शिशु के सम्बन्ध में अद्भुत स्वप्न हुए। इनको सुनकर आचार्य गुरु ने कहा कि पुत्र सुलक्षण सम्पन्न होगा। गुरु को सौंप देने से वह सूरिराज होगा, गृहस्थ नहीं। (स्वप्न राजशेखर, सोमप्रभ सूरि तथा प्रभावक चरित के अनुसार इस प्रकार स्वप्न विषय पर चर्चा है)।

शिशु चाङ्गदेव बहुत होनहार था। पालने में ही उसकी भवितव्यता के शुभ-लक्षण प्रकट होने लगे थे। एक समय देवचन्द्राचार्य धुंधका नगर पहुँचे। उस समय चाङ्गदेव की आयु आठ वर्ष की थी, खेलते-खेलते अपने समवयस्क, बालकों के साथ वहाँ आ गया और अपने बाल-चापल्य स्वभाव से देवेन्द्राचार्य की गद्दी पर बड़ी कुशलता से जा बैठा। उसके अलौकिक शुभलक्षणों को देखकर आचार्य कहने लगे, यदि वह बालक क्षत्रियोत्पन्न है तो अवश्य सार्वभौम राजा बनेगा। यदि वह वैश्य अथवा विप्रकुलोत्पन्न है तो महात्मा बनेगा और यदि कहीं इसने दीक्षा ग्रहण कर ली, तो युग-प्रधान के समान अवश्य इस युग में कृतयुग की स्थापना करेगा। चाङ्गदेव के सहज साहस, शरीर सौष्ठव, चेष्टा प्रतिभा एवं भव्यता ने आचार्य के मन में गहरा प्रभाव डाला और वे सानुराग उस बालक को प्राप्त करने की अभिलाषा से उसके निवास-स्थान पर पहुँचे। वहाँ चाङ्गदेव की माँ की उपस्थिति में परन्तु पिता की अनुपस्थिति में ही चाङ्गदेव को माँगकर ले आये। उन्होंने बालक से पूछा-वत्स! तू हमारा शिष्य बनेगा? चाङ्गदेव जी हाँ अवश्य बनूँगा, इस उत्तर से आचार्य अत्यधिक प्रसन्न हुए। उनके मत में यह आशङ्का बनी हुई थी कि चाचिग (चाङ्गदेव के पिता) कहीं यात्रा से वापस आकर उसे माँग न ले। इसलिए चाङ्गदेव को उदयन (उस समय के गुजराज राज्य के मन्त्री उदयन के साथ छोड़ दिया) मन्त्री के यहाँ छोड़ दिया। चाचिग जब ग्रामान्तर से लौटे तो वह अपने पुत्र सम्बन्धी घटना को सुनकर बहुत दुःखी हुए और तत्काल ही कर्णावती (आधुनिक अहमदाबाद) की ओर चल दिये।

उदयन मन्त्री ने चाङ्गदेव को चाचिग की गोद में विराजमान कर पञ्चाङ्ग सहित तीन दुशाले और तीन लाख रुपये भेंट किये। इस सम्मान को पाकर वह स्नेह-विह्वल हो गये और बोले आप तो तीन लाख देते हुए उदारता के छल में कृपणता प्रकट कर रहे हैं। मेरा पुत्र अमूल्य है, परन्तु साथ ही मैं देखता हूँ कि आपकी भक्ति उसकी अपेक्षा कहीं अमूल्य है। अतः इस बालक के मूल्य में अपनी भक्ति ही रहने दीजिए। आपके द्रव्य का तो मैं शिवनिर्माल्य के समान स्पर्श भी नहीं कर सकता। उदयन मन्त्री के समझाने पर चाचिग ने कहा—आपका वचन ही प्रमाण है, मैंने अपने पुत्र रत्न को गुरुजी को ही भेंट किया। देवचन्द्राचार्य इन वचनों को सुनकर बहुत प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् उदयन मन्त्री के सहयोग से चाचिग ने चाङ्गदेव का दीक्षा महोत्सव सम्पन्न किया। चतुर्विध सङ्घ, के समक्ष देवचन्द्राचार्य ने स्तम्भतीर्थ के पार्श्वनाथ चैत्यालय में विक्रम

सं० ११५४ माघशुक्ला १४ शनिवार को धूमधामपूर्वक दीक्षासंस्कार सम्पादित किया और चाङ्गदेव का दीक्षा नाम सोमचन्द्र रखा गया।

चाङ्गदेव की माता भी साध्वी बन गई थीं। 'प्रभावकचरित' के अनुसार सोमचन्द्र के हेमचन्द्रसूरि बनने के पश्चात् उनकी माता ने भी जैनधर्म की दीक्षा ग्रहण की और पुत्र के आग्रह पर वह आसन पर बैठायी गयीं (श्लोक ६४-६३)।

**शिक्षा और सूरिपद**—दीक्षित होने के कारण सोमचन्द्र का विद्याध्ययन प्रारम्भ हुआ। तर्क-लक्षण एवं साहित्य-विद्या का बहुत थोड़े ही समय में पाण्डित्य प्राप्त कर लिया। देवचन्द्रसूरि ने सात वर्ष, आठ महीने एक स्थान से दूसरे स्थान पर परिभ्रमण करते हुए चार महीने किसी सदगृहस्थ के यहाँ निवास करते हुए व्यतीत किए। सोमचन्द्र भी सदैव उनके साथ थे। अतः अल्पवयः में ही इन्होंने देश-देशान्तरों के परिभ्रमण से अपने शास्त्रीय और व्यवहारिक ज्ञान की वृद्धि को प्राप्त किया। २१ वर्ष की अवस्था में ही इन्होंने समस्त शास्त्रों का आलोडन-विलोडन कर ज्ञानार्जन किया था। ज्ञान के साथ-साथ चरित्र भी अपूर्व कोटि का था। चतुर्विध सङ्घ इनके गुणों से अत्यधिक प्रभावित था। आचार्य के ३६ गुण इनके व्यक्तित्व में आत्मसात् हो चुके थे। इनके लिए नागपुर के धनद नामक व्यापारी ने विक्रम सं० ११६६ में सूरिपद प्रधान महोत्सव सम्पन्न किया।

सोमचन्द्र की हेम समान कान्ति और चन्द्र के समान आह्लादकता होने के कारण तदनुकूल 'हेमचन्द्राचार्य' यह संज्ञा दी गयी। श्री कृष्णमाचारियार के अनुसार एक अवसर पर सोमचन्द्र ने अपनी शक्ति को प्रदर्शित करने के लिए अपनी बाहू को प्रज्ज्वलित अग्नि में रख दिया। पिता ने आश्चर्यपूर्वक इस बाहू को स्वर्ण में परिवर्तित होते हुए देखा। इस घटना के उपरान्त सोमचन्द्र हेमचन्द्र के नाम से प्रसिद्ध हो गए। मुनि हिमांशुविजय ने आचार्य हेमचन्द्र के नाम की व्याख्या इस प्रकार की है। आचार्य शास्त्रों का ज्ञाता अथवा उपदेष्टा होता है, हेम का अर्थ स्वर्ण है, चन्द्र का अर्थ हिमांशु हैं, इनके गुणों के समन्वय से हेमचन्द्र नाम सिद्ध होता है।

गुरुदेव ने जब हेमचन्द्र में कुछ ऐसे गुण देखे जो इस घोर कलिकाल में सभी के लिए सम्भव नहीं थे, तो उन्होंने उसे गणधर (आचार्य) पदवी देकर कई भिक्षुओं का अगुआ बना दिया।

**आचार्य हेमचन्द्र का कुमारपाल व सिद्धराज जयसिंह से सम्बन्ध**—आचार्य हेमचन्द्र को दो राजाओं का राज्याश्रय प्राप्त हुआ था। उनमें से पहले राजा सिद्धराज जयसिंह थे और दूसरे आश्रयदाता राजा कुमारपाल थे।

सिद्धहेमशब्दानुशासन का नामकरण हेमचन्द्र ने उपलब्ध विभिन्न व्याकरणों का

सम्यक् अध्ययन कर अपना नया व्याकरण सिद्धराज जयसिंह के नाम से अपने नाम के साथ जोड़कर 'सिद्धहेमशब्दानुशासनम्' नामक ग्रन्थ रचा।

जिस प्रकार जयसिंह के अनुरोध पर हेमचन्द्र ने 'सिद्धहेमशब्दानुशासनम्' की रचना की उसी प्रकार कुमारपाल के अनुरोध पर उन्होंने योगशास्त्र, वीतरागस्तुति और त्रिषष्टिशलाका पुरुषचरित की रचना की। लेकिन राजा का नाम अपने ग्रन्थों के साथ नहीं जोड़ा।

कुमारपाल की मृत्यु आचार्य की मृत्यु के छः महीने बाद में हुई थी। आचार्य की मृत्यु से कुमारपाल को बहुत बड़ा धक्का लगा।

## हेमचन्द्र की कृतियाँ

विभिन्न विद्वानों के पुस्तकों में उपलब्ध सूची के आधार पर श्री हेमचन्द्राचार्य विरचित अनेक विषयों से सम्बद्ध ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

**१. व्याकरण और उसके अङ्ग**—(१) सिद्धहेमशब्दानुशासनम्, (२) सिद्ध-हेमलघुवृत्ति, (३) सिद्धहेमबृहद्वृत्ति (तत्त्व प्रकाशिका), (४) सिद्धहेम-बृहन्यास (शब्द महार्णवन्यास-अपूर्ण), (५) सिद्धहेम-प्राकृतवृत्ति, (६) लिङ्गानुशासन-सटीक, (७) उणादिगण-विवरण, (८) धातुपारायण-विवरण।

**२. कोश**—(९) अभिधानचिन्तामणि-स्वोपज्ञ टीका सहित, (१०) अभिधान चिन्तामणि-परिशिष्ट, (११) अनेकार्थ-कोश, (१२) निघण्टुशेष (वनस्पति-विषयक), (१३) देशीनाम-माला-स्वोपज्ञ टीका सहित।

**३. साहित्य-अलङ्कार**—(१४) काव्यानुशासन—स्वोपज्ञ अलङ्कार-चूडामणि और विवेकवृत्ति सहित।

**४. छन्द**—(१५) छन्दोऽनुशासन-छन्दश्चूडामणि टीका-सहित।

**५. दर्शन**—(१६) प्रमाणमीमांसा—स्वोपज्ञ टीका सहित (अपूर्ण), (१७) वेदाङ्कुश (द्विजवदनचपेटा)।

**६. इतिहास-काव्य-व्याकरण सहित**—(१८) संस्कृत द्वयाश्रय महाकाव्य, (१९) प्राकृत द्वयाश्रय महाकाव्य।

**७. इतिहास-काव्य और उपदेश**—(२०) त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित (महा-काव्य-दशपर्व), (२१) परिशिष्ट-पर्व।

**८. योग**—(२२) योगाशास्त्र-स्वोपज्ञ टीका सहित।

**९. स्तुतिस्तोत्र**—(२३) वीतरागस्तोत्र, (२४) अन्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका (पद्य), (२५) अयोग-व्यवच्छेदद्वात्रिंशिका (पद्य), (२६) महादेव-स्तोत्र (पद्य)।

**अन्य कृतियाँ**—इनमें से कुछ कृतियों के विषय में सन्देह है।

(१) मध्यवृत्ति (सिद्धहेमशब्दानुशासन की टीका), (२) रहस्य-वृत्ति (सिद्धहेमशब्दानुशासन की टीका), (३) अर्हन्नामसमुच्चय, (४) अर्हन्नीति, (५) नाभेयनेमिद्विसंधानकाव्य, (६) न्यायबलाबल सूत्र, (७) बलाबल सूत्र—बृहद्वृत्ति, (८) बालभाषाव्याकरण सूत्रवृत्ति।

**(२) त्रिविक्रम**—इस सम्प्रदाय के अन्य प्राकृत सूत्र भी उपलब्ध होते हैं जिन पर त्रिविक्रम ने प्राकृत-शब्दानुशासन,लक्ष्मीधर ने षड्भाषा चन्द्रिका तथा सिंहराज ने प्राकृत रूपावतार का निर्माण किया है। इन तीनों ग्रन्थकारों ने एक ही सूत्रों को अपने विभिन्न ग्रन्थों का आधार बनाया है, परन्तु एक ही क्रम से नहीं। त्रिविक्रम के ग्रन्थ में सूत्रों की संख्या १०८५ है। उन्होंने बड़े ही पाण्डित्यपूर्ण ढङ्ग से विशद टीका की है जो पाणिनीय सम्प्रदाय की 'काशिका वृत्ति' के समान प्रामाणिक मानी जाती है। त्रिविक्रम के विषय में हम निश्चितरूप से कुछ नहीं कह सकते। इतना ही कह सकते हैं कि वे हेमचन्द्र के पश्चात् तथा मल्लिनाथ के पुत्र कुमार स्वामी से पूर्ववर्ती है अर्थात् १४ शती से ये अर्वाचीन नहीं हो सकते। लक्ष्मीधर अपनी 'षड्भाषा चन्द्रिका' को त्रिविक्रम वृत्ति की व्याख्या मानते हैं। यह ग्रन्थ पूरे १०८५ सूत्रों का व्याख्यान करता है, परन्तु भिन्न क्रम से। सूत्रों का यह क्रम निर्देश प्रक्रिया (अर्थात् रूपसिद्धि) को दृष्टि में रखकर किया गया है और इसीलिए यह 'सिद्धान्त कौमुदी' के समान ही प्रक्रियानुसारी प्राकृत व्याकरण है। प्रतीत होता है कि लक्ष्मीधर विजयनगर के तृतीय राजवंश के राजा तिरुमलराज के आश्रित थे जो १६वीं शती के मध्यभाग में विद्यमान थे। त्रिविक्रम के पश्चाद्वर्ती तथा अप्पय दीक्षित से (जिन्होंने अपने प्राकृत मणिदीप में इनका नाम निर्देश किया है) पूर्ववर्ती होने से भी इस समय की पुष्टि होती है। फलतः लक्ष्मीधर का समय १६वीं शती का मध्यभाग उचित होगा (१५३० ई०-१५६० ई०)। सिंहराज ने मूल सूत्रों में से ५७५ सूत्रों को चुनकर इन पर संक्षिप्त टीका लिखी है। इसलिए इसकी तुलना मध्य कौमुदी अथवा लघु कौमुदी से की जा सकती है। इनका समय यथावत् निर्णीत नहीं है। 'प्राकृत रूपावतार' के सम्पादक डॉ० हुल्श का कहना है कि इस ग्रन्थ में भट्टोजिदीक्षित की सिद्धान्त-कौमुदी और नागोजिभट्ट के परिभाषेन्दु शेखर से साम्य मिलते हैं। अतएव इनका समय १८वीं शती का अन्तिम काल होना चाहिये।

**(३) वाल्मीकि**—अब विचारणीय है इन तीनों ग्रन्थकारों द्वारा व्याख्यात मूल सूत्रों का रचयिता कौन है? इसके विषय में पर्याप्त मतभेद है। एक पक्ष त्रिविक्रम को ही इन सूत्रों का निर्माता मानता है और द्वितीय परम्परानुसारी पक्ष वाल्मीकि को इनका रचयिता अङ्गीकार करता है। प्रथम मत के पक्षपाती श्रीयुत भट्टनाथ स्वामी का कहना है कि त्रिविक्रम ने ही इन सूत्रों का निर्माण किया था; क्योंकि ग्रन्थ के अन्त

में इसकी सूचना मिलती है तथा ग्रन्थ के आरम्भ में प्राप्त श्लोक से भी इसकी पुष्टि होती है। इस श्लोक का 'प्रवक्ष्महे' पद इसे ही सिद्ध करता है। त्रिविक्रम ने ही स्वयं अपने ग्रन्थ के स्वरूप का निर्देश इस पद्य में किया है—

तद्भव-तत्सम-देश्य-प्राकृतरूपाणि पश्यतां विदुषाम्।
दर्पणतयेयमवनौ वृत्तिस् त्रैविक्रमी जयति ॥

यहाँ यह ग्रन्थ 'वृत्ति' ही कहा गया है और यही इसका यथार्थ रूप है। फलतः त्रिविक्रम वृत्तिकार हैं, सूत्रकार नहीं। सूत्रों के रचयिता का नामोल्लेख लक्ष्मीधर ने 'षड्भाषा चन्द्रिका' में इस प्रकार किया है—

वाग्देवी जननी येषां वाल्मीकिर्मूलसूत्रकृत्।
भाषाप्रयोगा ज्ञेयास्ते षड्भाषाचन्द्रिकाध्वना ॥

'वाल्मीकि' मूलसूत्रों के रचयिता हैं। परम्परा से ये वे ही वाल्मीकि हैं जिन्होंने रामायण का निर्माण किया। 'शम्भुरहस्य' ग्रन्थ से इसी परम्परा की पुष्टि होती है, परन्तु सूत्रों के स्वरूप का विवेचन उन्हें बहुत प्राचीन सिद्ध नहीं कर रहा है। श्री द्विवेदी का मत है कि ये सूत्र हेमचन्द्र के सूत्रों की अपेक्षा छोटे तथा सुव्यवस्थित हैं जिससे इनकी पश्चाद्भाविता सिद्ध होती है। तथ्य यही प्रतीत होता है कि वाल्मीकि नामक किसी व्यक्ति ने हेमचन्द्र के पश्चात त्रयोदश शती में इनकी रचना की, परन्तु नामसाम्य के कारण इनकी रचना रामायणकर्त्ता के ऊपर आरोपित की गई प्रतीत होती है। 'शम्भु रहस्य' ने तो दोनों के ऐक्य का स्पष्ट सङ्केत किया है।

**(४) शेष श्रीकृष्ण**—शेष श्रीकृष्ण १६वीं शती के काशीस्थ विद्वानों में मूर्धन्य थे। ये बादशाह अकबर के समकालीन थे। अकबर के प्रख्यात हिन्दू मन्त्री राजा बीरबल के आदेश से उन्हीं के कल्याण नामक पुत्र को व्याकरण सिखाने के लिए उन्होंने 'प्रक्रियाकौमुदी' की 'प्रक्रिया-प्रकाश' नामक विद्वत्तापूर्ण प्रामाणिक व्याख्या लिखा, जो अपने विषय का सार्वभौम ग्रन्थ माना जाता है। इनकी कीर्ति का कारण ग्रन्थों का प्रणयन उतना नहीं है जितना भट्टोजिदीक्षित जैसे ख्यातनामा वैयाकरण का गुरु होना। दीक्षित ने इन्हीं से व्याकरणशास्त्र का अध्ययन किया था। इन्हीं की रचना है—प्राकृत भाषा का व्याकरणरूप ग्रन्थरत्न 'प्राकृतचन्द्रिका' नामक-ग्रन्थ। यह ग्रन्थ श्लोकबद्ध है, जिस पर ग्रन्थकार ने ही व्याख्या भी लिखा है। पद्यों की सम्पूर्ण संख्या ४४१ (चार सौ इकतालीस) है, जिनमें आदिम दो श्लोक मङ्गलाचरण के रूप में हैं और अन्तिम दो श्लोक स्वीय परिचय के रूप में हैं। फलतः चार सौ सैंतीस पद्यों में प्राकृत का व्याकरण यहाँ उपन्यस्त किया गया है।

**(५) अप्पय दीक्षित**—१६वीं शती के दूसरे प्रख्यात संस्कृत-पण्डित अप्पय दीक्षित थे, जिनका प्राकृत-व्याकरण बालोपयोगी होने से पर्याप्तरूपेण प्रसिद्ध है।

अप्पय दीक्षित-रचित 'प्राकृतमणिदीप' प्राकृत का लघु व्याकरण है। ग्रन्थ के उपोद्घात में उन्होंने इस ग्रन्थ के निर्माण का हेतु बतलाया है। उनका कहना है कि त्रिविक्रमदेव, हेमचन्द्र, लक्ष्मीधर, राजा भोज, पुष्पवननाथ तथा वररुचि द्वारा निर्मित प्राकृत-व्याकरण के ग्रन्थों में विषय का इतना बाहुल्य है कि संक्षेप में रुचि रखने वाले जनों के द्वारा वे विषय अगृहीत ही रह जाते हैं। इसीलिए इसकी रचना की गयी है। इस लघुकाय ग्रन्थ की उपादेयता संक्षिप्त, परन्तु विशद् प्रतिपादन में है। ग्रन्थ की यही महत्ता है।

ते विस्तरत्वात् प्रायेण सङ्क्षेपरुचिभिर्जनैः।
अगृहीता विलम्बन्ते सन्ध्यार्ककिरणा इव ॥
अतः प्राकृतशब्दानामध्ये तमसि मज्जताम्।
प्रकाशनाय क्रियते सङ्क्षिप्ता मणिदीपिका ॥ (उपोद्घात, ६)

दीक्षित जी ने वाल्मीकि के आवश्यक सूत्रों को चुनकर अपनी लघुवृत्ति के साथ इस ग्रन्थ का निर्माण किया है। नितान्त आवश्यक सूत्रों का ही यहाँ सङ्कलन है। फलतः यह ग्रन्थ सिंहराज के 'प्राकृतरूपावतार' के समान है; परन्तु कालक्रम की दृष्टि से उससे प्राचीन है। अप्पय दीक्षित वेदान्त, तन्त्र आदि शास्त्रों के प्रौढ़ व्याख्याता मूर्धन्य पण्डित थे, जिनका समय लगभग १५२० ई० से लेकर १५९३ ई० तक माना जाता है। १६वीं शदी के द्रविड पण्डितों में ये अप्रतिम थे।

## आचार्य वररुचि

चण्ड के लगभग दो शताब्दियों के अनन्तर 'वररुचि' ने अपने 'प्राकृत-प्रकाश' की रचना की, जो प्राकृत का सर्वाधिक लोकप्रिय व्याकरण ग्रन्थ है। इसमें १२ परिच्छेद हैं जिनके आरम्भिक नौ परिच्छेदों में प्राकृत का (महाराष्ट्री का, यद्यपि यह नाम ग्रन्थ के भीतर निर्दिष्ट नहीं है), दशवें में पैशाची का, ग्यारहवें में मागधी का और अन्तिम बारहवें में शौरसेनी का व्याकरण वर्णित है। वररुचि के अनुसार मूलप्राकृत महाराष्ट्री है और इसीलिए ग्रन्थ के तीन चौथाई भाग में इसी का साङ्गोपाङ्ग व्याकरण विवृत किया गया है। जिसके अङ्ग-स्वर-विधान, व्यञ्जन परिवर्तन, सुबन्त तथा तिङन्त— बड़े विस्तार से प्रतिपादित किये गये हैं। अन्य प्राकृतों का प्रधान वैशिष्ट्य ही सङ्क्षेप में एक-एक परिच्छेद में वर्णित है। अपने वर्णन की विशदता तथा व्यापकता के कारण ही यह ग्रन्थ प्राकृत के जिज्ञासुजनों के लिए वास्तव में हस्तामलक है, समग्र ग्रन्थ सूत्रों में निबद्ध हैं, जिनकी संख्या भामह की मनोरमा के अनुसार ४८७ है। इसकी टीकासम्पत्ति से भी ग्रन्थ की महत्ता और लोकप्रियता का परिचय प्राप्त हो सकता है।

वररुचि का व्यक्तित्व आज भी अज्ञान के गर्त में पड़ा हुआ है। कतिपय विद्वान् पाणिनीय सूत्रों पर वार्तिक लिखने वाले कात्यायन को वररुचि से अभिन्न मानते हैं; परन्तु इस अभिन्नता की सिद्धि के लिए नामसाम्य के अतिरिक्त इतर प्रमाण उपस्थित नहीं किये जाते। फलतः प्राकृत वैयाकरण वररुचि वार्तिककार कात्यायन से भिन्न व्यक्ति प्रतीत होते हैं। चण्ड के प्राकृत-लक्षण से प्राकृतप्रकाश का प्राकृत-व्याकरण विस्तृत, विकसित तथा विशद है। अत एव प्राकृतप्रकाश निश्चित रूप से प्राकृत-लक्षण से उत्तरकालीन रचना है। उसका समय ईसा की तृतीय-चतुर्थ शती में मानना कथमपि अनुपयुक्त नहीं माना जा सकता।

वररुचि नामधेय से दो अभिधान मिलते हैं—(१) वररुचि और (२) कात्यायन वररुचि। इस विषय पर विवाद होता रहा है कि वररुचि और कात्ययन वररुचि एक ही व्यक्ति हैं या दो अलग व्यक्ति हैं। इस विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विचारकों के मतों का सङ्कलन करके उनकी समीक्षा यहाँ प्रस्तुत की जाती है।

**पक्ष—**

**(१) दोनों व्याकरणकार हैं**—डॉ० प्रभुदयाल अग्निहोत्री ने वररुचि और कात्यायन को एक माना है। उन्हीं के मतानुसार वैयाकरण-परम्परा वररुचि व्यक्ति नाम था। कात्यायन गोत्र नाम स्वीकार करती है।

दुर्गसिंह के मतानुसार कातन्त्र-व्याकरण का कृदन्त भाग 'वररुचि कात्यायनकृत' है। प्रमाण के रूप में यह श्लोक है—

वृक्षादिवदमीरुढा न कृतिना कृताः कृतः।
कात्यायनेन ते स्पृष्टा विबुद्धप्रतिपत्तये॥

युधिष्ठिर मीमांसक के मत में 'वार्तिककार कात्यायन' व 'प्राकृत प्रकाशकार' वररुचि एक ही हैं।

कीलहार्न तथा मुरोवर का मत है कि पाणिनि से कात्यायन को सीधे व्याकरण प्राप्त नहीं हुआ। डौल्ची नीति के अनुसार—पिशल, लेवी और लिविज तीन ने अभिन्नता मानी है।

**(२) दाक्षिणात्य—**

पतञ्जलि ने दिशाओं के आधार पर भारत के विभाग किये हैं। कात्यायन को दाक्षिणात्य बताया गया है। पाणिनि के द्वारा बहुत अवशिष्ट तद्धितों का प्रयोग किया गया है, आफ्रेक्ट सूची पत्र के अनुसार कात्यायन ने पाणिनि की अष्टाध्यायी पर वार्तिक लिखे हैं। आफ्रेक्ट ने अपने बृहत्-सूची पत्र में वररुचि-विरचित अष्टाध्यायी वृत्ति का उल्लेख किया है। मद्रास राजकीय हस्तलेख पुस्तकालय में इस नाम का एक हस्तलेख विद्यमान

है (सूची पत्र १८८० का छपा, पृष्ठ-३४२)।

पतञ्जलि-कालीन भारत के अनुसार वररुचि मालव निवासी तथा विक्रमादित्य कालीन थे। इसी के अनुसार दो वररुचि हुए हैं एक वार्त्तिककार कात्यायन तथा दूसरे पतञ्जलि द्वारा शापित उनके शिष्य चन्द्रगुप्त ब्राह्मण के ज्येष्ठपुत्र।

यमजीजनत् प्रथमवर्णकन्यका तनयं द्विजो वररुचि तमाख्यया।
स्वयमाजुहाव कृतवंशजन्मनः पदशास्त्र वार्त्तिककृतः पवित्रया॥
(पतञ्जलिचरित, ७-२१)

(१) पिशल के अनुसार वार्त्तिककार कात्यायन और वररुचि दोनों एक ही व्यक्ति हैं। प्राकृत-प्रकाशकार वररुचि और कात्यायन को एक व्यक्ति मानते हैं। **विन्टरनिट्ज** के अनुसार कात्यायन और वररुचि की अभिन्नता सहज ही निर्विवाद रूप से स्थापित नहीं की ज़ा सकती। डौल्ची नीति के अनुसार Lassen ने दो अलग-अलग माना है।

**काल-निर्धारण**—काल-निर्धारण में दोनों को एक व अलग-अलग वररुचि का होना करने का प्रयास किया है। संस्कृत के आचार्य प्रायः इस विषय में मौन रहे हैं। इस विवाद या भ्रम का कारण उनका मौन है। फिर भी कुछ तथ्यों के आधार पर काल-निर्धारण करने का प्रयास किया है।

**विद्यालङ्कार जयपाल** ने इनको कात्यायन २५० ई०पू० से पहले का मना है। पी०वी० काणे ने धर्मशास्त्र के इतिहास में कात्यायन की तिथि के विषय में यह मत दिया है कि कात्यायन मनु और याज्ञवल्क्य से बहुत बाद का है; क्योंकि यह नारद का उल्लेख करता है और बृहस्पति को व्यवहार में बहुत अग्रगण्य प्रमाण मानता है। इसलिए इसकी पूर्व सीमा तीसरी या चौथी शताब्दी तथा परवर्ती सीमा छठी शताब्दी विक्रम होनी चाहिए।

युधिष्ठिर मीमांसक ने कुछ मौलिक तथ्य दिए हैं।

(१) संवत् ६९५ में शतपथब्राह्मण का भाष्य लिखने वाले हरिस्वामी के गुरु स्कन्दस्वामी निरुक्त-टीका में वररुचि के निरुक्त समुच्चय से पर्याप्त सहायता लिये हैं और उसके पाठ उद्धृत किये हैं।

(२) स्कन्दमहेश्वर की निरुक्त-टीका (१०/१६) में भामह के अलङ्कार ग्रन्थ का २/१७ में एक श्लोक उद्धृत है। भामह ने वररुचि के प्राकृत-प्रकाशः की प्राकृत-मनोरमा नाम्नी टीका लिखी है। अतः वररुचि निश्चय ही संवत् ६०० से पूर्ववर्ती हैं। पं० सदाशिव लक्ष्मीधर कात्रे के मतानुसार हरिस्वामी विक्रम संवत् प्रवर्तक विक्रमादित्य के समकालीन हैं।

भारतीय इतिहास के प्रामाणिक विद्वान् श्री पण्डित भगवद्दत्तजी ने अपने 'भारत वर्ष का इतिहास' ग्रन्थ में वररुचि और विक्रम साहसाङ्क की समकालिता में अनेक प्रमाण दिया है। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

(क) वररुचि अपने 'लिङ्गानुशासन' के अन्त में लिखते हैं—'इति श्रीमदखिल-वाग्विलासमण्डित-सरस्वती-कण्ठाभरण-अनेक-विशरण-श्रीनरपतिविक्रमादित्य-किरीट-निधृष्ट-चरणाविन्दआचार्य-वररुचितो लिङ्गविशेषविधिसमाप्तः'।

(ख) वररुचि ने अपने विद्यासुन्दर नामक काव्य के अन्त में लिखा है—'इति समस्तमही-मण्डलाधिपमहाराजविक्रमादित्यनिदेशलब्धश्रीमन्महापण्डितवररुचि-विरचितं-विद्यासुन्दर प्रसङ्ग-काव्यं समाप्तम्'।

(ग) वररुचि ने अपनी पत्रकौमुदी के आरम्भ में लिखा है—

विक्रमादित्यभूपस्य कीर्तिसिद्धेनिर्देशतः।
श्रीमान् वररुचि र्धीमांस्तनोति पत्रकौमुदीम्॥

(घ) लक्ष्मणसेन वि०सं० ११७६ के सभापण्डित धोयी का एक श्लोक सदुक्ति-कर्णामृत में उद्धृत है। उसमें लिखा है—

ख्यातो यश्च श्रुतिधरतया विक्रमादित्य गोष्ठी,
विद्याभर्तुः खलु वररुचेराससाद प्रतिष्ठाम्।

(ङ) कालिदास ने अपने ज्योतिर्विदाभरण २२/१० में लिखा है—

धनवन्तरिः क्षपणकोअमरसिंहशङ्कूवेतालभट्ट-घटखर्पर-कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥

सिल्वां लेवी ने कात्यायन को सिकन्दर महान् का समकालीन माना है। शार्फे ने कात्यायन का समय ई०पू० तीसरी शताब्दी माना है। याकोबी के अनुसार ये कालिदास के समकालीन हैं।

काल के विषय में आज का विद्वान् इनका निर्भ्रान्त निर्णय नहीं दे सके हैं कि वररुचि किस काल में पैदा हुए और किनके समकालीन थे, परन्तु प्राप्त मतों के आधार पर यह स्वतः स्पष्ट है कि पाणिनि के वार्त्तिककार कात्यायन पतञ्जति से पहले हुए थे। पतञ्जलि का समय १४० ई०पू० से १२० ई० पूर्व निश्चित हैं। वे वररुचि प्राकृत के वैयाकरण के कर्त्ता के रूप में जाने जाते हैं और निश्चय ही प्राकृत-भाषा का यह व्याकरण पतञ्जलि के बाद का है। पतञ्जलि ने प्राकृत के ऊपर कोई भाष्य नहीं लिखा। पाणिनि-व्याकरण का ही भाष्य उन्होंने किया है। अतः बहुत सम्भावना है कि प्राकृतप्रकाशकार वररुचि पतञ्जलि के बाद ही हुए हैं। उनका गोत्र कात्यायन हो सकता है लेकिन वे

वार्त्तिककार कात्यायन से भिन्न व्यक्तित्व एवं कृतित्व रखते हैं। वार्त्तिककार कात्यायन ने प्राकृत-व्याकरण पर कोई टीका लिखा है—इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। संस्कृत के प्रसङ्ग में कात्यायन को वार्त्तिककार के रूप में जाना जाता है जबकि ये प्राकृत के प्रथम वैयाकरण हैं। इसके विषय में ए०बी० कीथ ने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' में अपना मत दिया है—प्राकृत-प्रकाश कात्यायन की रचना है यह उसी प्रकार उप-हासास्पद है जैसे कि पाणिनि ने प्राकृत व्याकरण की रचना की है। इस प्रकार वररुचि विक्रम पाँचवी छठी शताब्दी के लगभग हुए। वररुचि पूर्व दिशा के रहने वाले प्रतीत होते हैं जिससे दाक्षिणात्य कात्यायन से इनके भेद का एक दूसरा सङ्केत मिलता है।

**निष्कर्ष**—काल, स्थान, समय तथा बहुमत से सिद्ध है कि कात्यायन तथा वररुचि अलग-अलग व्यक्ति हैं। द्वारका प्रसाद चतुर्वेदी ने संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ के परिशिष्ट में पतञ्जलि का काल १४० ई०पू० से १२० ई०पू० निश्चित किया है। कात्यायन वैदिक मुनि हैं जो पाणिनि के समकालीन हैं। कात्यायन का जन्म कौशाम्बी का है। पाणिनि ई०पू० ८०० कात्यायन ३१५ ई०पू०। (२) व्योमशेखर गौड़ पृ०-२३ बाटलिंक तथा मैक्समूलर का निष्कर्ष इन दोनों महानुभावों में सोमदेव के 'कथासरित्सागर' (११वीं शती) तथा कल्हण पण्डित की 'राजतरङ्गिणी' (१२वीं शताब्दी) के प्रमाण से कात्यायन तथा पाणिनि दोनों का समय ३५० ई०पू० निर्णीत किया गया है।

## वररुचि की कृतियाँ

इनकी कृतियाँ इस प्रकार हैं—

(१) तैत्तिरीय प्रातिशाख्य—व्याख्या (प्रकाशित)।

(२) निरुक्त-समुच्चय—इस ग्रन्थ में वररुचि ने १०० मन्त्रों की व्याख्या, नैरुक्त्य सम्प्रदायानुसार की है यह निरुक्त सम्प्रदाय का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

(३) लिङ्गविशेषविधि—ज्ञात किन्तु अनुपलब्ध।

(४) प्रयोगविधि—यह व्याकरणिक लघु ग्रन्थ है।

(५) कातन्त्र उत्तरार्ध—ज्ञात किन्तु अनुपलब्ध।

(६) प्राकृत-प्रकाश:—यह प्राकृत का व्याकरण है लेकिन प्राकृत माध्यम में न होकर संस्कृत माध्यम में है। इस कारण यह स्पष्ट और सुबोध है इसमें महाराष्ट्री, पैशाची, मागधी, शौरसेनी प्राकृत भाषा के नियत दिए हैं। इनका अनुसरण बाद के प्राकृत वैयाकरणों ने किया है।

(७) कोश—अमरकोश आदि में वररुचि के नाम से किसी कोश-ग्रन्थ के अनेक वचन

उद्धृत हैं। वररुचिकृत कोश का एक सटीक हस्तलेख मद्रास राजकीय पुस्तकालय में विद्यमान है—सूचीपत्र भाग २७ खण्ड ग्रन्थाङ्क १५६७२।

(८) उपसर्ग सूत्र—माधवनिदान की मधुकोष व्याख्या में वररुचि का एक उपसर्ग सूत्र उद्धृत है।

(९) पत्रकौमुदी—ज्ञात और अनुपलब्ध।

(१०) विद्यासुन्दर-प्रसङ्ग-काव्य—ज्ञात और अनुपलब्ध।

(११) सार-समुच्चय—इस ग्रन्थ में वररुचि ने महाभारत से आचार व्यवहार सम्बन्धी अनेक विषयों के श्लोकों का संग्रह किया है।

(१२) लिङ्गवृत्ति विचार—यह ग्रन्थ संस्कृत माध्यम में लिखा है और संस्कृत लिङ्गवृत्ति विचार है, प्राकृत सम्बन्धी नहीं।

विद्वानों में वररुचि को प्राकृत-भाषा के सम्बन्ध में अत्यन्त समादृत, सम्मानित व्यक्त हैं।

## प्राकृत-प्रकाश की टीकाएँ

सर्वाधिक लोकप्रिय टीका भामह रचित 'मनोरमा' है। अनेक विद्वज्जन मनोरमा के रचयिता भामह को अलङ्कारशास्त्र के आदिम ग्रन्थ काव्यालङ्कार के प्रणेता भामह से भिन्न व्यक्ति नहीं मानते; परन्तु यह अभिन्नता प्रमाण से पुष्ट प्रतीत नहीं होती। डॉक्टर ग्रियर्सन से पहले डॉ० पीटर्सन ने दोनों भामहों की अभिन्नता मानी थी, डॉ० पिशेल ने इसे स्वीकार किया था और डॉ० ग्रियर्सन ने इसे प्रामाणिक माना था; परन्तु डॉ० मनमोहन घोष का कथन है कि यह अभिन्नता पुष्ट आधार पर अवलम्बित नहीं है। उनका हेतु है कि अभिनवगुप्त ने नाट्यशास्त्र के १८वें अध्याय पर, जिसमें प्राकृत का वर्णन है, अपनी प्रख्यात टीका 'अभिनवभारती में न प्राकृत-प्रकाश का और न प्राकृतमनोरमा का नामोल्लेख किया है, प्रत्युत 'प्राकृतदीपिका' का निर्देश किया है, जो अज्ञात और अप्रख्यात ग्रन्थ है। भामह काश्मीरी ग्रन्थकार माने जाते हैं। यदि उनकी मनोरमा-व्याख्या उस युग में काश्मीर में प्रख्यात होती, तो अभिनव-गुप्त ने इस व्याख्या का उल्लेख अवश्य किया होता। अत: इस उल्लेख के अभाव से दोनों भामहों की अभिन्नता में सन्देह होना स्वाभाविक है।

**(१) मनोरमा**—यह प्राकृत-प्रकाश की सर्वप्राचीन टीका मानी जाती है। इसमें विशेष प्रपञ्च न कर थोड़े से शब्दों में मूल सूत्रों का रहस्य समझाया गया है। सूत्रों में गणों का निर्देश पाया जाता है और उन गणों में निविष्ट शब्दों को उल्लेख मनोरमा ने प्रथम बार करके हमारी बड़ी सहायता की है। व्याख्या में कहीं भी किसी ग्रन्थ या ग्रन्थकार का निर्देश नहीं पाया, जो मेरी दृष्टि में इसकी प्राचीनता का सूचक है। व्याख्या में शब्दों

की सिद्धि का अभाव है और इस अभाव की पूर्ति कर 'प्राकृत-सञ्जीवनी' ने प्राकृत शब्दों के विकास की दिशा का स्पष्ट उल्लेख किया है। मनोरमा की व्याख्या-शैली संस्कृत व्याकरण के व्याख्या ग्रन्थ के अनुसार है। टीका में नवीन विषयों का भी यत्र-तत्र समावेश है।

**(२) प्राकृतमञ्जरी**—इस टीका का वैशिष्ट्य पद्यबद्धता है। यह श्लोकों में ही वृत्ति तथा दृष्टान्तों को प्रस्तुत करती है। यह वृत्ति 'प्राकृतमनोरमा' का ही अनुसरण करती है; परन्तु कहीं-कहीं उसमें नवीन तथ्य भी दिये गये हैं। ४।१ सूत्र की व्याख्या में प्राकृत के सार्वभौम निमय का उल्लेख किया गया है कि संयुक्त वर्ण के उत्तर में होने पर पूर्व दीर्घ को नित्य ही ह्रस्वता प्राप्त होती है—'दीर्घस्य ह्रस्वता नित्या संयुक्तोत्तरता यदि'। इसी नियम के अनुसार 'राज्यं' का प्राकृत 'राज्जं' न होकर 'रज्जं' होता है। इसी प्रकार 'दाढादयो बहुलम् (४।३३) की व्याख्या में ग्रन्थकार स्पष्ट ही देशी शब्दों का अन्तर्भाव इस गण के भीतर स्वीकारता है—

या: सर्वलोकसामान्या: संस्कृतानन्विता गिर:।
अट्ट-भट्ट-प्रभृतयस्ताश्चाप्यत्रैव दर्शयेत्॥
संस्कृतप्रकृतित्वेन ये न सिद्ध्यन्ति केवलम्।
तेषां लक्ष्येषु शब्दानां दाढादित्वं विमृश्यताम्॥

प्राकृतमञ्जरी नवम परिच्छेद तक महाराष्ट्री की पूरी व्याख्या कर समाप्त हो जाती है और इस विषय में वह प्राकृतसञ्जीवनी का अनुसरण करती है। इसके प्रणेता का नाम कात्यायन बतलाया जाता है; परन्तु उनके देश और काल दोनों हमारे लिए अज्ञात हैं।

**(३) प्राकृतसञ्जीवनी**—प्रथम बार प्रकाश में आने वाली इस अनुपम टीका का नाम 'प्राकृतसञ्जीवनी' है। इसकी पुष्पिका से पता चलता है कि यह 'वसन्तराज' की रचना है। इस व्याख्या की प्रसिद्धि मध्ययुगीय प्राकृत वैयाकरणों तथा टीकाकारों द्वारा बहुश: निर्दिष्ट की गयी है। कर्पूरमञ्जरी की टीका में यह उल्लेख मिलता है—"तदुक्तं प्राकृतसञ्जीविन्याम्—प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनि:"।

मार्कण्डेय कवीन्द्र ने अपने 'प्राकृतसर्वस्व' के आरम्भ में अपने आधार ग्रन्थों का उल्लेख किया है, जिसमें 'वसन्तराज' के इस ग्रन्थ की ओर स्पष्ट सङ्केत है—

शाकल्य-भरत-कोहलवररुचि-भामह-वसन्तराजाद्यै:।
प्रोक्तान् ग्रन्थान् नानालक्ष्याणि च निपुणमालोक्य॥

मार्कण्डेय कवीन्द्र के आविर्भाव-काल का सङ्केत ग्रन्थ के अन्तिम पद्य से चलता है, जिसमें उत्कल के 'राजा मुकुन्ददेव' के शासनकाल में इसका निर्माण बताया गया है। दुर्भाग्यवश उड़ीसा के इतिहास में 'मुकुन्ददेव' नामक दो राजाओं का उल्लेख मिलता

है, जिनमें से एक का समय १६६४-१६९९ ई० के आस-पास सिद्ध होता है और दूसरे का समय इससे प्राचीन। प्रथमनिर्दिष्ट राजा के ही शासनकाल में मार्कण्डेय कवीन्द्र का आविर्भाव माना जाता है। पूर्वोक्त पद्य से वसन्तराज का समय मार्कण्डेय से पूर्व, १७वीं शती के उत्तरार्ध से प्राचीन होना चाहिए।

प्राकृतसञ्जीवनी के रचयिता 'वसन्तराज' का परिचय इतिहास में अनेकशः मिलता है। ये आन्ध्र देश के अन्तर्गत एक विशिष्ट मण्डल के राजा थे, जिनका नाम था 'कुमारगिरि'। इन कुमारगिरि राज या कुमारगिरि का लोक-प्रसिद्ध नाम 'वसन्तराज' था; क्योंकि वे वसन्त के उत्सवों के बड़े शौकीन थे और उन्हें बड़े समारोह के साथ अपने राज्य में मनाते थे। अवचितिप्पय सेट्टी नामक एक विशिष्ट वणिक् का काम ही यह था कि वह कुमारगिरि के वसन्त उत्सवों के लिए आवश्यक सामग्रियों को लाने का एकाधिपत्य रखता था। कुमारगिरि रेड्डी वंशीय राजा थे, जो अपने पिता अन्नपोत की १३६६ ई० में मृत्यु के समय में नाबालिग थे। अत एव वह राज्य राजा अन्नवेम, जो धर्मवेम के नाम से भी प्रख्यात थे, के अधिकार में चला गया। अन्नवेम ने १३८३ ई० तक राज्य किया और उसके बाद कुमारगिरि को गद्दी मिली, परन्तु इनका राज्यकाल केवल सात वर्षों का था और वह १४०० ई० में समाप्त हुआ। फलतः कुमारगिरि 'वसन्तराज' का अविर्भाव १४वीं शती के उत्तरार्ध में हुआ। प्राकृतसञ्जीवनी के निर्माण का यही काल है।

कुमारगिरि को साहित्य-जगत् में विशिष्ट ख्याति प्रदान करने का श्रेय 'काटयवेम भूपति' को है, जो केवल राजा के भगिनीपति ही न थे, प्रत्युत-शासन कार्य में विशेष प्रभावशाली व्यक्ति होने के कारण राजा के मन्त्री भी थे, जिनकी विशिष्ट सेवा के उपलक्ष्य में राजा ने राजमहेन्द्री का भाग उन्हें दिया था।

काटयवेम भूपति कालिदास के तीनों नाटकों की विशिष्ट व्याख्या लिखकर व्याख्याकारों में अपना महत्त्वशाली स्थान रखते हैं। ये राजा वेमभूपति की राजकन्या दोद्दम्बा से उत्पन्न, काटयभूपति के पुत्र हैं। काटयवेम भूपति ने अपने आश्रयदाता राजा के नाम पर अपनी टीकाओं का नाम 'कुमारगिरिराजीय' अथवा 'वसन्तराजीय' दिया है। १३८६-१४११ ई० तक के शिलालेखों, में शिलालेखों में इनका निर्देश पाया जाता है। इस प्रमाण से भी इनकी तथा कुमारगिरि (उपनाम वसन्तराज) की समकालीनता सुतरां सिद्ध होती है।

**व्याख्या की विशिष्टता**—प्राकृतसञ्जीवनी केवल महाराष्ट्री प्राकृत के ही परिच्छेदों की व्याख्या करती है। फलतः इसमें प्राकृतप्रकाश के आदिम ९ परिच्छेद ही उपलब्ध हैं। इतर प्राकृतों के वर्णन पर अन्तिम तीन अध्यायों की यहाँ व्याख्या नहीं है। टीका बड़ी ही प्रौढ़, विशद है तथा शब्दसाधनिका से मण्डित है। ग्रन्थकार प्रायः अपनी टीका

के बीच पद्य-खण्डों को उद्धृत करता है, जो प्राकृतप्रकाश के नियमों पर सूक्ष्म विवेचन प्रस्तुत करते हैं। इनमें उन रूपों की भी सिद्धि बतलायी गयी है जो वररुचि के सूत्रों से गतार्थ नहीं होते। एक-दो उदाहरण पर्याप्त होंगे—

**(क)** ३.३९ सूत्र 'ष्कस्कक्षां खः' संस्कृत शब्दों के इन संयुक्ताक्षरों के स्थान पर 'ख' का विधान करता है। सञ्जीवनी ने यहाँ एक सूक्ष्म नियम का उल्लेख किया है— 'स्कष्कयोरत्र खादेशो व्यवस्थितविभाषया'। अर्थात् स्क और ष्क के स्थान पर खकार का आदेश व्यवस्थित विभाषा से होता है। फलतः 'पुष्कर' के 'पोक्खर' तथा 'पोक्कर' दो रूप बनते हैं। व्यवस्थित विभाषा के हेतु कहीं यह परिवर्तन होता ही नहीं जिससे 'संस्कृत' शब्द का प्राकृत-रूप खकारविहीन ही होता है—**सक्कअं**।

**(ख)** ३.६४ सूत्र 'उः पद्मतन्वीसमषु' के द्वारा पद्म तथा तन्वी को सदृश संयुक्ताक्षरों का विप्रकर्ष होता है तथा पूर्व को उकारादेश होता है जिससे 'पउमं' बना। इस सूत्र की व्याख्या में व्याख्याकार 'द्वार' शब्द के विषय में एक नवीन तथ्य उपस्थित करता है—'द्वारे वा दवयोर्लोपस्तदविकर्ष इति त्रिधा'। दलोप से 'वारं', वलोप से 'दारं' तथा विकर्ष होने से 'दुआरं' बनता है। इस प्रकार संस्कृत 'द्वार' के प्राकृत में ये तीन रूप बनते हैं।

**(ग)** प्राकृतप्रकाश के तीन सूत्रों ४.१८-२० में लिङ्गविपर्यास का उदाहरण दिया गया है; परन्तु वसन्तराज इस तथ्य को इन शब्दों तक ही सीमित न मानकर व्यापक बतलाते हैं जिससे संस्कृत पुंल्लिङ्ग 'गुण' शब्द तथा 'बिन्दु' शब्द प्राकृत में नपुंसक हो जाते हैं (गुणाइँ तथा बिन्दूइं)। आशय यह है कि प्राकृत शब्दों के लिङ्ग संस्कृत मूल के लिङ्गों का अनुसरण नहीं करते। लिङ्ग के विषय में प्राकृत शब्दों में उतनी कड़ाई नहीं है, जितनी संस्कृत शब्दों में।

**(घ)** वररुचि के अनुसार महाराष्ट्री में 'क्त्वा' प्रत्यय के स्थान पर 'तूण' होता है। हन्तूण = हत्वा। इस सूत्र (४।२३) पर वसन्तराज ने अनेक नवीन तथ्यों का उल्लेख कर नूतन रूपों को सिद्ध किया है। 'क्त्वा' का 'उआण' होता है—'क्वापि क्त्वाप्रत्ययादेशे उआण इत्यपीष्यते'। जिससे 'गृहीत्वा' का 'घेत्तूण' के सङ्ग में 'घेतुआण' रूप भी बनता है; परन्तु सञ्जीवनी एक विचित्र नियम निर्दिष्ट करती है, जिससे 'क्त्वा' का 'वा' उं में परिवर्तित हो जाता है, जिसके अनुसार 'दृष्ट्वा' की जगह प्राकृत में 'दट्ठुं' रूप भी निष्पन्न होता है।

**(ङ)** प्राकृतप्रकाश 'स्वार्थे को वा' (४।२६) के अनुसार स्वार्थ में 'क' प्रत्यय का विधान विभाषया मानता है। इस विषय में सञ्जीवनी 'ड' प्रत्यय का तथा तदुपरि 'क' प्रत्यय का विधान बतलाती है—'स्वार्थे कः स्यात् डकारोऽपि को वा तस्मादपि स्मृतः'।

जिससे 'पुत्रः' प्राकृत में 'पुत्तो, पुत्तडो' तथा 'पुत्तडओ' इन तीन रूपों को प्राप्त कर लेता है।

**(च)** इसी प्रकार 'दाढादयो बहुलम्' (४।३५) की व्याख्या में प्राकृतसञ्जीवनी अनेक देशी शब्दों की विस्तृत सूची प्रस्तुत करती है। वसन्तराज प्राकृत की संस्कृत से भिन्नता प्रदर्शनवाला एक महत्त्वपूर्ण पद्य उद्धृत करते हैं, जो संस्कृत से पार्थक्य का उल्लेख बड़ी स्पष्टता तथा विशदत्ता से करता है।

निष्कर्ष यह है कि प्राकृतसञ्जीवनी प्राकृत-प्रकाश की नितान्त महनीय, प्रामाणिक तथा नवीन तथ्याविष्कारिणी व्याख्या है—इस विषय में सन्देह के लिए स्थान नहीं है।

## मनोरमा और प्राकृतसञ्जीवनी में अन्तर

भामह तथा वसन्तराज के द्वारा व्याख्यात सूत्रों में पर्याप्त भेद है—उनके स्वरूप में और कहीं-कहीं व्याख्यान में भी। सूत्रपाठ की तुलना एक पृथक् अनुसन्धेय विषय है। नमूने के तौर पर कुछ सूत्र नीचे दिये जा रहे हैं—

**(क)** मनोरमा में भामह के अनुसार मकार को बिन्दु में परिवर्तन के लिए दो सूत्र हैं—'मो बिन्दुः' (४।१२) तथा 'अचि मश्च' (४।१३)। प्राकृतसञ्जीवनी के अनुसार ४।१३ एक लम्बा सूत्र है, जो पूर्वोक्त सूत्रों को गतार्थ करके नया तथ्य बतलाता है। सूत्र है—'मो बिन्दुः', 'अचि वा', 'अलोपश्च' जो वसन्तराज के अनुसार तीन सूत्रों को अपने में समेटने वाला एक ही सूत्र है। फलतः दोनों व्याख्याओं में भिन्नता है।

**(ख)** ४।१७ सूत्र का पाठ दोनों में भिन्न है। भामह के अनुसार—'ययि तद्वर्ग्यान्तः'। वसन्तराज के अनुसार—'कपि तद्वर्ग्यान्तः'। 'यय्' पाणिनीय प्रत्याहार है। 'कप्' कवर्ग से लेकर पवर्ग तक का द्योतक कल्पित प्रत्याहार है, जो पाणिनि से विरुद्ध, नितान्त अपाणिनीय है।

**(ग)** ४।३० सूत्र का भामह की व्याख्या में पाठ है—'बृहस्पतौ बहोर्भऔ' जिससे 'बृहस्पति' शब्द प्राकृत में 'भअप्फई' बनता है। ४।३२ सूत्र का एतद्विषयक पाठ प्राकृतसञ्जीवनी में है—बृहष्पतौ बहोः। व्याख्या के अनुसार पूरा पाठ होगा—'बृहस्पतौ बहोर्भपौ' जिससे बनेगा 'भपप्फई'। प्राकृत शब्दों में दोनों के अनुसार भेद है।

**(४) सुबोधिनी**—यह लघ्वक्षरा व्याख्या 'प्राकृतसञ्जीवनी' के आधार पर निर्मित की गयी। इसके निर्माता का नाम 'सदानन्द' है। इनके देशकाल का परिचय नही मिलता। इसकी हस्तलिखित प्रति 'सरस्वतीभवन' पुस्तकालय में उपलब्ध है। इस ग्रन्थ के अन्त में यह उल्लेख मिलता है जो समय का सङ्केतक माना जा सकता है—

वृत्तौ प्राकृतसूत्राणां सदानन्दस्य निर्मितौ।
परिच्छेदः सुबोधिन्यां निपातविधिरष्टमः॥

श्रीसंवत् १७८९ समये आषाढशुक्लाष्टम्यां सोमे रघुनाथेन लिखितेयम् ।

इस हस्तलेख का समय वि०सं० १७८९ ( = १७३२ ई०) है । अतः ग्रन्थ के निर्माण का काल इसके पूर्व होना निश्चित है । सुबोधिनी सञ्जीवनी का संक्षिप्त रूप है । फलतः सदानन्द सञ्जीवनीकार वसन्तराज से अर्वाचीन हैं । इसलिए इसका समय १५ शती तथा १७ शती के मध्य में कभी मानना समुचित प्रतीत होता है ।

इन व्याख्याओं के अतिरिक्त रामपाणिवाद की व्याख्या दक्षिण से प्रकाशित हुई है । ग्रन्थकार केरली प्रतीत होता है और विशेष प्राचीन नहीं जान पड़ता । इन प्रकाशित प्राचीन टीकाओं से अतिरिक्त भी टीकाएँ हैं । जो 'प्राकृतप्रकाश' की विपुल लोकप्रियता की सूचिका हैं; परन्तु इस संस्करण की चारों ही व्याख्याएँ महत्त्वशालिनी, प्रामाणिक तथा प्रमेयपूर्ण हैं ।

।। ॐ मङ्गलमूर्तये नमः।।

श्रीवररुचिप्रणीतः

# प्राकृत-प्रकाशः

'मनोरमा' वृत्त्युपेतः 'शशिप्रभा' हिन्दी-व्याख्यासमन्वितश्च

## प्रथमः परिच्छेदः

## ( स्वरविधानम् )

### ( वृत्तिकारकृतमङ्गलाचरणम् )

**जयति मदमुदितमधुकरमधुररुताकलनकूजितापाङ्गः ।**
**करविहितगण्डकण्डूबिनोदसुखितो गजाधिपतिः ।।१।।**

**अनुवाद**—मस्ती के कारण प्रसन्न भ्रमरों के मधुर गुञ्जार की अभिलाषा से शब्दायमान (ध्वनित) नेत्रों के प्रान्तभाग वाले और शुण्ड में होने वाली कपोलों की खुजली के दूर होने से सुखी गजाधिपति (गणेश) की जय होवे।।१।।

**वररुचिविरचितप्राकृतलक्षणसूत्राणि लक्ष्यमार्गेण ।**
**बुद्ध्वा चकार वृत्तिं संक्षिप्तां भामहः स्पष्टाम् ।।२।।**

**अनुवाद**—आचार्य वररुचि द्वारा विरचित प्राकृत के लक्षण (प्राकृत-प्रकाश) के सूत्रों को समझकर लक्ष्य (उदाहरण) के सहित संक्षिप्त और स्पष्ट वृत्ति को भामह ने किया है।।२।।

## आदेरतः।।१।।

**पदच्छेद**—आदेः । अतः ।

**पदार्थ**—आदेः = आदि वाले । अतः = अकार (अत्) के ।

**सूत्र-अनुवाद**—(आगे जो विधान किया जाएगा, वह परिच्छेद समाप्ति तक) आदि वाले (स्वर) के (स्थान पर होगा) और (१.९ तक) अकार के (स्थान पर होगा)।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयम् । यदित उद्ध्र्वमनुक्रमिष्याम आदेरतः स्थाने तद्भव-**

**तीत्येवं वेदितव्यम्। आदेरित्येतदाऽऽपरिच्छेदसमाप्तेः। अत इति च आकार-विधानत्। अत इत तकारग्रहणं सवर्णनिवृत्त्यर्थम्॥१॥**

**व्याख्या**—यह अधिकार सूत्र है। इस सूत्र के 'आदेः' पद का सम्बन्ध परिच्छेद के सभी सूत्रों के साथ है। इस परिच्छेद में विहित सभी कार्य पद के प्रारम्भ में रहने वाले स्वर के स्थान पर होते हैं। तथा 'अदातो यथादिषु वा' (१.९) तक विहित कार्य पद के आदि वाले अकार के स्थान पर होता है।

## आ समृद्ध्यादिषु वा॥२॥

**पदच्छेद**—आ। समृद्धि-आदिषु। वा।

**पदार्थ**—समृद्धि-आदिषु = समृद्धि इत्यादि (पदों) में। वा = विकल्प से। आ = आकार।

**सूत्र अनुवाद**—समृद्धि इत्यादि (पदों) में विकल्प से (आदि वाले अकार के स्थान पर) आकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—समृद्धि—इत्येवमादिषु शब्देष्वादेरकारस्याकारो भवति वा। समिद्धी सामिद्धी (१-२८ ऋ = इ, ३-१ दलोपः, ३-५० धद्वित्वम्, ३-५१ ध = द्, ५-१८ दीर्घः)। पअडं, पाडअं (३-३ रलोपः, २-२ कलोपः, २-२० ट् = ड्, ५.३० बिन्दुः)। अहिजाई, अहिजाई (२-२७ भ् = ह्, २-२ तलोपः, ५-१८ दीर्घः)। मणंसिणी, माणंसिणी (२-४२ न् = ण् ४.१५ बिन्दुः, ३.३ वलोपः, २.४२ न् = ण्)। पडिवआ, पाडिवआ (३-३ र्लोपः, २-१५ प् = व्, = २-२ द्लोपः)। सरिच्छं, सारिच्छं (१-३१ ऋ = रि, २-२ द्लोपः, ३-३० क्ष् = च्छ्, ५-३० बिन्दुः)। पडिसिद्धी, पाडिसिद्धी (३-३ र्लोपः, २-४३ ष = स्, ३-१ द्लोपः, ३-५० द्वित्वम्, ३-५१ ध् = द्, ५-१८ दीर्घः)। पसुत्तं, पासुत्तं (३-३ र्लोपः, ३-१ प्लोपः ३-५० त्द्वित्वम्, ५.३० बिन्दुः)। पसिद्धी, पासिद्धी (३-३ र्लोपः, २-२ द्लोपः, ३-५० ध्द्वित्वम्, ३-५१ ध् = द्, ५-१८ दीर्घः)। अस्सो, आसो (२-४३ श् = स्, ३-३ व्लोपः, ३.५८ द्वित्वम्, ५-१ ओ)। समृद्धिप्रकटाभिजातिमनस्विनीप्रतिपदासदृक्षप्रतिषिद्धिप्र-सुप्तप्रसिद्ध्यश्वाः। आकृतिगणोऽयम्॥२॥**

**व्याख्या**—'समृद्धि' इत्यादि पदों के आदि वाले अकार के स्थान पर आकार होने के विषय में विकल्प है। विकल्प का तात्पर्य है कि उस अकार के स्थान पर कभी आकार होता है और कभी नहीं होता है। जैसे—

१. **समृद्धिः**—(१.२८) से ऋकार के स्थान पर इकार–समिद्धिः। ३.१ से दकार का लोप-समिधि, ३.५० से धकार का द्वित्व-समिध्धि, ३.५१ पूर्ववर्ती धकार का

दकार-समिद्ध्रि। ५.१८ से अन्त्य इकार के स्थान पर ईकार–समिद्धी। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार का आकार–**सामिद्धी**। पक्ष में–**समिद्धी**।

२. **प्रकटम्**—३.३ से रेफ का लोप-पकटम्। २.२ से ककार का लोप-पअटम्। २.२० से टकार के स्थान पर डकार–पअडम्। ५.३० से मकार के स्थान पर अनुस्वार–पअडं। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर आकार–**पाअडं**। पक्ष में–**पअडं**।

३. **अभिजातिः**—२.२६ से भकार के स्थान पर हकार–अहिजातिः। २.२ से तकार का लोप–अहिजाइ। ५.१८ से अन्त्य इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप–अहिजाई। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान के स्थान पर आकार–**आहिजाई**। पक्ष में–**अहिजाई**।

४. **मनस्विनी**—२.४२ से दोनों नकार के स्थान पर णकार–मणस्विणी। ४.१५ से प्रथम णकार के बाद अनुस्वारामम–मणंस्विणी। ३.३ से वकार का लोप–मणंसिणी। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर आकार–**माणंसिणी**। पक्ष में–**मणंसिणी**।

५. **प्रतिपद्**—३.३ से रेफ का लोप-पतिपद्। २.८ से तकार के स्थान पर डकार-पडिपद्। २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-पडिवद्। २.६ से दकार का आकार–पडिवआ। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार का आकार–**पाडिवआ**। पक्ष में-**पडिवआ**।

६. **सदृक्षम्**—१.३१ से ऋ के स्थान पर रि-सद्रिक्षम्। २.२ से दकार का लोप-सरिक्षम्। ३.३ से क्ष के स्थान पर च्छ-सरिच्छम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-सरिच्छं। प्रस्तुत सूत्र से आदि आकार के स्थान पर आकार–**सारिच्छं**। पक्ष में–**सरिच्छं**।

७. **प्रतिषिद्धिः**—३.३ से रेफ का लोप-पतिषिद्धिः। २.८ से तकार के स्थान पर डकार-पडिषिद्धि। २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-पडिसिद्धिः। ३.१ से दकार का लोप-पडिसिधि। ३.५० से धकार का द्वित्व-पडिसिध्धि। ३.५१ से पूववर्ती धकार के स्थान पर दकार-पडिसिद्धिः। ५.१८ से अन्त्य इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-पडिसिद्धी। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर आकार–**पाडिसिद्धी**। पक्ष में–**पडिसिद्धी**।

८. **प्रसुप्तम्**—३.३ से रेफ का लोप-पसुप्तम्। ३.१ से द्वितीय पकार का लोप-पसुतम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-पसुत्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-पसुत्तं। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार का आकार–**पासुत्तं**। पक्ष में–**पसुत्तं**।

९. **प्रसिद्धिः**—३.३ से रेफ का लोप-पसिद्धिः । २.२ से दकार का लोप-पसिधि । ३.५० से धकार का द्वित्व-पसिध्धिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-पसिद्धिः । ५.१८ से अन्त्य इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से विभक्ति लोप–पसिंद्धी । प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर आकार–**पासिद्धी** । पक्ष में–**पसिद्धी** ।

१०. **अश्वः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-अस्वः । ३.३ से वकार का लोप-असः । प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर आकार-**आसः** । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–आसो । पक्ष में ३.५ से सकार का विकल्प से द्वित्व-**अस्सो** ।

**विशेष**—इस प्रकार के अन्य पदों को भी इसी प्रकार समझ लेना चाहिए । इस ग्रन्थ के व्याख्याकार सहानन्द श्वश्रूः = सासू, वर्षशतम् = वाससानं, वर्षा-रात्रम् = वासारत्तं, प्रस्विन्नः = पासिणो इत्यादि पदों में नित्य आकार होने का आदेश मानते हैं।

## इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गारेषु ।। ३ ।।

**पदच्छेद**—इत् । ईषत्-पक्व-स्वप्न-वेतस-व्यजन-मृदङ्ग-अङ्गरेषु ।

**पदार्थ**—ईषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गाङ्गारेषु = ईषत्, पक्व, स्वप्न, वेतस, व्यजन, मृदङ्ग और अङ्गार में । इत् = इकार ।

**सू०अ०**—ईषत्, पक्व, स्वप्न, वेतस, व्यजन, मृदङ्ग और अङ्गार-इन (पदों) में (आदिवाले अकार के स्थान पर) इकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ईषदादिषु शब्देषु आदेरतः स्थाने इकारादेशो भवति । वेति निवृत्तम् । इसि' (४-१ ई = इ, २-४३ ष् = स्, ४-६ अन्त्यलोपः) । पिक्कं (३-३ वृलोपः, ३-५० क्द्वित्वम्, ५-३० बिन्दुः)। सिविणो (३-३ वृलोपः, ३-६२ विप्रकर्ष इकारता च, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ) । वेडिसो (२-८ त् = ड्, ५-१ ओ)। वअणो (३-२ यूलोपः, २-२ जूलोपः, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। मिइङ्गो (१-२८ ऋ = इ, ४-१७ बिन्दुः, २-२ दूलोपः, ५-१ ओ)। इङ्गालो (४-१७ बिन्दुः, २-३० र् = ल्, ५-१ ओ) ।।३।।**

**व्याख्या**—इस विधान के साथ १.१ अधिकार सूत्र सम्बद्ध है। इस प्रकार ईषत्, पक्व, स्वप्न, वेतस, व्यजन, मृदङ्ग और अङ्गार-इन पदों के आदि वाले अकार के स्थान पर इकार होने का विधान किया गया है। यह इकार नित्य होता है। इस विषय में विकल्प नहीं है । जैसे—

१. **ईषत्**—४.१ से ई के स्थान पर इ-इषत्। २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-इसत्। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-इस। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर इकार–**इसि**।

२. **पक्वम्**—प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर इकार-पिक्वम्। ३.३ से वकार का लोप-पकम्। ३.५० से ककार का द्वित्व+पिक्कम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पिक्कं**।

३. **स्वप्नः**—प्रस्तुत सूत्र से आदि अकारं के स्थान इकार-स्विप्नः। ३.३ से वकार का लोप-सिप्नः। ३.६२ से विप्रकर्ष होने से पकार तथा नकार का विभाजन तथा विभाजित पूर्ववर्तीवर्ण के साथ इकार का होना-सिपिनः। २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-सिविनः। २.४२ से नकार का णकार-सिपिणः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सिविणो**।

४. **वेतसः**—प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर इकार-वेतिसः। २.८ से तकार के स्थान पर डकार-वेडिसः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वेडिसो**।

५. **व्यजनः**—प्रस्तुत सूत्र के आदि अकार के स्थान पर इकार व्यिजनः। ३.२ से यकार का लोप-विजनः। २.२ से जकार का लोप-विअनः। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-विअणः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**विअणो**।

६. **मृदङ्गः**—१.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-मिदङ्गः। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर इकार-मिदिङ्गः। ४.१७ से ङकार अनुस्वार-मिदिंगः। २.२ से दकार का लोप-मिइंगः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मिइंगो**।

७. **अङ्गारः**—प्रस्तुत सूत्र से अकर के स्थान पर इकार-इङ्गारः। ४.१७ से ङकार का अनुस्वार-इंगारः। २.३० से रेफ के स्थान पर लकार-इंगालः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**इंगालो**।

## लोपोऽरण्ये ।।४।।

**पदच्छेद**—लोपः। अरण्ये।

**पदार्थ**—अरण्ये = अरण्य में। लोपः = लोप।

**सू०अ०**—अरण्य (पद) में (आदि वाले अकार का लोप) (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अरण्यशब्दे आदेरतो लोपो भवति। रण्णं (३-२ यलोपः,**

**३-५० द्वित्वम्, ५.३० बिन्दुः) ।।४।।**

**व्याख्या**—१.१ से यहाँ भी अधिकार होने के कारण आदि वाले अकार का ग्रहण होता है। अरण्य-इस पद में आदि वाले अकार का लोप हो जाता है। जैसे—

१. **अरण्यम्**—यहाँ प्रस्तुत सूत्र से अरण्यम् के आदि अकार का लोप-रण्यम् । ३.२ से यकार का लोप-रणम् । ३.५० से णकार का द्वित्व-रण्णम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**रण्णं** ।

## ए शय्यादिषु ।।५।।

**पदच्छेद**—ए । शय्या-आदिषु ।

**पदार्थ**—शय्यादिषु = शय्या इत्यादि (पदों) में । ए = एकार ।

**सु० अ०**—शय्या-इत्यादि (पदों) में (आदि वाले अकार के स्थान पर) एकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—शय्या इत्येवमादिपु शब्देपु आदेरत एकारादेशो भवति । सेज्जा (२-४३ श् = स्, ३-१७ य्य् = ज्, ३-५० द्वित्वम्)। सुन्देरं (४-१७ बिन्दुः, १-४४ औ = उ, ३-१८ र्य् = र्, ५-३० बिन्दुः)। उक्केरो (३-१ त्लोपः, ३-५० द्वित्वम्, ५-१ ओ) । तेरहो (३-३ र्लोपः, २-२ य्लोपः, ४-१ ओलोपः, २-१४ द् = र्, २-४४ श् = ह्, ५-१ ओ) । अच्छेरं (४-१ आ = अ, ३-४० श्च् = छ्, ३-५० छद्वित्वम्, ३-५१ छ् = च्, ३-१८ र्य् = र्, ५-३० बिन्दुः) । पेरन्तं (३-१८ र्य् = र्, ५-३० बिन्दुः) । वेल्ली (३-३ ल्लोपः, ३-५० द्वित्वम्) शय्यासौन्दर्योत्करत्रयोदशाश्चर्यपर्यन्त-वल्ल्यः ।।५।।**

**व्याख्या**—शय्या इत्यादि (पदों) में आदि वाले अकार के स्थान पर एकार हो जाता है। जैसे—

१. **शय्या**—प्रस्तुत सूत्र से आदि वाले अकार के स्थान पर एकार-शेय्या । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सेय्या।३.१७ से य्य् के स्थान पर ज्-सेजा । ३.५० से जकार का द्वित्व-**सेज्जा** ।

२. **सौन्दर्यम्**—१.४४ से औकार के स्थान पर उकार-सुन्दर्यम् । प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर एकार-सुन्देर्यम् । ४.१७ से नकार का अनुस्वार-सुंदर्यम् । ३.१८ से र्य् के स्थान पर र्-सुंदेरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार- **सुंदेरं** ।

३. **उत्करः**—३.१ से तकार का लोप-उकरः । ३.५० से ककार का द्वित्व-

उक्करः। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर एकार-उक्केरः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप-**उक्केरो**।

४. **आश्चर्यम्**—४.१ से आकार के स्थान पर अकार-अश्चर्यम्। ३.४ से श्च के स्थान पर छ-अछर्यम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-अछ्छर्यम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान चकार-अच्छर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर एकार अच्छेर्यम्। ३.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-अच्छेरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**अच्छेरं**।

५. **पर्यन्तम्**—प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर एकार-पेर्यन्तम्। ३.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-पेरन्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पेरन्तं**।

६. **त्रयोदशः**—प्रस्तुत सूत्र से आदि अकार के स्थान पर एकार-त्रेयोदशः ३.३ से रेफ का लोप-तेयोदश। २.२ से यकार का लोप-तेओदशः।४.१ से ओकार लोप-तेदशः। २.१४ से दकार के स्थान पर रेफ-तेरशः २.४४ से शकार के स्थान हकार-तेरहः। ५.१ से सु के साथ अकार के स्थान पर ओकार-**तेरहो**।

७. **वल्ली**—प्रस्तुत सूत्र के आदि अकार के स्थान पर एकार-**वेल्ली**।

## ओ बदरे देन ।।६।।

**पदच्छेद**—ओ। बदरः। देन।

**पदार्थ**—बदरः = बदरः। देन = दकार के साथ। ओ = ओकार।

**सू०अ०**—बदर (पद के) दकार के साथ (आदि वाले अकार के स्थान पर) ओकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—बदरशब्दे दकारेण सहादेरत ओत्वं भवति। बोरं (५-३० बिन्दुः) ।।६।।**

**व्याख्या**—१.१ इस अधिकार सूत्र से 'आदि वाले अकार के स्थान पर' का यहाँ ग्रहण होता है। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है—बदरः पद के दकार के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार हो जाता है। जैसे—

१. **बदरम्**—प्रस्तुत सूत्र से दकार के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार-बोरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**बोरं**।

## लवणनवमल्लिकयोर्वेन ।।७।।

**पदच्छेद**—लवणनवमल्लिकयोः। वेन।

**पदार्थ**—लवणनवमल्लिकयोः = लवण और नवमल्लिका में। वेन = वकार के साथ।

**सू०अ०**—लवण और नवमल्लिका (इन पदों) में वकार के साथ (आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—लवणनवमल्लिकयोरादेरतो वकारेण सह ओकारः स्यात्। लोणं (५-३० बिन्दुः)। णोमल्लिआ (२-४२ न्= ण्, २-२ क्लोपः)।।७।।**

**व्याख्या**—लवण और नवमल्लिका–इन पदों में वकार के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार हो जाता है। जैसे—

१. **लवणम्**—प्रस्तुत सूत्र से वकार के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार–लोणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**लोणं**।

२. **नवमल्लिका**—प्रस्तुत सूत्र से वकार के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार--नोमल्लिका। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णोमल्लिका। २.२ से ककार का लोप–**णोमल्लिआ**।

## मयूरमयूखयोर्य्वा वा ।।८।।

**पदच्छेद**—मयूरमयूखयोः। य्वा। वा।

**पदार्थ**—मयूरमयूखयोः = मयूर और मयूख में। य्वा = यू के साथ। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—मयूर और मयूख–(इन पदों) में यू के साथ (आदि वाले अकार के स्थान पर) विकल्प से (ओकार होता है)।

**वृत्तिः—मयूर मयूख इत्येतयोर्यूशब्देन सहादेरत ओत्वं वा भवति। मोरो, मऊरो ५-१ ओ)। मोहो, मऊहो। (२-२७ ख्= ह्, ५-१ ओ) उभयत्र, (पक्षे २-२ यलोपः) ।।८।।**

**व्याख्या**—मयूर और मयूख इन पदों में यू के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर विकल्प से ओकार होता है। विकल्प से कहने से कभी होता है और कभी नहीं होता है। जैसे—

१. **मयूरः**—प्रस्तुत सूत्र के अनुसार यू के साथ आदि अकार के स्थान पर ओकार–मोरः। ५.१ से विसर्ग के सहित अकार के स्थान पर ओकार-मोरो। पक्ष में-२.२ से यकार का लोप-मऊरः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मऊरो**।

२. **मयूखः**—प्रस्तुत सूत्र से यू के साथ आदि अकार के स्थान पर ओकार–मोखः।२.२७ से खकार के स्थान पर हकार-मोहः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप-मोहो। पक्ष में-२.२ से यकार लोप-मऊखः।

२.२७ से खकार के स्थान पर हकार-मऊहः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मऊहो**।

## चतुर्थीचतुर्दश्योस्तुना ।।९।।

**पदच्छेद**—चतुर्थीचतुर्दश्योः। तुना।

**पदार्थ**—चतुर्थीचतुर्दश्योः = चतुर्थी और चतुर्दशी में। तुना = तु के साथ।

**सू०अ०**—चतुर्थी और चतुर्दशी (इन पदों) में तु के साथ आदि वाला अकार विकल्प से ओकार हो जाता है।

**वृत्तिः—एतयोस्तुना सहादेरत ओत्वं भवति वा। चोत्थी, चउत्थी (३-३ र्लोपः, ३-५० थ्द्वित्वं, ३-५१ थ् = त्, पक्षे २-२ तलोपो विशेषः)। चोद्दही, चउद्दही (२-४४ श् = ह्, शेषं पूर्ववत्) ।।९।।**

**व्याख्या**—चतुर्थी और चतुर्दशी–इन दोनों पदों में तु के साथ आदि वाला अकार विकल्प से ओकार हो जाता है। जैसे—

१. **चतुर्थी**—प्रस्तुत सूत्र से तु के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार-चोर्थी। ३.३ से रेफ का लोप-चोथी। ३.५० से थकार का द्वित्व-चोथ्थी। ३.५१ से पूववर्ती यकार के स्थान पर तकार-चोत्थी। पक्ष में-२.२ से तकार का लोप-चउर्थी। ३.३ से रेफ का लोप-चउथी।३.५० से थकार का द्वित्व-चउथ्थी। ३.५.१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर तकार-**चउत्थी**।

२. **चतुर्दशी**—प्रस्तुत सूत्र से तु के साथ आदि वाले अकार के स्थान पर ओकार-चोर्दशी। ३.३ से रेफ का लोप–चोदशी। ३.५० से दकार का द्वित्व-चोद्दशी। २.४४ से शकार के स्थान पर हकार–**चोद्दही**। पक्ष में-२.२ से तकार का लोप-चउर्दशी। ३.३ से रेफ का लोप–चोदही। ३.५० से दकार का द्वित्व-चउद्दशी। २.५४ से शकार के स्थान पर हकार–**चउद्दही**।

## अदातो यथादिषु वा ।।१०।।

**पदच्छेद**—अत्। आतः। यथा--आदिषु।

**पदार्थ**—यथादिषु = यथा आदि (पदों) में। आतः = आकार के स्थान पर। अत् = अकार।

**सू० अ०**—यथा आदि (पदों) में (आदि अथवा अनादि) आकार के स्थान पर (विकल्प से) अकार (होता हैं)।

**वृत्तिः—अत इति निवृत्तम्, स्थान्यन्तरनिर्देशात्। यथा इत्येमवादिषु आतः**

**स्थाने अकारादेशो भवति वा। जह, जहा। तह, तहा। (२-२७ थ् = ह्)। पत्थरो, पत्थारो (३-३ रलोपः, ३-१२ स्त् = थ्, ३-५० थ्द्वित्वम्, ३-५१ थ् = त्, ५-१ ओ)। पउअं पाउअं (३-३ र्लोपः, १-२९ ऋ = उ, २-२ कतयोर्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। तलवेण्टअं, तालवेण्टअं (१-२८ ऋ = इ, १-१२ इ = ए, ३-४५ न्त = ण्ट, २-२ क्लोपः, ५.३० बिन्दुः)। उक्खअं, उक्खाअं (३.१ त्लोपः, ३-५० ख्द्वि०, ३-५१ ख् = क्, २-२ त्लोपः, ५.३० से बिं०)। चमरं, चामरं (५-३० बिं०) पहरो, पहारो (३-३ र्लोपः, ५-१ ओ)। चडु, चाडु (२-२० ट् = ड्)। दवग्गी, दावग्गी (३-२ न्लोपः, ३.५० गद्वित्वम्, ५-१८ दीर्घः)। खइअं, खाइअं (२-२ द्लोपः त्लोपश्च, ५-३० बिं०)। संठविअं, संठाविअं। (८-२६ स्था = ठा, ३-५६ द्वित्वनिषेधः, २-१५ प् = व्, २-२ तलोपः, ५-३० बिं०)। हलिओ, हालिओ (२-२ क-लोपः, ५-१ ओ)। यथातथाप्रस्तारप्राकृततालवृन्तकोत्खातचामरप्रहारचाटुदावाग्नि-खादितसंस्थापितहालिकाः।।१०।।**

**व्याख्या**—यथा आदि पदों में आदि वाले अथवा आदि में न होने पर भी आकार के स्थान पर विकल्प से अकार हाता है। जैसे—

१. **यथा**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जथा। २.२६ से थकार के स्थान पर हकार-जहा। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**जह**। पक्ष में-**जहा**।

२. **तथा**—२.२६ से थकार के स्थान पर हकार-तहा। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**तह**। पक्ष में-**तहा**।

३. **प्रस्तारः**—३.३ से रेफ का लोप-पस्तारः। ३.१२ से 'स्त' के स्थान पर थकार-पथारः। ३.५० से थकार का द्वित्व-पथ्थारः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-पत्थारः। ५.१ से सु के साथ अकार के स्थान पर ओकार-पत्थारो। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**पत्थरो**। पक्ष में-**पत्थारो**।

४. **प्राकृतम्**—३.३ से रेफ का लोप-पाकृतम्। १.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-पाकुतम्। २.२ से ककार और तकार का लोप-पाउअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-पाउअं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**पउअं**। पक्ष में-**पाउअं**।

५. **तालवृन्तकम्**—१.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-तालविन्तकम्। १.१२ से इकार के स्थान पर एकार-तालवेन्तकम्। ३.४५ से 'न्त्' के स्थान पर 'ण्ट'-तालेवेण्टकम्। २.२ से ककार का लोप-तालवेण्टअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-तालवेण्टअं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**तल-वेण्टअं**। पक्ष में-**तालवेण्टअं**।

६. **उत्खातम्**—३.१ से पूर्ववर्ती तकार का लोप-उखातम्। ३.५० से खकार का द्वित्व-उख्खातम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार के स्थान पर ककार-उक्खातम्। २.२ से तकार का लोप-उक्खाअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-उक्खाअं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**उक्खअं**। पक्ष में-**उक्खाअं**।

७. **चामरम्**—५.३० से मकार का अनुस्वार-चामरं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**चमरं**। पक्ष में-**चामरं**।

८. **प्रहारः**—३.३ से पूर्ववर्ती रेफ का लोप-पहारः। ५.१ से सु के साथ अकार के स्थान पर ओकार-पहारो। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**पहरो**। पक्ष में-**पहारो**।

९. **चाटु**—२.२० से टकार के स्थान पर डकार-चाडु। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**चडु**। पक्ष में-**चाडु**।

१०. **दावाग्निः**—३.२ से नकार का लोप-दावागिः। ३.५० से गकार का द्वित्व-दावाग्गिः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से विभक्ति लोप-दावाग्गी। प्रस्तुत से आकार के स्थान पर अकार-**दवग्गी**। पक्ष में-**दावग्गी**।

११. **खादितम्**—२.२ से दकार तथा तकार का लोप-खाइअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-खाइअं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**खइअं**। पक्ष में-**खाइअं**।

१२. **संस्थापितम्**—८.२६ से 'स्था' के स्थान में 'ठा'-संठापितम्। ३.५० से ठकार के द्वित्व होने का निषेध-संठापितम्। २.१५ से पकार का वका-संठावितम्। २.२ से तकार का लोप-संठाविअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-संठाविअं। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**संठविअं**। पक्ष में-**संठाविअं**।

१३. **हालिकः**—२.२ से ककार का लोप-हालिअः। ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप-हालिओ। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर अकार-**हलिओ**। पक्ष में-**हालिओ**।

## इत्सदादिषु ॥११॥

**पदच्छेद**—इत्। सदा-आदिषु।

**पदार्थ**—सदादिषु = सदा इत्यादि (पदों) में। इत् = इकार।

**सू०अ०**—सदा इत्यादि (पदों) में (आदि अथवा अनादि आकार के स्थान पर विकल्प से) इकार (होता है)।

**वृत्तिः—सदा इत्येवमादिष्वात इकारो भवति वा। सइ, सआ (२-२ दूलोपः, एवमग्रियेष्वपि)। तइ, तआ। जइ, जआ। सदा, तदा, यदा।।११।।**

**व्याख्या**—सदा इत्यादि पदों में आदि अथवा अनादि आकार के स्थान पर इकार होता है। यह विधान भी विकल्प वाला है। कभी इकार होता है और कभी नहीं भी होता हैं।

१. **सदा**—२.२ से दकार का लोप-सआ। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर इकार-**सइ**। पक्ष में-**सआ**।

२. **तदा**—२.२ से दकार का लोप-तआ। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर इकार-**तइ**। पक्ष में-**तआ**।

३. **यदा**—२.३१ से यकार का जकार-जदा। २.२ से दकार का लोप-जआ। प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर इकार-**जइ**। पक्ष में-**जआ**।

## इत एत् पिण्डसमेषु।।१२।।

**पदच्छेद**—इतः एत् पिण्डसमेषु।

**पदार्थ**—पिण्डसमेषु = पिण्ड (पद) के समान (पदों) में। इतः = इकार के स्थान पर। एत् = एकार।

**सू०अ०**—पिण्ड (पद) के समान (पदों) में इकार के स्थान पर (विकल्प से) एकार (होता है)।

**वृत्तिः—पिण्ड इत्येवंसमेषु इकारस्यैकारादेशो भवति वा। पेण्डं, पिण्डं (५-३० बिन्दुः)। णेद्दा, णिद्दा (२-४२ न् ण्, ३-३ र्लोपः, ३-५० दूद्वित्वम्)। सेंदूरं, सिन्दूरं (४-१७ वर्गान्त बिं०, ५-३० बिंन्दुः)। धम्मेलं, धम्मिल्लं (५-३० बिंन्दुः)। चेंधं, चिंधं (३-३४ न्ह्=न्ध्, ५-३० बिंन्दुः)। वेण्हू, विण्हू। ३-३३ ष्ण्=ण्ह्, ५-१८ दीर्घः,)। पेट्ठं, पिट्ठं। (३-१० ष्ठ्=ठ्, ३-५० ठद्वित्वम्, ३-५१ ठ्=ट्, ५-३० बिंन्दुः)। पिण्ड-निद्रा-सिन्दूर-धम्मिल्ल-चिह्न-विष्णु-पिष्टानि। समग्रहणं संयोगपरस्योपलक्षणार्थम्।।१२।।**

**व्याख्या**—पिण्ड पद के समान पदों में इकार के स्थान पर विकल्प से एकार होता है। जैसे—

१. **पिण्डम्**—५.३० से मकार का अनुस्वार-पिण्डं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**पेण्डं**। पक्ष में-**पिण्डं**।

२. **निद्रा**—२.४२ से नकार के स्थान पर जकार-णिद्रा। ३.३ से रेफ का लोप-

णिदा। ३.५० से दकार का द्वित्व-णिद्दा। प्रस्तुत सूत्र से इकार का एकार-**णेद्दा**। पक्ष में-**णिद्दा**।

३. **सिन्दूरम्**—४.१७ से वर्गान्त नकार का विकल्प से अनुस्वार-सिंदूरम्, सिन्दूरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-सिंदूरं, सिन्दूरं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**सेंदूरं, सेन्दूरं**। पक्ष में-**सिंदूरं, सिन्दूरं**।

४. **धम्मिल्लम्**—५.३० से मकार का अनुस्वार-धम्मिल्लं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**धम्मेल्लं**। पक्ष में **धम्मिल्लं**।

५. **चिह्नम्**—३.३४ से ह्न के स्थान पर न्ध-चिन्धम्। ५.१८ से नकार और ५.३० से मकार का अनुस्वार-चिंधं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**चेंधं**। पक्ष में-**चिंधं**।

६. **विष्णुः**—३.३३ से 'ष्ण्' के स्थान पर 'ण्ह'-विण्हुः। ५.१८ से उकार का ऊकार और ४.६ से विभक्ति लोप-विण्हू। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**वेण्हू**। पक्ष में-**विण्हू**।

७. **पिष्टम्**—३.१० से 'ष्ट' के स्थान पर ठ-पिठम्। ३.५० से ठकार का द्वित्व-पिठ्ठम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-पिट्ठम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-पिट्ठं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर एकार-**पेट्ठं**। पक्ष में- **पिट्ठं**।

## अत् पथिहरिद्रापृथिवीषु ।।१३।।

**पदच्छेद**—अत्। पथिहरिद्रापृथिवीषु।

**पदार्थ**—पथिहरिद्रापृथिवीषु = पथिन्, हरिद्रा, पृथिवी-(इन पदों) में। अत् = अकार।

**सू०अ०**—पथिन्, हरिद्रा और पृथिवी-(इन पदों) में (इकार के स्थान पर) अकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—पथ्यादिषु शब्देषु इकारस्याकारो भवति। पहो (२-२७ थ् = ह्, ४-६ न्लोपः, ५-१ ओ)। हलद्दा। (२-३० र् = ल्, ३-३ र्लोपः, ३-५० द्द्वित्वम्)। पुहवी (१-२९ ऋ = उ, २-२७ थ् = ह्)।।१३।।**

**व्याख्या**—पथिन्, हरिद्रा और पृथिवी-इन पदों में इकार के स्थान पर अकार हो जाता है। जैसे—

१. **पथिन्**—२.२७ से थकार के स्थान पर हकार-पहिन्। ४.६ से नकार का लोप-

पहि। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर अकार-पह। ५.१ से अकार का ओकार-**पहो**।

२. **हरिद्रा**—२.३० से रेफ के स्थान पर लकार-हलिद्रा। ३.३ से रेफ का लोप-हलिदा। ३.५० से दकार का द्वित्व-दहिद्दा। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर अकार-**हलद्दा**।

३. **पृथिवी**—१.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-पुथिवी। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-पुहिवी। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर अकार-**पुहवी**।

## इतेस्तः पदादेः ।।१४।।

**पदच्छेद**—इतेः। तः। पदादेः।

**पदार्थ**—पदादेः = पद के आदि वाले। इतेः = इति के। तः = तकार के।

**सू०अ०**—पद के आदि वाले 'इति' पद के तकार के (बाद वाले इकार के स्थान पर अकार होता है)।

**वृत्तिः—पदादेरितिशब्दस्य यस्तकारस्तस्मात् परस्येकारस्य अकारो भवति। इअ (२-२ त्लोपः)। उअह, अण्णहा (३-२ य्लोपः, २-४२ न् = ण्, ३-५० ण्द्वित्वम्, २-२७ थ् = ह्,)। वअणं (२-२ च्लोपः, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। इअ, विअसन्तीउ (२-२ क्लोपः, ५-२० जश् = उ)। चिरं। इति पश्यतान्यथावचनम्। इति विकसन्त्यश्चिरम्। पदादेरिति वचनादिह न भवति। पिओ त्ति। ३-३ र्लोपः, २-२ य्लोपः, ५-१ ओ, ४-१ इलोपः)। प्रिय इति ।।१४।।**

**व्याख्या**—पद के आदि में विद्यमान इति पद के बाद वाले इकार के स्थान पर अकार होता है। जैसे—

१. **इति पश्यत अन्यथावचनम् = इअ उअह अण्णहावअणम्**। इति तकार से परवर्ती इकार के स्थान पर अकार-इत। २.२ से तकार का लोप-**इअ**। अन्यथा-२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-अण्यथा। ३.२ से यकार का लोप-अणथा। ३.५० से णकार का द्वित्व-अण्णथा। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-**अण्णहा**। वचनम्-२.२ से चकार का लोप-वअनम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-वअणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-वअणं।

२. **इति विकसनत्यश्चिरम् = इअ विअसन्तीउ चिरं**। इति पूर्व उदाहरण में द्रष्टव्य। **विकसन्त्यः**-२.२ से ककार का लोप-विअसन्त्यः। ५.२० से जश्

विभक्ति प्रत्यय के स्थान पर उकार विअन्तीउ। चिरम्-५.३० से मकार का अनुस्वार-चिरं।

**विशेष**—पद के आदि में विद्यमान इति के तकार वाले इकार के स्थान पर ही अकार होता है। पद के आदि में इति के न होने पर तकारोत्तरवर्ती इकार के स्थान पर अकार नहीं होता। जैसे- **प्रियः इति = पिओ त्ति**। प्रियः ३.३ से रेफ का लोप-पियः। २.२ से यकार का लोप-पिअः ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-पिओ। **इति**-४.१ इति के पूर्ववर्ती इकार का लोप-ति। तकार का द्वित्व-त्ति।

## उदिक्षुवृश्चिकयोः ।।१५।।

**पदच्छेद**—उत्। इक्षुवृश्चिकयोः।

**पदार्थ**—इक्षुवृश्चिकयोः = इक्षु और वृश्चिक (इन पदों) के। उत् = उकार।

**सू०अ०**—इक्षु और वृश्चिक (इन पदों) के (इकार के स्थान पर) उकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इक्षुवृश्चिकयोरित उत्वं भवति। उच्छू (३-३० क्ष् = च्छ, ५-१८ दीर्घः)। विच्छुओ (१-२८ ऋ = इ, ३-४१ श्च् = च्छ, क्लोपः, ५-१ ओ) ।।१५।।**

**व्याख्या**—इक्षु और वृश्चिक-इन पदों के इकार के स्थान पर उकार हो जाता हैं। जैसे—

१. **इक्षु**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर उकार-उक्षु। ३.३० से 'क्ष्' के स्थान पर 'च्छ'-उच्छु। ५.१८ से अन्त्य उकार का ऊकार-उच्छू।
२. **वृश्चिकः**—१.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-विश्चिकः। ३.४१ से 'श्च्' के स्थान पर 'च्छ्'-विच्छिकः। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर उकार-विच्छुकः। २.२ से ककार का लोप-विच्छुअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-विच्छुओ।

## ओ च द्विधा कृञः ।।१६।।

**पदच्छेद**—ओ। च। द्विधा। कृञः।

**पदार्थ**—कृञः = कृञ् (उपपद) होने पर। द्विधा = द्विधा (के इकार के स्थान पर)। ओ च = ओकार भी।

**सू०अ०**—कृञ् (धातु उपपद) होने पर द्विधा (के इकार के स्थान पर) ओकार भी (होता है)।

**वृत्तिः—कृञ्धातुप्रयोगे द्विधाशब्दस्यौकारो भवति चकारादुत्वं च। द्विधा कृतम् = दोहाइअं, (३-३ व्लोपः, २-२७ ध् = ह्, १-२८ ऋ = इ, २-२ कतयोर्लोपः, ५-३० बिंन्दुः)। द्विधा क्रियते=दोहाइज्जइ, दुहाज्जइ। (७-८ यक् = इज्ज, ४-४ इलोपः, ३-३ र्लोपः, २-२ कलोपः, ७-१ त = इ)।।१६।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त 'च' (पद) से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित इकार के स्थान पर उकार होने का भी ग्रहण होता हैं। इस प्रकार सूत्र का तात्पर्य यह है कि यदि कृञ् धातु वाला पद उपपद हो तो द्विधा के इकार के स्थान पर उकार और ओकार दोनों होता है। जैसे—

१. **द्विधाकृतम्**—३.३ से वकार का लोप-दिधाकृतम्। २.२७ से धकार के स्थान पर हकार-दिहाकृतम्। १.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-दिहाकितम्। २.२ से ककार तथा तकार का लोप-दिहाइअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-दिहाइअं। प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर ओकार-दोहाइअं। इकार के स्थान पर उकार होने पर-**दुहाइअं**।

२. **द्विधाक्रियते**—७.८ से 'यक्' प्रत्यय के स्थान पर इज्ज। ४.४ से इकार का लोप, ३.३ से रेफ का लोप, २.२ से क् का लोप और ७.१ से त के स्थान पर इकार–**दोहाइज्जइ, दुहाइज्जइ**।

## ईत् सिंहजिह्वयोश्च ।।१७।।

**पदच्छेद**—ईत्। सिंहजिह्वयोः। च।

**पदार्थ**—सिंहजिह्वयोः च = सिंह और जिह्व (पद) के भी। ईत् = ईकार।

**सू०अ०**—सिंह और जिह्वा (इन पदों) के (इकार के स्थान पर) ईकार (होता है)।

**वृत्तिः—एतयोरादेरिकारस्य ईकारो भवति। सीहो (५-१ ओ)। जीहा (३-३ व्लोपः)। चकारोऽनुक्तसमुश्चयार्थः, तेन-वीसत्थो, (३-३ व्लोपः, २-४३ श् = स्, ३-१२ स्त् = थ्, ३-५० द्वि०, ३-५१थ् = त्, ५-१ ओ)। वीसंभो (३-३ र्लोपः, २-४३ श् = स्, ४-१७ बिन्दुः, ५-१ ओ)। इत्येवमादिषु ईत्वं भवति ।।१७।।**

**व्याख्या**—सिंह और जिह्वा इन दोनों पदों के इकार के स्थान पर ईकार होता है। सूत्र में प्रयूक्त चकार समुच्चयार्थ है। इससे स्पष्ट होता है कि इनसे अन्य पदों में भी इकार के स्थान पर ईकार होता है। जैसे—

१. **सिंहः**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर ईकार-सींहः। ५.१ से अकार का

ओकार और ४.६ सु का लोप–**सीहो** ।

२. **जिह्वा**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर ईकार-जीह्वा । ३.३ से वकार का लोप-**जीहा** ।

**अन्य पद**—

१. **विश्वस्तः**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर ईकार-वीश्वस्तः । २.४३ से शकार का सकार–वीस्वस्तः । ३.३ से वकार का लोप-वीसस्तः । ३.१२ से 'स्त्' के स्थान पर 'थ'-वीसथः । ३.५० से थकार का द्वित्व-वीसथ्थः । ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-वीसत्थः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से विभक्ति सु का लोप-**वीसत्थो** ।

२. **विश्रम्भः**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के स्थान पर ईकार-वीश्रम्भः । ३.३६ से रेफ का लोप-वीशम्भः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-वीसम्भः । ४.१७ से मकार का अनुस्वार-वीसंभः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वीसंभो** ।

## इदीतः पानीयादिषु ।।१८।।

**पदच्छेद**—इत् । ईतः । पानीयादिषु ।

**पदार्थ**—पानीयादिषु = पनीय इत्यादि (पदों) में । ईतः = ईकार के स्थान पर । इत् = इकार ।

**सू०अ०**—पानीय इत्यादि (पदों) में ईकार के स्थान पर इकार (होता है) ।

**वृत्तिः—पानीय इत्येवमादिष्वादेरीकारस्य इकारो भवति। पाणिअं (२-४२ न् = ण्, २-२ यूलोपः, ५-३० सोर्बिन्दुः)। अलिअं (२-२ कूलोपः, ५-३० बिन्दुः)। वलिअं (३-२ यूलोपः, २-२ कूलोपः, ५-३० बिंन्दुः)। तआणिं (२-२ दूलोपः, २-४२ न् = ण्, ४-१२ = बिन्दुः)। करिसो (२-४३ ष् = स्, ५-१ ओ) । दुइअं (३-३ वूलोपः, ४-१ इ = उ, २-२ तूलोपः, यलोपश्च, ५-३० बिन्दुः)। तइअं (१-२७ ऋ = अ, २-२ तूलोपः, ५-३० बिन्दुः)। गहिरं (२-२७ भ् = ह्, ५-३० बिन्दुः)। पानीय-अलीक-व्यलीक-तदानीं-करीष-द्वितीय-तृतीय-गभीराः ।।१८।।**

**व्याख्या**—पानी इत्यादि पदों में ईकार के स्थान पर इकार होता है। सूत्र में प्रयुक्त आदि से ज्ञात होता है कि 'पानीय' के साथ ही ऐसे अन्य पदों में भी ईकार के स्थान पर इकार होता है। जैसे—

१. **पानीयम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-पाणीयम् । प्रस्तुत सूत्र से ईकार

के स्थान पर इकार-पाणियम्। २.२ से यकार का लोप-पाणिअम्। ५.३० से मकारका अनुस्वार–**पाणिअं**।

२. **अलीकम्**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-अलिकम्। २.२ से ककार का लोप-अलिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**अलिअं**।

३. **व्यलीकम्**—३.२ से यकार का लोप-वलीकम्। प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-वलिकम्। २.२ से ककार का लोप-वलिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वलिअं**।

४. **तदानीम्**—२.२ से दकार का लोप-तआनीम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-तआणीम्। प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-तआणिम्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार–**तआणिं**।

५. **करीषः**—प्रस्तुत सूत्र ईकार के स्थान पर इकार-करिषः। २.४३ से षकार का सकार-करिसः। ५.१ से आकर का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**करिसो**।

६. **द्वितीयम्**—३.३ से वकार का लोप-दितीयम्। ४.१ से इकार के स्थान पर उकार-दुतीयम्। प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-दुतियम्। २.२ से तकार तथा यकार का लोप-दुइअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**दुइअं**।

७. **तृतीयम्**—१.२७ से ऋकार के स्थान पर अकार-ततीयम्। प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-ततियम्। २.२ से तकार तथा यकार का लोप-तइअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तइअं**।

८. **गभीरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर इकार-गभिरम्। २.२७ से भकार के स्थान हकार-गहिरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**गहिरं**।

## एन्नीडापीडकीदृगीदृशेषु ।।१९।।

**पदच्छेद**—एत्। नीड-आपीड-कीदृक्-ईदृशेषु।

**पदार्थ**—नीडापीडकीदृगीदृशेषु = नीड, आपीड, कीदृक्, ईदृश–(इन पदों) में। एत् = एकार।

**सू०अ०**—नीड, आपीड, कीदृक् और ईदृश (इन पदों) में (ईकार के स्थान पर) एकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—नीडादिष्वीकारस्यैकारो भवति। णेडं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। आमेलो (२-१६ प् = म्, २-२३ ड् = ल्, ५-१ ओ)। केरिसो (१-३१ ऋ = रि, २-२ द्लोपः, २-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। एरिसो पूर्ववत् ।।१९।।**

**व्याख्या**—नीड, आपीड, कीदृश और ईदृश-इन पदों में ईकार के स्थान पर एकार हो जाता है। जैसे—

१. **नीडम्**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर एकार–नेडम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकर-णेडम्। ३.५२ से डकार का द्वित्व-णेड्डम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णेड्डं**।

२. **आपीडः**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर एकार-आपेडः। २.१६ से पकार के स्थान पर मकार-आमेडः। २.२३ से डकार के स्थान पर लकार-अमिलः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**आमोलो**।

३. **कीदृशः**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर एकार-केदृशः। १.१३ से ऋकार के स्थान पर रिकार-केद्रिशः। २.२ से दकार का लोप-केरिशः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-केरिसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**केरिसो**।

४. **ईदृशः**—प्रस्तुत सूत्र से ईकार के स्थान पर एकार-एदृशः। १.३१ से ऋकार के स्थान रिकार-एद्रिशः। २.२ से दकार का का लोप-एरिशः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-एरिसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–एरिसो।

## उत ओत् तुण्डरूपेषु ।।२०।।

**पदच्छेद**—उतः। ओत्। तुण्डरूपेषु।

**पदार्थ**—तुण्डरूपेषु = तुण्ड के समान (पदों) में। उतः = उकार के स्थान पर। ओत् = ओकार।

**सू०अ०**—तुण्ड के समान पदों में उकार के स्थान पर ओकार (हो जाात है)।

**वृत्तिः—तुण्ड इत्येवंरूपेषु आदेरुकारस्यौकारो भवति। तोण्डं (५-३० बिन्दुः)। मोत्ता (२-२ क्लोपः, ३-५० द्वित्वम्)। पोक्खरो (३-२९ ष्क् = ख्, ३-५० द्वित्वं, ३-५१ ख् = क्, ५-१ ओ)। पोत्थओ (३-१२ स्त् = थ्, ३-५० द्वि०, ३-५१ थ् = त्, ५-१ ओ)। लोद्धओ (३-३ व्लोपः, ३-५० द्वि०, ३-५१ ध् = द्, ५-१ ओ)। कोट्टिमं (५-३० बिन्दुः)। तुण्ड-मुक्ता-पुष्कर-पुस्तक-लुब्धक-कुट्टिमानि। रूपग्रहणं संयोगपरोपलक्षणार्थम् ।।२०।।**

**व्याख्या**—तुण्ड तथा उसके समान रूप वाले अन्य पदों में उकार के स्थान पर ओकार हो जाता है। सूत्र में रूप का ग्रहण संयोग बाद में होने पर को उपलक्षित

करता है। जैसे—

१. **तुण्डम्**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर ओकार-तोण्डम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**तोण्डं**।

२. **मुक्ता**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर ओकार-मोक्ता। २.२ से ककार का लोप-मोता। ३.५० से तकार का द्वित्व–**मोत्ता**।

३. **पुष्करः**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर ओकार-पोष्करः। ३.३९ से 'ष्क्' के स्थान पर ख्-पोखरः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**पोक्खरो**।

४. **पुस्तकः**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर ओकार-पोस्तकः। ३.१२ से स्त् के स्थान पर थ्-पोथकः। ३.५० से थकार का द्वित्व-पोथ्थकः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-पोत्थकः। २.२ से ककार का लोप-पोत्थअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**पोत्थओ**।

५. **लुब्धकः**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर ओकार-लोब्धकः। ३.३ से बकार का लोप-लोधकः। ३.५० से धकार का द्वित्व-लोध्धकः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-लोद्धकः। २.२ से ककार का लोप-लोद्धअः। ५.१ से विसर्गसहित अकार का ओकार–**लोद्धओ**।

६. **कुट्टिमम्**—प्रस्तुत सूत्र से ट्टकार के स्थान पर ओकार-कोट्टिमम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कोट्टिमं**।

## उलूखले ल्वा वा ।।२१।।

**पदच्छेद**—उलूखले। ल्वा। वा।

**पदार्थ**—उलूखले = उलूखल (पद) में। ल्वा = लू के साथ। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—उलूखल (पद) में लू के साथ (उकार के स्थान पर) विकल्प से (ओकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—उलूखलशब्दे लूशब्देन सह उकारस्यौकारो भवति वा। ओखलं, उलूखलं (५-३० बिन्दुः) ।।२१।।**

**व्याख्या**—उलूखल पद में लू के सहित उकार के स्थान पर विकल्प से ओकार होता है। जैसे—

१. **उलूखलम्**—प्रस्तुत सूत्र से लू के सहित उकार के स्थान पर ओकार-ओखलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**ओखलं**। पक्ष में-**उलूखलं**।

# अन्मुकुटादिषु ।। २२ ।।

**पदच्छेद**—अत् । मुकुटादिषु ।

**पदार्थ**—मुकुटादिषु = मुकुट आदि (पदों) में । अत् = अकार ।

**सू० अ०**—मुकुट आदि (पदों) में (पहले वाले उकार के स्थान पर) अकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—मुकुटइत्येवमादिष्वादेरुकारस्य स्थाने अकारो भवति । मउडं (२-२ क्लोपः, २-२० ट् = ड्, ५-३० बिं०) । मउलं (२-२ क्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। गरुअं (२-२ स्वार्थिकस्य लोपः, ५-३० बिं०) । गरुई (३-६५ रस्य विप्रकर्ष उत्वं च) । जहिट्ठिलो (२-३१ य् = ज्, २-२७ ध् = ह्, ३-१ ष्लोपः, ३-५० बिं०, ३-५१ ठ् = ट्, २-३० र् = ल्, ५-१ ओ)। सोअमल्लं (१-४१ औ = ओ, २-२ क्लोपः, ४-१ आ = अ, ३-२१ र्य् = ल्, ३-५० ल्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । अवरि (२-४१ प् = व्) । मुकुट,-मुकुल, गुरु, गुर्वी, युधिष्ठिर, सौकुमार्योपरयः ।। २२ ।।**

**व्याख्या**—'मुकुट' आदि पदों में पहले वाले उकार के स्थान पर अकार हो जाता है। जैसे—

१. **मुकुटम्**—प्रस्तुत सूत्र से पहले वाले उकार के स्थान पर अकार-मकुटम् । २.२ से ककार का लोप-मउटम् । २.२० से टकार के स्थान पर डकार-मउडम् । ५.३० से अन्त्य मकार का अनुस्वार–**मउडं** ।

२. **मुकुलम्**—प्रस्तुत सूत्र से पहले वाले उकार के स्थान पर अकार-मकुलम् । २.२ से ककार का लोप-मउलम् । ५.३० से अन्त्य मकार का अनुस्वार–**मउलं** ।

३. **गुरुकम्**—प्रस्तुत सूत्र से पहले वाले उकार के स्थान पर अकार-गरुकम् । २.२ से ककार का लोप-गरुअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**गरुअं** ।

४. **गुर्वी**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर अकार-गर्वी । ३.६५ से रेफ का विप्रकर्ष और उकार का आगम–**गरुवी** ।

५. **युधिष्ठिरः**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर अकार-यधिष्ठिरः । २.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जधिष्ठिरः । २.२६ से धकार के स्थान पर हकार-जहिष्ठिरः । ३.१ से षकार का लोप-जहिठिरः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-जहिट्ठिरः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-जहिट्ठिरः । २.३० से रेफ से स्थान पर लकार-जहिट्ठिलः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**जहिट्ठिलो** ।

६. **सौकुमार्यम्**—१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार-सोकुमार्यम्। प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर अकार-सोकमार्यम्। २.२ से ककार का लोप-सोअ-मार्यम्। ४.१ से आकार के स्थान पर अकार-सोअमर्यम्। ३.२१ से र्य् के स्थान पर 'ल्'-सोअमलम्। ३.५० से लकार का द्वित्व-सोअमल्लम्। ५.३० से अन्त्य मकार का अनुस्वार–**सोअमल्लं**।

७. **उपरि**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर अकार-अपरि। २.५१ से पकार के स्थान पर वकार-अवरि।

## इत्पुरुषे रोः ।।२३।।

**पदच्छेद**—इत् पुरुषे रोः।

**पदार्थ**—पुरुषे = पुरुष (पद) में। रोः = रु के (उकार के) स्थान पर। इत् = इकार।

**सू०अ०**—पुरुष (इस पद) में 'रु' के स्थान पर इकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—पुरुषशब्दे यो रुस्तस्य उकारस्य इकारो भवति। पुरिसो (२-४३ ष् = स्, ५-१ ओ) ।।२३।।**

**व्याख्या**—पुरुष इस (पद) में रू के उकार के स्थान पर इकार होता है। जैसे—

१. **पुरुषः**—प्रस्तुत सूत्र से उकार के स्थान पर इकार-पुरिषः। २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-पुरिसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**पुरिसो**।

## उदूतो मधूके ।।२४।।

**पदच्छेद**—उत्। ऊतः। मधूके।

**पदार्थ**—मधूके = मधूक-(इस पद) में। ऊतः = ऊकार के स्थान पर। उत् = उकार।

**सू०अ०**—मधूक (इस पद) में ऊकार के स्थान पर उकार (होता है)।

**वृत्तिः—मधूकशब्दे ऊकारस्य उकारो भवति। महुअं (२-२७ ध् = ह्, २-२ क्लोपः, ५-३० बिन्दुः) ।।२४।।**

**व्याख्या**—मधूक (इस पद) में ऊकार के स्थान पर उकार होता है। जैसे—

१. **मधूकम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऊकार के स्थान पर उकार-मधुकम्। २.२७ से धकार के स्थान पर हकार-महुकम्। २.२ से ककार का लोप-महुअम्। ५.३० से अन्त्य मकार का अनुस्वार–**महुअं**।

## अद् दुकूले वा लस्य द्वित्वम् ।।२५।।

**पदच्छेद**—अत् । दुकूले । वा । लस्य । द्वित्वम् ।

**पदार्थ**—दुकूले = दुकूल-(इस पद) में । वा = विकल्प से । अत् = अकार । लस्य = लकार का । द्वित्वम् = द्वित्व ।

**सू०अ०**—दुकूल (इस पद) में विकल्प से (ऊकार के स्थान पर) अकार (होता है) और लकार का द्वित्व होता है ।

**वृत्तिः—दुकूलशब्दे ऊकारस्याकारो भवति वा, तत्संयोगेन लकारस्य द्वित्वम्। दुअल्लं, दुऊलं (२-२ क्लोपः, ५-३० बिन्दुः) ।।२५।।**

**व्याख्या**—दुकूल इस पद में विकल्प से ऊकार के स्थान पर अकार होता है और ऊकार के अकार होने पर लकार का द्वित्व होता है। जैसे—

१. **दुकूलम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऊकार के स्थान पर अकार–दुकलम् । २.२ से ककार का लोप-दुअलम् । प्रस्तुत सूत्र से लकार का द्वित्व-दुअल्लम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**दुअल्लं** । पक्ष में-२.२ से ककार का लोप–दुअलम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-दुऊलं ।

## एन्नूपुरे ।।२६।।

**पदच्छेद**—एत् । नूपुरे ।

**पदार्थ**—नूपुरे = नूपुर-(इस पद) में । एत् = एकार ।

**सू०अ०**—नूपुर (इस पद) में (ऊकार के स्थान पर) एकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—नूपुरशब्दे ऊकारस्य एकारो भवति । णेउरं (२-५२ न् = ण्, २-२ प्लोपः, ५-३० बिन्दुः) ।।२६।।**

**व्याख्या**—नूपुर इस पद में ऊकार के स्थान पर एकार हो जाता है। जैसे—

१. **नूपुरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऊकार के स्थान पर एकार-नेपुरम् । २.५२ से नकार के स्थान पर णकार-णेपुरम् । २.२ से पकार का लोप-णेउरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**णेउरं** ।

## ऋतोऽत् ।।२७।।

**पदच्छेद**—ऋतः । अत् ।

**पदार्थ**—ऋतः = ऋतकार के स्थान पर । अत् = अकार ।

**सू०अ०**—ऋकार के स्थान पर अकार होता है ।

**वृत्तिः—आदेर्ऋकारस्याकारो भवति। तणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिं०)। घणा (२-४२ न् = ण्,)। मअं (२-२ त्लोपः, ५-३० बिं०)। कअं (पूर्ववत्)। वड्ढो ३-१ द्लोपः, ३-५० ध्द्वित्वं, ३-५१ ध् = द्, ५-१ ओ)। वसहो (२-४३ ष् = स्, २-२७ भ् = ह्, ५-१ ओ)। तृण-घृण-मृत-कृत-वृद्ध-वृषभाः ।।२७।।**

**व्याख्या**—ऋकार के स्थान पर अकार होता है। जैसे—

१. **तृणम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार-तणम्। ५.३० से तकार का अनुस्वार–**तणं**।

२. **घृणा**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार–**घणा**।

३. **मृतम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार-मतम्। २.२ से तकार का लोप-मअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**मअं**।

४. **कृतम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार-कतम्। २.२ से तकार का लोप-कअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**कअं**।

५. **वृद्धः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार-वद्धः। ३.१ से दकार का लोप-वधः। ३.५० से धकार का द्वित्व-वध्धः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-वद्धः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वड्ढो**।

६. **वृषभः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर अकार-वषभः। २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-वसभः। २.२७ से भकार के स्थान पर हकार-वसहः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वसहो**।

## इदृष्यादिषु ।।२८।।

**पदच्छेद**—इत्। ऋष्यादिषु।

**पदार्थ**—ऋष्यादिषु = ऋषि-इत्यादि (पदों) में। इत् = इकार।

**सू०अ०**—ऋषि-इत्यादि (पदों) में (ऋकार के स्थान पर) इकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ऋष्यादिषु शब्देषु आदेर्ऋकारस्य इकारो भवति। इसी (२-४३ ष् = स्, ५-१८ दीर्घः)। विसी (पूर्ववत्)। गिट्ठी (३-१० ष्ट् = ठ्, ३-५० ठ्द्वित्वं, ३-५१ ठ् = ट्, ५-१८ दीर्घः)। दिट्ठी (पूर्ववत्)। एवमुत्तरत्रापि। सिट्ठी। सिङ्गारो (२-४३ श् = स्, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५-१ ओ)। मिअंको (२.२ गलोपः, ४.१ आ = अ, ४.१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५.१ ओ)। भिङ्गो (४-१७ ङ् = बिन्दुः, ५-१ ओ)। भिङ्गारो (पूर्ववत्)। हिअअं (२-२ दयोर्लोपः, ५-३०**

**बिन्दुः) । विइण्हो (२-२ तूलोपः, ३-३३ ष्ण् = ण्ह्, ५-१ ओ) । विहिअं (२-२ तूलोपः, ५-३० बिन्दुः) । किसरो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ) । किच्चा। (३-२७ त्य् = च्, ३-५० चूद्वित्वं)। विच्छुओ (१-१५ सू० स्प०) । सिआलो (२-४३ श् = स्, २-२ गूलोपः, ५-१ ओ)। किई (२-२ तूलोपः,५-१८ दीर्घः)। किसी (२-४३ ष् = स्, ५-१८ दीर्घः,)। किवा (२-१५ प् = व्,) । ऋषि-वृषी-गृष्टि-दृष्टि-सृष्टि-शृङ्गार-मृगाङ्क-भृङ्ग-भृङ्गार-हृदय-वितृष्ण-बृंहित-कृशर-कृत्या-वृश्चिक-शृगाल-कृति-कृषि-कृपाः ।।२८।।**

**व्याख्या**—ऋषि इत्यादि पदों में ऋकार के स्थान पर इकार हो जाता है। जैसे—

१. **ऋषिः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-इषिः । २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-इसिः । ५.१८ से परवर्ती इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप-**इसी** ।

२. **वृषी**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-विषी । २.४३ से षकार के स्थान पर सकार–**विसी** ।

३. **गृष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-गिष्टिः । ३.१० से ष्ट् के स्थान पर ठ-गिठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-गिठ्ठिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-गिट्ठिः । ५.१८ से परवर्ती इकार के स्थान पर ईकार और विभक्ति लोप–**गिट्ठी** ।

४. **दृष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-दिष्टिः । ३.१० से ष्ट के स्थान पर ठ-दिठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-दिठ्ठिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-दिट्ठिः । ५.१८ से परवर्ती इकार का ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप-**दिट्ठी** ।

५. **सृष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-सिष्टिः । ३.१० से ष्ट के स्थान पर ठ–सृठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-सिठ्ठिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-सिट्ठिः । ५.१ से परवर्ती इकार का ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप-**सिट्ठी** ।

६. **शृङ्गारः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-शिङ्गारः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सिङ्गारः । ५.१ से सु के साथ आकर का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सिङ्गारो** ।

७. **मृगाङ्कः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-मिगाङ्कः । २.२ से गकार का लोप-मिआङ्कः । ४.१ से आकार के स्थान पर अकार-मिअङ्कः । ४.१७ से ङ्कार का अनुस्वार-मिअंकः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मिअंको** ।

८. **भृङ्गः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-भिङ्गः। ४.१७ से ङ्कार का अनुस्वार-भिंगः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**भिंगो**।

९. **भृङ्गारः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-भिङ्गारः। ४.१७ से ङ्कार का अनुस्वार-भिंगारः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**भिंगारो**।

१०. **हृदयम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-हिदयम्। २.२ से दकार और यकार का लोप-हिअअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**हिअअं**।

११. **वितृष्णः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-वितिष्णः। २.२ से तकार का लोप-विइष्णः। ३.३३ से ष्ण के स्थान पर ण्ह-विइण्हः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**विइण्हो**।

१२. **वृंहितम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-विंहितम्। २.२ से तकार का लोप-विंहिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**विंहिअं**।

१३. **कृशरः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-किशरः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-किसरः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**किसरो**।

१४. **कृत्या**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान इकार-कित्या। ३.२७ से त्य् के स्थान पर च्-किचा। ३.५० से चकार का द्वित्व-**किच्चा**।

१५. **वृश्चिकः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-विश्चिकः। ३.४१ से श्च् के स्थान पर च्छ्-विच्छिकः।१.१५ से परवर्ती इकार के स्थान पर उकार-विच्छुकः। २.२ से ककार का लोप विच्छुअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**विच्छुओ**।

१६. **शृगालः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-शिगालः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सिगालः। २.२ से गकार का लोप-शिआलः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सिआलो**।

१७. **कृषिः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-किषिः। २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-किसिः। ५.१८ से द्वितीय इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप-**किसी**।

१८. **कृपा**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर इकार-किया। २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-**किवा**।

## उदृत्वादिषु ।।२९।।

**पदच्छेद**—उत् ऋतु-आदिषु ।

**पदार्थ**—ऋत्वादिषु = ऋतु इत्यादि (पदों) में। उत् = उकार।

**सू०अ०**—ऋतु आदि (पदों) में (ऋकार के स्थान पर) उकार (होता है)।

**वृत्तिः—ऋतु इत्येवमादिषु ओदर्ऋत उकारो भवति। उदू (२-७ त् = द्, ५-१८ दीर्घ)। मुणालो (२-४३ न् = ण्, ५-१ ओ)। पुहवी (१-१३ सू० = स्प०)। वुंदावणं (४-१७ बिं०, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। पाउसो (३-३ र्लोपो वलोपश्च, ४-११ ष् = स्, ४-१८ पुंवत्, ५-१ ओ)। पउत्ती (३-३ र्लोपो वलोपश्च, ३-१ त्लोपः, ३-५० त्द्वित्वं ३-१८ दीर्घः)। णिउदं (२-४२ न् = ण्, २-२ व्लोपः, २-७ त् = द्, ५-३० बिन्दुः)। संबुदं (२-७ त् = द्, ५-३० बिन्दुः)। णिव्वुदं (२-४२ न् = ण्, ३-३ र्लोपः, ३-५० व्द्वित्वं, २-७ त् = द्, ५-३० बिन्दुः)। वुत्तंतो (३-१ तलोपः, ३-५० त्द्वित्वं, ४-१ आ = अ, ४-१७ न् = बिन्दुः, ५-१ ओ)। परहुओ (२-२७ भ् = ह्, २-२ त्लोपः, ५-१ ओ)। माउओ (२-२ त्लोपः क्लोपश्च, ५-१ ओ)। जामाउओ (पूर्ववत्)। ऋतु, मृणाल, पृथिवी, वन्दावन, प्रावृष्, प्रवृत्ति, निवृत, संवृत, निर्वृत, वृत्तान्त, परभृत, मातृक, जामातृक, इत्येवमादयः ।।२९।।**

**व्याख्या**—ऋतु आदि पदों में ऋकार के स्थान पर उकार होता है। सूत्र में प्रयुक्त 'आदि' से ज्ञात होता है कि ऋतु तथा तत्सदृश अन्य पदों में ऋकार के स्थान पर उकार हो जाता है। जैसे—

१. **ऋतुः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-उतुः। २.७ से तकार के स्थान पर दकार-उदुः। ५.१८ से द्वितीय उकार का दीर्घ और ४.६ से विभक्ति का लोप-**उदू**।

२. **मृणालः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-मुणालः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**मुजालो**।

३. **पृथिवी**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-पुथिवी। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-पुहिवी। १.१३ से इकार के स्थान पर अकार-**पुहवी**।

४. **प्रावृष्**—३.३ से रेफ और वकार का लोप-पाऋष्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का उकार–पाउष् ४.११ से षकार के स्थान पर सकार पाउस्। ४.१८ से पुलिङ्ग के समान-पाउसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**पाउसो**।

५. **वृन्दावनम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-वुन्दावनम्। ४.१७ से

नकार का अनुस्वार-वुंदावनम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-वुन्दाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-वुन्दावणं।

६. **प्रवृत्तिः**—३.३ से रेफ और वकार का लोप-प्रऋत्तिः। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-पउत्तिः। ३.१ से तकार का लोप-पउतिः। ३.५० से तकार का द्वित्व-पउत्तिः। ३.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से विभक्ति का लोप-**पउत्ती**।

७. **निवृत्तम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिवृत्तम्। २.२ से वकार का लोप-णिऋत्तम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-णिउत्तम्। २.६ से त्तकार के स्थान पर दकार-पिउदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**णिउदं**।

८. **संवृतम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-संवुतम्। २.६ से तकार के स्थान पर दकार-संवुदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**संवुदं**।

९. **निर्वृत्तम्**—१.४२ से नकार के स्थान पर णकार णिर्वृत्तम्। ३.३ से रेफ का लोप-निवृतम्। ३.५० से वकार का द्वित्त्व-मिव्वृतम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-विव्बुतम्। २.६ से तकार के स्थान पर दकार। णिव्वुदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**णिव्वुदं**।

१०. **वृत्तान्तः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-वुत्तान्तः। ३.१ से तकार का लोप-वुतान्तः। ३.५० से तकार का द्वित्व-वुत्तान्तः। ४.१ से आकार के स्थान पर अकार-वुत्तन्तः। ४.१७ से नकार का अनुस्पार-वुत्तंतः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**वुतंतो**।

११. **परभृतः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-परभुतः। २.२७ से भकार के स्थान पर हकार-परहुतः। २.२ से तकार का लोप-परहुअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**परहुओ**।

१२. **मातृकः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-मातुकः। २.२ से तकार और ककार का लोप-माउअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**माउओ**।

१३. **जामातृकः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर उकार-जामातुकः। २.२ से तकार और ककार का लोप-जामाउअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**जामाउओ**।

## ऋ रीति ॥३०॥

**पदच्छेद**—ऋः। रि-इति।

**पदार्थ**—ऋ = ऋकार के स्थान पर। रीति = रिकार ऐसा।

**सू० अ०**—(अन्य वर्ण से असंयुक्त आदि) ऋकार के स्थान पर रिकार ( =रि) (होता है)।

**वृत्तिः—वर्णान्तरेणायुक्तस्यादेर्ऋकारस्य रिकारो भवति। रिणं (५-३० विन्दुः)। रिद्धो (३-१ द्लोपः, ३-५० ध्द्वित्वं, ३-५१ ध्=द्, ५-१ ओ)। रिच्छो (३-३० क्ष्=छ्। शेषं पूर्ववत्)॥३०॥**

**व्याख्या**—यदि पद का आदि वाला ऋकार किसी वर्ण से संयुक्त न हो तो उसके स्थान पर 'रि' हो जाता है। जैसे—

१. **ऋणम्**— प्रस्तुत सूत्र से अन्य वर्ण से असंयुक्त पदादि ऋकार के स्थान पर 'रि'-रिणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**रिणं**।

२. **ऋद्धः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर 'रि'-रिद्धः। ३.१ से दकार का लोप-रिधः। ३.५० से धकार का द्वित्व-रिध्धः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार का दकार-रिद्धः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**रिद्धो**।

३. **ऋक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर 'रि'-रिक्षः। ३.३० से क्षकार के स्थान पर छकार-रिछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-रिछ्छः। २.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-रिच्छः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**रिच्छो**।

## क्वचिद्युक्तस्यापि॥३१॥

**पदच्छेद**—क्वचित्। युक्तस्य। अपि।

**पदार्थ**—क्वचित् = कहीं-कहीं। युक्तस्य = संयुक्त (ऋकार) के स्थान पर। अपि = भी।

**सू० अ०**—कहीं-कहीं (अन्य वर्ण से) संयुक्त (ऋकार) के स्थान पर भी ('रि' होता है)।

**वृत्तिः—वर्णान्तरेण युक्तस्यापि कक्चिदृकारस्य रिकारो भवति। एरिसो (१-१९ ई=ए, २-२ द्लोपः, १-४३ श्=स्, ५-१ ओ)। सरिसो। तारिसो। एरिसोवत्॥३१॥**

**व्याख्या**—कहीं-कहीं अर्थात् कुछ पदों में अन्य वर्ण से संयुक्त और अपदादि ऋकार के स्थान पर भी 'रि' होता है। जैसे—

१. **ईदृशः**—१.१९ से ईकार के स्थान पर एकार-एदृशः। २.२ से दकार का लोप-एऋशः। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार के स्थान पर 'रि' एरिशः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-एरिसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**एरिसो**।

२. **सदृशः**—२.२ से दकार का लोप-सऋशः । प्रस्तुत सूत्र सूत्र से ऋकार के स्थान पर 'रि' सरिशः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सरिसः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**सरिसो** ।

३. **तादृशः**—२.२ से दकार का लोप-ताऋशः । प्रस्तुत सूच से ऋकार के स्थान पर 'रि' तारिशः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-तारिसः । ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार-**तारिसो** ।

## वृक्षे वेन रुर्वा।।३२।।

**पदच्छेद**—वृक्षे । वेन । रुः । वा ।

**पदार्थ**—वृक्षे = वृक्ष (इस पद) में । वेन = वकार के साथ । रुः = रु । वा = विकल्प से ।

**सू०अ०**—वृक्ष (इस पद) में वकार के साथ (ऋकार के स्थान पर) विकल्प से 'रु' होता है ।

**वृत्तिः—वृक्षशब्दे वशब्देन सह ऋकारस्य रुकारो भवति वा । रुक्खो, (२-२९ क्ष् = ख्, ३-५० ख्द्वित्वं, ३-५१ ख् = क्, ५-१ ओ) । वच्छो (१-२७ ऋ = अ, ३-३१ क्ष् = छ्, शेषं पूर्ववत्) । व्यवस्थितविभाषाज्ञाप-नाच्छत्वपक्षे न भवति, खत्वपक्षे तु नित्यमेव भवति ।।३२।।**

**व्याख्या**—वृक्ष-इस पद में वकार के साथ ऋकार के स्थान पर विकल्प से 'रु' होता है । विकल्प से कहने का तात्पर्य है कि कहीं वकार के साथ ऋकार के स्थान पर 'रु' होता है और कहीं १.२७ से ऋकार के स्थान पर अकार होता है । उल्लेखनीय है कि जहाँ वृक्ष के क्षकार का खकार होता है वहाँ वकार के साथ ऋकार का रिकार होता है और छकार होता है वहाँ केवल ऋकार के स्थान पर अकार हो जाता है । जैसे—

१. **वृक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से वकारसहित ऋकार के स्थान पर 'रु'-रुक्षः । २.२९ से क्षकार के स्थान पर खकार-रुखः । ३.५० से खकार का द्वित्व-रुख्खः । ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार के स्थान पर ककार-रूक्खः । ५.१ से सविसर्ग अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**रुक्खो** । पक्ष में-१.२७ से ऋकार के स्थान पर अकार-वक्षः । ३.३१ से क्षकार के स्थान पर छकार-वछः । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-वच्छः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**वच्छो** ।

## लृतः क्लृप्त इलिः ।।३३।।

**पदच्छेद**—लृतः । क्लृप्ते । इलिः ।

**पदार्थ**—क्लृप्ते = क्लृप्त-(इस पद) में। लृतः = लृकार के स्थान पर। इलिः = इलि।

**सू०अ०**—क्लृप्त-(इस पद) में लृकार के स्थान पर 'इलि' (हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्लृप्तशब्दे लृकारस्य इलीत्ययमादेशो भवति। किलित्तं (३-३ पूलोपः, ३-५० पूद्वित्वं, ५-३० विन्दुः)। तदेवमादेशान्तरविधानात्प्राकृते ऋकार-लृकारौ न भवतः ।।३३।।**

**व्याख्या**—क्लृप्त-इस पद में लृकार के स्थान पर 'इलि' हो जाता है। जैसे—

१. **क्लृप्तम्**—प्रस्तुत सूत्र से लृकार के स्थान पर इलि-किलिप्तम्। ३.१ से पकार का लोप-किलितम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-किलित्तम्। ५.३०से मकार का अनुस्वार-किलित्तं।

**विशेष**—संस्कृत पदों में ऋकार और लृकार प्राप्त होता है किन्तु प्राकृत में नहीं। जहाँ-जहाँ संस्कृत पदों में ऋकार और लृकार होता है वहाँ-वहाँ इन विहित विधानों के अनुसार प्राकृत में ऋकार और लृकार परिवर्तित हो जाते हैं। अतः प्राकृत में इन दो स्वर वर्णों का अभाव है।

## एत इद्वेदनादेवरयोः ।।३४।।

**पदच्छेद**—एतः। इत्। वेदनादेवरयोः।

**पदार्थ**—वेदनादेवरयोः = वेदना और देवर (इन पदों) में। एतः = एकार के स्थान पर। इत् = इकार।

**सू०अ०**—वेदना और देवर (इन पदों) में एकार के स्थान पर (विकल्प से) इकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—वेदनादेवरयोरेकारस्य इकारो भवति। विअणा (२-२ दूलोपः, २-४२ न् = ण्,)। दिअरो (२-२ वूलोपः, ५-१ ओ)। वाग्रहणानुवृत्तेः क्वचिद् वेअणा, देअरो इत्यपि ।।३४।।**

**व्याख्या**—वेदना और देवर इन दोनों पदों में एकार के स्थान पर विकल्प से इकार हो जाता है। 'विकल्प से' कहने से ज्ञात होता है कि कहीं कहीं एकार के स्थान पर एकार नहीं भी होता है—एकार विद्यमान रहता है।

१. **वेदना**—प्रस्तुत सूत्र से एकार के स्थान पर इकार-विदना। २.२ से दकार का लोप-विअना। २.४२ से नकार के स्थान र णकार-**विअणा**। पक्ष में-.२.२ से दकार का लोप-वेअना। २.४२ से नकार के स्थान र णकार-**वेअणा**।

२. **देवरः**—प्रस्तुत सूत्र से एकार के स्थान पर इकार-दिवर: । २.२ से वकार का लोप-दिअर: । ५.१ से सविसर्ग अकार का ओकार-दियारो । पक्ष में-२.२ से वकार का लोप-देअर: । ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार–**देअरो** ।

## ऐत एत् ।।३५।।

**पदच्छेद**—ऐत: । एत् ।

**पदार्थ**—ऐत: = ऐकार के स्थान पर । एत् = एकार ।

**सू०अ०**—(आदि वाले) ऐकार के स्थान पर एकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—आदेरैकारस्य एकारो भवति । सेलो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। सेच्चं (२-४२ श् = स्, ३-२७ त्य् = च्, ३-५० च्द्वित्वं, ५-३० विन्दुः)। एरावणो । केलासो (५-१ ओ) । तेल्लोक्कं (३-३ र्लोपः, ३-५८ लद्वित्वं, ३-२ य्लोपः, ३-५० कद्वित्व)। शैल-शैत्य-ऐरावण-कैलास-त्रैलोक्यानि ।।३५।।**

**व्याख्या**—१.१ इस अधिकार सूत्र से यहाँ 'आदि वाले' का ग्रहण हाता है। आदि वाले ऐकार के स्थान पर एकार हो जाता है। जैसे—

१. **शैलः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर एकार-शेल: । २.२४ से शकार के स्थान पर सकार-सेल: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सेलो** ।

२. **शैत्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर एकार-शेत्यम् । २.४२ से शकार के स्थान पर सकार-सेत्यम् । ३.२६ से त्य् के स्थान पर चकार-सेचम् । ३.५० से चकार का द्वित्व-सेच्चम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सेच्चं** ।

३. **ऐरावणः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर एकार-एरावण: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**एरावणो** ।

४. **कैलाशः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर एकार-केलाश: । २.४२ से शकार के स्थान पर सकार-केलास: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**कलासो** ।

५. **त्रैलोक्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर एकार-त्रेलोक्यम् । ३.३ से रेफ का लोप-तेलोक्यम् । ३.५८ से लकार का द्वित्व-तेल्लोक्यम् । ३.२ से यकार का लोप-तेल्लोकम् । ३.५० से ककार का द्वित्व-तेल्लोक्कम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तेल्लोक्कं** ।

## दैत्यादिष्वइ ।।३६।।

**पदच्छेद**—दैत्यदिषु । अइ ।

**पदार्थ**—दैत्यादिषु = दैत्य इत्यादि (पदों) में । अइ = अइ ।

**सू०अ०**—दैत्य इत्यादि पदों में (ऐकार के स्थान पर) अइ (हो जाता है) ।

वृत्तिः—**दैत्यादिषु शब्देषु ऐकारस्य अइ इत्यमादेशो भवति। दइच्चो (३-२७ त्य् = च्, ३-५० च्द्वित्वं, ५-१ ओ) । चइत्तो (३-३ र्लोपः, ३-५० त्द्वित्वं, ५-१ ओ) । भइरवो (५-१ ओ) । सइरं । (३-३ व्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। वइरं (५-३० विन्दुः)। वइदेसो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। वइदेहो (५-१ ओ)। कइअवो (२-२ त्लोपः, ५-१ ओ)। वइसाहो, (२-४३ श् = स्, २-२७ ख् = ह्, ५-१ ओ) । वइसिओ (२-४३ श् = स्, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। वइसंपाअण (२-४३ श् = स्, ४-१७ म्विन्दुः, २-२ य्लोपः, २-४२ न् = ण्, ५-२७ ओत्वनिषेधः, ४-६ सोर्लोपः) । दैत्यचैत्र-भैरव-स्वैर-वैर-वैदेश-वैदेह-कैतव-वैशाख-वैशिक-वैशम्पायन-इत्यादयः ।।३६।।**

**व्याख्या**—दैत्य इत्यादि पदों में ऐकार के स्थान पर अइकार हो जाता है। जैसे-

१. **दैत्यः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-दइत्यः । ३.२७ से त्य् के स्थान पर च्-दइचः ।३.५० से चकार का द्वित्व-दइच्चः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दइच्चो** ।

२. **चैत्रः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-चइत्रः । ३.३ से रेफ का लोप-चइतः । ३.५० से तकार का द्वित्व-चइत्तः । ५.१ से सु के साथ आकर का ओकार–**चइत्तो** ।

३. **भैरवः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-भइरवः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**भइरवो** ।

४. **स्वैरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-स्वइरम् । ३.३ से वकार का लोप-सइरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सइरं** ।

५. **वैरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**वइरं** ।

६. **वैदेशः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइदेशः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-वइदेसः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**वइदेसो** ।

७. **वैदेहः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइदेहः । ५.१ से अकार का

ओकार और ४.६ से सु का लोप-**वइदेहो** ।

८. **कैतवः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-कइतवः । २.२ से तकार का लोप-कइअवः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-कइअवो ।

९. **वैशाखः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइशाखः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-वइसाखः । २.२७ से खकार का हकार-वइसाहः । ५.१ से अकार का ओकार ४.६ से सु का लोप-वइसाहो ।

१०. **वैशिकः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइशिकः । ३.४३ से शकार के स्थान पर सकार-वइसिकः । २.२ से ककार का लोप-वइसिअः । ५.१ से अकार का ओकार ४.६ से सु का लोप-वइसिओ ।

११. **वैशम्पायनः**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-वइशम्पायनः । २.४३ से शकार के स्थान सकार-वइसम्पायनः । ४.१७ से मकार का अनुस्वार-वइसंपायनः । २.२ से यकार का लोप-वइसंपाअनः । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-वइसंपाअणः । ५.२७ से ओकार का निषेध-वइसंपाअणः । ४.६ से विभक्ति-प्रत्यय सु का लोप-वइसंपाअण ।

**विशेष**—व्याख्याकार सदानन्द के अनुसार इन पदों में १.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार भी हो सकता है। जैसे—**चैत्रः = चेतो** ।

## दैवे वा ।।३७।।

**पदच्छेद**—दैवे । वा ।

**पदार्थ**—दैव (इस पद) में । वा = विकल्प से ।

**सू०अ०**—दैव (इस पद) में (ऐकार के स्थान पर) विकल्प से (अइकार होता है) ।

**वृत्तिः—दैवशब्दे ऐकारस्य अइ इत्ययमादेशो भवति वा । दइवं, (५-३० बिन्दुः) देव्वं । (पूर्ववत्)। अनादेशपक्षे नीडादित्वाद् द्वित्वम् ।।३७।।**

**व्याख्या**—दैव इस पद में ऐकार के स्थान पर अइकार होने के विषय में विकल्प कहा गया है। तात्पर्य यह है कि 'दैव' पद में कहीं ऐकार के स्थान पर अइकार होती है और कहीं १.३५ से एकार होता है। ध्यातव्य है कि जहाँ अइकार नहीं होता है वहाँ ३.५२ से वकार का द्वित्व हो जाता है। जैसे—

१. **दैवम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर अइकार-दइवम् । ५.३० से मकार का

अनुस्वार-**दइवं**। पक्ष में १.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार-देवम्। ३.५२ से वकार का द्वित्व-देव्वम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**देव्वं**।

## इत्सैन्धवे ।।३८।।

**पदच्छेद**—इत्। सैन्धवे।

**पदार्थ**—सैन्धवे = सैन्धव (इस पद) में। इत् = इकार।

**सू०अ०**—सैन्धव-(इस पद) में (ऐकार के स्थान पर) इकार (होता है)।

**वृत्तिः—सैन्धवशब्दे ऐकारस्य इकारो भवति। सिंधवं। (४-१७ न् = विन्दुः, ५-३० विन्दुः)।।३८।।**

**व्याख्या**—सैन्धव इस पद में ऐकार के स्थान पर इकार हो जाता है। जैसे—

१. **सैन्धवम्**—प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर इकार–सिन्धवम्। ४.१७ से नकार का अनुस्वार-सिंधवम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सिंधवं**।

## ईद् धैर्ये ।।३९।।

**पदच्छेद**—ईत्। धैर्ये।

**पदार्थ**—धैर्ये = धैर्य (इस पद) में। ईत् = ईकार।

**सू०अ०**—धैर्य (इस पद) में (ऐकार के स्थान पर) ईकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—धैर्यशब्दे ऐकारस्य ईकारो भवति। धीरं (२-१८ र्य् = र्, ५-३० विन्दुः)।।३९।।**

**व्याख्या**—धैर्य इस पद में ऐकार के स्थान पर ईकार हो जाता है। जैसे—

१. **धैर्यम्**— प्रस्तुत सूत्र से ऐकार के स्थान पर ईकार-धीर्यम्। २.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-धीरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**धीरं**।

## ओतोऽद्वा प्रकोष्ठे कस्य वः ।।४०।।

**पदच्छेद**—ओतः। अत्। वा। प्रकोष्ठे। कस्य। वः।

**पदार्थ**—प्रकोष्ठे = प्रकोष्ठ (इस पद) में। ओतः = ओकार के स्थान पर। वा = विकल्प से। अत् = अकार। कस्य = ककार के स्थान पर। वः = वकार।

**सू०अ०**—प्रकोष्ठ (इस पद) में ओकार के स्थान पर अकार और ककार के स्थान पर वकार (विकल्प से) (होता है)।

**वृत्ति—प्रकोष्ठाब्दे ओकारस्य अकारो भवति वा तत्संयोगेन च ककारस्य वत्तवम्। पवट्ठो, (३-३ र्लोपः, ३-२० ष्ट् = ठ्, ३-५० द्वि०, ३-५ ठ् = ट्,**

**५-१ ओ) पओट्ठो । (२-२ क्लोपः, शेषं पूर्ववत्।।४०।।**

**व्याख्या**—प्रस्तुत सूत्र में प्रकोष्ठ-इस पद में ओकार के स्थान पर अकार और ककार के स्थान पर वकार होने के विषय में विकल्प कहा गया है। तात्पर्य यह है कि कहीं कहीं तो ओकार के स्थान पर अकार और ककार के स्थान पर वकार होता है तथा कहीं कहीं नहीं होता है। जैसे—

१. **प्रकोष्ठः**—३.३ से रेफ का लोप-पकोष्ठः । प्रस्तुत सूत्र से ओकार के स्थान पर अकार और ककार के स्थान पर वकार-पवष्ठः । ३.१० से ष्ठ् के स्थान पर ठ्-पवठः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-पवठ्ठः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-पवट्ठः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**पवट्ठो** । पक्ष में-३.३ से रेफ का लोप-पकोष्ठः । २.२ से ककार का लोप-पओष्ठः । ३.१० से ष्ठ् के स्थान पर ठकार पओठः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-पओठ्ठः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-पओट्ठः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**पओट्ठो** ।

## औत ओत् ।।४१।।

**पदच्छेद**—औतः । ओत्

**पदार्थ**—औतः = औकार के स्थान पर । ओत् = ओकार ।

**सू०अ०**—औकार के स्थान पर ओकार (होता है) ।

**वृत्तिः—औकारस्यादेरोकारो भवति । कोमुई (४-२ द्लोपः)। जोव्वणं (२-३१ य् = ज्, ३-५० वद्वित्वं, २-४२ न् = ण्, ५-३० विन्दुः। कोत्थुहो (३-१२ स्त् = थ्, ३-५० थ्द्वित्वं, ३-५१ थ् = त्, २-२७ भ् = ह्, ५-१ ओ) । कोसम्बी (२-४३ श् = स्, ४-१७ वर्गान्तविन्दुः, ४-१ ह्रस्वः)। कौमुदी-यौवनम्-कौशाम्बी ।।४१।।**

**व्याख्या**—औकार के स्थान पर ओकार हो जाता है। जैसे—

१. **कौमुदी**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर ओाकर-कोमुदी । ५.२ से दकार का लोप-कोमुई ।

२. **यौवनम्**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर औकार-योवनम् । २.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जोवनम् । ३.५० से वकार का द्वित्व-जोव्वनम् । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-जोव्वणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**जोव्वणं** ।

३. **कौस्तुभः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर ओकार-कोस्तुभः । ३.१२ से स्त्

के स्थान पर थ्-कोत्थुभ: । ३.५० से थकार का द्वित्व-कोथ्थुम: । ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-कोत्थुम: । २.२७ से भकार के स्थान पर हकार-कोत्थुह:। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु० का लोप-**कोत्थुहो।**

४. **कौशाम्बी**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर ओकार-कोशाम्बी । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार- कोसाम्बी । ४.१ से आकार के स्थान पर अकार-कोसम्बी । ४.१७ से मकार का अनुस्वार-कोसंबी ।

## पौरादिष्वउ ।।४२।।

**पदच्छेद**—पौरादिषु । अउ ।

**पदार्थ**—पौर इत्यादि (पदों) में । अउ = अउकार ।

**सू०अ०**—पौर इत्यादि (पदों) में (औकार के स्थान पर) अउकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—पौर इत्येवमादिषु शब्देषु औकारस्य अउ इत्ययमादेशो भवति । पउरो (५-१ ओ) एवसुत्तरत्र । कउरवो । पउरिसो (शेषं १-२३ सूत्रे स्पष्टम्) । पौर-कौरव-पौरुषाणि । आकृतिगणोऽयम्। कौशले विकल्पः । कोसलो, कउसलो । कौशलम् ।।४२।।**

**व्याख्या**—'पौर' इत्यादि पदों में औकार के स्थान पर अउकार हो जाता है। जैसे—

१. **पौरः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर अउकार-पउर: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**पउरो** ।

२. **कौरवः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर अउकार-कउरव: । ५.१ से अकार का ओकार-४.६ से सु का लोप-कउरवो ।

३. **पौरुषः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर अउकार-पउरुष: । १.२३ से रु में उकार के स्थान पर इकार-पउरिष: । २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-पउरिस: । ५.१ से अकार का ओकार ४.६ से सु का लोप-पउरिसो ।

**विशेष**—यह गण आकृति गण वाला है। कौशल-इस पद में यह औकार के स्थान पर अउकर विकल्प से होता है अर्थात् कहीं-कहीं होता है और कहीं नही होता । है। जैसे—

१. **कौशलः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर अउकार-कउशल: । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार कउसल: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**कउसलो** । पक्ष में-१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार-कोशल: ।

२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-कोसलः । ५.१ से अकार का ओकार ४.६ से सु का लोप-कोसलो ।

## आ च गौरवे ।।४३।।

**पदच्छेद**—आ । च । गौरवे ।

**पदार्थ**—गौरवे = गौरव (इस पद) में । आ = आकार । च = भी ।

**सू०अ०**—गौरव (इस पद) में (औकार के स्थान पर) आकार भी (होता है) ।

**वृत्तिः—गौरवशब्दे औकारस्य आकारो भवति, चकारादउत्वं च । गारवं, गउरवं । (५-३० बिन्दुः) ।।४३।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त चकार से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित अउकार का भी ग्रहण होता है। कहीं कहीं गौरव इस पद में औकार के स्थान पर अउकार और कहीं कहीं प्रस्तुत सूत्र में विहित आकार भी होता है। जैसे—

१. **गौरवम्**— प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर आकार-गारवम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**गारवं** । पक्ष में-१.४२ से ओकार के स्थान पर अउकार-गउरवम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**गउरवं** ।

## उत्सौन्दर्यादिषु ।।४४।।

**पदच्छेद**—उत् । सौन्दर्य-आदिषु ।

**पदार्थ**—सौन्दर्यादिषु = सौन्दर्य आदि (पदों) में । उत् = उकार ।

**सू०अ०**—सौन्दर्य इत्यादि (पदों) में (औकार के स्थान पर) उकार( होता है) ।

**वृत्तिः—सौन्दर्य इत्येवमादिषु औकारस्य उकारो भवति । सुन्देरं । (१-५ सूत्रे स्पष्टम्। मुञ्जाअणो (४-१७ पञ्चमः, २-२ य्लोपः, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। सुण्डो (२-४३ श् = स्, ४-१७ पञ्चमः, ५-१ ओ)। कुक्खेअओ । (३-२९ क्ष् = ख्, ३-५० खद्वित्वं, ३-५१ ख् = क्, २-२ यक्योर्लोपः, ५-१ ओ)। दुव्वारिओ । (३-५२ व् = व्व्, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। सौन्दर्य-मौज्जायन-शौण्ड-कौक्षेयक-दौवारिकाः ।।४४।।**

**व्याख्या**—सौन्दर्य इत्यादि पदों में औकार के स्थान पर उकार हो जाता है। सूत्र में प्रयुक्त 'आदिषु' से ज्ञात हाता है कि सौन्दर्य और इसके समान इससे अन्य पदों में भी औकार के स्थान पर उकार होता है। जैसे—

१. **सौन्दर्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर उकार-सुन्दर्यम् । १.५ से आदि वाले अकार के स्थान पर एकार-सुन्देर्यम् । ३.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-

सुन्देरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सुन्देरं**।

२. **मौञ्जायनः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर उकार-मुञ्जायनः। २.२ से यकार का लोप–मुञ्जाअनः। २.४२ से नकार का णकार–मुञ्जायनः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-मुञ्जाअणो।

३. **शौण्डः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर उकार-शुण्डः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सुण्डः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-सुण्डो।

४. **कौक्षेयकः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर उकार-कुसेयकः। ३.३९ से क्षकार के स्थान पर खकार-कुखेयकः। ३.५० से खकार का द्वित्व-कुख्खेयकः। ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार के स्थान पर ककार-कुक्खेयकः। २.२ से यकार और वकार का लोप-कुक्खेअअः। ५.१ से परवर्ती अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**कुक्खेअओ**।

५. **दौवारिकः**—प्रस्तुत सूत्र से औकार के स्थान पर उकार-दुवारिकः। ३.५२ से वकार का द्वित्व-दुव्वारिकः। २.२ से ककार का लोप-दुव्वारिअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**दुव्वारिओ**।

**।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का प्रथम परिच्छेद पूर्ण हुआ।।**

# द्वितीयः परिच्छेदः

## ( अयुक्तविधानम् )

### अयुक्तस्यानादौ ।।१।।

**पदच्छेद**—अयुक्तस्य । अनादौ ।

**पदार्थ**—अनादौ = आदि में विद्यमान न होने पर । अयुक्तस्य = असंयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर ।

**सू०अ०**—(आगे विहित विधान) (पद के) आदि में विद्यमान न होने पर असंयुक्तय (व्यञ्जन) के स्थान पर (लागू होते है) ।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयम् । इत उत्तरं यद्वक्ष्यामस्तदयुक्तस्य व्यञ्जनस्यानादौ वर्तमानस्य कार्यं भवतीत्येवं वेदितव्यम् । वक्ष्यति कादीनां लोपः। मउडं। (१-२२ सूत्र स्पष्टं) अयुक्तस्येति किम् ? अग्घो (३-३ र्लोपः, ३-५० घद्वित्वं, ३-५१ घ्= ग्, ५-१ ओ)। अक्को (पूर्ववद्) । अनादौ इति किम् ? कमलं । अयुक्तस्येत्यापरिच्छेद्समाप्तेः । अनादावित च आ जकारविधानात् ।।१।।**

**व्याख्या**—यह अधिकार सूत्र है । इससे आगे किये जाने वाले विधान—**१.** पद के आदि में न विद्यमान व्यञ्जन के स्थान पर लागू होते है । २. असंयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर लागू होते है । प्रथम अधिकार २.३० तक तथा द्वितीय अधिकार परिच्छेद के अन्त तक चलता है। सूत्र में अयुक्त के स्थान पर कहने से 'अग्धो' और अक्को में संयुक्त व्यञ्जनों का लोप नहीं होता हैं और आदि में विद्यमान न रहने पर कहने से 'कमल' आदि में विद्यमान ककार का २.२ से लोप नहीं होता ।

### कगचजतदपयवां प्रायो लोपः ।।२।।

**पदच्छेद**—क-ग-च-ज-त-द-प-य-वाम् । प्रायः । लोपः ।

**पदार्थ**—कगचजतदपयवां = ककार, गकार, चकार, जकार, तकार, तकार, दकार, पकार, यकार और वकार का । प्रायः = प्रायः। लोपः = लोप ।

**सू०अ०**—(अनादि और असंयुक्त) ककार, गकार, चकार, जकार, तकार, दकार, पकार, यकार और वकार का प्रायः लोप (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—कादीनां नवानां वर्णानामयुक्तानामनादौ वर्तमानानां प्रायो बाहुल्येन**

**लोपो भवति। कस्य तावत्–मउलो (१-२२ सूत्रे स्पष्टम्, ५-१ ओ)। णउलो (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। गस्य–साअरो (५-१ ओ)। णअरं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। चस्य–वअणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। सूई जस्य–गओ (५-१ ओ)। रअदं (२-७ त् = द्, ५-३० बिन्दुः)। तस्य–कअं (१-२७ ऋ = अ, ५-३० बिन्दुः)। विआणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। दस्य–गआ। मओ (५-१ ओ)। पस्य–कई (५-१८ दीर्घः)। विउलं (५-३० बिन्दुः)। सुउरिसो (१-२३ सूत्र स्पष्टम्)। सुपुरुष इति। यद्यपि उत्तरपदस्य पुरुषशब्दस्यादिस्तथापि लोपो भवतीत्यनेन ज्ञापयति वृत्ति-कारः यथा–'उत्तरपदादिरनादिरेव' इति। यस्य–बाऊ (५-१८ दीर्घः)। णअणं (२-४२ उभयत्र णत्वम्, ५-३० बिन्दुः)। वस्य–जीअं (५-३० बिन्दुः)। दिअहो (२-४७ स् = ह्, ५-१ ओ)। मुकुल–नकुल–सागर–नगर–वचन–सूची–गज–रजत–कृत–वितान–गदा–मद–कपि–विपुल–सुपुरुष–वायु–नयन–जीव–दिवसाः। प्रायोग्रहणाद्यत्र श्रुतिसुखमस्ति तत्र न भवत्येव। सुकुसुमं (५-३० बिन्दुः)। पिअगमणं (३-३ र्लोपः, २-४२ न् = ण्, ४-३० बिन्दुः)। सचावं। अवजलं (२-१५ प् = व्, ४-३० बिन्दुः)। अतुलं (४-३० बिन्दुः)। आदरो (५-१ ओ)। अपारो (५-१ ओ)। अजसो (२-३१ य् = ज्, २-४२ श् = स्, ४-१८ पुंवत्, ४-६ अन्त्यलोपः, ५-१ ओ)। सबहुमाणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। सुकुसम–प्रियगमन–सचप–अपजल–अतुल–आदर–अपार–अयशः–सबहुमानानि। अयुक्तस्येत्येव-सक्को (२-४३ श् = स्, ३-३ र्लोपः, ३-५० क्द्वित्वं, ५-१ ओ)। मग्गो (४-१ आ = अ, ३-३ र्लोपः, ३-५० ग्द्वित्वं, ५-१ ओ)। शक्रः। मार्गः। अनादावित्येव। कालो। गन्धो (५-१ ओ, उभयत्र)। कालः, गन्धः ॥२॥**

**व्याख्या**—किसी अन्य व्यञ्जन के साथ संयुक्त न होने तथा पद के आदि में विद्यमान न होने पर ककार, गकार, चकार, जकार, तकार, दकार, पकार, यकार और वकार प्रायः लोप को प्राप्त करते हैं। जैसे—

**१. ककार का लोप—**

- **(क) मुकुलः**—१.२२ से पूर्ववर्ती उकार के स्थान पर अकार-मकुलः। प्रस्तुत सूत्र से ककार का लोप-मउलः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मउलो**।
- **(ख) नकुलम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णकुलम्। प्रस्तुत सूत्र से ककार का लोप-णउलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णउलं**।

**२. गकार का लोप—**

**(क) सागरः**—प्रस्तुत सू. से गकार का लोप-साअरः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-साअरो ।

**(ख) नगरम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णगरम् । प्रस्तुत सूत्र से गकार का लोप-णअरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णअरं** ।

**३. चकार का लोप—**

**(क) वचनम्**—प्रस्तुत सूत्र से चकार का लोप-वअनम् । २.२ से नकार के स्थान पर णकार-वअणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वअणं** ।

**(ख) सूची**—प्रस्तुत सूत्र से चकार का लोप-सूई ।

**४. जकार का लोप—**

**(क) गजः**—प्रस्तुत सूत्र से जकार का लोप-गअः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**गओ** ।

**(ख) रजतम्**— प्रस्तुत सूत्र से जकार का लोप-रअतम् । २.७ से तकार का दकार-रअदम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**रअदं** ।

**५. तकार का लोप—**

**(क) कृतम्**—१.२७ से ऋकार के स्थान पर अकार-कतम् । प्रस्तुत सूत्र से तकार का लोप-कअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कअं** ।

**(ख) वितानम्**—प्रस्तुत सूत्र से तकार का लोप-विआनम् । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-विआणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**विआणं** ।

**६. दकार का लोप—**

**(क) गदा**—प्रस्तुत सूत्र से दकार का लोप–**गआ** ।

**(ख) मदः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार का लोप-मअः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**मओ** ।

**७. पकार का लोप—**

**(क) कपिः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार का लोप-कइः । ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप–**कई** ।

**(ख) विपुलम्**—प्रस्तुत सूत्र से पकार का लोप-विउलम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**विउलं** ।

**(ग) सुपुरुषः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार का लोप-सुउरुषः । १.२३ से उकार के

स्थान पर इकार-सुउरिषः । २.४३ से से षकार के स्थान पर सकार-सुउरिसः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सुउरिसो** ।

**विशेष**—सुपुरुषः सामासिक पद है । समस्त पद के उतरपद का आदि वर्ण पदादि माना जाता है। इस प्रकार इस उत्तरपद पुरुषः के आदि में विद्यमान होने से पकार का लोप २.१ के अनुसार उचित नहीं है; क्योंकि २.१ के अनुसार पद के आदि में न विद्यमान होने पर ही लोपादि कार्य होना चाहिए। वृत्तिकार भामह के अनुसार यहाँ समास के उत्तरपद के आदि में विद्यमान पकार का लोप होना इस तथ्य को सूचित करता है कि उत्तरपद का आदि व्यञ्जन अनादि के समान माना जाना चाहिए।

**८. यकार का लोप—**

**(क) वायुः**—प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप-वाउः । ५.१८ से उकार का ऊकार और ४.६ से सु का लोप–**वाऊ** ।

**(ख) नयनम्**—२.४२ से दोनो नकार के स्थान पर णकार-णयणम् । प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप-णअणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णअणं** ।

**९. वकार का लोप—**

**(क) जीवम्**—प्रस्तुत सूत्र से वकार का लोप-जीअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**जीअं** ।

**(ख) दिवसः**—प्रस्तुत सूत्र से वकार का लोप-दिअसः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**दिअसो** ।

**विशेष**—सूत्र में प्रायः के प्रयोग से यह विधान उन स्थलों पर लागू नहीं होता जहाँ सुखपूर्वक उच्चारित होने वाले श्रुतिसुखद वर्ण है। अर्थात् जहाँ सुखपूर्वक उच्चारण वाले कर्णप्रिय वर्णों का प्रयोग है वहाँ इस विधान के अनुसार लोप नहीं होता है । जहाँ लोप होने पर यहाँ सुनने में कर्कश प्रतीत होने लगे, वहाँ लोप नहीं करना चाहिए। जैसे—

**१. सुकुसुम्**—५.३० से मकार का अनुस्वार–**सुकुसुमं** । यहाँ ककार का लोप नहीं हुआ है।

**२. प्रियगमनम्**—३.३ से रेफ का लोप-पियगमनम् । प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप-पिअगमनम् । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-पिअगमणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पिअगमणं** । यहाँ श्रुतिसुखदता के कारण प्रस्तुत सूत्र से गकार का लोप नहीं हुआ है।

**३. सचापम्**—२.१५ से पकार के स्थान पर वकार-सचावम् । ५.३० से मकार

का अनुस्वार–**सचावं**। यहाँ श्रुतिसुखदत्व के कारण प्रस्तुत सूत्र से चकार का लोप नहीं हुआ है।

**४. अपजलम्**—२.१५ से पकार के स्थान पर वकार-अवजलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**अवजलं**। यहाँ श्रुतिसुखदता के कारण जकार का लोप नहीं हुआ है।

**५. अतुलम्**—५.३० से मकार का अनुस्वार–**अतुलं**। यहाँ भी श्रुतिसुखदता के कारण तकार का लोप नही हुआ है।

**६. आदरः**—५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**आदरो**। यहाँ भी दकार का लोप नहीं हुआ है।

**७. अपारः**—५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**अपारो**। यहाँ पकार का लोप नहीं हुआ है।

**८. अयशः**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-अजशः। २.४२ से शकार के स्थान पर सकार-अजसः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**अजसो**।

**९. सबहुमानम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-सबहुमाणम्। ५.३० से मकार के स्थान पर अनुस्वार-**सबहुमाणं**।

**टिप्पणी—१.** अन्य वर्ण से असंयुक्त ही ककारादि का लोप होता है, संयुक्त ककारादि का नहीं। जैसे—

**(क) शक्रः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सक्रः। ३.३ से रेफ का लोप-सकः। ३.५० से ककार द्वित्व-सक्कः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार को ओकार-**सक्को**।

**(ख) मार्गः**—४.१ से आकार के स्थान पर अकार-मर्गः। ३.३ से रेफ का लोप-मगः। ३.५० से गकार का द्वित्व-मग्गः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**मग्गो**। इन दोनों उदाहरणों में संयुक्त होने के कारण क्रमशः ककार तथा गकार का द्वित्व नहीं हुआ है।

**२.** अनादि में ही ककारादि का लोप होता है, पद के आदि में नहीं। जैसे—

**(क) कालः**—५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**कालो**।

**(ख) गन्धः**—५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार और **गन्धो**। इन दोनों उदाहरणों में क्रमशः ककार और गकार पद के आदि में है अतः इनका लोप नही हुआ है।

## यमुनायां मस्य ।।३।।

**पदच्छेद**—यमुनायाम् । मस्य ।

**पदार्थ**—यमुना-(इस पद) में । मस्य = मकार का ।

**सू०अ०**—यमुना-(इस पद) में मकार का (लोप हो जाता है) ।

**वृत्तिः—यमुनाशब्दे मकारस्य लोपो भवति । जउणा (२-३१ य्= ज्, २-४२ न्= ण्,) । ।।३।।**

**व्याख्या**—यमुना (पद) में मकार का लोप हो जाता है। जैसे—

**यमुना**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जमुना । प्रस्तुत सूत्र से मकार का लोप-जउना । ३.४२ से नकार के स्थान पर जकार-**जउणा** ।

## स्फटिकनिकषचिकुरेषु कस्य हः ।।४।।

**पदच्छेद**—स्फटिकनिकषचिकुरेषु । कस्य । हः ।

**पदार्थ**—स्फटिकनिकषचिकुरेषु = स्फटिक, निकष और चिकुर (इन पदों) में । कस्य = ककार के स्थान पर । हः = हकार ।

**सू०अ०**—स्फटिक, निकष और चिकुर (इन पदों) में ककार के स्थान पर हकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अनादाविति वर्तते । एषु कस्य हकारो भवति । लोपापवादः । फलिहो (३-१ स्लोपः, २-२२ ट्= ल्, ५-१ ओ) । णिहसो (२-४२ न्= ण्, २-४३ ष्= स्, ५-१ ओ) । चिहुरो (५-१ ओ) ।।४।।**

**व्याख्या**—यह सूत्र ककार के लोप का अपवाद है। स्फटिक, निकष और चिकुर–इन पदों में ककार का लोप नहीं होता; प्रत्युत उसके स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे—

१. **स्फटिकः**—३.१ से सकार का लोप-फटिकः । २.२२ से टकार के स्थान पर लकार-फलिकः । प्रस्तुत सुत्र से ककार के स्थान पर हकार-फलिहः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**फलिहो** ।

२. **निकषः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिकषः । प्रस्तुत सूत्र से ककार के स्थान पर हकार-णिहषः । २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-णिहसः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**णिहसो** ।

३. **चिकुरः**—प्रस्तुत सूत्र से ककार के स्थान पर हकार-चिहुरः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**चिहुरो** ।

## शीकरे भः ।।५।।

**पदच्छेद**—शीकरे । भः ।

**पदार्थ**—शीकर(इस पद) में । भः = भकार ।

**सू०अ०**—शीकर (इस पद) में (ककार के स्थान पर) भकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—शीकरशब्दे ककारस्य भकारो भवति । सीभरो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ) ।।५।।**

**व्याख्या**—शीकर-इस पद में ककार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे—

शीकरः—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सीकरः । प्रस्तुत सुत्र से ककार के स्थान पर मकार-सीमरः । ५.१ से सु के सहित अन्त्य अकार का ओकार-सीमरो ।

## चन्द्रिकायां मः ।।६।।

**पदच्छेद**—चन्द्रिकायाम् । मः ।

**पदार्थ**—चन्द्रिकायाम् = चन्द्रिका (इस पद) में । मः = म्रकार ।

**सू०अ०**—चन्द्रिका (इस पद) में (ककार के स्थान पर) मकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—चन्द्रिकाशब्दे ककारस्य मकारो भवति । चंदिमा (३-३ र्लोपः, ४-१७ बिन्दुः, ३-५६ द्वित्वनिषेधः) ।।६।।**

**व्याख्या**—चन्द्रिका (इस पद) में ककार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे—

**चन्द्रिका**—३.३ से रेफ का लोप-चन्दिका । ४.१७ से नकार का अनुस्वार-चंदिका । ३.५० से दकार के द्वित्व का निषेध-चन्दिका । प्रस्तुत सूत्र से ककार के स्थान पर मकार-चंदिमा ।

## ऋत्वादिषु तो दः ।।७।।

**पदच्छेद**—ऋतु-आदिषु । तः । दः ।

**पदार्थ**—'ऋतु' इत्यादि (पदों) में । तः = तकार के स्थान पर । दः = दकार ।

**सू०अ०**—ऋतु इत्यादि (पदों) में तकार के स्थान पर दकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ऋतु इत्येवमादिषु तकारस्य दकारो भवति । उदू (१-२९ सूत्रे स्पष्टम्) । रअदं (२-२ ज्लोपः, ५-३० बिन्दुः) । आअदो (२-२ ग्लोपः, ५-१ ओ) । णिव्वुदी (२-४२ न् = ण्, ३-३ र्लोपः, ३-५० व्द्वित्वं, १-२९ ऋ = उ, ५-१८ दीर्घः) । आउदी (२-२ व्लोपः, १-२९ ऋ = उ, ५-१८ दीर्घ) । संवुदी (प्रायोग्रहणात् व्लोपो न, शेषं पूर्ववत्, ४-१२ म्बिन्दुः) । सुइदी (२-२ क्लोपः, १-२८ ऋ = इ, ५-१८ दीर्घः, एवमुत्तरत्रापि) । आइदी ।**

**हदो (५-१ ओ)। संजदो (२-३१ य्=ज्, ५-१ ओ)। विउदं (२-२ व्लोपः, १-२९ ऋ=उ, ५-३० बिन्दुः)। संयादो (संजदोवत्)। संपदि (४-१२ मबिन्दुः, ३.३ र्लोपः, ३.५६ द्वित्व निषेधः)। पडिवद्दा–(३.३ र्लोपः, २-८ त्=ड्, २-१५ प्=व्, ३-१ त्लोपः, तकारस्य दकारे कृते ३-५० द्द्वित्वं, ५-१८ दिर्घः)। ऋतु-रजत-आगत-निर्वृति-आवृति-संवृति-सुकृति-आकृति-हत-संयत-विवृत-संयात-सम्प्रति-प्रतिपत्तयः ।।७।।**

**व्याख्या**—ऋतु इत्यादि (= ऋतु तथा ऋतु के समान अन्य) पदों में तकार के स्थान पर दकार हो जाता है। जैसे—

१. **ऋतुः**—१.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-उतुः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-उदुः। ५.१८ से उकार के स्थान पर ऊकार और ४.६ से सु का लोप-**उदू**।

२. **रजतम्**—२.२ से जकार का लोप-रअतम्। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-रअदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**रअदं**।

३. **आगतः**—२.२ से गकार का लोप-आअतः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-आअदः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**आअदो**।

४. **निर्वृतिः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिर्वृतिः। ३.३ से रेफ का लोप-णिवृतिः। ३.५० से वकार का द्वित्व-णिव्वृतिः। १.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-णिव्वुतिः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-णिव्वुदिः। ५.१८ से अन्त इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-**णिव्वुदी**।

५. **आवृतिः**—२.२ से वकार का लोप-आऋतिः। १.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-आउतिः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-आउदिः। ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-**आउदी**।

६. **संवृतिः**—२.२ प्रायः का ग्रहण होने से वकार का लोप नहीं होता।१.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार संवुतिः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-संवुदिः। ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-**संवुदी**।

७. **सुकृतिः**—२.२ से ककार का लोप-सुऋतिः। १.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-सुइतिः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-सुइदिः। ५.१८ से अन्त्य इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**सुइदी**।

८. **आकृतिः**—२.२ से ककार का लोप-आऋतिः। १.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-आइतिः। प्रस्तुत सूत्र से तकार का दकार-आइदिः। ५.१८ से

अन्त्य इकार का ठकार और ४.६ से सु का लोप–**आइदी** ।

९. **हतः**—प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-हदः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**हदो** ।

१०. **संयतः**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-संजतः । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-संजदः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**संजदो** ।

११. **विवृतम्**—१.२९ से ऋकार के स्थान पर डकार-विवुतम् । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर उकार-विउदम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**विउदं** ।

१२. **संयातम्**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-संजातम् । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार-संजादम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**संजादं** ।

१३. **सम्प्रति**—४.१२ से मकार का अनुस्वार-संप्रति । ३.३ से रेफ का लोप-संपति । ३.५० से प्रकार के द्वित्व का निषेध-संपति । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार–**संपदि** ।

१४. **प्रतिपत्तिः**—३.३ से रेफ का लोप-पतिपत्तिः । २.८ से तकार का डकार-पडिपत्तिः । २.१५ से परवर्ती पकार के स्थान पर वकार-जडिवत्तिः । ३.१ से पूर्ववर्ती तकार का लोप-पडिवतिः । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर दकार–पडिवदिः । प्रस्तुत सुत्र से तकार के स्थान पर दकार–पडिवदिः । ३.५० से दकार का द्वित्व–पडिवद्दिः । ३.५० से दकार का द्वित्व ५.१८ से परवर्ती इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**पडिवद्दी** ।

## प्रतिसरवेतसपताकासु डः ॥८॥

**पदच्छेद**—प्रतिसरवेतसपताकासु । डः ।

**पदार्थ**—प्रतिसरवेतसपताकासु = प्रतिसर, वेतस और पताका-(इन पदों) में । डः = डकार ।

**सू० अ०**—प्रतिसर, वेतस, पताका (इन पदों) में (तकार के स्थान पर) डकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एषु शब्देषु तकारस्य डकारो भवति । लोपापवादः । पडिसरो (३-३ रलोपः, ५-१ ओ) । वेडिसो (१-३ अ = इ, ५-१ ओ) । पडाआ (२-२ कलोपः) ॥८॥**

**व्याख्या**—यह विधान भी तकार के लोप २.२ का अपवाद है। प्रतिसर, वेतस और पताका-इन पदों में तकार का लोप नहीं होता प्रत्युत उसके स्थान पर डकार हो

जाता है। जैसे—

१. **प्रतिसरः**—३.३ से पूर्ववर्ती रेफ का लोप-पतिसरः । प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर डकार-पडिसरः । ५.१ से सु क साथ अन्त्य अकार का ओकार-**पडिसरो** ।

२. **वेतसः**—प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर डकार-वेडसः । १.३ से प्रथम अकार के स्थान पर इकार-बेडिसः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**वेडिसो** ।

३. **पताका**—प्रस्तुत सूत्र तकार के स्थान पर डकार-पडाका । २.२ से ककार का लोप-**पडाआ** ।

## वसतिभरतयोर्हः ।।९।।

**पदच्छेद**—वसतिभरतयोः । हः ।

**पदार्थ**—वसतिभरतयोः = वसति और भरत-इन पदों में । ह : = हकार ।

**सू०अ०**—वसति और भरत-(इन दोनों पदों) में (तकार के स्थान पर) हकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—वसतिभरतशब्दयोः तकारस्य हकारो भवति । वसही (५-१८ दीर्घः) ।' भरहो (५-१ ओ) ।।९।।**

**व्याख्या**—यह सूत्र भी तकार के लोप २.२ का अपवाद है। वसति और भरत-इन दोनों पदों में तकार का लोप नहीं होता, प्रत्युत इसके स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे—

१. **वसतिः**—प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर हकार वसहिः । ५.१ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-**वसही** ।

२. **भरतः**—प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर हकार-भरहः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**भरहो** ।

## गर्भिते णः ।।१०।।

**पदच्छेद**—गर्भिते । णः ।

**पदार्थ**—गर्भिते = गर्भित-(इस पद) में । णः = णकार ।

**सू०अ०**—गर्भित-(इस पद) में (तकार के स्थान पद) णकार (हो जाता है) ।

**गर्भिताब्दे तकारस्य णकारो भवति । गब्भिणं (३-३ रूलोपः, ३-५० भद्वित्वं, ३-५१ भ्=व्, ५-३० बिन्दुः) ।।१०।।**

**व्याख्या**—गर्भित- इस पद में तकार के स्थान पर णकार हो जाता है। जैसे—

**गर्भितम्**—३.३ से रेफ का लोप-गभितम्। ३.५० से भकार का द्वित्व-गम्भितम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती भकार के स्थान पर बकार-गब्भितम्। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर णकार-गब्भिणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-गब्भिणं।

## ऐरावते च ।।११।।

**पदच्छेद**—ऐरावते। च।

**पदार्थ**—ऐरावते = ऐरावत (इस पद) में। च = भी।

**सू०अ०**—ऐरावत-(इस पद) में भी विकल्प से (तकार के स्थान पर णकार होता है)।

**वृत्तिः—ऐरावतशब्दे तकारस्य णकारो भवति। एरावणो (१-३५ ऐ = ए, ५-१ ओ) ।।११।।**

**व्याख्या**—ऐरावत इस पद में भी विकल्प से तकार के स्थान पर णकार हो जाता है। तात्पर्य यह है कि कहीं-कहीं तकार के स्थान पर णकार होता है और कहीं कहीं तकार का लोप हो जाता है जैसे—

**ऐरावतः**—१.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार-एरावतः। प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर णकार-एरावणः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**एरावणो**। पक्ष में-१.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार-एरावतः। २.२ से तकार का लोप-एरावअः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-एरावओ।

## प्रदीप्तकदम्बदोहदेषु दो लः ।।१२।।

**पदच्छेद**—प्रदीप्तकदम्बदोहदेषु। दः। लः।

**पदार्थ**—प्रदीप्त, कदम्ब और दोहद (इन पद) में। दः = दकार के स्थान पर। लः = लकार।

**सू०अ०**—प्रदीप्त, कदम्ब और दोहद-इन पदों में दकार के स्थान पर लकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एषु शब्देषु दकारस्य लकारो भवति। पलित्तं (३-३ रलोपः, ४-१ ई = इ, ३-१ पलोपः, ३-५० तद्वित्वं, ५-३०बिन्दुः)। कलंबो (४-१७ बिन्दुः, ५-१ ओ)। दोहलो (५-१ ओ) ।।१२।।**

**व्याख्या**—प्रदीप्त, कदम्ब और दोहद-इन पदों में दकार के स्थान पर लकार हो जाता है। जैसे—

१. **प्रदीप्तम्**—३.३ से रेफ का लोप-पदीप्तम्। प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर लकार-पलीप्तम्। ४.१ से ईकार के स्थान पर इकार-पलिप्तम्। ३.१ से पकार का लोप-पलितम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-पलित्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पलित्तं**।

२. **कदम्बः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर लकार-**कलम्बः**। ४.१७ से मकार के अनुस्वार-कलंबः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-कलंबो।

**दोहदः**—प्रस्तुत सूत्र से अन्त्य दकार के स्थान पर लकार-दोहलः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार-**दोहलो**।

## गद्गदे रः ।।१३।।

**पदच्छेद**—गद्गदे। रः।

**पदार्थ**—गद्गद (इस पद) में। रः = रेफ।

**सू०अ०**—गद्गद-इस पद में (दकार के स्थान पर) रेफ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—गद्गदशब्दे दकारस्य रेफदेशो भवति। गग्गरो (३-१ द्लोपः, ३-५० ग्द्वित्वं, ५-१ ओ) ।।१३।।**

**व्याख्या**—गद्गद-इस पद में दकार के स्थान पर रेफ हो जाता है। जैसे—

**गद्गदः**—३.१ से पूर्ववर्ती दकार का लोप- गगदः। ३.५० से द्वितीय गकार का द्वित्व-गग्गदः। प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर रेफ-गग्गरः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-गग्गरो।

## संख्यायाञ्च ।।१४।।

**पदच्छेद**—संख्यायाम्। च।

**पदार्थ**—संख्यायां = संख्या (वाचक पद) में। च = भी।

**सू०अ०**—संख्या (वाचक पद) में भी (दकार के स्थान पर रेफ हो जाता है)।

**वृत्तिः—संख्यावाचिनि शब्दे यो दकारस्तस्य रेफादेशो भवति। एआरह (२-२ क्लोपः, २-४४ श् = ह्)। बारह (३-१ द्लोपः, शेषं पूर्ववत्)। तेरह (१-४ सूत्रे स्पष्टम्)। एकादश-द्वादश-त्रयोदशाः। अयुक्तस्येत्येव, नेह-चउद्दह (१-९ सूत्रे स्पष्टम्) ।।१४।।**

**व्याख्या**—संख्या-वाचक पद में भी दकार के स्थान पर रेफ हो जाता है। जैसे—

१. **एकादश**—२.२ से ककार का लोप-एआदश। प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान

पर रेफ-एआरश। २.४४ से शकार के स्थान परं हकार-**एआरह**।

२. **द्वादश**—३.१ से पूर्ववर्ती दकार का लोप-वादश। प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर रेफ-वारश। २.४४ से शकार के स्थान पर हकार-**वारह**।

३. **त्रयोदश**—३.३ से रेफ का लोप-तयोदश। १.५ से आदि अकार के स्थान पर एकार-तेयोदश। २.२ से यकार का लोप-तेओदश। ४.१ से ओकार का लोप-तेदश। प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर रेफ-तेरश। २.४४ से शकार के स्थान पर हकार-**तरह**।

**विशेष**—संख्या-वाचक पदों में दकार के स्थान पर रेफ २.१ से असंयुक्त दकार के स्थान पर ही होते है। संयुक्त दकार के स्थान पर नहीं। जैसे–

**चतुर्दश**—२.२ से तकार का लोप-चउर्दश। ३.३ से रेफ का लोप-चउदश। ३.५० से दकार का द्वित्व-चउद्दश। २.४४ से शकार के स्थान पर हकार-**चउद्दह**।

## पो वः ।।१५।।

**पदच्छेद**—पोः। वः।

**पदार्थ**—पोः = पकार के स्थान पर। बः = वकार।

**सू०अ०**—पकार के स्थान पर वकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—पकारस्यायुक्तस्यानादिवर्तिनो वकारादेशो भवति। सावो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। सवहो (२-२७ थ् = ह्, शेषं पूर्ववत्)। उलवो (५-१ ओ)। शापः, शपथः, उलपः। प्रायोग्रहणाद्यत्र लोपो न भवति तत्रायं विधिः।।१५।।**

**व्याख्या**—असंयुक्त पकार के स्थान पर वकार हो जाता है। जैसे—

१. **शापः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सापः। प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर वकार-सावः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सावो**।

२. **शपथः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सपथः। प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर वकार-सवथः। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-सवहः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार ओकार-**सबहो**।

३. **उलपः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर वकार-उलवः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**उलवो**।

## आपीडे मः ।।१६।।

**पदच्छेद**—आपीडे। मः।

**पदार्थ**—आपीडे = आपीड-(इस पद) में। मः = मकार।

**सू०अ०**—आपीड (इस पद) में (पकार के स्थान पर) मकार (हो जाता है)।

वृत्तिः—**आपीडशब्दे पकारस्य मकारो भवति। आमेलो (१-२९ ई = ए, २-२३ ड् = ल्, ५-१ ओ) ।।१६।।**

**व्याख्या**—आपीड इस पद में पकार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे—

**आपीडः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर मकार-आमीड:। १.१९ से ईकार के स्थान पर एकार-आमेड:। २.३३ से डकार के स्थान पर लकार-आमेल:। ५.१ से सु के साथ अकार के स्थान पर ओकार-**आमेलो**।

## उत्तरीयानीययोर्ज्जो वा ।।१७।।

**पदच्छेद**—उत्तरीयानीययो:। ज्ज:। वा।

**पदार्थ**—उतरीयानीयो: = उत्तरीय (इस पद) में और अनीय (प्रत्ययान्त पद) में (यकार के स्थान पर) वा = विकल्प से। ज्ज: = ज्ज।

**सू०अ०**—उतरीय (इस पद) में और अनीय (प्रत्ययान्त पद) में (यकार के स्थान पर) विकल्प से ज्ज (होता है)।

वृत्तिः—**उत्तरीयशब्देऽनीयप्रत्ययान्ते च यस्य ज्जो भवति वा। उत्तरीअं, (२-२ यूलोपः, ५-३० बिन्दुः)। एवमुत्तरत्रापि–उत्तरिज्जं। रमणीअं, रमणिज्जं। भरणीअं, भरणिज्जं ।।१७।।**

**व्याख्या**—उत्तरीय-इस पद में और अनीय (प्रत्ययान्त पद) में यकार के स्थान पर विकल्प से ज्जकार हो जाता है। विकल्प का तात्पर्य है कि कहीं-कहीं यकार के स्थान पर ज्जकार होता है और कहीं-कहीं नहीं होता है। जहाँ यकार के स्थान पर ज्जकार नहीं होता, वहाँ २.२ से यकार का लोप हो जाता है। जैसे—

१. **उत्तरीयम्**—१.१९ से ईकार के स्थान पर इकार-उत्तरियम्। प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर ज्जकार-उत्तरिज्जम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**उत्तरिज्जं**। पक्ष में-२.२ से यकार का लोप-उत्तरीअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**उत्तरीअं**।

२. **रमणीणम्**—१.१८ से ईकार के स्थान पर इकार-रमणियम्। प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर ज्जकार-रमणिज्जम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**रमणिज्जं**। पक्ष में-२.२ से यकार का लोप-रमणीअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**रमणीअं**।

३. **भरणीयम्**— १.१८ से ईकार के स्थान पर इकार-भरणियम्। प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर ज्जकार-भरणिज्जम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-

**भरणिज्जं**। पक्ष में-२.२ से यकार का लोप-भरणीअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**भरणीअं**।

## छायायां हः ॥१८॥

**पदच्छेद**—छायायाम्। हः।

**पदार्थ**—छायायाम् = छाया (इस पद) में। हः = हकार।

**सू०अ०**—छाया (इस पद) में (यकार के स्थान पर) हकार (होता है)।

**वृत्तिः—छायाशब्दे यकारस्य हकारो भवति। छाहा ॥१८॥**

**व्याख्या**—छाया इस पद में यकार के स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे—

**छाया**—प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर हकार-**छाहा**।

## कबन्धे बो मः ॥१९॥

**पदच्छेद**—कबन्धे। बोः। मः।

**पदार्थ**—कबन्धे = कबन्ध-(इस पद) में। बः = बकार के स्थान पर मः = मकार।

**सू०अ०**—कबन्ध (इस पद) में बकार के स्थान पर मकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—कबन्धशब्दे बकारस्य मकारो भवति। कमंधो (४-१७ बिन्दुः, ५-१ ओ) ॥१९॥**

**व्याख्या**—कबन्ध इस पद में वकार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे—

**कबन्धः**—प्रस्तुत सूत्र से बकार के स्थान पर मकार-कमन्धः। ४.१७ से वर्गान्त नकार का अनुस्वार-कमंधः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**कमंधो**।

## टो डः ॥२०॥

**पदच्छेद**—टोः। डः।

**पदार्थ**—टः = टकार के स्थान पर। ड़ः = डकार।

**सू०अ०**—टकार के स्थान पर डकार हो (जाता है)।

**वृत्तिः—टस्यानादिवर्तिनो डकारो भवति। णडो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। विडओ (२-१५ प् = व्, ५-१ ओ)। नटः। विटपः ॥२०॥**

**व्याख्या**—पद के आदि में विद्यमान न होने पर असंयुक्त टकार के स्थान पर डकार हो जाता है। जैसे—

१. **नटः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णटः। प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर डकार-णडः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**णडो**।

२. **विटपः**—प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर डकार-विडपः । २.२ से पकार का लोप-विडअः । ५.१ से सु के सहित अन्त्य अकार का ओकार-**विडओ** ।

## सटाशकटकैटभेषु ढः ।।२१।।

**पदच्छेद**—सटाशकटकैटभेषु । ढः ।

**पदार्थ**—सटाशकटकैटभेषु = शकट, कैटभ (इन पदों) में । ढः = ढकार ।

**सू०अ०**—सट, शकट और कैटभ- (इन पदों) में (टकार के स्थान पर) ढकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतेषु टकारस्य ढकारो भवति । सढा । सअढो (२-२ क्लोपः, ५-१ ओ) । केढवो (१-३५ ऐ = ए, २-२९ भ् = व्, ५-१ ओ) ।।२१।।**

**व्याख्या**—सटा, शकट, और कैटभ–इन पदों में टकार के स्थान पर ढकार हो जाता है। जैसे—

१. **सटा**—प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर ढकार–**सढा** ।

२. **शकटः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार–सकटः । २.२ से ककार का लोप-सअटः । प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर ढकार-सअढः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**सअढो** ।

३. **कैटभः**—१.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार-केटभः । प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर ढकार-केढभः । २.२९ से भकार के स्थान पर वकार-केढवः ।५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**केढवो** ।

## स्फटिके लः ।।२२।।

**पदच्छेद**—स्फटिके । लः ।

**पदार्थ**—स्फटिके = स्फटिक (इस पद) में । लः = लकार ।

**सू०अ०**—स्फटिक (इस पद) में (टकार के स्थान पर) लकार (हो जाता है) ।

**वृत्ति—स्फटिकशब्दे टकारस्य लकारो भवति । फलिहो (३-१ स्लोपः, २-४ क् = ह्, ५-१ ओ) ।।२२।।**

**व्याख्या**—स्फटिक–इस पद में टकार के स्थान पर लकार हो जाता है। जैसे—

**स्फटिक**—३.१ से सकार का लोप-फटिकः । प्रस्तुत सूत्र से टकार के स्थान पर लकार-फलिकः । २.४ से ककार के स्थान पर हकार-फलिहः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**फलिहो** ।

## डस्य च ।।२३।।

**पदच्छेद**—डस्य । च ।

**पदार्थ**—डस्य = डकार के स्थान पर । च = भी ।

**सू०अ०**—डकार के स्थान पर भी (प्रायः लकार हो जाता है) ।

**वृत्तिः—डकारस्यायुक्तस्थानादिभूतस्य लकारो भवति । दालिमं (५-३० बिन्दुः) । तलाअं (२-२ ग्लोपः, ५-३० बिन्दुः) । वलही (२-२ भ् = ह्) । प्राय इत्येव । दाडिमं (५-३० बिन्दुः) । बडिसं (२४३ श् = स्, ५-३० बिन्दुः) । णिबिडो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ) । दाडिमः, तडागः, वलभी, बडिशं, निबिडम् ।।२३।।**

**व्याख्या**—असंयुक्त और अनादि डकार के स्थान पर भी प्रायःलकार हो जाता है। कहीं-कहीं नहीं भी होता है। जैसे—

१. **दाडिमम्**—प्रस्तुत सूत्र से डकार के स्थान पर लकार-दालिमम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**दालिमं** । पक्ष में-५.३० से मकार के स्थान पर अनुस्वार–**दाडिमं** ।

२. **तडागम्**—प्रस्तुत सूत्र से डकार के स्थान पर लकार–**तलागम्** । २.२ से गकार का लोप–**तलाअम्** । ५.३० से मकार का अनुस्वार-तलाअं ।

३. **वलभी**—२.२७ से मकार के स्थान पर हकार-वलही । भामह द्वारा डकार के स्थान पर लकार होने के प्रसङ्ग में यह उदाहरण उचित नहीं प्रतीत होता ।

४. **वडिशम्**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-वडिसम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वडिसं** । यहाँ डकार का लकार नहीं हुआ है।

५. **निविडः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिविडः । ५.१ से अकार का ओकार–**निविडो** । यहाँ भी डकार का लकार नहीं हुआ है।

## ठो ढः ।।२४।।

**पदच्छेद**—ठोः । ढः ।

**पदार्थ**—ठोः = ठकार के स्थान पर । ढः = ढकार ।

**सू०अ०**—ठकार के स्थान पर ढकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ठकारस्यायुक्तस्यानादिभूतस्य ढकारो भवति । मढं (५-३० बिन्दुः) एवमग्रेऽपि । जढरं । मठः, जठरं, कठोरम् ।।२४।।**

**व्याख्या**—अनादि और असंयुक्त होने पर ठकार के स्थान पर ढकार हो जाता

है। जैसे—

१. **मठम्**—प्रस्तुत सूत्र से ठकार के स्थान पर ढकार-मढम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**मढं**।

२. **जठरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ठकार के स्थान पर ढकार-जढरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**जढरं**।

३. **कठोरम्**—प्रस्तुत सूत्र से ठकार के स्थान पर ढकार-कढोरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**कढोरं**।

## अङ्कोले ल्लः ।।२५।।

**पदच्छेद**—अङ्कोले। ल्लः।

**पदार्थ**—अङ्कोले = अङ्कोल (इस पद) में। ल्लः = ल्लकार।

**सू०अ०**—अङ्कोल (इस पद) में (लकार के स्थान पर) ल्लकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अङ्कोलशब्दे लकारस्य ल्ल्कारो भवति। अङ्कोल्लो (५-१ ओ)॥२५॥**

**व्याख्या**—अङ्कोल इस पद में लकार के स्थान पर ल्लकार हो जाता है। जैसे—

**अँङ्कोलः**—प्रस्तुत सूत्र से 'ल' के स्थान पर 'ल्ल'-अङ्कोल्ल। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**अङ्कोल्लो**।

## फो भः ।।२६।।

**पदच्छेद**—फो:। भ:।

**पदार्थ**—फ: = फकार के स्थान पर। भ: = भकार।

**सू०अ०**—फकार के स्थान पर भकार हो जाता है।

**वृत्तिः—फकारस्यायुक्तस्यानादिभूतस्य भकारो भवति। सिभा (२-४३ श् = स्,)। सेभालिआ (२-२ क्लोपः)। सभरी (२-४३ श् = स्)। संभलं (५-३० बिन्दुः) ।।२६।।**

**व्याख्या**—अनादि और संयुक्त न होने पर फकार के स्थान पर भकार हो जाता है। जैसे—

१. **शिफा**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सिफा। प्रस्तुत सूत्र से फकार के स्थान पर भकार-**सिभा**।

२. **शेफालिका**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सेफालिका। प्रस्तुत सूत्र से फकार के स्थान पर भकार-सेभालिका। २.२ से ककार का लोप-**सेभालिआ**।

३. **शफरी**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सफरी। प्रस्तुत सूत्र से फकार के स्थान पर भकार–**सभरी**।

४. **सम्फलम्**—४.१७ से पूर्ववर्ती मकार का अनुस्वार-संफलम्। प्रस्तुत सूत्र से फकार के स्थान पर भकार-संभलम्। ५.३० से अन्त्य मकार का अनुस्वार-**संभलं**।

## खघथधभां हः ।।२७।।

**पदच्छेद**—खघथधभाम्। ह:।

**पदार्थ**—खघथधभाम् = खकार, घकार, थकार, धकार और भकार के स्थान पर। ह: = हकार।

**सू०अ०**—खकार, घकार, धकार, धकार और भकार के स्थान पर हकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—खादीनां पञ्चानामयुक्तानामनादिवर्तिनां हकारो भवति। खस्य तावत्मुहं (५-३० बिन्दुः)। मेहला। घस्य–मेहो (५-१ ओ)। जहणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। थस्य–गाहा। सवहो (२-१५ सूत्रे स्पष्टम्)। धस्य–रहा। बहिरो (५-१ ओ)। भस्य–सहा रासहो (५-१ ओ)। प्राय इत्येव-पखलो (३-३ र्लोपः, ५.१ ओ)। पलङ्घणो (३.३ रलोपः, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। अधीरो (५-१ ओ)। अधणो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। उवलद्धभावो (२-१५ प् = व्, ३-३ व्लोपः, ३-५० ध्द्वित्वम्, ३-५१ ध् = द्, प्रायोग्रहणात् न व्लोपः, ५-१ ओ)। मुखम्, मेखला, मेघः, जघनं, गाथा, शपथः, राधा, बधिरः, सभा, रासभः, प्रखलः, प्रलङ्घनः अधीरः, अधनः, उपलब्ध-भावः ।।२७।।**

**व्याख्या**—पदादि में न विद्यमान और असंयुक्त खकार, घकार, थकार, धकार और भकार के स्थान पर प्राय: हकार हो जाता है। जैसे—

१. **खकार के स्थान पर**—

**(क) मुखम्**—प्रस्तुत सूत्र से खकार के स्थान पर हकार-मुहम्। ४.३० से मकार का अनुस्वार–**मुहं**।

**(ख) मेखला**—प्रस्तुत सूत्र से खकार के स्थान पर हकार–**मेहला**।

२. **घकार के स्थान पर**—

**(क) मेघः**—प्रस्तुत सूत्र से घकार के स्थान पर हकार-मेह:। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मेहो**।

(ख) **जघनम्**—प्रस्तुत सूत्र से घकार के स्थान पर हका-जहनम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-जहणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**जहणं**।

**३. थकार के स्थान पर—**

(क) **गाथा**—प्रस्तुत सूत्र से थकार के स्थान पर हकार–**गाहा**।

(ख) **शपथः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सपथः। २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-सवथः। प्रस्तुत सूत्र से थकार के स्थान पर हकार-सवहः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**सवहो**।

**४. धकार के स्थान पर—**

(क) **राधा**—प्रस्तुत सूत्र से धकार के स्थान पर हकार–**राहा**।

(ख) **बधिरः**—प्रस्तुत सूत्र से धकार के स्थान पर हकार बहिरः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**बहिरो**।

**५. भाकार के स्थान पर—**

(क) **सभा**—प्रस्तुत सूत्र से भकार के स्थान पर हकार–**सहा**।

(ख) **रासभः**—प्रस्तुत सूत्र से भकार के स्थान पर हकार-रासहः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**रासहो**।

**विशेष**—प्रायः खकार, घकार, सकार, धकार और मकार के स्थान पर हकार होता है किन्तु जहाँ श्रवणकटुता होती है वहाँ हकार नहीं होता। जैसे–

१. **प्रखलः**—३.३ से रेफ का लोप-**पखलः**। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**पखालो**।

२. **प्रलङ्घनः**—३.३ से रेफ का लोप-पलङ्घन। ४.१७ से ङकार का अनुस्वार-पलङ्घनः। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-पलङ्घणः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**पलङ्घणो**।

३. **अंधीरः**—५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अधीरो**।

४. **अधनः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-अधणः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अधणो**।

५. **उपलब्धभावः**—२.१५ से पकार के स्थान पर वकार-उपलब्ध भानः। ३.३ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-उवलद्धभावः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**उवलद्धभावो**।

इन पाँचो प्रत्युदाहरणों में श्रुतिकटुत्व के कारण क्रमशः खकार, धकार, थकार, घकार और भकार के स्थान पर हकार नहीं हुआ है।

## प्रथमशिथिलनिषधेषु ढः ।।२८।।

**पदच्छेद**—प्रथमशिथिलनिषधेषु । ढः ।

**पदार्थ**—प्रथम, शिथिल और निषध (इन पदों) में । ढः = ढकार ।

**सू०अ०**—प्रथम, शिथिल और निषध (इन पदों) में ढकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतेषु थधयोर्ढकारो भवति । पढमो (३-३ र्लोपः, ५-१ ओ) । सिढिलो (२-४३ श् = स्, ५-१ ओ) । णिसढो (२-४३ श् = स्, शेषं पूर्ववत्) ।।२८।।**

**व्याख्या**—प्रथम में थकार, शिथिल में थकार और निषध में धकार के स्थान पर ढकार हो जाता है। जैसे—

१. **प्रथमः**—३.३ से रेफ का लोप-पथमः । प्रस्तुत सूत्र से थकार के स्थान पर ढकार-पढमः । ५.१ से सु के साथ अकार के स्थान पर ओकार–**पढमो** ।

२. **शिथिलः**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सिथिलः । प्रस्तुत सुत्र से थकार के स्थान पर ढकार–सिढिलः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सिढिलो** ।

३. **निषधः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकर-णिषधः । २.४३ से पकार के स्थान पर सकार-णिसधः । प्रस्तुत सूत्र धकार के स्थान पर ढकार–णिसढः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**णिसढो** ।

## कैटभे वः ।।२९।।

**पदच्छेद**—कैटभे । वः ।

**पदार्थ**—कैटभ-(इस पद) में । वः = वकार ।

**सू०अ०**—कैटभ (इस पद) में (भकार के स्थान पर) वकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—कैटभशब्दे भकारस्य वकारो भवति । केढवो (१-३४ ऐ = ए, २-२१ ट् = ढ्, ५-१ ओ) ।।२९।।**

**व्याख्या**—कैटभ इस पद में भकार के स्थान पर वकार हो जाता है। जैसे—

**कैटभः**—१.३५ से ऐकार के स्थान पर एकार-केटभः । २.२ से टकार के स्थान पर ढकार-केढभः । प्रस्तुत सूत्र से भकार के स्थान पर वकार-केढवः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**केढवो** ।

## हरिद्रदीनां रो लः ।।३०।।

**पदच्छेद**—हरिद्रादीनाम् । रोः । लः ।

**पदार्थ**—हरिद्रादीनाम् = हरिद्रा इत्यादि में। रोः = रेफ के स्थान पर। लः = लकार।

**सू०अ०**—हरिद्रा इत्यादि (पदों) में रेफ के स्थान पर लकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—हरिद्रा इत्येवमादीनां रेफस्य लकारो भवति। हलद्दा (१-१३ इ = अ, ३-३ र्लोपः, ३-५० द्द्वित्वं ५-२४ आत्वं बाहुल्यात्)। चलणो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। मुहलो (४-२७ ख् = ह्, ५-१ ओ)। जहिट्ठिलो (१-२२ सूत्रे स्पष्टम्)। सोमालो (५-१ ओ)। कलुणं (प्रायोग्रहणात् कलोपाभावः, ५-३० बिन्दुः)। अङ्गुली (स्पष्टम्)। इङ्गालो (४-१७ वगन्ति बिन्दुः, ५-१ ओ)। चिलादो (२-३३ क् = च्, २-७ त् = द्, ५-१ ओ)। फलिहा (२-२६ प् = फ्, २-२७ ख् = ह्)। फलिहो (५-१ ओ, शेषं पूर्ववत्)। हरिद्रा-चरण-मुखर-युधिष्ठिर-सुकुमार-करुण-अङ्गुरी-अङ्गार-किरात-परिखा-परिघ इत्येवमादयः ।।३०।।**

**व्याख्या**—हरिद्रा इत्यादि पदों में असंयुक्त रेफ के स्थान पर लकार हो जाता है। जैसे—

१. **हरिद्रा**—१.३ से इकार के स्थान पर अकार-अरद्रा। प्रस्तुत सूत्र से असंयुक्त रेफ के स्थान पर लकार-हलद्रा। ३.३ से रेफ का लोप-हलदा। ३.५० से दकार का द्वित्व–**हलद्दा**।

२. **चरणः**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ के स्थान पर लकार-चलणः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**चलणो**।

३. **मुखरः**—५.२७ से खकार के स्थान पर हकार-मुहरः। प्रस्तुत सूत्र से रेफ के स्थान पर लकार-मुहलः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**मुहलो**।

४. **युधिष्ठिरः**—२.३१ से यकार का जकार-जुधिष्ठिरः। २.२७ से धकार का हकार-जुहिष्ठिरः। १.२२ से उकार का अकार-जहिष्ठिरः। ३.१ से षकार का लोप-जहिठिरः। ३.५० से ठकार का द्वित्व-जहिठ्ठिरः। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-जहिट्ठिरः। प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-जहिट्ठिलः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**जहिट्ठिलो**।

५. **सुकुमारः**—हेमचन्द के ८.१-१.७१ सूत्र के अनुसार कुसहित उकार के स्थान पर ओकार-सोमारः। प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-सोमालः। ५.१ से अकार का ओकार तथा ४.६ से सु का लोप–**सोमालो**। पक्ष में-आत्व न होने पर २२. से ककार का लोप-सुउमारः। प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-सुउमालः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सुउमालो**।

६. **करूणम्**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-कलुणम्। ५.३० से मकार का

अनुस्वार-**कलुणं** ।

७. **अङ्गुरी**—पस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-**अङ्गुली** ।

८. **अङ्गारः**—१.३ से अकार का इकार-इङ्गारः । प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-इङ्गालः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**इङ्गालो** ।

९. **किरातः**—२.३३ से ककार का चकार-चिरातः । प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-चिलातः । २.२७ से तकार का दकार-चिलादः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**चिलादो** ।

१०. **परिखा**—२.३६ से पकार का फकार -फरिखा । प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-फलिखा । २.२७ से खकार का हकार-**फलिहा** ।

११. **परिधः**—२.३६ से पकार का फकार-फरिधः । प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लकार-फलिधः । २.२७ से धकार का हकार-फलिहः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**फलिहो** ।

## आदेर्यो जः ।।३१।।

**पदच्छेद**—आदेः । योः । जः ।

**पदार्थ**—पददिः (पद के) आदि वाले । योः = यकार के स्थान पर । जः = जकर ।

**सू०अ०**—पद के आदि वाले यकार के स्थान पर जकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अनादेरिति निवृत्तम् । आदिभूतस्य यकारस्य जकारो भवति । जट्ठी (३-१० ष्ट् = ठ्, ३-५० ठ्द्वित्वम्, ३-५१ ठ् = ट्, ५-१८ दीर्घः) । जसो (२-४३ श् = स्, स्लोपः, ४-१८ पुंस्त्वं, ५-१ ओ)। जक्खो (३-२९ क्ष् = ख्, ३.५० खद्वित्वं, ३-५१ ख् = क्, ५-१ ओ) । यष्टि यशः, यक्षः ।।३१।।**

**व्याख्या**—आदि में विद्यमान न होने पर-इसकी निवृत्ति हो गयी है । पद के आदि में विद्यमान यकार के स्थान पर जकार हो जाता है। जैसे—

१. **यष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर जकार-जष्टि । ३.१० से ष्टकार के स्थान पर ठकार-जठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-जठ्ठि । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-जट्ठिः । ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप-**जट्ठी** ।

२. **यशः**—प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर जकार-जशः । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-जसः । ४.१८ से पुल्लिंग । ५.१ से अत्य अकार का ओकार और ४.६ सु का लोप-**जसो** ।

३. **यक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर जकार-जक्षः । ३.२९ से क्षकार के स्थान पर खकार-जखः । ३.५० से खकार का द्वित्व-जख्खः । ३.५१ पूर्ववर्ती खकार के स्थान पर ककार-जक्खः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**जक्खो** ।

## यष्ट्यां लः ।।३२।।

**पदच्छेद**—यष्ट्याम् । लः ।

**पदार्थ**—यष्ट्याम् = यष्टि (पद) में । लः = लकार ।

**सू०अ०**—यष्टि (इस पद) में (यकार के स्थान पर) (विकल्प से) लकार (होता है) ।

**वृत्तिः—यष्टिशब्दे यकारस्य भवति । लट्ठी (जट्ठीवत्) ।।३२।।**

**व्याख्या**—यष्टि इस पद में यकार के स्थान पर विकल्प से लकार होता है और पक्ष में २.३१ से जकार भी । जैसे—

**यष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से यकार के स्थान पर लकार-लष्टिः । ३.१ से ष्टकार के स्थान पर ठकार-लठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व–लठ्ठिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार–लट्ठिः । ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप–**लट्ठी** । पक्ष में यकार के स्थान पर जकार-जट्ठी रूप होता है ।

## किराते चः ।।३३।।

**पदच्छेद**—किराते । चः ।

**पदार्थ**—किराते-(इस पद) में । चः = चकार ।

**सू०अ०**—किरात-(इस पद) में (आदि ककार के स्थान पर) चकार होता है ।

**वृत्तिः—किरातशब्दे आदेर्वर्णस्य चकारो भवति । चिलादो (२-३० सूत्रे स्पष्टम्) ।।३३।।**

**व्याख्या**—किरात–इस पद में आदि ककार के स्थान पर चकार होता है। जैसे—

**किरातः**—प्रस्तुत सूत्र से ककार के स्थान पर चकार-चिरातः । २.३० से रेफ के स्थान पर लकार-चिलातः ।२.७ से तकार के स्थान पर दकार-चिलादः । ५.१ से सु सहित अकार के स्थान पर ओकार–**चिलादो** ।

## कुब्जे खः ।।३४।।

**पदच्छेद**—कुब्जे । खः ।

**पदार्थ**—कुब्जे = कुब्ज (इस पद) में । खः = खकार ।

**सू०अ०**—कुब्ज-(इस पद) में (आदि ककार के स्थान पर) खकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—कुब्जशब्दे आदेर्वर्णस्य खकारो भवति। खुज्जो (३-३ व्लोपः, ३-५० ज्द्वित्वं, ५-१ ओ) ।।३४।।**

**व्याख्या**—कुब्ज इस पद में आदि वाले ककार के स्थान पर खकार हो जाता है। जैसे—

**कुब्जः**—प्रस्तुत सूत्र से ककार के स्थान पर खकार-खुब्जः। ३.३ से वकार का लोप-खुजः। ३.५० से जकार का द्वित्व-खुज्जः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**खुज्जो**।

## दोलादण्डदशनेषु डः ।।३५।।

**पदच्छेद**—दोलादण्डदशनेषु। डः।

**पदार्थ**—दोलादण्डदशनेषु = दोला, दण्ड और दशन-इन पदों में। डः = डकार।

**सू०अ०**—दोला, दण्ड और दशन-(इन पदों) में (आदि दकार के स्थान पर) डकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एषु आदेर्वर्णस्य डकारो भवति। डोला। डंडो (५-१ ओ)। डसणो (२-४३ श् = स्, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ) ।।३५।।**

**व्याख्या**—दोला, दण्ड और दशन-इन पदों में आदि वाले दकार के स्थान पर डकार हो जाता है। जैसे—

१. **दोला**—प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर डकार–**डोला**।

२. **दण्डः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर डकार-डण्डः। ४.१७ से णकार का अनुस्वार-डंड। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**डंडो**।

३. **दशनः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार के स्थान पर डकार-डशनः। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-डसनः। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-डसणः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**डसणो**।

## परुषपरिघपरिखासु फः ।।३६।।

**पदच्छेद**—परुषपरिघपरिखसु। फः।

**पदार्थ**—परुषपरिधपरिखासु = परुष, परिध और परिख-(इन पदों) में। फः = फकार।

**सू०अ०**—परुष, परिध और परिख-(इन पदों) में (आदि पकार के स्थान पर)

फकार (हो जाते है)।

**वृत्तिः—एतेषु आदेर्वर्णस्य फकारो भवति । फरुसो (२-४३ ष् = स्, ५-१ ओ) । फलिहो । फलिहा (२-३० सूत्रे स्पष्टम्) ।।३६।।**

**व्याख्या**—परुष, परिध और परिख–इन पदों में आदि पकार के स्थान पर फकार हो जाता है । जैसे—

१. **परुषः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर फकार-फरुषः । २.४३ से षकार के स्थान पर सकार-फरुसः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**फरुसो** ।

२. **परिघः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर फकार-फरिघः । २.३ से रेफ के स्थान पर लकार-पुलिघः । २.२७ से घकार के स्थान पर हकार-फलिहः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**फलिहो** ।

३. **परिखा**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर फकार-फरिखा । २.३० से रेफ के स्थान पर लकार-फलिखा । २.२७ से खकार के स्थान पर हकार–**फलिहा** ।

## पनसेऽपि ।।३७।।

**पदच्छेद**—पनसे । अपि ।

**पदार्थ**—पनसे-पनस-(इस पद) में । अपि = भी ।

**सु०अ०**—पनस (इस पद) में भी (आदि पकार के स्थान पर फकार हो जाता है)। जैसे—

**वृत्तिः—पनसशब्देऽपि पकारस्य फकारो भवति । फणसो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओत्वम्) ।।३७।।**

**व्याख्या**—पनस इस पद में भी आदि वाले पकार के स्थान पर फकार हो जाता है । जैसे—

**पनसः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार के स्थान पर फकार-फनसः । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-फणसः ।५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**फणसो** ।

## बिसिन्यां भः ।।३८।।

**पदच्छेद**—बिसिन्याम् । मः ।

**पदार्थ**—बिसिन्याम्-बिसिनी-(इन पद) में । मः = मकार ।

**सू०अ०**—बिसिनी–(इन पद) में (आदि बकार के स्थान पर) मकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—बिसिनीशब्दे आदेर्वर्णस्य भकारो भवति। भिसिणी (२-४२ न् = ण्,)। स्त्रीलिङ्गनिर्देशादिह न भवति-बिसं (२-४३ ष् = स्, ५-३० बिन्दुः)।।३८।।**

**व्याख्या**—बिसिनी इस पद में आदि वाले बकार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे—

**बिसिनी**—प्रस्तुत सूत्र से बकार के स्थान पर मकार-मिसिनी। २.४३ से नकार के स्थान पर णकार–**मिसिणी**।

## मन्मथे वः ।।३९।।

**पदच्छेद**—मन्मथे। वः।

**पदार्थ**—मन्मथे = मन्मथ (इस पद) में। वकार।

**सू०अ०**—मन्मथ (इस पद) में (आदि मकार के स्थान पर) वकार (जाता है)।

**वृत्तिः—मन्मथशब्दे आदेर्वर्णस्य वकारो भवति। वम्महो (३-४३ न्म् = म्, ५-३० म्द्वित्वम्, २-२७ थ् = ह्, ५-१ ओत्वम्) ।।३९।।**

**व्याख्या**—मन्मथ इस पद में आदि वाले मकार के स्थान पर वकार हो जाता है। जैसे—

**मन्मथः**—प्रस्तुत सूत्र से आदि वाले मकार के स्थान पर वकार-वन्मथः। २.४३ से न्मकार के स्थान पर मकार-वमथः। ३.५० से मकार का द्वित्व-वम्मथः। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-वम्महः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार-और ४.६ से सु का लोप–**बम्महो**।

## लाहले णः ।।४०।।

**पदच्छेद**—लाहले। षः।

**पदार्थ**—लाहले = लाहल (इस पद) में। षः = षकार।

**सू०अ०**—लाहल (इस पद) में (आदि वाले लकार के स्थान पर) षाकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—लाहलशब्दे आदेर्वर्णस्य णकारो भवति। णाहलो (ओत्वं पूर्व-वत्)।।४०।।**

**व्याख्या**—लाहल इस पद में आदि वाले लकार के स्थान पर णकार हो जाता है। जैसे—

**लाहलः**—प्रस्तुत सूत्र से आदि लकार के स्थान पर णकार-णाहलः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**णाहलो**।

## षट्शावकसप्तपर्णानां छः ।।४१।।

**पदच्छेद**—षट्शावकसप्तपर्णानाम् । छः ।

**पदार्थ**—षट्शावकसप्तपर्णानाम् = षट्, शावक और सप्तपर्ण-(इन पदों) में । छः = छकार ।

**सू०अ०**—षट्, शावक और सप्तपर्ण-इन पदों में आदि वाले व्यञ्जन के स्थान पर) छकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतेषामादेर्वर्णस्य छकारो भवति । छट्टी (३-१० ष्ट् = ठ्, शेषं, ३-३१ सूत्रे स्पष्टम्) । छम्मुहो (१०-५ ण् = न्, ३-४३ न्म् = म्, ३-५० म्द्वित्वम्, २-२७ ख् = ह्, ५-१ ओ) । छावओ (२-२ क्लोपः, ५-१ ओ) । छत्तवण्णो (३-१ प्लोपः, ३-५० त्द्वित्वम्, २-१५ प् = व्, ३-३ र्लोपः, ३-५० ण्द्वित्वम्, ५-१ ओ) । षष्ठी, षण्मुखः शावकः, सप्तपर्णः ।।४१।।**

**व्याख्या**—षट् में आदि वाले व्यञ्जन षकार, 'शावक' में आदि वाले व्यञ्जन शकार और 'सप्तपर्ण' में आदि वाले व्यञ्जन सकार के स्थान पर छकार हो जाता है। जैसे–

१. **षष्ठी**—प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर छकार-छष्ठी । ३.१० से ष्ठ के स्थान पर ठकार-छठी । ३.५० से ठकार का द्वित्व-छठ्ठी । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार–**छट्ठी** ।

२. **षण्मुखः**—प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर छकार-छण्मुखः । १०.५ से षाकार का नकार-छन्मुखः । २.४३ से न्मकार का मकार-छमुखः । ३.५० से मकार का द्वित्व-छम्मुखः । २.२७ से खकार के स्थान पर हकार-छम्मुहः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**छम्मुहो** ।

३. **शावकः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर छकार-छावकः । २.२ से ककार का लोप-सावअः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**छावओ** ।

४. **सप्तपर्णः**—प्रस्तुत सूत्र से सकार के स्थान पर छकार-छप्तपर्णः । ३.१ से पकार का लोप-छतपर्णः । ३.५० से तकार का द्वित्व–छत्तपर्ण । २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-छत्तवर्णः । ३.३ से रेफ का लोप–छत्तवणः ।३.५० से णकार का द्वित्व-छत्तवण्णः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**छत्तवण्णो** ।

## नो णः सर्वत्र ।।४२।।

**पदच्छेद**—नोः । णः । सर्वत्र ।

**पदार्थ**—सर्वत्र = सभी स्थानों पर। नोः = नकार के स्थान पर। णः = णकार।

**सू०अ०**—सभी स्थानों पर नकार के स्थान पर णकार हो जाता है।

**वृत्तिः—आदेरिति निवृत्तम्। सर्वत्र नकारस्य णकारो भवति। णई (२-२ द्लोपः, ५-२८ दीर्घः)। कणअं (२-२ क्लोपः,५-३० बिन्दुः)। वअणं (२-२ च्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। माणंसिणी (१-२ सूत्रे स्पष्टम्)। नदी, कनकम्, वचनम्, मनस्विनी।।४२।।**

**व्याख्या**—इस सूत्र में किया गया विधान आदि वाले के स्थान पर निवारण के लिए हुआ है। सर्वत्र (= सभी स्थलों पर) नकार के स्थान पर अर्थात् आदि औद अन्त में सर्वत्र णकार हो जाता है। जैसे–

१. **नदी**—प्रस्तुत सूत्र से नकार के स्थान पर णकार-णदी। २.२ से दकार का लोप–**णई**।

२. **कनकम्**—प्रस्तुत सूत्र से नकार के स्थान पर णकार-कणकम्। २.२ से परवर्ती ककार का लोप-कणअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कणअं**।

३. **वचनम्**—२.२ से चकार का लोप-वअनम्। प्रस्तुत सूत्र से नकार के स्थान पर णकार-वअणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वअणं**।

४. **मनस्विनी**—प्रस्तुत सूत्र से नकार के स्थान पर णकार-मणस्विणी। ४.१५ से णकार पर अनुस्वार-मणंस्विणी।३.३ से वकार का लोप–**मणंसिणी**।

## शषोः सः।।४३।।

**पदच्छेद**—शषोः। सः।

**पदार्थ**—शषोः = शकार और षकार के स्थान पर। सः = सकार।

**सू०अ०**—शकार और षकार के स्थान पर सकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—सर्वत्र शकारषकारयोस्सकारो भवति। शस्य–सद्दो (३-३ व्लोपः, ३-५० द्वित्वम्, ५-१ ओ)। णिसा (२-४२ न् = ण्)। अंसो (५-१ ओत्वं)। षस्य–संठो (४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, २-२४ ढ् = ठ्, ओत्वं पूर्ववत्, ३-५६ द्वित्वं न)। वसहो (१-२७ ऋ = अ, २-२७ भ् = ह्, ओत्वं पूर्ववत्)। कसाअं (२-२ य्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। शब्दः, निशा, अंशः,षण्ढः, वृषभः, कषायम्।।४३।।**

**व्याख्या**—पूर्ववर्ती सूत्र से सर्वत्र की अनुवृत्ति होती है। सभी स्थलों पर शकार और षकार के स्थान पर सकार हो जाता है। जैसे—

**१. शकार के स्थान पर—**

**(क) शब्दः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर सकार-सब्द: । ३.३ से बकार का लोप-सद: । ३.५० से दकार का द्वित्व-सद्द: । ५.१ से अकार के स्थान पर ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सद्दो** ।

**(ख) निशा**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिशा । प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर सकार–**णिसा** ।

**(ग) अंशः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर सकार-अंस: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**अंसो** ।

**२. षकार के स्थान पर—**

**(क) षण्ढः**—प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर सकार-सण्ढ: । ४.१७ से णकार का अनुस्वार-संढ: । २.४ से ढकार के स्थान पर ठकार-संठ: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**संठो** ।

**(ख) वृषभः**—१.२६ से ऋकार के स्थान पर अकार-वषभ: । प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर सकार-वसभ: । २.२७ से भकार के स्थान पर हकार-वसह: । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**वसहो** ।

**(ग) कषयम्**—प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर सकार-कसापम् । २.२ से यकार का लोप-कसाअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कसाअं** ।

## दशादिषु हः ।।४४।।

**पदच्छेद**—दशादिषु । ह: ।

**पदार्थ**—दशादिषु = दश इत्यादि (पदों) में । ह: = हकार ।

**सू०अ०**—दश इत्यादि (पदों) में (शकार के स्थान पर) हकार हो जाता है।

**वृत्तिः—दश इत्येवमादिषु शकारस्य हकारो भवति । दह (स्पष्टं) । एआरह (२-२ क्लोपः, २-१४ द् = र्,) । बारह (३-१ द्लोपः, २-१४ द् = र्,) । तेरह (१-५ सूत्रे स्पष्टम्) । दश–एकादश–द्वादश–त्रयोदशाः ।।४४।।**

**व्याख्या**—दस और इसके समान अन्य पदों में शकार के स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे—

**१. दश**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार–**दह** ।

**२. एकादश**—२.२ से ककार का लोप-एआदश । २.१४ से हकार के स्थान पर रेफ-एआरश । प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार–**एआरह** ।

३. **द्वादश**—३.१ से दकार का लोप-वादश। २.१४ से दकार के स्थान पर रेफ-वारश। प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार–**बारह**।

४. **त्रयोदश**—३.३ से रेफ का लोप-तयोदश। १.५ से अकार के स्थान पर एकार-तेयोदश। २.२ से यकार का लोप-तेओदश। ४.१ से ओकार का लोप-तेदश। २.१४ से दकार के स्थान पर रेफ-तेरश। प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार–**तेरह**।

## संज्ञायां वा ।।४५।।

**पदच्छेद**—संज्ञायाम्। वा।

**पदार्थ**—संज्ञायाम् = संज्ञावाचक (दश-इस पद) में। वा = विकल्प से।

**सू० अ०**—संज्ञावाचक (दश-इस पद) में विकल्प से शकार के स्थान पर हकार हो जाता है।

**वृत्तिः—संज्ञायां गम्यमानायां दशशब्दे शस्य हत्वं वा भवति। दहमुहो। पक्षे-दसमुहो (२-४३ श् = स्, २-२७ ख् = ह्, ५-१ ओ)। दहबलो, दसबलो (पूर्ववत्)। दहरहो, दसरहो (२-२७ थ् = ह्, ५-१ ओत्तवत्) दशमुखः, दशबलः, दशरथः ।।४५।।**

**व्याख्या**—संज्ञावाचक दश इस पद में विकल्प से शकार के स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे-

१. **दशमुखः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार-दहमुखः। २.२७ से खकार के स्थान पर हकार-दहमुहः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दहमुहो**। पक्ष में-३.४३ से शकार के स्थान पर सकार-दसमुखः। २.२७ से खकार के स्थान पर हकार-दसमुहः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दसमुहो**।

२. **दशबलः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार-दहबलः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दहवलो**। पक्ष में-२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-दसबलः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**दसबलो**।

३. **दशरथः**—प्रस्तुत सूत्र से शकार के स्थान पर हकार-दहरथः। २.२७ से धकार के स्थान पर हकार-दहरहः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दहरहो**। पक्ष में-२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-दसरथः। २.२७ से यकार के स्थान पर हकार-दसरहः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**दसरहो**।

## दिवसे सस्य ।।४६।।

**पदच्छेद**—दिवसे । सस्य ।

**पदार्थ**—दिवसे = दिवस (इस पद) में । सस्य = सकार के स्थान पर ।

**सू०अ०**—दिवस (इस पद) में सकार के स्थान पर (विकल्प से हकार होता है) ।

**वृत्तिः—दिवसशब्दे सकारस्य हकारो वा भवति। दिअहो, दिअसो (२-२ व्लोपः, ५-१ ओ) । दिवसः ।।४६।।**

**व्याख्या**—दिवस इस पद में सकार के स्थान पर विकल्प से हकार हो जाता है। जैसे–

**दिवसः**—२.२ से वकार का लोप दिअसः । प्रस्तुत सूत्र से सकार के स्थान पर दिअहः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दिअहो** । पक्ष में-२.२ से वकार का लोंप-दिअसः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**दिअसो** ।

## स्नुषायां ण्हः ।।२७।।

**पदच्छेद**—स्नुषायां । ण्हः ।

**पदार्थ**—स्नुषायाम् = स्नुषा (इस पद) में । ण्हः = ण्हकार ।

**सू०अ०**—स्नुषा -इस पद में (षकार के स्थान पर) ण्हकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—स्नुषाशब्दे षकारस्य ण्हकारो भवति । सोण्हा (१-२० ओत्वम्, ३-२ नकारलोपः) ।।४७।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य द्वितीयःपरिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—स्नुषा-इस पद में षकार के स्थान पर ण्हकार हो जाता है। जैसे—

**स्नुषा**—३.२ से नकार का लोप-सुषा। १.२० से उकार का ओकार-सोषा। प्रस्तुत सूत्र से षकार के स्थान पर ण्हकार–**सोण्हा** ।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का द्वितीय परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# तृतीयः परिच्छेदः

## ( युक्तविधानम् )

### उपरि लोपः कगडतदपषसाम् ।।१।।

**पदच्छेद**—उपरि । लोपः । कगडतदपषसाम् ।

**पदार्थ**—उपरि = उपर (प्रथम स्थान में विद्यमान, पूर्ववर्ती) । कगडतदपषसाम् = ककार, गकार, डकार, तकार, दकार, पकार, षकार और सकार का । लोपः = लोप ।

**सू०अ०**—संयोग में पूर्ववर्ती ककार, गकार, डकार, तकार, दकार, पकार, षकार और सकार का लोप (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—कदीनामष्टानां युक्तस्योपरि स्थितानां लोपो भवति । कस्य तावत्—भत्तं (३-५० त्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । सित्थअं (३-५० थ्द्वित्वं, ३-५१ थ् = त्, २-२ क्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। गस्य—मुद्धो (३-५० ध्द्वित्वं, ३-५१ ध् = द्, ५-१ ओ) । सिणिद्धो (२-४२ न् = ण्, ३-५१ अधिकारसूत्रात् विप्रकर्षः पूर्वस्वरता च, ३-५० ध्द्वित्वं, ३-५१ ध् = द्, ओकारः पूर्ववत्) । डस्य—खग्गो (३-५० ग्द्वित्वं, ओत्वं पूर्ववत्) । तस्य—उप्पलं (३-५० प्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । उप्पाओ (३-५० प्द्वित्वं, २-२ त्लोपः, ५-१ ओ) । दस्य—गुग्गा (३-५० ग्द्वित्वं, ५-११ दीर्घः, ५-२ जसो लोपः)' मुग्गरो (५-१ ओ, शेषं पूर्ववत्)। पस्य—सुत्तो (३-५० त्द्वित्वं, ओत्वं पूर्ववत्) । षस्य—गोट्ठी (३-५० ठ्द्वित्वं, ३-५१ ठ् = ट्) । णिट्ठुरो (२-४२ न् = ण्, ३-५० ठ्द्वित्वं, ३-५१ ठ् = ट्, ५-१ ओ) । सस्य—खलिअं (२-२ त्लोपः, ५-३ बिन्दुः) । णेहो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ) । भक्तम्, सिक्थकम्, मुग्धः, स्निग्धः, खड्गः, उत्पलम्, उत्पातः, मुद्गाः, सुप्तः, गोष्ठी, निष्ठुरः, स्खलितम्, स्नेहः ।।१।।**

**व्याख्या**—संयोग में पूर्ववर्ती (आदि वाले) ककार, डकार, तकार, दकार, पकार, षकार और सकार का लोप हो जाता है। जैसे-

**१. ककार का**—

**(क) भक्तम्**—प्रस्तुत सूत्र से ककार का लोप-भतम् । ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**भत्तं** ।

(ख) **सिक्थकम्**—प्रस्तुत सूत्र से ककार का लोप-सिथकम्। ३.५० से थकार का द्वित्व-सिथ्थकम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-सित्थकम्। २.२ से ककार का लोप-सित्थअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सित्थअं**।

२. **गकार का**—

(क) **मुग्धः**—प्रस्तुत सूत्र से गकार का लोप-मुधः। ३.५० से धकार का द्वित्व-मुध्धः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-मुद्धः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**मुद्धो**।

(ख) **स्निग्धः**—३.५९ से सकार और नकार का विप्रकर्ष-सिनिग्धः। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-सिणिग्धः। प्रस्तुत सूत्र से गकार का लोप-सिणिधः। ३.५० से धकार का द्वित्व-सिणिध्धः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार के स्थान पर दकार-सिणिद्धः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सिणिद्धो**।

३. **डकार का**—

(क) **खड्गः**—प्रस्तुत सूत्र से डकार का लोप-खगः। ३.५० से गकार का द्वित्व-खग्गः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**खग्गो**।

४. **तकार का**—

(क) **उत्पलम्**—प्रस्तुत सूत्र से तकार का लोप-उपलम्। ३.५० से पकार का द्वित्व-उप्पलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-उप्पलं।

(ख) **उत्पातः**—प्रस्तुत सूत्र से तकार का लोप-उपातः। ३.५० से पकार का द्वित्व-उप्पातः। २.२ से तकार का लोप-उप्पाअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**उप्पाओ**।

५. **दकार का**—

(क) **मुद्गाः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार का लोप-मुगाः। ३.५० से गकार का द्वित्व-मुग्गाः। ५.२ से जस् का लोप-**मुग्गा**।

(ख) **मुद्गरः**—प्रस्तुत सूत्र से दकार का लोप-मुगरः। ३.५० से गकार का द्वित्व-मुग्गरः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**मुग्गरो**।

६. **पकार का**—

(क) **सुप्तः**—प्रस्तुत सूत्र से पकार का लोप-सुतः। ३.५० से तकार का द्वित्व-सुत्तः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सुत्तो**।

**७. षकार का—**

**(क) गोष्ठी**—प्रस्तुत सूत्र से षकार का लोप-गोठी। ३.५० से ठकार का द्वित्व-गोठ्ठी। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार–**गोट्ठी**।

**(ख) निष्ठुरः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिष्ठुरः। प्रस्तुत सूत्र से षकार का लोप-णिठुरः। ३.५० से ठकार का द्वित्व-णिठ्ठुरः। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार के स्थान पर टकार-णिट्ठुरः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णिट्ठुरो**।

**८. सकार का—**

**(क) स्खलितम्**—प्रस्तुत सूत्र से सकार का लोप-खलितम्। २.२ से तकार का लोप-खलिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**खलिअं**।

**(ख) स्नेहः**—प्रस्तुत सूत्र से सकार का लोप-नेहः। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णेहः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णेहो**।

## अधो मनयाम्॥२॥

**पदच्छेद**—अधः। मनयाम्।

**पदार्थ**—अधः = नीचे अर्थात् परवर्ती। मनयाम् = मकार, नकार, और यकार का।

**सू०अ०**—(संयोग में) परवर्ती मकार, नकार, और यकार का (लोप हो जाता है)।

**वृत्तिः—मकारनकारयकाराणां युक्तस्याधः स्थितानां लोपोः भवति। मस्य–सोस्सं (२-४३ श्= स्, १-२० उ = ओ, म्लोप, २-४३ ष्= स्, ३-५० स्द्वित्वं, ४-३० बिन्दुः)। रस्सी (२-४३ श्= स्, म्लोपे, ३-५० स्द्वित्वं, ५-१८ दीर्घः)। जुग्गं (२-३१ य्= ज्, म्लोपे, ३-५० गद्वित्वं बिन्दुः पूर्ववत्)। वग्गी (४-१ आ = अ, शेषं पूर्ववत्, ५-१८ दीर्घः)। नस्य–णग्गो (२-४२ न्= ण्, न्लोपे, ३-५० ग्द्वित्वं, ५-५१ ओ)। यस्य–सोम्मो (१-४१ औ = ओ, य्लोपे, ३-५० म्द्वित्वं, ओत्वं पूर्ववत्)। जोग्गो (२-३१ य् = ज्, शेषं पूर्ववत्)। शुष्म, रश्मिः, युग्मम्, वाग्मी, नग्नः, सौम्यः, योग्यः॥२॥**

**व्याख्या**—संयोग–स्थल पर परवर्ती संयुक्त मकार, नकार और यकार का लोप हो जाता है। जैसे—

**१. मकार का—**

**(क) शुष्मम्**—२.४३ से शकार और षकार के स्थान पर सकार–सुस्मम्। १.२० से उकार का ओकार–सोस्मम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का लोप-

सोसम् । ३.५० से सकार का द्वित्व-सोस्सम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सोस्सं**।

**(ख)** **रश्मिः**—२.४३ से सकार का सकार-रस्मि: । प्रस्तुत सूत्र से मकार का लोप-रसि: । ३.५० से सकार का द्वित्व-रस्सि: । ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप–**रस्सी**।

**(ग)** **युग्मम्**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जुग्मम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का लोप-जुगम्। ३.५० से गकार का द्वित्व-जुग्गम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**जुग्गं**।

**(घ)** **वाग्मी**—४.१ से आकार के स्थान पर अकार-वग्मी। प्रस्तुत सूत्र से मकार का लोप-वगी। ३.५० से गकार का द्वित्व–**वग्गी**।

**२. नकार का—**

**(क)** **नग्नः**—२.४२ से नकार का णकार-णग्न: । प्रस्तुत सूत्र से नकार का लोप-नग: । ३.५० से गकार का द्वित्व-नग्ग: । ५.१ से अकार का ओकार–**नग्गो**।

**३. यकार का—**

**(क)** **सौम्यः**—१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार-सोम्य: । प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप-सोम: । ३.५० से मकार का द्वित्व-सोम्म: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सोम्मो**।

**(ख)** **योग्यः**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जोग्य: । प्रस्तुत सूत्र से यकार का लोप-जोग: । ३.५० से गकार का लोप-जोग्ग: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**जोग्गो**।

## सर्वत्र लवराम् ।।३।।

**पदच्छेद**—लवराम्। सर्वत्र।

**पदार्थ**—लवराम् = लकार, वकार और रेफ का। सर्वत्र = सभी स्थितियों में।

**सू०अ०**—लकार, वकार और रेफ का सभी स्थितियों में (लोप हो जाता है)।

**वृत्तिः—लकारवकाररेफाणां युक्तस्योपर्यधः स्थितानां लोपो भवति । लस्य, उक्का (३-५० क्द्वित्वं) । वक्कवो (प्राय इति व्लोपो न ५-१ ओ) । वस्य, लुद्धओ (३-५० ध्द्वित्वं, ३-५१ ध् = द्, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। पिक्कं (१-३ सूत्रे स्पष्टम्) । रस्य, अक्को (३-५० क्द्वित्वं, ५-१ ओ) । सक्को (२-४३ श् = स्, शेषं पूर्ववत्) । उल्का, वल्कलम्, विक्लवः, पक्कम्, अर्कः, शक्रः ।।३।।**

**व्याख्या**—संयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी स्थितियों में लकार, वकार और रेफ का संयोग में लकार, वकार तथा रेफ का लोप हो जाता है । तात्पर्य यह है कि संयोग में लकार, वकार तथा रेफ पूर्ववर्ती हो या परवर्ती, उसका लोप हो जाता है– उनसे संयुक्त अन्य व्यञ्जन का नहीं । इसके विषय में पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती होने का नियम लागू नहीं होता। जैसे—

**(१) लकार का**—

**(क) उल्का**—लकार का प्रस्तुत सूत्र लोप–उका । ३.५० से ककार का द्वित्व– **उक्का** ।

**(ख) वल्कलम्**—प्रस्तुत सूत्र से लकार का लोप–वकलम् । ३.५० से ककार का द्वित्व = वक्कलम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**बिक्कलं** । यहाँ संयोग में पूर्ववर्ती लकार का लोप हुआ है ।

**(ग) विक्लवः**—प्रस्तुत सूत्र से लकार का लोप–विकवः । ३.५० से ककार का द्वित्व–विक्कवः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–विक्कवी । यहाँ संयोग में परवर्ती लकार का लोप हुआ है ।

**(२) वकार का**—

**(क) पक्वम्**—१.३ से आदि अ का इ = पिक्वम् । प्रस्तुत सूत्र से वकार का लोप–पिकम् । ३.५० से ककार का द्वित्व–पिक्कम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पिक्कं** ।

**(३) रेफ का**—

**(क) अर्कः**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लोप–अकः । ३.५० से ककार का द्वित्व– अक्कः । ५.१ से सु सहित अकार का ओकार–**अक्को** । यहाँ संयोग में पूर्ववर्ती रेफ का लोप हुआ है ।

**(ख) शक्रः**—२.४३ से शकार का सकार–सक्रः । प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लोप– सकः । ३.५० से ककार का द्वित्व–सक्कः । ५.१ से सु सहित अकार का ओकार–**सक्को** । यहाँ संयोग में परवर्ती रेफ का लोप हुआ है ।

## द्रे रो वा ।।४।।

**पदच्छेद**—द्रे । रोः । वा ।

**पदार्थ**—द्रे = द्रकार में । रोः = रेफ का । वा = विकल्प से ।

**सू०अ०**—द्रकार में विकल्प से रेफ का (लोप हो जाता है) ।

**वृत्तिः—द्रशब्दे रेफस्य वा लोपो भवति। दोहो (५-१)। द्रोहो। चन्दो (३-५६ द्द्वित्वं, न, शेषं पूर्ववत्), चन्द्रो। रूद्दो (३-५० द्द्वित्वं, ५-१ ओ), रूद्रो। द्रोह, चन्द्र, रूद्रः ।।४।।**

**व्याख्या**—द्रकार और तत्सदृश में विकल्प से रेफ लुप्त हो जाता है। जैसे—

१. **द्रोहः**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लोप-दोहः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार का लोप-**दोहो**। पक्ष में-**द्रोहो**।

२. **चन्द्रः**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लोप-चन्दः। ५.१ से अकार का ओकार-**चन्दो**। पक्ष में-**चन्द्रो**।

३. **रुद्रः**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ का लोप-रुदः। ३.५० से दकार का द्वित्व-रुद्दः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-रूद्दो। पक्ष में-**रुद्रो**।

## सर्वज्ञतुल्येषु ञः ।।५।।

**पदच्छेद**—सर्वज्ञतुल्येषु। ञः।

**पदार्थ**—सर्वज्ञतुल्येषु = सर्वज्ञ और उसके समान (पदों) में। ञः = ञकार का।

**सू०अ०**—सर्वज्ञ और उसके समान (अन्य पदों) में ञकार का लोप हो जाता है।)

**वृत्तिः—सर्वज्ञतुल्येषु ञकारस्य लोपो भवति। सव्वज्जो (३-३ र्लोपः, ३-५० वजयोर्द्वित्त्वं, ओत्वं पूर्ववत्)। इंगिअज्जो (४-१७ वर्गान्तो वा, २-२ त्लोपः, ञलोपे, ३.५० ज्द्वित्वं, पूर्ववत्)। जानातेर्यान्येवं रूपाणि तत्र ञ्लोपः ।।५।।**

**व्याख्या**—सर्वज्ञ और तत्सदृश अन्य पदों में ञकार का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **सर्वज्ञः**—३.३ से रेफ का लोप-सवज्ञः। ३.५० से वकार का द्वित्व-सव्वज्ञः। प्रस्तुत सूत्र से ञकार का लोप-सव्वजः। ३.५० से जकार का द्वित्व-सव्वज्जः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**सव्वज्जो**।

२. **इङ्गितज्ञः**—४.१७ से ङकार का विकल्प से अनुस्वार-इङ्गितज्ञः। २.२ से तकार का लोप-इङ्गिज्ञः। प्रस्तुत सूत्र से ञकार का लोप-इङ्गिअजः। ३.५० से जकार का द्वित्व-इङ्गिअज्जः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**इङ्गिअज्जो**। पक्ष में ङकार के अनुस्वार का अभाव-**इङ्गिअज्जो**।

**विशेष**—ज्ञा धातु के सभी ऐसे रूपों में ञकार का लोप होता है। जैसे-देवज्ञः = देवज्जो। सर्वज्ञः = सव्वज्जो इत्यादि।

## श्मश्रुश्मशानयोरादेः ।।६।।

**पदच्छेद**—श्मश्रुश्माशनयोः । आदेः ।

**पदार्थ**—श्मश्रुश्मशानयोः = श्मश्रु और श्मशान–इन दोनों (पदों) में । आदेः = (पद के) आदि वाले का ।

**सू०अ०**—श्मश्रु और श्मशान (इन दोनों पदों) में पदादि (शकार) का लोप (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—श्मश्रुश्मशानयोरादेर्वर्णस्य लोपो भवति । मस्सु (२-४३ श् = स्, ३-३ र्लोपः, ३-५० स्द्वित्वं) । मसाणं (२-४३ श् = स्, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः) ।।६।।**

**व्याख्या**—श्मश्रु और श्मशान–इन दोनों पदो में पद के आदि वाले शकार का लोप हो जाता है । जैसे–

१. **श्मश्रु**—प्रस्तुत सूत्र से आदि वाले शकार का लोप-मश्रु । ३.३ से रेफ का लोप-मसु । ३.५० से सकार का द्वित्व–**मस्सु** ।

२. **श्मशानम्**—प्रस्तुत सूत्र से आदि वाले शकार का लोप-मशानम् । २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-मसानम् । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-मसाणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**मसाणं** ।

## मध्याह्ने हस्य ।।७।।

**पदच्छेद**—मध्याहे । हस्य ।

**पदार्थ**—मध्याहे = मध्याह (इस पद) में । हस्य = हकार का ।

**सू०अ०**—मध्याह-इस पद में हकार का (लोप हो जाता है) ।

**वृत्तिः—मध्याह्नशब्दे हकारस्य लोपो भवति । मज्झण्णो (३-२८ ध्य् = झ्, ३-५० झ्द्वित्वं, ३-५१ पूर्व–झ् = ज्, ४-१ आ = अ, २-४२ न् = ण्, ३-५० ण्द्वित्वं, ५-१ ओ) ।।२७।।**

**व्याख्या**—मध्याह इस पद में हकार का लोप हो जाता है। जैसे—

१. **मध्याह्नः**—३.२८ से ध्य् के स्थान पर झ-मझाह्नः । ३.५० से झकार का द्वित्व-मझ्झाह्नः । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार के स्थान पर जकार-मज्झाह्नः । ४.१ से आकार के स्थान पर अकार-मज्झह । २-४२ से नकार के स्थान णकार-मज्झह्णः । प्रस्तुत सूत्र से हकार का लोप-मज्झणः । ३-५० से णकार का द्वित्व-मज्झण्णः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**मज्झण्णो** ।

## ह्नह्लह्मषु नलमां स्थितिरूर्ध्वम् ।।८।।

**पदच्छेद**—ह्नह्लह्मेषु । नलमाम् । स्थितिः । ऊर्ध्वम् ।

**पदार्थ**—ह्नह्लह्मेषु = ह्न, ह्ल और ह्म-इनमें । नलमाम् = नकार, लकार और मकार की । स्थितिः = स्थिति । ऊर्ध्वम् = ऊपर, = बाद में ।

**सू०अ०**—ह्न, ह्ल और ह्म–इनमें (संयुक्त क्रमशः (परवर्ती) नकार, लकार, और मकार की स्थितिः (हकार से) पूर्व में (हों जाती है) ।

**वृत्तिः—ह्न.ह्ल.ह्म. इत्येतेषु अधः स्थितानां नकारलकारमकाराणां स्थितिरूर्ध्वमुपरिष्टाद्भवति । ह्नस्य–पुव्वण्हो (४-१ पू = पु, ३-३ र्लोपः, ३-५० वृद्वित्वं, २-४२ न् = ण्, ५.१ ओ) । अवरण्हो (२-१५ प् = व्, ४-१ रा = र, शेषं पूर्ववत्) । ह्लस्य–अल्हादो (४-१ आ = अ, ५-१ ओ) । ह्मस्य–बम्हणो (३-३ र्लोपः, ४-१ आ = अ, ५-१ ओत्वम्)।।८।।**

**व्याख्या**—ह्न, ह्ल और ह्म–इन संयोगो में विद्यमान परवर्ती क्रमशः परवर्ती नकार, लकार और मकार हकार से पूर्व में हो जाता है । जैसे–

**१. नकार की—**

**(क) पूर्वाह्नः**—४-१ से पू के स्थान पर पु-पुर्वाह्नः । ३.३ से रेफ का लोप पुवाहः । ३.५० से वकार का द्वित्व-पुव्वाहः । प्रस्तुत से ह्न में नकार का पूर्व मे होना पुव्वन्हः । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-पुव्वाण्हः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**पुव्वण्हो** ।

**(ख) अपराह्नः**—२.१५ से पकार के स्थान पर वकार-अवराह्नः । ४.१ से रा के स्थान पर र-अवरहः । प्रस्तुत से ह के स्थान पर हन्-अवरन्हः । २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-अवरण्हः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अवरण्हो** ।

**२. लकार की—**

**(क) आह्लादः**—प्रस्तुत सूत्र से ह्ल के स्थान पर ल्ह-आलहदः । ४-१ से आकार के स्थान पर अकार-अल्हदः । ५-१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अल्हदो** ।

**३. मकार की—**

**(क) ब्राह्मणः**—३.३ से रेफ का लोप-ब्राह्मणः । ४.१ से आकार का अकार बह्मणः । प्रस्तुत सूत्र से ह्म के स्थान पर म्ह-बम्हणः । ५-१ से अकार का ओकार-**बम्हणो** ।

## युक्तस्य ।।९।।

**पदच्छेद**—युक्तस्य ।

**पदार्थ**—युक्तस्य = संयोग के स्थान पर ।

**सू० अ०**—(आगे विहित विधान) संयोग के स्थान पर (लागू होंगे) ।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयमापरिच्छेदसमाप्तेः, यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामो युक्तस्येत्येवं वेदितव्यम् । वक्ष्यति 'अस्थनि' (सू० ३.१) । अट्ठी (३-११ स्थ = ठ, ३-५० ठ्द्वित्वं, ३-५१ ठ् = ट्, ५-१८ दीर्घः) । अस्थि । युक्तग्रहणं हलोऽन्यस्य मा भूत् ।।९।।**

**व्याख्या**—यह अधिकार सूत्र है। इसके आगे जो भी विधान किये जाएगे वे संयोग के स्थान पर होंगे । यह अधिकार परिच्छेद की समाप्ति तक चलेगा । जैसे–

१. **अस्थनि**—(सू० ३.१) के द्वारा विधान किया गया है कि अस्थि-इस पद में संयुक्त स्थ् के स्थान पर ठ् होता है । इसका तात्पर्य यह है कि जो ठकार होता है वह सकार और थकार इन दानों संयुक्त व्यज्जनों के स्थान पर होता है, किसी एक व्यञ्जन के स्थान पर नहीं । उदाहरण–अस्थि = अट्ठी (द्रष्टव्य ३.११ की व्याख्या) ।

## ष्टस्य ठः ।।१०।।

**पदच्छेद**—ष्टस्य । ठः ।

**पदार्थ**—'ष्ट्' के स्थान पर । ठः = ठकार ।

**सू० अ०**—'ष्ट्' के स्थान पर ठकार हो जाता है ।

**ष्ट इत्येतस्य युक्तस्य ठकारो भवति । लट्ठी (२-३२ य् = ल्, शेषं पूर्ववत्) । दिट्ठी (१-२८ सूत्रे स्पष्टम्, शेषं पूर्ववत्) । यष्टिः दृष्टिः ।।१०।।**

**व्याख्या**—संयुक्त ष्ट् के स्थान पर ठकार हो जाता है। जैसे–

१. **यष्टिः**—२.३३ यकार के स्थान पर लकार-लष्टिः । प्रस्तुत सूत्र से ष्टकार के स्थान पर ठकार-लठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व–लिठ्ठः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार–लट्ठिः । ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**लट्ठी** ।

२. **दृष्टिः**—१.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-दिष्टिः । प्रस्तुत सूत्र से ष्ट् के स्थान पर ठ-दिठिः । ३.५० से ठकार का द्वित्व-दिठ्ठिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार दिट्ठिः । ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**दिट्ठी** ।

## अस्थनि ।।११।।

**पदच्छेद**—अस्थनि ।

**पदार्थ**—अस्थनि = अस्थि (इस पद) में ।

**सू०अ०**— अस्थि (इस पद) में (संयुक्त 'स्थ' के स्थान पर ठकार हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अस्थिशब्दे युक्तस्य ठकारो भवति। अट्ठी। (३-१ सूत्रे स्पष्टम्)।११।**

**व्याख्या**—इस पद में संयुक्त 'स्थ' के स्थान पर ठकार हो जाता है। जैसे-

१. **अस्थिः**—प्रस्तुत सूत्र से स्थकार के स्थान पर ठकार-अठि: । ३.५० से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**अट्ठी** ।

## स्तस्य थः ।।१२।।

**पदच्छेद**—स्तस्य । थ: ।

**पदार्थ**—स्तस्य = स्त के स्थान पर । थ: = थकार ।

**सू०अ०**—स्त के स्थान पर 'थ' (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्तशब्दस्य थकारो भवति । उपरिलोपापवादः । हत्थो (३-५० थद्वित्वं, ३-५१ पूर्वः थ् = त्, ५-१ ओ) । समत्थो (३-३ र्लोपः, शेषं पूर्ववत्) । थुई (२-२ त्लापः, ५-१८ दीर्घः) । थवओ (२-२ प्रायो ग्रहणात् वलोपो न, क्लोपस्तु भवति, ५-१ ओ) । कोत्थुहो (१-४१ सूत्रे स्पष्टम्) । हस्तः, समस्तः, स्तुतिः, स्तबकः, कौस्तुभः ।।१२।।**

**व्याख्या**—संयुक्त स्त के स्थान पर 'थ' हो जाता है। जैसे-

१. **हस्तः**—प्रस्तुत सूत्र से स्त के स्थान पर 'थ'–हथ: । ३.५० से थकार द्वित्व-हथ्थ: । ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार–हत्थ: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**तत्थो** ।

२. **समस्तः**—प्रस्तुत सूत्र से 'स्त' के स्थान पर थ–समथ: । ३.५० से थकार का द्वित्व-समथ्थ: । ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-समत्थ: । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**समत्थो** ।

३. **स्तुतिः**—प्रस्तुत सूत्र से 'स्त' के स्थान पर थ-थुति: । २.२ से तकार का लोप-थुइ: । ५-१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**थुई** ।

४. **स्तवकः**—प्रस्तुत सूत्र से स्त् के स्थान पर थ्-थवक: । २.२ से प्राय: के ग्रहण से वकार का अलोप-थवक: और ककार का लोप-थवअ: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**थवओ** ।

**५. कौस्तुभः**—१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार–कोस्तुभः। प्रस्तुत सूत्र से स्त् के स्थान पर थ्–कोथुमः। ३.५० से थकार का द्वित्व–कोथ्थुभः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-कोत्थुभः। २.२७ भकार के स्थान पर हकार–**कोत्थुहो**।

## न स्तम्बे ॥१३॥

**पदच्छेद**—न। स्तम्बे।

**पदार्थ**—स्तम्ब (इस पद) में। न = नहीं।

**सू०अ०**—स्तम्ब (इस पद) में (स्त् के स्थान पर थ्) नहीं होता है।

**वृत्तिः—स्तम्बशब्दे स्तकारस्य थकारो न भवति। तंबो (३-१ स्लोपः, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५-१ ओ) ॥१३॥**

**व्याख्या**—स्तम्ब-इस पद में स्तकार के स्थान पर थकार नहीं होता। जैसे–

**स्तम्बः**—३.१ से सकार का लोप-तम्बः। ४.१७ से मकार का अनुस्वार-तंबः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**तंबो**।

## स्तम्भे खः ॥१४॥

**पदच्छेद**—स्तम्भे। खः।

**पदार्थ**—स्तम्भे = स्तम्भः (इस पद) में। खः = खकार।

**सू०अ०**—स्तम्भ (इस पद) में संयुक्त स्तकार के स्थान पर) खकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्तम्भशब्दे स्तकारस्य खकारो भवति। खंभो (४-१७ वर्गान्त-बिन्दुः, ओत्वं पूर्ववत्) ॥१४॥**

**व्याख्या**—स्तम्भ इस पद में संयुक्त स्तकार के स्थान पर खकार हो जाता है। जैसे–

**स्तम्भः**—प्रस्तुत सूत्र से स्तकार के स्थान पर खकार-खम्भः। ४.१७ से मकार का अनुस्वार-खंभः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**खंभो**।

## स्थाणावहरे ॥१५॥

**पदच्छेद**—स्थाणौ। अहरे।

**पदार्थ**—अहरे = हर (का वाचक) न होने पर। स्थाणौ = स्थाणु (इस पद) में।

**वृत्तिः—स्थाणुशब्दे युक्तस्य खकारो भवति, अहरे हरेऽभिधेये न भवति।**

**खाणू (५-१८ दीर्घः) । अहर इति किम्? थाणू हरो (३-१ स्लोपः, शेषं पूर्ववत्, ५-१ ओ) । स्थाणुर्हरः ।।१५।।**

**व्याख्या**—हर (शङ्कर) का वाचक न होने पर स्थाणु–इस पद में स्थ के स्थान पर खकार हो जाता है। हर का वाचक होने पर स्थाणु के स्थ के स्थान पर खकार नहीं होता है । जैसे–

१. **स्थाणुः**—हर का वाचक न होने पर प्रस्तुत सूत्र से स्थकार के स्थान पर खकार–खाणुः । ५.१८ से सु के साथ उकार का ऊकार–खाणू । हर का वाचक होने पर-३.१ से सकार का लोप-थाणुः । ५.२ से उकार का ऊकार–**थाणू** ।

## स्फोटके।।१६।।

**पदच्छेद**—स्फोटके ।

**पदार्थ**—स्फोटक (इस पद) में ।

**सू०अ०**—स्फोटक (इस पद) में। संयुक्त स्फकार के स्थान पर खकार (होता है)।

**वृत्तिः—स्फोटकशब्दे युक्तस्य खकारो भवति । खोडओ (२-२० ट्=ड्, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ) ।।१६।।**

**व्याख्या**—स्फोटक-इस पद में संयुक्त 'स्फ्' के स्थान पर ख् होता है। जैसे–

१. **स्फोटकः**—प्रस्तुत सूत्र स्फकार के स्थान पर खकार–खोटकः । २.२० से टकार के स्थान पर डकार-खोडकः । २.२ से ककार का लोप–खोडअः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**खोडओ** ।

## र्यशय्याभिमन्युषु जः ।।१७।।

**पदच्छेद**—र्यशय्याभिमन्युषु । जः ।

**पदार्थ**—र्यशय्याभिमन्युषु = र्य, शय्या और अभिमन्यु (इन पदों) में । जः = जकार ।

**सू०अ०**—'र्य' शय्या और अभिमन्यु (इन पदों) में (संयुक्त-व्यञ्जन के स्थान पर) जकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—र्य इत्यस्य शय्याभिमन्युशब्दयोश्च युक्तस्य जकारो भवति । कज्जं (४-१ आ=अ, ३-५० ज्द्वित्वम्, ५-३० बिन्दुः) । सेज्जा (१-५ सूत्रे स्पष्टम्) । अहिमज्जू (२-२७ भ्=ह्, ज्द्वित्वम्, ५-८ दीर्घः) । कार्यम्, शय्या, अभिमन्युः ।।१७।।**

**व्याख्या**—'र्य' इस संयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर तथा शय्या और अभिमन्यु-इन पदों में संयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर जकार हो जाता है। जैसे–

१. **कार्यम्**—४.१ से आकार के स्थान पर अकार-कर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्य् के स्थान पर ज्-कजम्। ३.५ से जकार का द्वित्व-कज्जम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कज्जं**।

२. **शय्या**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सय्या। १.५० से आदि अकार के स्थान पर एकार-सेय्या ३.१७ से य्यकार के स्थान पर जकार-सेजा। ३.५० से जकार का द्वित्व–**सेज्जा**।

३. **अभिमन्युः**—२.२७ से भकार के स्थान पर हकार-अहिमन्युः। प्रस्तुत सूत्र से न्य् के स्थान पर ज-अहिमजुः। ३.५० से जकार का द्वित्व-अहिमज्जुः। ५.१८ से उकार का ऊकार और ४.६ से सु का लोप–**अहिमज्जू**।

## तूर्यधैर्यसौन्दर्याश्चर्यपर्यन्तेषु रः ।।१८।।

**पदच्छेद**—तूर्य धैर्यसौन्दर्याश्चपर्यन्तेषु। रः।

**पदार्थ**—तूर्यधैर्यसौन्दर्याश्चर्यपर्यन्तेषु = तूर्य, धैर्य, सौन्दर्य, आश्चर्य, पर्यन्त-इन पदों में। रः = रेफः।

**सू०अ०**—तूर्य, धैर्य, सौन्दर्य, आश्चर्य और पर्यन्त (इन पदों) में र्य् के (स्थान पर) रेफ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एतेषु शब्देषु र्यस्य रेफो भवति। तूरं (३-५४ रस्य द्वित्वं न, ५-३० बिन्दुः)। धीरं (१-३१ सूत्रे स्पष्टम्)। सुन्देरं। अच्छेरं। पेरन्तं। (१-५ सत्रे स्पष्टम्) ।।१८।।**

**व्याख्या**—तूर्य, धैर्य, सौन्दर्य, आश्चर्य और पर्यन्त–इन पदों में संयुक्त र्य् के स्थान पर रेफ हो जाता है। जैसे–

१. **तूर्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से 'र्य्' के स्थान पर रेफ-तूरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तूरं**।

२. **धैर्यम्**—१.३९ से ऐकार के स्थान पर ईकार-धीर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्य् के स्थान पर रेफ धीरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**धीरं**।

३. **सौन्दर्यम्**—१.४४ से औकार के स्थान पर उकार-सुन्दर्यम्। १.५ से आदि अकार के स्थान पर एकार-सुन्देर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्य् के स्थान पर रेफ-सुन्देरम्। ५-६० से मकार का अनुस्वार–**सुन्देरं**।

४. **आश्चर्यम्**— १.५० से आदि अकार के स्थान पर एकार-आश्चेर्यम्। ४.१ से

आकार के स्थान पर अकार-अश्चेर्यम्। ३.४० से श्चकार के स्थान पर छकार-अछेर्यम्। ३.५० से छकार का द्वित्व- अछ्छेर्यम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार- अच्छेर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रेफ-अच्छेरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**अच्छेरं**।

५. **पर्यन्तम्**—१.५ से आदि अकार के स्थान पर एकार-पेर्यन्तम्। प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रेफ-पेरन्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पेरन्तं**।

## सूर्वे वा ।।१९।।

**पदच्छेद**—सूर्यो। वा।

**पदार्थ**—सूर्ये = सूर्य (इस पद) में। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—सूर्य (इस पद) में (र्यकार के स्थान पर) विकल्प से (रेफ हो जाता है)।

**वृत्तिः—सूर्यशब्दे र्यकारस्य रेफादेशो भवति वा। सूरो (५-१ ओत्वं)। सुज्जोपक्षे (४-१ ऊ = उ, ३-१७ र्य् = ज्, ३-५० ज्द्वित्वं, ओ० पू०) ।।१९।।**

**व्याख्या**—सूर्य-इस पद में र्यकार के स्थान पर विकल्प से रेफ हो जाता है। विकल्प से तात्पर्य है कि कहीं-कहीं होता है और कहीं-कहीं नहीं। जैसे-

१. **सूर्यः**—प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रेफ-सूरः। ५.१ से अकार का ओकार-**सूरो**। पक्ष में-४.१ से ऊकार के स्थान पर उकार-सुर्यः। ३.१७ से र्यकार के स्थान पर जकार-सुजः। ३.५० से जकार का द्वित्व-सुज्जः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सुज्जो**।

## चौर्यसमेषु रिअं ।।२०।।

**पदच्छेद**—चौर्यसमेषु। रिअम्।

**पदार्थ**—चौर्यसमेषु = चौर्य के समान (पदों) में। रिअम् = रिअ।

**सू०अ०**—चौर्य के समान (पदों) में (र्यकार के स्थान पर) रिअ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—चौर्यसमेषु शब्देषु र्यस्य रिअमित्यादेशो भवति। चोरिअं (१-४१ औ = ओ)। सोरिअं। वीरिअं (२-४३ श् = स्, शेषं पूर्ववत्)। चौर्य-शौर्य-वीर्याणि। समग्रहणादाकृतिगणोऽयम् ।।२०।।**

**व्याख्या**—चौर्य और इसके समान अन्य पदों में यकार के स्थान पर रिअम् हो जाता है। जैसे-

१. **चौर्यम्**—१.४१ औकार के स्थान पर ओकार-चोर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रिअं-चोरिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**चोरिअं**।

२. **शौर्यम्**—१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार-शोर्यम्। २.४३ से शकार केक स्थान पर सकार-सोर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रिअ-सोरिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सोरिअं**।

३. **वीर्यम्**— प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर रिअ-वीरिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**वीरिअं**।

## पर्यस्तपर्याणसौकुमार्येषु लः ।।२१।।

**पदच्छेद**—पर्यस्तपर्याणसौकुमार्येषु। लः।

**पदार्थ**—पर्यस्तपर्याणसौणसौकुमार्येषु = पर्यस्त, पर्याण और सौकुमार्य (इन पदों) में। लः = लकाइ।

**सू०अ०**—पर्यस्त, पर्याण, सौकुमार्य (इन पदों) में (र्यकार के स्थान पर) लकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एषु शब्देषु र्यस्य लकारो भवति। पल्लत्थं (३-५० ल्द्वित्वं, ३-१२ स्त्= थ्, ३-५० थदित्वं, ३.५१ थ् = त्, ५-३० बिन्दुः)। पल्लाणं (पूर्ववत्)। सोअमल्लं (१-१२ सूत्रे = स्पष्टम्) ।।२१।।**

**व्याख्या**—पर्यस्त, पर्याण, सौकुमार्य-इन पदों में र्यकार के स्थान पर लकार हो जाता है। जैसे-

१. **पर्यस्तम्**—प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर लकार-पलस्तम्। ३.५० से लकार का द्वित्व-पल्लस्तम्। ३.१२ से स्तकार के स्थान पथकार-पल्लथः। ३.५० से थकार का द्वित्व-पल्लथ्थः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार के स्थान पर तकार-पल्लत्थम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पल्लत्थं**।

२. **पर्याणम्**—प्रस्तुत सूत्र से र्यकार का लकार-पलणम्। ३.५० से लकार का द्वित्व-पल्लाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पल्लाणं**।

३. **सौकुमार्यम्**—१.४१ से औकार के स्थान पर ओकार-सोकुमार्यम्। १.२१ से उकार के स्थान पर अकार-सोकमार्यम्। २.२ से ककार का लोप-सोअमार्यम्। १.१० से आकार के स्थान पर अकार-सोअमर्यम्। प्रस्तुत सूत्र से र्यकार के स्थान पर लकार-सोअमलम्। ३.५० से लकार का द्वित्व-सोअमल्लम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**सोअमल्लं**।

## र्तस्य टः ।।२२।।

**पदच्छेद**—र्तस्य। टः।

**पदार्थ**—र्तस्य = र्तकार के स्थान पर। टः = टकार।

**सू०अ०**—र्तकार के स्थान पर टकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—र्त इत्यतस्य टकारो भवति। केवट्टओ (१-३४ ऐ = ए, प्रायो-ग्रहणात् व्लोपो न, ३-५० ट्द्वित्वं, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। णट्टओ। णट्टई। (२-४२ न् = ण्, शेषं पूर्ववत्)। कैवर्तक-नर्तक-नर्तक्यः ।।२२।।**

**व्याख्या**—'र्त' के स्थान पर ट् हो जाता है। जैसे–

१. **कैवर्तकः**—१.३४ से ऐकार के स्थान पर एकार-केवर्तकः। प्रस्तुत सूत्र से र्तकार के स्थान पर टकार-केवटकः। ३.५० से टकार का द्वित्व-केवट्टकः। २.२ से ककार का लोप-केवट्टअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**केवट्टओ**।

२. **नर्तकः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णर्तकः। प्रस्तुत सूत्र से र्तकार के स्थान पर टकार-णटकः। ३.५० से टकार का द्वित्व–णट्टकः। २.२ से ककार का लोप-णट्टअः। ५.१ से अकार का ओकार–**णट्टओ**।

३. **नर्तकी**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णर्तकी। प्रस्तुत सूत्र से र्तकार के स्थान पर टकार-णटकी। ३.५० से टकार का द्वित्व-णट्टकी। २.२ से ककार का लोप–**णट्टई**।

## पत्तने ।।२३।।

**पदच्छेद**—पत्तने।

**पदार्थ**—पत्तने = पत्तन (इस पद) में।

**सू०अ०**— पत्तन (इस पद) में (तकार के स्थान पर टकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—पत्तनशब्दे युक्तस्य टकारो भवति। पट्टणं (३-५० ट्द्वित्वं, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः) ।।२३।।**

**व्याख्या**—पत्तन-इस पद में संयुक्त व्यञ्जन त्तकार के स्थान पर टकार हो जाता है। जैसे—

१. **पत्तनम्**—प्रस्तुत सूत्र से तकार के स्थान पर टकार-पटनम्। ३.५० से टकार का द्वित्व-पट्टनम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-पट्टणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पट्टणं**।

## न धूर्तादिषु ।।२४।।

**पदच्छेद**—न। धूर्तादिषु।

**पदार्थ**—धूर्तादिषु = धूर्त इत्यादि (पदों) में। न = नहीं (होता है)।

**सू०अ०**—धूर्त इत्यादि (पदों) में (र्तकार के स्थान पर टकार) नहीं (होता है)।

**वृत्तिः—धूर्त इत्येवमादिषु र्त इत्येतस्य टकारो न भवति। धुत्तो (५.२९ ऊ = ऊ ३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, ५-२९ ह्रस्वः, ५-१ ओ)। कित्ति (५.२९ ई = इ) ३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, ५-२९ ह्रस्वः)। वत्तमाणं (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। वत्ता (४-१ आ = अ, ३-३ रलोपः, शेषं पूर्ववत्)। आवत्तो (५-१ ओ, शेषं पूर्ववत्)। संवत्तओ (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, २-२ क्लोपः, शेषे पूर्ववत्)। णिवत्तओ (२-४२ न् = ण्, शेषं पूर्ववत्)। वत्तिआ (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वम्, २-२ क्लोपः)। अत्तो। कत्तरी। मुत्ता (पूर्ववद्रलोपो ह्रस्वादिकञ्च)। धूर्तः, कीर्तिः, वर्तमानम्, वार्ता, आवर्तः, संवर्तकः निवर्तकः, वर्तिका, आर्तः, कर्तरी, मूर्तिः ॥२४॥**

**व्याख्या**—धूर्त इत्यादि पदों में र्तकार के स्थान पर टकार नहीं होता है। जैसे-

१. **धूर्त्तः**—५.२९ से ऊकार के स्थान पर-धुर्तः। ३.३ से रेफ का लोप-धुतः। ३.५० से तकार का द्वित्व-धुत्तः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**धुत्तो**।

२. **कीर्तिः**—५.२९ से ईकार के स्थान पर इकार-किर्तिः। ३.३ से रेफ का लोप-कितिः। ३.५० से तकार का द्वित्व-कित्तिः। ४.६ से से सु का लोप–**कीत्ति**।

३. **वर्तमानम्**—३.३ से रेफ का लोप-वतमानम्। ३.५० से तकार का द्वित्व वत्त-मानम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-वत्तमाणम्। ३.३० से मकार का अनुस्वार–**वत्तमाणं**।

४. **वार्ता**—४.१ से आदि आकार का अकार-वर्ता। ३.३ से रेफ का लोप-वता। ३.५० से तकार का द्वित्व–**वत्ता**।

५. **आवर्तः**—३.३ से रेफ का लोप-आवतः ३.५० से तकार का द्वित्व-आवत्तः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**आवत्तो**।

६. **संवर्तकः**—३.३ से रेफ का लोप-संवतकः। ३.५० से तकार का द्वित्व-संवत्तकः। २.२ से ककार का लोप-संवत्तअः। ५.१ से अन्त्य सु के साथ अकार का ओकार–**संवत्तओ**।

७. **निवर्तकः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिवर्तकः। ३.३ से रेफ का लोप-णिवतकः। ३.५० से तकार का द्वित्व-णिवत्तकः। २.२ से ककार का लोप-णिवत्तअ। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**णिवत्ताओ**।

८. **वर्तिका**—३.३ से रेफ का लोप- वतिका। ३.५० से तकार का द्वित्व-वत्तिका। २.२ से ककार का लोप–**वत्तिआ**।

९. **आर्तः**—४.१ से आकार का अकार-अर्तः। ३.३ से रेफ का लोप-अतः। ३.५० से तकार का द्वित्व-अत्तः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अत्तो**।

१०. **कर्तरी**—३.३ से रेफ का लोप-कतरी। ३.५० से तकार का द्वित्व–**कत्तरी**।

११. **मूर्तिः**—५.२९ से ऊकार का उकार-मुर्तिः। ३.३ से रेफ का लोप-मुर्तिः। ३.५० से तकार का द्वित्व-मुत्तिः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**मुत्ती**।

## गर्ते डः ।।२५।।

**पदच्छेद**—गर्ते। डः।

**पदार्थ**—गर्ते = गर्त (इस पद) में। डः = डकार।

**सू०अ०**—गर्त (इस पद) में (र्तकार के स्थान पर डकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—गर्तशब्दे र्तस्य डकारो भवति। गड्डो (ड्द्वित्वं, ५-१ ओ) ।।२५।।**

**व्याख्या**—गर्त इस पद में र्तकार का स्थान पर डकार हो जाता है। जैसे–

१. **गर्तः**—प्रस्तुत सूत्र से र्तकार के स्थान पर डकार-गडः। ३.५० से डकार का द्वित्व-गड्डः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**गड्डो**।

## गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु र्दस्य ।।२६।।

**पदच्छेद**—गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु। र्दस्य।

**पदार्थ**—गर्दभसंमर्दवितर्दिविच्छर्दिषु = गर्दभ, संमर्द, वितर्दि और विच्छर्दि (इन पदों) में। र्दस्य-र्दकार के स्थान पर।

**सू०अ०**—गर्दभ, संमर्द, वितर्दि और च्छिर्दि (इन पदों) में र्दकार के स्थान पर (विकल्प से डकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—एतेषु र्दस्य डो भवति। गड्डहो (३-५० ड्द्वित्वं, २-२७ भ् = ह्, ५-१ ओ)। संमड्डो (पूर्ववत्)। विअड्डी (२-२ त्लोपः, ३-३ र्लोपः, ३.५० ड्द्वित्वं पूर्ववत्, ५-१८ दीर्घः)। विछड्डी (पूर्ववत्) ।।२६।।**

**व्याख्या**—गर्दभ, संमर्द, वितर्दि और विच्छर्दि–इन पदों में र्दकार के स्थान पर डकार हो जाता है। जैसे–

१. **गर्दभः**—प्रस्तुत सूत्र से र्दकार के स्थान पर डकार-गडभः। ३.५० से डकार का द्वित्व–गड्डभः। २.२७ से भकार के स्थान पर हकार-गड्डहः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**गड्डहो**। पक्ष में ३.३ से रेफ का लोप–गदभः। ३.५० से

द् का द्वित्व–गद्दभः, ३.२६ से भ का ह = गद्दहः और ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**गद्दहो**।

२. **संमर्दः**—प्रस्तुत सूत्र से र्दकार के स्थान पर डकार–संमडः। ३.५० से डकार का द्वित्व–संमड्डः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**संमड्डो**। पक्ष में ३.३ से रेफ का लोप–संमदः। ३.५० से दकार का द्वित्व–संमद्द। ५.१ से अ का ओ–**संमद्दो**।

३. **वितर्दिः**—२.२ से तकार का लोप–विअर्दिः। प्रस्तुत सूत्र से र्दकार के स्थान पर डकार–विअडिः। ३.५० से डकार का द्वित्व–विअड्डिः। ५.१८ से सु के साथ अन्त्य इकार का ईकार–**विअड्डी**। पक्ष में २.२ से तकार का लोप–विअर्दि। ३.३ से रेफ का लोप–विअदिः। ३.५० से दकार का द्वित्व–विअद्दिः। ५.१८ से सु के साथ इकार का ईकार–**विअद्दी**।

४. **विच्छर्दि**—२.२ से चकार का लोप–विछर्दिः। प्रस्तुत सूत्र से र्दकार के स्थान पर डकार–विछडिः। ३.५० से डकार का द्वित्व–विछड्डिः। ५.१८ से अन्त्य इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**विछड्डी**। पक्ष में २.२ से चकार का लोप–विछर्दिः। ३.३ से रेफ का लोप–विछदिः। ३.५० से द् का द्वित्व–विछद्दिः। ५.१८ से सु के सहित इ का ई–**विछद्दी**।

## त्यथ्यद्यां चछजाः ।।२७।।

**पदच्छेद**—त्यथ्यद्याम्। चछजाः।

**पदार्थ**—त्यथ्यद्याम् = त्यकार, थ्यकार और द्यकार के स्थान पर। चछजाः = चकार, छकार और जकार।

**सू०अ०**—त्यकार, थ्यकार और द्यकार के स्थान पर (क्रमशः) चकार, छकार और जकार (होते हैं)।

**वृत्तिः—त्य-थ्य-द्य इत्येतेषां च-छ-ज इत्येते यथासंख्यं भवन्ति। त्यस्य–णिच्चं (२-४२ न् = ण, ३-५० च्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः)। पच्चच्छं (३-३ रलोपः, ३-३० क्ष् = छ्द्वित्वं ५-३० बिन्दुः) थ्यस्य–रच्छा। मिच्छा। पच्छं। (३.५० छ्द्वित्वं, ३.५१ च = छ्द्वित्वं, ३-५१छ, = च्) । द्यस्य–विज्जा (३-५० ज्द्वित्वं)। बेज्जो (१-३४ ऐ = ए, पूर्ववत् ज्द्वित्वं, ५-१ ओ)। नित्यम्, प्रत्यक्षं रथ्या, मिथ्या, पथ्यम्, विद्या, वैद्या वैद्यः ।।२७।।**

**व्याख्या**—त्यकार, थ्यकार और द्यकार के स्थान पर क्रमशः चकार, छकार और जकार होते हैं। तात्पर्य यह है कि त्य का च, थ्य का छ और द्य का ज होता है। जैसे–

**१. त्यकार का—**

(क) **नित्यम्**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णित्यम्। प्रस्तुत सूत्र से त्यकार के स्थान पर चकार-णिचम्। ३.५० से चकार का द्वित्व-णिच्चम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णिच्चं**।

(ख) **प्रत्यक्षम्**—३.३ से रेफ का लोप-पत्यक्षम्। प्रस्तुत सूत्र से त्यकार के स्थान पर चकार-पचक्षम्। ३.५० से चकार का द्वित्व-पच्चक्षम्। ३.३० से अकार के स्थान पर छकार–पच्चछम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-पच्चछ्छम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-पच्चच्छम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पच्चच्छं**।

**२. त्यकार का—**

(क) **रथ्या**—प्रस्तुत सूत्र से थ्यकार का छकार-रछा। ३.५० से छकार का द्वित्व-रछ्छा। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार–**रच्छा**।

(ख) **मिथ्या**—प्रस्तुत सूत्र से थ्यकार का छकार-मिछा। ३.५० से छकार का द्वित्व-मिछ्छा। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार–**मिच्छा**।

(ग) **पथ्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से थ्यकार का छकार-पछम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-पछ्छम्। ३.५१ से पर्वूवर्ती छकार का चकार-पच्छम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पच्छं**।

**३. द्यकार का—**

(क) **विद्या**—प्रस्तुत सूत्र से द्यकार का जकार विजा। ३.५० से जकार का द्वित्व–**विज्जा**।

(ख) **वैद्यः**—१.३४ से ऐकार का एकार–वेद्यः। प्रस्तुत सूत्र से द्यकार का जकार-वेजः। ३.५० से जकार का द्वित्व-वेज्जः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**वेज्जो**।

## ध्यह्योर्झः।।२८।।

**पदच्छेद**—ध्यह्योः। झः।

**पदार्थ**—ध्यह्योः = ध्यकार और ह्यकार के स्थान पर। झः = झकार।

**सू०अ०**—ध्यकार और हयकार के स्थान पर झकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ध्य-ह्य इत्येतयोर्झकारो भवति। ध्यस्य–मज्झं (३-५० झ्द्वित्वं, ३-५१ झ्=ज्, ५-३० बिन्दुः) अज्झाओ (५-१ ओ, शेषं पूर्ववत्)। ह्यस्य–वज्झओ (४-१ आ = अ, २-२ क्लोपः, शेषं पूर्ववत्)। गुज्झओ (पूर्ववत्)।**

**मध्यः, अध्यायः, वाह्यकः, गुह्यकः ।।२८।।**

**व्याख्या**—ध्य और ह्य के स्थान पर झकार हो जाता है। जैसे–

**१. मध्यः**—प्रस्तुत सूत्र से ध्य का झ-मझः । ३.५० से झकार का द्वित्व-मझ्झः । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार-मज्झः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**मज्झो** ।

**२. अध्यायः**—प्रस्तुत सूत्र से ध्य का झ-अझायः । ३.५० से झकार का द्वित्व-अझ्झायः । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार-अज्झायः । २.२ से यकार का लोप-अज्झाअः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**अज्झाओ** ।

**३. वाह्यकः**—४.१ से आदि आकार का अकार-वह्यकः । प्रस्तुत सूत्र से ह्य के स्थान झ्-वझकः । ३.५० से झकार का द्वित्व-वझ्झकः । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार-वज्झकः । २.२ से ककार का लोप-वज्झअः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**वज्झओ** ।

**४. गुह्यकः**—प्रस्तुत सूत्र से हच् के स्थान पर झ्-गुझकः । ३.५० से झकार का द्वित्व-गुझ्झकः । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार-गुज्झकः । २.२ से ककार का लोप-गुज्झअः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**गुज्झओ** ।

## ष्कस्कक्षां खः ।।२९।।

**पदच्छेद**—ष्कस्कक्षाम् । खः ।

**पदार्थ**—ष्कस्कक्षाम् = ष्क्, स्क् और क्ष् के स्थान पर । खः = खकार ।

**सू०अ०**—ष्क्, स्क् और क्ष् के स्थान पर खकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ष्कस्कक्षां खकारो भवति । ष्कस्य–सुक्खं (३-५० ख्द्वित्वं, ३-५१ ख् = क्, ५-३० बिन्दुः) । पोक्खरो (१-२० सूत्रे स्पष्टम्) । स्कस्य–खंदो । खंधो । (४-१७ वर्गान्त बिन्दु, ५-१ ओ) । क्षस्य–खदो । जक्खो (२-३१ सूत्रे स्पष्टम्) ।।२९।।**

**व्याख्या**—ष्ककार, स्ककार और क्षकार के स्थान पर खकार हो जाता है। जैसे–

**१. ष्ककार का**—

**(क) शुष्कम्**—२.४३ से शकार के स्थान पर सकार-सुष्कम् । ष्क् के स्थान पर खकार-सुखम् । ३.५० से खकार का द्वित्व-सुख्खम् । ३.५१ खकार का ककार-सुक्खम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सुक्खं** ।

**(ख) पुष्करः**—१.२० से उकार का ओकार-पोष्करः । प्रस्तुत सूत्र से ष्क् के स्थान पर ख्-पोखरः । ३.५० से खकार का द्वित्व-पोख्खरः । ३.५१ से

खकार का ककार-पोक्खरः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**पोक्खरो** ।

२. **स्ककार का—**

(क) **स्कन्दः**—प्रस्तुत सूत्र से स्क् का ख-खन्दः । ४.१७ से वर्गान्त नकार का अनुस्वार-खंदः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**खंदो** ।

३. **क्ष का—**

(क) **क्षतः**—प्रस्तुत सूत्र से सकार का खकार-खतः । से तकार का दकार-खदः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**खदो** ।

(ख) **यक्षः**—२.३१ से आदि यकार का जकार-जक्षः । प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का खकार-जखः । ३.५० से खकार का द्वित्व-जख्खः । ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार का ककार-जक्खः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**जक्खो** ।

## अक्ष्यादिषु च्छः ।।३०।।

**पदच्छेद**—अक्ष्यदिषु । छः ।

**पदार्थ**—अक्ष्यदिषु = अक्षि इत्यादि (पदों) में (क्षकार के स्थान पर) छकार (हो ज़ाता है) ।

**सू०अ०**—अक्षि इत्यादि (पदों) में (सकार के स्थान पर) च्छकार हो जाता है।

**वृत्तिः—अक्षि इत्येवमादिषु क्षकारस्य छकारो भवति । अच्छी (३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ छ्=च्, ५-१८ दीर्घः) । लच्छी (३-२ मलोपः, शेषः पूर्ववत्) । छुण्णो (५-१ ओ) । छीरं (स्पष्टं) । छुद्धो (३-३ वलोपः, ३-५० धद्वित्वं, ३-५१ ध्=द्, ५-१ ओ) । उच्छित्तो (३-१ तपयोर्लोपः, ३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ चत्वं, ३-५० त्द्वित्वं, ५-१ ओ) । सरिच्छं (१-२ सूत्रे स्पष्टम्) । उच्छू (१-१५ सूत्रे स्पष्टम्)। उच्छा (५-४७ आत्मवत् कार्य, शेषः पूर्ववत्) । रिच्छो (२-३ ऋ=रि, ३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ छ्=च्, ५-१ ओ) । मच्छि (२-२ कलोपः, शेषः पूर्ववत्) । छुअं (२-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः) । छुरं (५-३० बिन्दुः) । छेत्तं (३-३ रलोपः, ३-५० त्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । वच्छो (३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ छ्=च्, ४-१८ पुंसवत्, ४-६ सुलोपः, ५-१ ओ) । दच्छो (पूर्ववत्) । कुच्छी (५-१८ दीर्घः, शेषः पूर्ववत्) । अक्षि-लक्ष्मी-क्षुण्ण-क्षीर-क्षुब्ध-उत्क्षिप्त-सट्टक्ष-इक्षु-उक्षन्-क्षार-ऋक्ष-मक्षिका-क्षुत-क्षुर-क्षेत्र-वक्षस्-दक्ष-कुक्षि-इत्येव-मादयः ।।३०।।**

**व्याख्या**—अक्षि इत्यादि पदों में क्षकार के स्थान पर छकार हो जाता है। जैसे-

१. **अक्षिः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-अच्छिः ।३.५० से छकार का द्वित्व-लअछ्छिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-अच्छी । ५.१८ से इकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु का लोप–**अच्छी** ।

२. **लक्ष्मी**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-लच्छ्मी । ३.५० से छकार का द्वित्व-लछ्छ्मी । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-लच्छ्मी । ३.२ से मकार का लोप–**लच्छी** ।

३. **क्षुण्णः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-छुण्णः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**छुण्णो** ।

४. **क्षीरम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-छीरम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**छीरं** ।

५. **क्षुब्धः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-छुब्धः । ३.३ से बकार का लोप-छुधः । ३.५० से ध्कार का द्वित्व-छुध्धः । ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार का दकार-छुद्धः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**छुद्धो** ।

६. **उत्क्षिप्तः**—३.१ से तकार और पकार का लोप-उक्षितः । प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-उछितः । ३.५० से छकार का द्वित्व-उछ्छितः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-उच्छितः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**उच्छितो** ।

७. **सदृक्षम्**—१.३१ ऋकार के स्थान पर रिकार-सद्रिक्षम् । २.२ से दकार का लोप-सरिक्षम् । प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-सरिछम् । ३.५० से छकार का द्वित्व-सरिछ्छम् । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-सरिच्छम् । ५.३० मकार का अनुस्वार–**सरिच्छं** ।

८. **इक्षुः**—१.१५ से इकार के स्थान पर उकार-उक्षुः । प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-उछुः । ३.५० से छकार का द्वित्व-उछ्छुः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-उच्छुः । ५.१८ से अन्त्य उकार का ऊकार और ४.६ से सु का लोप–**उच्छू** ।

९. **उक्षन्**— प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-उछन् । ३.५० से छकार का द्वित्व-उछ्छन् । ३.५१ पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-उच्छन् । ५.४७ से आत्मन् के समान अकार का आकार और ४.६ से मकार का लोप–**उच्छा** ।

१०. **क्षारम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-छारम् । ५.३० से मकार का अनिुस्वार–**छारं** ।

**११. ऋक्षः**—१.३ से ऋकार के स्थान पर रिकार-रिक्षः। प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-रिछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-रिछ्छः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-रिच्छः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**रिच्छो**।

**१२. मक्षिका**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार-मछिका। ३.५० से छकार का द्वित्व-मछ्छिका। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-मच्छिका। २.२ से ककार का लोप–**मच्छिआ**।

**१३. क्षुतम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार छकार-छुतम्। २.२ से तकार का लोप-छुअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**छुअं**।

**१४. क्षुरम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-छुरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**छुरं**।

**१५. क्षेत्रम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-छेत्रम्। ३.३ से रेफ का लोप-छेतम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-छेत्तम्। ५.३० से अकार का अनुस्वार–**छेत्तं**।

**१६. वक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-वछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः। ३.५१ से छकार का चकार-वच्छः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**वच्छो**।

**१७. दक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-दछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-दछ्छः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-दच्छः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**दच्छो**।

**१८. कुक्षिः**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-कुछिः। ३.५० से छकार का द्वित्व-कुछ्छिः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार के स्थान पर चकार-कुच्छिः। ५.१८ से ईकार के स्थान पर ईकार और ४.६ से सु लोप–**कुच्छी**।

## क्षमावृक्षक्षणेषु वा ।।३१।।

**पदच्छेद**—क्षमावृक्षक्षणेषु। वा।

**पदार्थ**—समावृक्षक्षणेषु = क्षमा, वृक्ष और क्षण-(इन पदों) में। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—क्षमावृक्षक्षणेषु = क्षमा, वृक्ष और क्षण, (इन पदों) में (क्षकार के स्थान पर छकार) विकल्प से (होता है)।

**वृत्तिः—एतषु क्षकारस्य छकारो भवति वा। छमा, खमा (३-२९ क्ष् = ख्)। वच्छो, रुक्खो (१-३२ सूत्रे स्पष्टम्)। छणं, खणं (पक्षे ३-२९ क्ष् = ख्, ५-३०**

**बिन्दुः)। 'वृक्ष' शब्दे ऋकारस्याकारे कृते, क्षणशब्दे चोत्सवचाभिधायिनि छत्वमिष्यते ।।३१।।**

**व्याख्या**—क्षमा, वृक्ष और क्षण-इन पदों में विकल्प से छकार के स्थान पर छकार होता है। जैसे-

१. **क्षमा**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर छकार–**छमा**। पक्ष में ३.२९ से क्षकार के स्थान पर खकार–**खमा**।

२. **वृक्षः**—१.२७ ऋकार का अकार-वक्षः। प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-वच्छः। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वच्छो**। पक्ष में-१.३० से वकारसहित ऋकार का रुकार-रुक्षः। २.२९ से क्षकार का खकार-रुखः। ३.५० से खकार का द्वित्व-रुख्खः। ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार का रुक्खः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**रुक्खो**।

३. **क्षणम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार का छकार-छणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**छणं**। पक्ष में-३.२९ से क्षकार का खकार-खणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**खणं**।

**विशेष**—उत्सवार्थ क्षण शब्द का छण और काल अर्थ में 'खण' होता है।

## ष्मपक्ष्मविस्मयेषु म्हः ।।३२।।

**पदच्छेद**—ष्मपक्ष्मविस्मयेषु। म्हः।

**पदार्थ**—ष्मपक्ष्मविस्मयेषु = ष्म (के स्थान पर) और पक्ष्म तथा विस्मय (-इन पदों) में। म्हः = म्हकार।

**सू०अ०**—ष्म (के स्थान पर) और पक्ष्म तथा विस्मय (इन पदों) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) म्हकार (हो जाता है)।

वृत्तिः—**ष्म-इत्येतस्य पक्ष्मविस्मयशब्दयोश्च युक्तस्य म्हकारो भवति। ष्मस्य–गिम्हो (३-३ रेफलोपः, ह्रस्वः संयोग–ई = इ, ५-१ ओ)। उह्मा (५-४७ आत्मवत् कार्य्यं, शेषः पूर्ववत्)। पह्मो (५-१ ओ, शेषः पूर्ववत्)। विम्हओ (२-२ यूलोपः, शेषः पूर्ववत्)। ग्रीष्म–उष्मन्–पक्ष्मन्–विस्मयाः।३२।**

**व्याख्या**—ष्म के स्थान पर और पक्ष्म तथा विस्मय-इन दोनों पदों में संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर 'म्ह' हो जाता है। जैसे-

**१. ष्म के स्थान पर**—

**(क) ग्रीष्मः**—३.३ से रेफ का लोप-गीष्मः। ४.१ से ईकार के स्थान पर इकार-

गिष्मः । प्रस्तुत सूत्र से ष्मकार के स्थान पर म्हकार-गिम्हः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**गिम्हो** ।

**(ख) उष्मन्**—प्रस्तुत सूत्र से ष्मकार के स्थान पर म्हाकर-उम्हन् । ५.४७ से आत्मवत् अकार का आकार तथा ४.६ से नकार का लोप–**उम्हा** ।

**२. पक्ष्म का—**

**(क) पक्ष्मन्**—प्रस्तुत सूत्र से क्ष्म के स्थान पर म्ह-पम्हन् । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ५.४७ से नकार का लोप–**पम्हो** ।

**३. विस्मयः का—**

**(क) विस्मयः**—प्रस्तुत सूत्र से स्म के स्थान पर म्ह-विम्हयः । २.२ से यकार का लोप-विम्हअः । ५.१ से अन्त्य सु के साथ अकार का ओकार–**विम्हओ** ।

## ह्नस्नष्णाक्ष्णश्नां ण्हः ।।३३।।

**पदच्छेद**—ह्नस्नष्णाक्ष्णश्नाम् । ण्हः ।

**पदार्थ**—ह्नस्नष्णाक्ष्णश्नाम् = ह्न, स्न, ष्ण, क्ष्ण और श्न के स्थान पर। ण्हः = ण्ह ।

**सू०अ०**—ह्न, स्न, ष्ण, क्ष्ण और श्न के स्थान पर ण्ह (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ह्नादीनां इत्ययमादेशो भवति । ह्नस्य–वण्ही, जण्हू (५-१८ दीर्घः) । स्नस्य–ण्हाणं (५-३० बिन्दुः, २-४२ न् = ण्) । पण्हुदं (३-३ र्लोपः, १२-३ त् = द्, ५-३० बिन्दुः) । ष्णास्य–विण्हू (५-१८ दीर्घः) । कण्हो (३-६१ विप्रकर्षत् ऋ = अ, ५-१ ओ) । क्ष्णास्य–सण्हं (२-४३ श् = स्, विप्रकर्षत् बाहुलकेन लस्यात्वे, ५-३० बिन्दुः) । तिण्हं (ह्रस्वः संयोगे ती = ति, शेषः पूर्ववत्) । श्नस्य–पण्हो (३-३ र्लोपः, ५-१ ओ) । सिण्हो २-४२ श् = स्, शेषः पूर्ववत्) । वह्नि, जह्नुः, स्नानम्, प्रस्नुतम्, विष्णुः, कृष्णः, श्लक्ष्णं, तीक्ष्णम्, प्रश्नः, शिश्नः ।।३३।।**

**व्याख्या**—ह्नकार, स्नकार, ष्णकार, क्ष्णकार, और श्नकार के स्थान पर ण्हकार हो जाता है। जैसे-

**१. ह्न का—**

**(क) वह्निः**— प्रस्तुत सूत्र से ह्नकार के स्थान पर ण्हकार-वण्हिः । ५.१ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**वण्ही** ।

**(ख) जह्नुः**—प्रस्तुत सूत्र से ह्नकार के स्थान पर ण्हकार-जण्हुः । ५.१८ से

उकार का ऊकार और ४.६ से सु का लोप–**जण्हू**।

**२. स्न का—**

**(क) स्नानम्**—प्रस्तुत सूत्र से स्नकार का ण्हाकर-ण्हानम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-ण्हाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**ण्हाणं**।

**(ख) प्रस्नुतम्**—३.३ से रेफ का लोप-पस्नुतम्। प्रस्तुत सूत्र से स्नकार का ण्हकार-पण्हुतम्। १२.३ से तकार का दकार-पण्हुदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पण्हुदं**।

**३. ष्ण का—**

**(क) विष्णुः**—प्रस्तुत सूत्र से ष्णकार का ण्हकार-विण्हुः। ५.१८ से उकार का ऊकार और ४.६ से सु का लोप–**विण्हू**।

**(ख) कृष्णः**—३.६१ से ऋकार के स्थान पर अकार-कष्णः। प्रस्तुत सूत्र से ष्णकार के स्थान पर ण्हकार-कण्हः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**कण्हो**।

**४. क्ष्ण का—**

**(क) श्लक्ष्णम्**—२.४२ से शकार का सकार-रलक्ष्णम्। ३.३ से लकार का लोप-सक्ष्णम्। प्रस्तुत सूत्र से क्ष्णकार का ण्हकार-सण्हम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सण्हं**।

**(ख) तीक्ष्णम्**—४.१ से ईकार का इकार-तिक्ष्णम्। प्रस्तुत सूत्र से क्ष्णकार का ण्हकार-तिण्हम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तिण्हं**।

**५. श्न का—**

**(क) प्रश्नः**—३.३ से रेफ का लोप-पश्नः। प्रस्तुत सूत्र से श्नकार का ण्हकार-पण्हः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**पण्हो**।

**(ख) शिश्नः**—२.४३ से शकार का सकार-सिश्नः। प्रस्तुत सूत्र से श्नकार का ण्हकार-सिण्हः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सिण्हो**।

## चिह्ने न्धः ।।३४।।

**पदच्छेद**—चिह्ने। न्धः।

**पदार्थ**—चिह्ने = चिह्न (इस पद) में। न्धः = न्धकार।

**सू० अ०**—चिह्न (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों 'ह्न' के स्थान पर) न्धकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—चिह्नशब्दे युक्तस्य न्ध इत्ययमादेशो भवति। चिन्धं (१-१२ सूत्रे स्पष्टम्) ।।३४।।**

**व्याख्या**—चिह्न इस पद में संयुक्त व्यञ्जनों ह्नकार के स्थान पर न्धकार हो जाता है। जैसे–

१. **चिह्नम्**—प्रस्तुत सूत्र से ह्नकार के स्थान पर न्धकार-चिन्धम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**चिन्धं**।

## ष्पस्य फः ।।३५।।

**पदच्छेद**—ष्पस्य। फः।

**पदार्थ**—ष्पस्य = ष्पकार के स्थान पर। फः = फकार।

**सू०अ०**—ष्पकार के स्थान पर फकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ष्प इत्येतस्य फ इत्ययमादेशो भवति। फप्फं (३-५० फ्द्वित्वं, ३-५१ फ्=प्, ५-३० बिन्दुः)। सप्फं (२-४३ श्=स्, शेषः पूर्ववत्)। णिप्फाओ। (२-३२ न्=ण्, २-२ पूलोपः, ३.५० फ्द्वित्वं ३.५१ फ्=प्, ५-१ ओ)। पुष्पम्, शष्पम्, निष्पापः ।।३५।।**

**व्याख्या**—'ष्प' के स्थान पर 'फ' हो जाता है। जैसे–

१. **पुष्पम्**—प्रस्तुत सूत्र से ष्पकार के स्थान पर फकार-पुफम्। ३.५० से फकार का द्वित्व-पुफ्फम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती फकार का पकार-पुप्फम्। ३.३० से मकार का अनुस्वार–**पुप्फं**।

२. **शष्पम्**—२.४३ से शकार का सकार-सष्पम्। प्रस्तुत सूत्र से ष्पकार के स्थान पर फकार-सफम्। ३.५० से फकार द्वित्व-सुफ्फम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती फकार का पकार-सप्फम्। ३.३० से मकार का अनुस्वार–**सप्फं**।

३. **निष्पापः**—२.३२ से नकार णकार-णिष्पापः। प्रस्तुत सूत्र से ष्पकार के स्थान पर फकार-णिफापः। ३.५० से फकार का द्वित्व-णिफ्फापः। ३.५१ से पूर्ववर्ती फकार का पकार-णिप्फापः। २.२ से पकार का लोप-णिप्फाअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णिप्फाओ**।

## स्पस्य सर्वत्र स्थितस्य ।।३६।।

**पदच्छेद**—स्पस्य। सर्वत्र। स्थितस्य।

**पदार्थ**—सर्वत्र = सभी स्थान पर। स्थितस्य = स्थित। स्पस्य = स्पकार के स्थान पर।

**सू०अ०**—सभी स्थान पर स्थित स्पकार के स्थान पर (फकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्प इत्येतस्य सर्वत्र स्थितस्य फ इत्ययमादेशो भवति। फंसो (४-१८ बिन्दुः, ३-३ र्लोपः, २-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। फंदणं (२-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः, शेषः पूर्ववत्)। स्पर्शः, स्पन्दनम्।।३६।।**

**व्याख्या**—सभी स्थान पर स्थित स्पकार के स्थान पर फकार हो जाता है। जैसे–

१. **स्पर्शः**—प्रस्तुत सूत्र से स्प के स्थान पर फ–फर्शः। ४.१८ से अनुस्वार–फंर्शः। ३.३ से रेफ का लोप–फंशः। २.४३ से शकार का सकार-फंर्सः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**फंसो**।

२. **स्पन्दनम्**—प्रस्तुत सूत्र से स्प के स्थान पर फ-फन्दनम्। ३.१८ से नकार का अनुस्वार-फंदनम्। २.४२ से नकार णकार-फंदणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**फंदणं**।

## सि च ।।३७।।

**पदच्छेद**—सि। च।

**पदार्थ**—सि = सिकार। च = भी।

**सू०अ०**—(स्प के स्थान पर कहीं-कहीं) सिकार भी (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्पस्य क्वचित् सि इत्ययमादेशो भवति। पाडिसिद्ध (१-२ सूत्रे स्पष्टम्)। प्रतिस्पर्द्धी।।३७।।**

**व्याख्या**—कहीं-कहीं स्प के स्थान पर सि भी हो जाता है। जैसे–

१. **प्रतिस्पर्द्धि**—३.३ से रेफ का लोप-प्रतिस्पर्द्धिः। १.२ से अकार का आकार-पातिस्पर्द्धिः। २.८ से तकार के स्थान पर डकार-पाडिस्पर्द्धिः। प्रस्तुत सूत्र से स्प के स्थान पर सि-पाडिसिर्द्धिः। ३.३ से रेफ का लोप-पाडिसिद्धिः। ५.१ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**पाडिसिद्धी**।

## बाष्पेऽश्रुणि हः ।।३८।।

**पदच्छेद**—बाष्पे। अश्रूणि। हः।

**पदार्थ**—अश्रुणि = आँसू (अर्थ) वाले। बाष्पे = बाष्प (इस पद) में। हः = हकार।

**सू०अ०**—आँसू (अर्थ) वाले वाष्प (इस पद) में (ष्प के स्थान पर) हकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—बाष्पशब्दे ष्प इत्येतस्य हकारो भवति अश्रुणि वाच्ये। बाहो (५-१ ओ, ३-५४ ह्द्वित्वं न)। अश्रुणि किम्? बष्फो (४-१ बा = ब, ३-३५ ष्प् = फ्, ३-५० फ्द्वित्वं, ३-५१ फ् = प्, ५-१ ओ)। उह्म (५-४७**

**आत्मवत्) । बाष्पः, ऊष्मा ।।३८।।**

**व्याख्या**—आँसू (अर्थ) वाले बाष्प इस पद में ष्प के स्थान पर हकार हो जाता है। जैसे–

१. **बाष्पः**—प्रस्तुत सूत्र से 'ष्प' के स्थान पर ह-वाहः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**वाहो** । अश्रु का वाचक न होने पर हकार नहीं होता है। जैसे–**बाष्पः**—४.१ से बा के स्थान पर ब-बष्प । ३.३५ से ष्पकार के स्थान पर फकार-बफः । ३.५० से फकार का द्वित्व-वफ्फः । ३.५१ से पूर्ववर्ती फकार का पकार-बप्फ; । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**बप्फो** ।

## कार्षापणे ।।३९।।

**पदच्छेद**—कार्षापणे ।

**पदार्थ**—कार्षापण (इस पद) में ।

**सू०अ०**—कार्षापण (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जन र्ष के स्थान पर हकार हो जाता है) ।

**वृत्तिः—कार्षापणषब्दे युक्तस्य हकारो भवति । काहावणो (२-१५ प् = व्, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ) ।।३९।।**

**व्याख्या**—कार्षापण–इस पद में संयुक्त व्यञ्जन र्ष के स्थान पर हकार हो जाता है । जैसे–

१. **कार्षापणः**—प्रस्तुत सूत्र से र्ष के स्थान पर हकार-काहापणः । ३.१५ से पकार के स्थान पर वकार-काहावणः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**काहावणो** ।

## श्नत्सप्सां छः ।।४०।।

**पदच्छेद**—श्चत्सप्सांम् । छः ।

**पदार्थ**—श्चत्सप्साम् = श्चकार, त्सकार और प्सकार के स्थान पर । छः = छकार ।

**सू०अ०**—श्चकार, त्सकार, प्सकार के स्थान पर छकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतेषां छकारो भवति । श्चस्य–पच्छिमं (३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ छ् = च्, ४-१२ बिन्दुः)। अच्छेरं (१-५ सूत्रे स्पष्टम्) । त्सस्य–वच्छो (५-१ ओ) । वच्छरो (३-५० छ्द्वित्वं, ३-५१ छ् = च्, ५-१ ओ) । प्सस्य–लिच्छा जुगुच्छा (स्पष्टम्)। पश्चिमम्, आश्चर्यम्, वत्सः, वत्सरः, लिप्सा, जुगुप्सा ।।४०।।**

**व्याख्या**—श्चकार, त्सकार और प्सकार के स्थान पर छकार हो जाता है। जैसे–

१. **श्चकार का**—

(क) **पश्चिमम्**—प्रस्तुत सूत्र से श्चकार के स्थान पर छकार-पछिमम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-पछ्छिमम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-पच्छिमम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पच्छिमं**।

(ख) **आश्चर्यम्**—४.१ से आकार के स्थान पर अकार-अश्चर्यम्। ३.४० से श्चकार के स्थान पर ईकार-अछर्यम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-अछ्छर्यम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-अच्छर्यम्। ३.१८ र्य के स्थान पर रेफ-अच्छरम्। ५.३० से मकार क अनुस्वार–**अच्छरं**।

२. **त्स का**—

(क) **वत्सः**—प्रस्तुत सूत्र से त्स के स्थान पद छकार-वछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**वच्छो**।

(ख) **वत्सरः**—प्रस्तुत सूत्र से त्स के स्थान पर छ-वछरः। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छरः। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छरः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**वच्छरः**।

३. **प्स का**—

(क) **लिप्सा**— प्रस्तुत सूत्र से प्स का छ-लिछा। ३.५० से छकार का द्वित्व-लिछ्छा। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार–**लिच्छा**।

(ख) **जुगुप्सा**—प्रस्तुत सूत्र से प्स का छ-जुगुछा। ३.५० से छकार का द्वित्व-जुगुछ्छा। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार–**जुगुंच्छा**।

## वृश्चिके ञ्छः ॥४१॥

**पदच्छेद**—वृचिके। ञ्छः।

**पदार्थ**—वृश्चिके = वृश्चिक-(इस पद) में। ञ्छः = ञ्छकार

**सू०अ०**—वृश्चिक (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) ञ्छकार (हो जाता है)।

**वृश्चिकशब्दे श्चकारस्य ञ्छ इत्यमादेशो भवति। विञ्छुओ (शेषं १-१५ सूत्रे स्पष्टम्) ॥४१॥**

**व्याख्या**—वृश्चिक इस पद में संयुक्त व्यञ्जनों श्चकार के स्थान पर ञ्छकार हो जाता है। जैसे–

१. **वृश्चिकः**—४.२८ से ऋ के स्थान पर इ-विश्चिकः। प्रस्तुत सूत्र से श्चकार के स्थान पर छकार-विश्छिकः। १.१५ से इकार का उकार-विञ्छुकः। २.२ से ककार का लोप-विञ्छिअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**विञ्छुओ**।

## नोत्सुकोत्सवयोः ।।४२।।

**पदच्छेद**—न। उत्सूकोत्सवयोः।

**पदार्थ**—उत्सुकोत्सवयोः = उत्सुक और उत्सव-(इन दोनों पदों) में। न = नहीं।

**सू०अ०**—उत्सुक और उत्सव (इन दोनों पदों) में (संयुक्त के स्थान पर छकार) नहीं (होता है)।

**वृत्तिः—उत्सुक, उत्सव इत्येतयोः छकारो न भवति। 'श्चत्सप्सां छ' इति प्राप्ते प्रतिषिध्यते। उस्सुओ (२-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। उस्सवो (३-१ त्लोपः, ३-५० स्द्वित्वं, २-२ प्रायोग्रहणात् लोपो न, शेषः पूर्ववत्) ।।४२।।**

**व्याख्या**—यह ३.४६ का अपवाद है। उत्सुक और उत्सव-इन दोनों पदों में संयुक्त त्सकार के स्थान पर छकार नहीं होता है। जैसे-

१. **उत्सुकः**—३.१ से तकार का लोप-उसुकः। ३.५० से सकार का द्वित्व-उस्सुकः। २.२ से ककार का लोप-उस्सुअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**उस्सुओ**।

२. **उत्सवः**—३.१ से तकार का लोप-उसवः। ३.५० से सकार का द्वित्व-उस्सवः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**उत्सवो**।

## न्मो मः ।।४३।।

**पदच्छेद**—न्मोः। मः।

**पदार्थ**—न्मोः-न्म के स्थान पर। मः = मकार।

**सू०अ०**—न्मकार (के स्थान पर) मकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—न्म इत्येतस्य म इत्ययमादेशो भवति। अधो लोपे प्राप्ते। जम्मो (३-५० म्द्वित्वं, ५-१ ओ)। वम्महो (२-३९ सूत्रे स्पष्टम्)। जन्म, मन्मथः ।।४३।।**

**व्याख्या**—संयुक्त न्मकार के स्थान पर मकार हो जाता है। जैसे-

१. **जन्म**—प्रस्तुत सूत्र से न्म के स्थान पर माकर-जम। ३.५० से मकार का द्वित्व-जम्म। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**जम्मो**।

२. **मन्मथः**—२.३९ से आदि मकार के स्थान पर बकार-बन्मथः। प्रस्तुत सूत्र से

न्म के स्थान पर मकार-बमथः। ३.५० से मकार का द्वित्व-बम्मथः। २.२७ से थकार के स्थान पर हकार-बम्महः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**बम्महो**।

## म्नज्ञपञ्चाशत्पञ्चशेषु णः ।।४४।।

**पदच्छेद**—म्नज्ञपञ्चाशत्पञ्चदशेषु। णः।

**पदार्थ**—म्न, ज्ञ (इन दोनों तथा) पञ्चाशत् और पञ्चदश (इन दोनों पदों) में (संयुक्तव्यञ्जनों के स्थान पर)। णः = णकार।

**सू०अ०**—म्न, क्ष (इन दोनों तथा) पञ्चाशत् और पञ्चदश (इन दोनों पदों) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर णकार हो जात है।

**वृत्तिः—म्न ज्ञं इत्येतयोः पञ्चाशत्-पञ्चदशशब्दयोश्च युक्तस्य णकारो भवति। म्नस्य–पज्जुण्णो (३-३ र्लोपः, ३-२७ द्य् = ज्, ३-५० जणयोर्द्वित्वं, ५-१ ओ)। ज्ञस्य–जण्णो (२-३१ य् = ज्, शेषः पूर्ववत्)। विण्णाणं (३-५० ण्द्वित्वं, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। पण्णासा (२-४३ श् = स्, ४-७ त् = आ, शेषः पूर्ववत्)। पण्णरहो (३-५० ण्द्वित्वं, २-१४ द् = र्, २-४४ श् = ह्, ५-१ ओ)। प्रद्युम्नः, यज्ञः, विज्ञानम्, पञ्चाशत्, पञ्चदश ।।४४।।**

**व्याख्या**—म्न और ज्ञ–इन दोनों के स्थान पर णकार हो जाता है तथा पञ्चाशत् और पञ्चदश–इन दोनों पदों स्थित संयुक्त व्यञ्जनों 'ञ्च' के स्थान पर भी णकार हो जाता है। जैसे–

**१. म्न का—**

**(क) प्रद्युम्नः** ३.३ से रेफ का लोप–पद्युम्नः। ३.२७ से द्यकार के स्थान पर जकार-पजुम्नः। ३.५० जकार का द्वित्व–पज्जुम्नः। प्रस्तुत सूत्र से म्न के स्थान पर णकार-पज्जुणः। ३.५० से णकार का द्वित्व-पज्जुण्णः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**पज्जुण्णो**।

**२. क्ष का—**

**(क) यज्ञः**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जज्ञः। प्रस्तुत सूत्र से ज्ञकार के स्थान पर णकार-जणः। ३.५० से णकार का द्वित्व-जण्णः। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**जण्णो**।

**(ख) विज्ञानम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्षकार के स्थान पर णकार-विणानम्। ३.५० से णकार का द्वित्व-विण्णानम्। २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-विण्णणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**विण्णाणं**।

३. **पञ्चाशत्**—प्रस्तुत सूत्र से ञ्च के स्थान पर ण-पणाशत्। ३.५० से णकार का द्वित्व-पण्णाशत्। २.४३ से शकार के स्थान पर सकार-पण्णासत्। ४.७ से त् के स्थान पर आ–**पण्णासा**।

४. **पञ्चदशः**—प्रस्तुत सूत्र से ञ्च के स्थान पर ण-पणदशः। ३.५० से णकार का द्वित्व-पण्णदशः। २.१४ से दकार के स्थान पर रेफ-पण्णरश। २.४४ से शकार के स्थान पर हकार-पण्ण्रहः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**पण्णरहो**।

## तालवृन्ते ण्टः ।।४५।।

**पदच्छेद**—तालवृन्ते। ण्टः।

**पदार्थ**—तालवृन्ते = तालवृन्त (इस पद) में। ण्टः = ण्ट।

**सू०अ०**—तालवृन्त (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर ण्ट (हो जाता है)।

**वृत्तिः—तालवृन्ते युक्तस्य ण्ट इत्ययमादेशो भवति। तालवेण्टअं (१-१० सूत्रे स्पष्टम्) ।।४५।।**

**व्याख्या**—तालवृन्त-इस पद में संयुक्त व्यञ्जनों अर्थात् न्त के स्थान पर ण्ट हो जाता है। जैसे–

१. **तालवृन्त**—१.१० से आकार के स्थान पर अकार-तलवृन्तम्। १.२८ से ऋकार के स्थान पर इकार-तलविन्तम्। १.१२ से इकार का एकार-तलवेन्तम्। प्रस्तुत सूत्र से न्त के स्थान पर ण्टकार-तलविण्टम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-तलवेण्टं। पक्ष में-१.१० से आकार के स्थान पर विकल्प होने के कारण **तालवेण्टं** रूप भी होगा।

## भिन्दिपाले ण्डः ।।४६।।

**पदच्छेद**—भिन्दिपाले। ण्डः।

**पदार्थ**—भिन्दिपाल-(इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) ण्ड (हो जाता है)।

**सू०अ०**—भिन्दिपाल-(इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) 'ण्ड' (हो जाता है)।

**वृत्तिः— भिन्दिपालशब्दे युक्तस्य ण्ड इत्ययमादेशो भवति। भिण्डिवालो (२-१५ प्= व्, ५-१ ओ) ।।४६।।**

**व्याख्या**—भिन्दिपाल-(इस पद) में संयुक्त व्यञ्जनों अर्थात् न्द के स्थान पर ण्ड हो जाता है। जैसे-

**भिन्दिपालः**—प्रस्तुत सूत्र से न्द के स्थान पर ण्ड-भिण्डिपालः । २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-भिण्डिवालः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**भिण्डिवालो** ।

## विह्वले भहौ वा ।।४७।।

**पदच्छेद**—विह्वले । भहौ । वा ।

**पदार्थ**—विह्वले = विह्वल (इस पद) में भहौ वा । भकार अथवा हकार ।

**सू०अ०**—विह्वल (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) भकार अथवा हकार (होता है) ।

**वृत्तिः—विह्वलशब्दे युक्तस्य भकारहकारौ भवतो वा । विब्भलो (३-५० भ्द्वित्वं, ३-५१ भ् = व्, ५-१ ओ) । विहलो (३-५४ ह्द्वित्वं न) । विह्वलः ।।४७।।**

**व्याख्या**—विह्वल (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों = ह्व के स्थान पर भकार अथवा हकार होता है। जैसे-

१. **विह्वलः**—प्रस्तुत सूत्र से भकार होने पर-विमलः । ३.५० से भकार का द्वित्व-विभ्भलः । ३.५१ से पूर्ववर्ती भकार के स्थान पर बकार-विब्भलः । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**विब्भलो** । प्रस्तुत सूत्र से ही हकार होने पर–**विहलो** । ३.५६ से हकार का द्वित्व नहीं होता है।

## आत्मनि पः ।।४८।।

**पदच्छेद**—आत्मनि । पः ।

**पदार्थ**—आत्मनि = आत्मन् (इस पद) में । पः = पकार ।

**सू०अ०**—आत्मन् (इस पद) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) पकार (होता है) ।

**वृत्तिः—आत्मशब्दे युक्तस्य पकारो भवति। अप्पा (३-५० प्द्वित्वं, ४-४६ राजवत्कार्यम्-आ = अ) ।।४८।।**

**व्याख्या**—आत्मन् इस पद में संयुक्त व्यञ्जनों 'त्म' के स्थान पर पकार हो जाता है । जैसे–

१. **आत्मन्**—१.२ से आ के स्थान पर अ-अत्मन् । प्रस्तुत सूत्र से त्म के स्थान पर प-आपन् । ३.५० से पकार का द्वित्व-आप्पन् । ५.४६ से राज के समान अकार का आकार और ४.६ नकार का लोप–**आप्पा** ।

## क्मस्य ।।४९।।

**पदच्छेद**—क्मस्य ।

**पदार्थ**—क्मस्य क्म के स्थान पर ।

**सू०अ०**—क्म के स्थान पर (पकार हो जाता है) ।

**वृत्तिः—क्म इत्येतस्य पकारो भवति। रुप्पं (३-५० पूद्वित्वं, ५-३० बिन्दुः)। रूप्पिणी (पूर्ववत्) । रुक्मं, रुक्मिणी । योगविभगो नित्यार्थः ।।४९।।**

**व्याख्या**—क्म के स्थान पर पकार हो जाता है । इस सूत्र में विहित कार्य का पूर्ववर्ती सूत्र से अलग विधान करने का प्रयोजन यह है कि इस सूत्र में विहित कार्य नित्य होता है । इस में कोई विकल्प नहीं है । जैसे–

१. **रुक्मम्**—प्रस्तुत सूत्र से क्म के स्थान पर प-रूपम् । ३.५० से पकार का द्वित्व-रुप्पम् । ४.३० से मकार का अनुस्वार–**रुप्पं** ।

२. **रुक्मिणी**—प्रस्तुत सूत्र से कम के स्थान पर प-रुपिणी । ३.५० से पकार का द्वित्व–**रुप्पिणी** ।

## शेषादेशयोर्द्वित्वमनादौ ।।५०।।

**पदच्छेद**—शेषादेशयोः । द्वित्वम् । अनादौ ।

**पदार्थ**—शेषादेशयोः = (संयुक्त व्यञ्जनों में से किसी व्यञ्जनों का लोप होने पर) अविशिष्ट व्यञ्जन का तथा (किसी व्यञ्जन के स्थान पर) आदेश किये गये (व्यञ्जन) का । द्वित्वम् = द्वित्व । अनादौ = आदि में न हो ।

**वृत्तिः—युक्तस्य यौ शेषादेशभूतौ तयोरनादौ वर्तमानोर्द्वित्वं भवति । शेषस्य तावत्–भुत्तं (३-१ क्लोपः, ३-५० त्द्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । मग्गो (३-३ र्लोपः, ३-५० ग्द्वित्वं, ५-१ ओ) । आदेशस्य–लट्ठी (२-३२ सूत्रे स्पष्टम्) । दिट्ठी (१-१८ सूत्रे स्पष्टम्) । हत्थो (३-१२ सूत्रे स्पष्टम्) । अनादाविति किम्? खलिअं (३-१ स्लोपः, २-२ त्लोपः, ५-३० बिन्दुः) । खंभो (३-१४ सूत्रे स्पष्टम्) । थवओ (३-१२ सूत्रे स्पष्टम्) । भुक्तम्, मार्गः, यष्टिः, हस्तः, स्खलितम्, स्तम्भः, स्तबकः ।।५०।।**

**व्याख्या**—इस द्वित्व–विषयक विधान में इन तीन स्थितियों का होना अनिवार्य है । **१.** द्वित्व होने वाले व्यञ्जन को संयोग में होना चाहिए । **२.** उस संयोग में स्थित उस व्यञ्जन से अन्य व्यञ्जन का लोप होना चाहिए अथवा उन संयुक्त व्यज्जनों के स्थान पर कोई अन्य वर्ण हो जाने का आदेश हो । **३.** उस द्वित्व को प्राप्त होने वाला व्यञ्जन पद के आदि में न हो । जैसे–

**१. लोप होने पर—**

(क) **भुक्तम्**—३.१ से ककार का लोप होने पर प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त तकार का द्वित्व-भुत्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**भुत्तं**।

(ख) **मार्गः**—१.२ से आकार के स्थान प अकार-मर्गः। ३.३ से रेफ का रेफ होने पर संयुक्त गकार का द्वित्व-मग्गः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**मग्गो**।

**२. आदेश का—**

(क) **यष्टिः**—२.३२ से यकार का लकार-लष्टिः। ३.१० से ष्ट के स्थान पर ठ आदेशा-लठिः। अतः प्रस्तुत सूत्र से आदेश ठकार का द्वित्व-लठ्ठिः। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-लट्ठिः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**लट्ठी**।

(ख) **दृष्टिः**—१.२८ से ऋकार का इकार-दिष्टिः। ३.१० से ष्ट के स्थान पर ठ आदेश-दिठिः। अतः प्रस्तुत से आदेश ठकार का द्वित्व-दिठ्ठिः। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-दिट्ठिः। ५.१८ से अन्त्य इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**दिट्ठी**।

(ग) **हस्तः**—३.१२ से स्त का थ आदेश-हथः। अतः प्रस्तुत सूत्र से आदेश थकार का द्वित्व-हथ्थः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार का तकार-हत्थः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**हत्थो**।

**विशेष**—यह लोप अथवा आदेश पद के आदि में नहीं होना चाहिए। पद के आदि में होने पर अवशिष्ट व्यञ्जनका द्वित्व नहीं होता। जैसे–

१. **स्खलितम्**—३.१ सकार का लोप-खलितम्। २.२ से तकार का लोप-खलिअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**खलिअं**। यहाँ सकार का लोप होने पर भी पदादि में होने के कारण अवशिष्ट खकार का द्वित्व नहीं हुआ है।

२. **स्तम्भः**—३.१४ से स्त स्थान पर ख आदेश-खम्भः। ४.१७ से वर्गान्त मकार का अनुस्वार-खंभः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-खंभो। यहाँ संयुक्त स्त के स्थान पर खकार आदेश होने पर भी पदादि होने के कारण आदेश खकार का द्वित्व नहीं हुआ।

३. **स्तवकः**—३.१२ से स्त का थ-थवकः। २.२ से ककार का लोप-थवअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**थवओ**। यहाँ भी संयुक्त स्त के स्थान पर थ आदेश हुआ है किन्तु पदादि होने के कारण थकार का द्वित्व नहीं हुआ है।

## वर्गेषु युजः पूर्वः ।।५१।।

**पदच्छेद**—वर्गेषु । युजः । पूर्वः ।

**पदार्थ**—वर्गेषु = वर्गों में। युजः = सम संख्यक (व्यञ्जन) के स्थान पर। पूर्वः = पूर्ववर्ती (अर्थात् क्रमशः प्रथम और तृतीय) हो जाता है।

**सू०अ०**—वर्गों में (द्वित्व को प्राप्त) सम संख्यक (स्पर्श) के स्थान पर पूर्ववर्ती (स्पर्श) हो जाता है।

**वृत्तिः—युक्तस्य यौ शेषादेशावनादिभूतौ तयोर्द्वित्वेऽपि विहिते अध ऊर्ध्वे यौ वर्गेषु वर्णौ द्वितीयश्चतुर्थो वा विहितस्तस्य पूर्वः प्रथमस्तृतीयो वा भवति। वर्गेषु युग्मस्य द्वितीयस्य प्रथमः, चतुर्थस्य तृतीयो द्वित्वेन विधीयते, अयुग्मयोः प्रथमत्यीयपञ्चमरूपयोः शेषादेशयोस्तु तावेव भवतः। शेषस्य—वक्खाणं (३-२ उभयत्र य्लोपः, ४-१ ह्रस्वः, ३-५० ख्द्वित्वे, पूर्ववत् ख् = क्, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। अग्घो (३-३ र्लोपः, ५-१ ओ)। मुच्छा (४-१ ह्रस्वः)। णिज्झरो। लुद्धो। णिब्भरो (पूर्ववत् द्लोपादि)। आदेशस्य,दिट्ठी (१-२८ सूत्रतोऽनुसन्धेयम्)। लट्ठी (२-३२ सूत्रे स्पष्टम्)। वच्छो (३-३० सूत्रे स्पष्टम्, शेषमवदातम्)। विप्फरिसो (३-३५ स्प् = स्फ्, ३-६२ विप्रकर्षः, पूर्वस्वरतया रिकारश्च, २-४३ श् = स् ५-१ ओ)। णित्थारो (२-४२ न् = ण्, ३-१२ स्त् = थ्, शेषः स्पष्टम्)। जक्खो (१-३१ सूत्रे स्पष्टम्)। लच्छी (३-३० सूत्रे स्पष्टम्। ३-५० सर्वत्र द्वित्वम्। व्याख्यानम्, अर्घः, मूर्च्छा, निर्झरः, लुब्धः, निर्भरः, दृष्टिः, वक्षः, विस्पर्शः, निस्तारः, यक्षः, लक्ष्मीः, अस्थिः पुष्पम् ।।५१।।**

**व्याख्या**—वर्गों में द्वितीय तथा चतुर्थ समसंख्यक स्पर्श है। इन समसंख्यक अर्थात् वर्गों के द्वितीय तथा चतुर्थ स्पर्शों का द्वित्व होने पर अथवा आदेश होने पर आदेशज और दित्वज द्वितीय का पूर्ववर्ती प्रथम तथा चतुर्थ का पूर्ववर्ती तृतीय हो जाता है। तात्पर्य यह है कि द्वितीय का द्वित्व करने पर द्वित्वज के स्थान पर वर्ग का प्रथम और चतुर्थ के स्थान पर तृतीय हो जाता है। जैसे–

१. **व्याख्यानम्**—२.२ से दोनों यकार का लोप-वाखानम्। ४.१ से आदि आकार का अकार-वखानम्। ३.५० से खकार का द्वित्व-वख्खानम्। प्रस्तुत सूत्र से द्वित्वज खकार का ककार-वक्खानम्। २.४२ से नकार का णकार–वक्खाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वक्खाणं**।

२. **अर्घः**—३.३ से रेफ का लोप-अघः। ३.५० से घकार का द्वित्व-अघ्घः। प्रस्तुत सूत्र से द्वित्वज घकार का गकार-अग्घः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अग्घो**।

३. **मूर्छा**—४.९ से ऊकार का उकार-मुर्छा। ३.३ से रेफ का लोप-मुछा ३.५० से छकार का द्वित्व-मूछ्छा। प्रस्तुत सूत्र से द्वित्वज छकार का चकार-**मुच्छा**।

४. **निर्झरः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिर्झरः। ३.३ से रेफ का लोप-णिझरः। २.५० से पूर्ववर्ती झकार का द्वित्व-णिझ्झर। प्रस्तुत सूत्र से द्वित्वज झकार का जकार-णिज्झरः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**णिज्झरो**।

५. **लुब्धः**—२.२ से वकार का लोप-लुधः। ३.५० से धकार का द्वित्व-लुध्धः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती धकार का दकार-**लुद्धः**।

६. **निर्भरः**—२.४२ से नकार के स्थान पर णकार-णिर्भरः। ३.३ से रेफ का लोप-णिभरः। ३.५० से भकार का द्वित्व-णिभ्भरः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती भकार का बकार-णिब्भरः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**णिब्भरो**।

**आदेश का—**

१. **दृष्टिः**—१.२८ से ऋकार के स्थान इकार-दिष्टिः। ३.१० से ष्ट् के स्थान पर ठ आदेश-दिठिः। ३.५० से ठकार का द्वित्व-दिठ्ठिः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-दिट्ठिः। ५.१८ से अन्त्य इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**दिट्ठी**।

२. **यष्टिः**—२.३२ से यकार के स्थान पर लकार-लष्टिः। ३.१० से ष्ट् के स्थान पर ठ आदेश-लठिः। ३.५० से ठकार का द्वित्व-लठ्ठिः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-लट्ठिः। ५.१८ से अन्त्य इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**लट्ठी**।

३. **वक्षः**—३.३० से क्षकार का छकार आदेश वछः। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**वच्छो**।

४. **विस्पर्शः**—३.३५ से स्प को फ आदेश-विफर्शः। ३.५० से फकार का द्वित्व-विफ्फर्शः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती फकार का पकार-विप्फर्शः। ३.६२ से विप्रकर्ष और विप्फरिशः। २.४३ से शकार का सकार-विप्फरिसः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**विप्फरिसो**।

५. **निस्तारः**—२.४२ से नकार का णकार-णिस्तारः। ३.१२ से स्त् को थ आदेश-णिथारः। ३.५० से थकार का द्वित्व-णिथ्थारः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती थकार का तकार-णित्थारः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**णित्थारो**।

६. **यक्षः**—२.३१ से यकार के स्थान पर जकार-जक्षः। ३.२९ से क्षकार के

खकार आदेश-जखः। ३.५० से खकार का द्वित्व-जख्खः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती खकार का ककार-जक्खः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**जक्खो**।

७. **लक्ष्मी**—३.३० से क्ष्म को छ आदिश-लछी। ३.५० से छकार का द्वित्व-लछ्छी। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती छकार का चकार-लच्छी।

८. **अस्थिः**—३.१ से स्थ् को ठ आदेश–अठिः। ३.५० से ठकार का द्वित्व-अठ्ठिः। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-अट्ठिः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**अट्ठी**।

९. **पुष्पम्**—३.३५ से ष्प का फ आदेश-पुफम्। ३.५० से फकार का द्वित्व-पुफ्फम्। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती फकार का पकार-पुप्फम्। ३.३ से मकार का अनुस्वार–**पुप्फं**।

## नीडादिषु ।।५२।।

**पदच्छेद**—नीडादिषु।

**पदार्थ**—नीडादिषु = नीड इत्यादि (पदों) में।

**सू०अ०**—नीड-इत्यादि (पदों) में (अनादि स्थित व्यञ्जन का द्वित्व होता है)।

**वृत्तिः—नीड इत्येवमादिषु अनादौ वर्तमानस्य च द्वित्वं भवति। णेड्डं (स्पष्टम्), 'एन्नीडापीडे' (१-१९) त्यादिना एत्वम्। सोत्तं (३-३ रूलोपः, ४-६ अन्त्यलोपः, ५-३० बिन्दुः)। पेम्मं (३-३ रूलोपः, बाहुलकाद् उभयत्र ४-१८ प्रवृत्तिर्न, शेषं पूर्ववत्)। वाहित्तं (२-२ यूलोपः, १-२८ ऋ = इ, ५-३० बिन्दुः)। उज्जुओ (१-२९ ऋ = उ, २-२ कूलोपः, ५-१ ओ)। जणओ (२-४२ न् = ण्, २-२ कूलोपः, ५-१ ओ)। जोव्वणं (१-४१ औ = ओ, २-३१ य् = ज्, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। नीडम्, स्रोतः, प्रेम, व्याहृतम्, ऋजुकः, जनकः, यौवनम् ।।५२।।**

**व्याख्या**—नीड इत्यादि पदों में अनादि में विद्यमान व्यञ्जन का द्वित्व हो जाता है। जैसे–

१. **नीडम्**—२.४२ से नकार का णकार-णीडम्। १.१९ से आदि ईकार का एकार-णेडम्। प्रस्तुत सूत्र से अनादि व्यञ्जन डकार का द्वित्व-णेड्डम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णेड्डं**।

२. **स्रोतम्**—३.३ से रेफ का लोप-सोतम्। प्रस्तुत सूत्र से अनादि व्यञ्जन तकार का द्वित्व-सोत्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सोत्तं**।

३. **प्रेम**—३.३ से रेफ का लोप-पेम। प्रस्तुत सूत्र से अनादि मकार का द्वित्व–**पेम्म**।

४. **व्याहृतम्**—२.२ से यकार का लोप-वाहृतम्। १.२८ से ऋकार का इकार-वाहितम्-प्रस्तुत सूत्र से अनादि तकार का द्वित्व-वाहित्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वाहित्तं**।

५. **ऋजुकः**—१.२९ से ऋकार के स्थान पर उकार-उजुकः। प्रस्तुत सूत्र से जकार का द्वित्व-उज्जुकः। २.२ से ककार का लोप-उज्जुअः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**उज्जुओ**।

६. **जनकः**—२.४२ से नकार का णकार-जणकः। २.२ से ककार का लोप-जणअः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**जणओ**।

**विशेष**—अनादि व्यञ्जन का द्वित्व न होने के कारण भामह द्वारा दिया गया यह उदाहरण अप्रसाङ्गिक है। भामह को यह बात ज्ञान नहीं थी। इसलिए उदाहरण दिया गया। ऐसा नहीं है। प्रतीत होता है कि हस्तलिपिकार की अनवधानता के कारण यहाँ यह उदाहरण रख दिया गया है।

७. **यौवनम्**—१.७१ से औकार के स्थान पर ओकार-योवनम्। २.३१ आदि यकार के स्थान पर जकार-जोवनम्। प्रस्तुत सूत्र से अनादि वकार का द्वित्व-जोव्वनम्। २.४२ से नकार का णकार-जोव्वणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**जोव्वणं**।

## आम्रताम्रयोर्वः ।।५३।।

**पदच्छेद**—आम्रताम्रयोः। बः।

**पदार्थ**—आम्रताम्रयोः = आम्र और ताम्र-(इन पदों) में। बः = बकार।

**सू० अ०**—आम्र और ताम्र-(इन पदों) में (संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर) बकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—आम्र-ताम्र इत्येयोर्द्वित्वेन बकारो भवति। अब्बं। तव्वं (१-२ से ह्रस्वः, ३-५० वृद्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) ।।५३।।**

**व्याख्या**—आम्र और ताम्र–इन दोनों पदों में संयुक्त व्यञ्जनों म्रकार के स्थान पर बकार हो जाता है। जैसे–

१. **आम्रम्**—१.२ से आकार के स्थान पर अकार-अम्रम्। प्रस्तुत सूत्र से म्र् के स्थान पर ब्-अबम्। ३.५० से बकार का द्वित्व-अब्बम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**अब्बं**।

२. **ताम्रम्**—१.२ से आकार का अकार-तम्रम्। प्रस्तुत सूत्र से म्र् के स्थान पर ब्-तबम्। ३.५० से वकार का द्वित्व-तब्बम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**तव्वं**।

## न रहोः ।।५४।।

**पदच्छेद**—न। रहोः।

**पदार्थ**—रहोः = रेफ और हकार का। न = नहीं।

**सू० अ०**—रेफ और हकार का (द्वित्व) नहीं (होता)।

**वृत्तिः—रेफहकारयोर्द्वित्वं न भवति। धीरं (१-३९ सूत्रे स्पष्टम्)। तूरं (३-१८ सूत्रे स्पष्टम्)। जीहा (१-१७ सूत्रे द्रष्टव्यम्)। वाहो (३-३८ सूत्रे स्पष्टम्)। धैर्यम्, जिह्वा, वाष्पः ।।५४।।**

**व्याख्या**—यह ३.५० का अपवाद है। रेफ और हकार द्वित्व को नहीं प्राप्त करते। जैसे-

**१. रेफ का**—

(क) **धैर्यम्**—१.३९ से ऐकार का ईकार-धीर्यम्। ३.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-धीर्यम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**धीरं**।

(ख) **तूर्यम्**—३.१८ से र्य् के स्थान पर रेफ-तूरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**तूरं**।

**विशेष**—इन दोनों उदाहरणो में संयुक्त व्यञ्जनों र्यकार के स्थान पर रेफ हुआ है, किन्तु प्रस्तुत अपवाद के कारण ३.५० से रेफ का द्वित्व नहीं हुआ है।

**२. हकार का**—

(क) **जिह्वा**—१.१७ से इकार का ईकार-जीह्वा। ३.३ से वकार का लोप-जीहा। यहाँ वकार का लोप होने से ३.५० से हकार का द्वित्व होना प्राप्त था, किन्तु प्रस्तुत सूत्र से उसका निषेध हो गया है।

(ख) **वाष्पः**—३.३८ से संयुक्त ष्पकार के स्थान पर हकार-वाहः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**वाहो**। यहाँ भी ३.३८ से संयुक्त ष्पकार के स्थान पर हकार आदेश होने से ३.५० से हकार का द्वित्व प्राप्त तथा किन्तु प्रस्तुत सूत्र से उसका निषेध हो गया है।

## आङो ज्ञस्य ।।५५।।

**पदच्छेद**—आङः। ज्ञस्य।

**पदार्थ**—आङ् = आकार है पूर्व में जिसके ऐसे। ज्ञस्य = ज्ञकार का।

**सू०अ०**—आकार है पूर्व में। जिसके ऐसे ज्ञकार (के स्थान पर हूए आदेश) का (द्वित्व नहीं होता है)।

**वृत्तिः—आङ उत्तरस्य ज्ञ इत्येतस्यादेशस्य द्वित्वं न भवति। आणा (३-४४ ज्ञ् = ण)। आणत्ती (पूर्ववत् ज्ञ् = ण्, ३-१ पूलोपः, ३-५० तृद्वित्वं, ५-१८ दीर्घः)। आज्ञा, आज्ञप्तिः। आङ इति किम्? सण्णा (३-४४ ज्ञ् = ण्, ३-५० ण्द्वित्वम्)। संज्ञा ।।५५।।**

**व्याख्या**—आकार है पूर्व में जिसके ऐसे ज्ञकार के स्थान पर हुए आदेश का द्वित्व नहीं होता है। जैसे–

१. **आणा**—३.४४ से ज्ञकार के स्थान पर णकार–**आणा**।

२. **आज्ञाप्तिः**—३.४५ से ज्ञकार के स्थान पर णकार-आणप्तिः। २.२ से पकार का लोप-आणतिः। ३.५० से तकार का द्वित्व-आणत्तिः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**आणत्ती**।

इन दोनों उदाहरणों में संयुक्त ज्ञकार के स्थान पर णकार आदेश हुआ है। अतः ३.५० से णकार के द्वित्व की प्राप्ति थी किन्तु प्रस्तुत सूत्र से द्वित्व का निषेध हो गया है।

**विशेष**—आकार से वाद वाले सकार के स्थान पर आदेश होने पर ही द्वित्व नहीं होता। इससे अन्य स्वर से बाद में होने पर द्वित्व हो जाता हैं जैसे-

१. **संज्ञा**—३.४४ से ज्ञकार के स्थान पर णकार-संणा। ३.५० से णकार का द्वित्व-संण्णा। यहाँ अकार से बाद में होने के कारण आदेश णकार का द्वित्व हो गया है; क्योंकि इससे पूर्व में आकार नहीं है।

## न बिन्दुपरे ।।५६।।

**पदच्छेद**—न। बिन्दुपरे।

**पदार्थ**—बिन्दुपरे = अनुस्वार (बिन्दु) से बाद में। न = नहीं।

**सू०अ०**—अनुस्वार से बाद में (द्वित्व) नहीं (होता है)।

**वृत्तिः—अनुस्वारे परे द्वित्वं न भवति। संकन्तो (३-३ रेफलोपः, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ४-१ ह्रस्वः, ५-१ ओ)। संझा (३-२८ ध्य् = झ्, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः)। संक्रान्तः सन्ध्या ।।५६।।**

**व्याख्या**—अनुस्वार से बाद में संयोग में लोप होने पर अवशिष्ट व्यञ्जन का तथा संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर हुए आदेश का द्वित्व नहीं होता है। जैसे–

१. **सङ्क्रान्तः**—४.१७ से वर्गान्त ङकार का अनुस्वार-संक्रान्तः। ३.३ से रेफ का लोप-संकान्तः। ४.१ से ङकार आकार का अकार-संकन्तः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**संकन्तो**। यहाँ रेफ का लोप होने पर भी अनुस्वार से बाद में होने के कारण ककार का द्वित्व नहीं हुआ।

२. **सन्ध्या**—४.१७ से वर्गान्त नकार का अनुस्वार-संध्या। ३.२८ से ध्यकार के स्थान पर झकार आदेश-**संझा**। यहाँ से संयुक्त व्यञ्जनों ध्यकार के स्थान पर झकार आदेश हाुआ है, किन्तु अनुस्वार से बाद में होने के कारण झकार का द्वित्व नहीं हुंआ है।

## समासे वा ।।५७।।

**पदच्छेद**—समासे। वा।

**पदार्थ**—समासे = समास मे। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—समास में (संयोग में लोप होने पर अवशिष्ट व्यञ्जन तथा संयुक्त व्यञ्जन के स्थान पर हुए आदेश का) विकल्प से (द्वित्व होता है)।

**वृत्तिः—समासे शेषादेशयोर्वा द्वित्वं भवति। णइग्गमो, णइगामो (२-४२ न् = ण्, २-२ द्लोपः, ३-३ र्लोपः, ४-१ ह्रस्वः, द्वित्वाभावे तु यथावदोकारः ५-१ ओ)। कुसुमप्पअरो (३-३ र्लोपे, २-२ क्लोपः, ५-१ ओ)। कुसुमपअरो (प्द्वित्वाभावः, शेषः पूर्ववत्)। देवत्थुई, देवथुई (३-१२ स्त् = थ्, ३-५१ स्त् = थ्, २-२ त्लोपः, ५-१८ दीर्घः)। आणालक्खंभो, आणालखंभो (४-२९ परिवृतौ आनाले जाते, २-४२ न् = ण्, ३-१४ स्त् = ख्, ३-५१ ख् = क्, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५-१ ओ)। नदीग्रामः, कुसुमप्रकरः, देवस्तुतिः, आलान-स्तम्भः ।।५७।।**

**व्याख्या**—समस्त पद में संयुक्त व्यञ्जनों मे एक का लोप होने पर अवशिष्ट व्यञ्जन का तथा संयुक्त व्यञ्जनों के स्थान पर हुए आदेश का द्वित्व विकल्प से होता है। विकल्प से द्वित्व करने का तात्पर्य है कि कहीं-कहीं होता है और कहीं नहीं होता है। द्वित्व सहित और द्वित्व-रहित दोनों रूप प्राकृत में प्राप्त होते हैं। जैसे-

१. **नदीग्रामः**—२.४२ से नकार का णकार-णदीग्रामः। २.२ से दकार का लाप-णईग्रामः। ४.१ से ईकार का इकार-णइग्रामः। ३.३ से रेफ का लोप-णइगामः। प्रस्तुत सूत्र से गकार का द्वित्व-णइग्गामः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार-**णइग्गामो**। पक्ष में-**णइगामो**।

२. **कुसुमप्रकरः**—३.३ से रेफ का लोप- कुसुमपकरः। प्रस्तुत सूत्र से पकार का द्वित्व कुसुमप्पकारः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**कुसुमप्पकरो**।

पक्ष में द्वित्व न होने पर–**कुसुमपकरो**।

३. **देवस्तुतिः**—३.१२ से संयुक्त स्तकार के स्थान पर थकार-देवथुतिः। प्रस्तुत सूत्र से थकार का द्वित्व-देवथ्थुतिः। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार का तकार-देवत्थुतिः। २.२ से तकार का लोप-देवत्थुइः। ५.१८ से इकार का ईकार तथा ४.६ से सु का लोप–**देवत्थुई**। द्वित्व न होकर–**देवथुई**।

४. **आलानस्तम्मः**—४.२९ से व्यञ्जन परिवर्तन-आनालस्तम्भः। २.४२ नकार का णकार-आणालस्तम्भः। ३.१४ से संयुक्त स्तकार के स्थान पर खकार आदेश-आणालखम्भः। प्रस्तुत सूत्र से आदेश खकार का द्वित्व-आणालख्खम्भो। ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार का ककार-आणालक्खम्भः। ४.१७ से मकार का अनुस्वार-आणालक्खंभः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–आणलक्खंभो। पक्ष में-द्वित्व न होकर–**आणाल**।

## सेवादिषु च ॥५८॥

**पदच्छेद**—सेवादिषु। च।

**पदार्थ**—सेवादिषु = सेवा इत्यादि (पदों) मे। च = भी।

**सू०अ०**—सेवा इत्यादि (पदों) में भी (अनादि व्यञ्जन का विकल्प से द्वित्व हो जाता है)।

**वृत्तिः—सेवा इत्येवमादिषु चानादौ वा द्वित्वं भवति। सेव्वा, सेवा (२-२ प्रायोग्रहणात् वलोपो न, शेषं स्पष्टम्)। एक्कं, एअं (द्वित्वाभावे २-२ क्लोपः, ५-३० बिन्दुः। णक्खो णहो (२-४२ न् = ण्, द्वित्वपक्षे ३-५१ ख् = क्, ५-१ ओ)। (द्वित्वाभावे २-२७ ख् = ह्, ५-१ ओ)। देव्वं, दइवं (१-३७ सूत्रे स्पष्टम्)। असिव्वं, असिवं। तेलोक्कं (१-३५ सूत्रे स्पष्टम्), तेलोअं (द्वित्वाभवे, २-१ क्लोपः, शेषः पूर्ववत्)। णिहित्तो (२-४२ न् = ण्, द्वित्वे ५-१ ओ)। णिहिओ (द्वित्वाभावे २-२ त्लोपः, शेषः पूर्ववत्)। तुण्हिक्को, (३-३३ ष्ण् = ह्, ह्रस्वः संयोगे, कस्य द्वित्वे, ५-१ ओ)। तुण्हिओ (द्वित्वाभावे, २-२ क्लोपः, शेषः पूर्ववत्)। कण्णिआरो, कणिआरो (३-३ र्लोपः, २-२ क्लोपः, द्वित्वभावाभावो च पूर्ववत्, ५-१ ओ)। दिग्घं (३-३ र्लोपः, ३-५१ घ् = ग्, ह्रस्वः, संयोगे इति दी = दि, ५-३० बिन्दुः)। दीहं (द्वित्वाभावे रलोपे च असंयोगपरत्वात् ह्रस्वाभावः, २-२७ घ् = ह्, शेषः स्पष्टम्)। रत्तो (३-३ र्लोपः, ४-१ ह्रस्वः)। राई (३-१ त्लोपः, ३-३ र्लोपः, ५-१८ दीर्घः)। दुक्खिओ, (खद्वित्वे, ३-५१ ख् = क्, २-२ त्लोपः, ५-१ ओ)। दुहिओ (द्वित्वाभावे २-२७ ख् = ह्, शेषः पूर्ववत्)। अस्सो, असो (१-२ सूत्रे द्रष्टव्यम्)।**

**इस्सरो (३-३ र्लोपः, २-४३ श्= स्, द्वित्वे, ह्रस्वः संयोगे ई = इ, ५-१ ओ) । ईसरो (द्वित्वाभावे ह्रस्वाभावः, शेषः पूर्ववत्) । रस्सी ३-२ म्लोपः, २-४३ श्= स्, स्द्वित्वे ५-१८ दीर्घः) । रसी (द्वित्वाभावः, शेषः पूर्ववत्) । मित्तो (३-३ र्लोपः, ५-१ ओ) । मिओ (द्वित्वाभावे ३-१ त्लोपः, शेषः पूर्ववत्) । पुस्सो, (३-२ य्लोपः, २-४३ ष्= स्, ५-१ ओ) । पुसो (द्वित्वाभावे, शेषः पूर्ववत्) । सेवा, एकः, नखः, दैवम्, अशिवम्, त्रैलोक्यम्, निहितम्, तूष्णीकः, कर्णिकारः, दीर्घम्, रात्रिः, दुःखितः, अश्वः, ईश्वरः, विश्वासः, निश्वासः, रश्मिः, मित्रम्, पुष्यः । उभयत्र विभाषेयम् । सेवादीनामप्राप्ते दीर्घादीनां च प्राप्ते ।।५८।।**

**व्याख्या**—सेवा इत्यादि में भी अनादि व्यञ्जन का विकल्प से द्वित्व होता है। विकल्प से-इस कथन से स्पष्ट है कि इन पदों में द्वित्व–सहित और द्वित्व–रहित-दोनों रूप प्राप्त होते हैं। जैसे–

१. **सेवा**—प्रस्तुत सूत्र से अनादि वकार का द्वित्व-**सेव्वा**। पक्ष मे-**सेवा**।

२. **एकम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनादि ककार का द्वित्व-एक्कम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**एक्कं**। पक्ष में २.२ से ककार का लोप-एअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**एअं**।

३. **नखः**—२.४२ से नकार का णकार-णख। प्रस्तुत सूत्र से अनादि खकार का द्वित्व--णख्ख:। ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार का ककार-नक्ख:। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णक्खोः**। पक्ष में-२.२७ से खकार का हकार–**णहो**।

४. **दैवम्**—१.३६ से ऐकार का एकार-देवम्। प्रस्तुत सूत्र से वकार का द्वित्व-देव्वम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**देव्वं**। पक्ष में-१.३७ से ऐकार का अइकार–**दइवं**।

५. **अशिवम्**—२.४३ से शकार का सकार-असिवम्। प्रस्तुत सूत्र से वकार का द्वित्व-असिव्वम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**असिव्वं**। पक्ष में–**असिवं**।

६. **त्रैलोक्यम्**—३.३ से रेफ का लोप-तैलोक्यम्। १.३५ से ऐकार का एकार-तेलोक्यम्। २.२ से यकार का लोप-तेलोकम्। प्रस्तुत सूत्र से ककार का द्वित्व-तेलोक्कम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तेलोक्कं**। पक्ष में-३.३ से रेफ का लोप-तैलोक्यम्। १.३५ से ऐकार का एकार-तेलोक्यम्। २.२ से यकार और ककार का लोप-तेलोअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तेलोअं**।

७. **निहितः**—२.४२ से नकार का णकार-णिहित:। प्रस्तुत सूत्र से तकार का द्वित्व-णिहित्त:। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-णिहित्तो। पक्ष में द्वित्व

न होने पर २.२ से तकार का लोप–**णिहिओ** ।

८. **तूष्णीकः**—४.१ से ऊकार का उकार-तुष्णीक: । ३.३ से ष्ण के स्थान पर ण्ह्-तुण्हीक: । प्रस्तुत सूत्र से ककार का द्वित्व-तुण्हीक्क: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**तुण्हीक्को** । पक्ष में-ककार का लोप–**तुण्हीओ** ।

९. **कर्णिकारः**—३.३ से रेफ का लोप–**कणिकारः** । प्रस्तुत सूत्र से णकार का द्वित्व-कण्णिकार: । २.२ से ककार का लोप-कण्णिआर: । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**कण्णिआरो** । पक्ष में–**कणिआरो** ।

१०. **दीर्घम्**—४.१ से ईकार का इकार-दिर्घम् । ३.३ से रेफ का लोप-दिघम् । प्रस्तुत सूत्र से घकार का द्वित्व-दिघ्घम् । ३.५१ से पूर्ववर्ती घकार का गकार-दिग्घम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**दिग्घं** । पक्ष में-३.३ से रेफ लोप-दीघम् । २.२७ से घकार का हकार-दीहम् । ५.३० मकार का अनुस्वार–**दीहं** ।

११. **रात्रिः**—४.१ से आकार का अकार-रत्रि: । ३.३ से रेफ लोप-रति: । प्रस्तुत सूत्र से तकार-का द्वित्व का लोप-रत्ति: । ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**रत्ती** । पक्ष में ३.३ से रेफ का लोप–राति: । २.२ से तकार का लोप-राइ: । ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप–**राई** ।

१२. **दुःखितः**—विसर्ग का लोप-दुखित: । प्रस्तुत सूत्र से खकार का द्वित्व-दुख्खित: । ३.५१ से पूर्ववर्ती खकार का ककार-दुक्खित: । २.२ से तकार का लोप-दुक्खिअ: । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**दुक्खिओ** । पक्ष में २.२७ खकार का हकार-दुहित: । २.२ से तकार का लोप-दुहिअ: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**दुहिओ** ।

१३. **अश्वः**—२.४३ से शकार का सकार-अस्व: । ३.३ से वकार का लोप अस: । प्रस्तुत सूत्र से सकार का द्वित्व अस्स: । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**अस्सो** । पक्ष में-द्वित्वाभाव–**असो** ।

१४. **ईश्वरः**—४.१ से ईकार का इकार-इश्वार: । २.४३ से शकार का सकार-इस्वर: । ३.३ से वकार का लोप-इसर: । प्रस्तुत सूत्र से सकार का द्वित्व-इस्सर: । ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**इस्सरो** । पक्ष में द्वित्वाभाव–**ईसरो** ।

१५. **विश्वासः**—२.४३ से शकार का सकार-विस्वास: । ३.३ से वकार का लोप-विसास: । प्रस्तुत सूत्र से सकार का द्वित्व-विस्सास: । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**विस्सासो** । पक्ष में-४.१ से इकार का ईकार-वीस्वासो । ३.३ से वकार का लोप–**वीसासो** ।

१६. **निश्वासः**—२.४२ से नकार का णकार-णिश्वासः । २.४३ से शकार का सकार-णिस्वासः । ३.३ से वकार का लोप-णिसासः । प्रस्तुत सूत्र से सकार का का द्वित्व-णिस्सासः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णिस्सासो** । पक्ष में-४.१ से इकार का ईकार और द्वित्वाभाव–**णीसासो** ।

१७. **रश्मिः**—३.४३ से शकार का सकार-रस्मिः । ३.२ से मकार का लोप-रसिः । प्रस्तुत सूत्र से सकार का द्वित्व-रस्सिः । ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-रस्सी । पक्ष में द्वित्वाभाव–**रसी** ।

१८. **भित्रः**—३.३ से रेफ का लोप-मितः । प्रस्तुत सूत्र से तकार का द्वित्व-मित्तः । ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**मित्तो** । पक्ष में ३.३ से रेफ तथा २.२ से तकार का लोप–**मिओ** ।

१९. **पुष्यः**—२.४३ से षकार का सकार-पुस्यः । २.२ से यकार का लोप-पुसः । प्रस्तुत सूत्र से सकार का द्वित्व-पुस्सः । ५.१ सु के साथ अकार का ओकार–**पुस्सो** । पक्ष में द्वित्वभाव–**पझो** ।

## विप्रकर्षः ।।५९।।

**पदच्छेद**—विप्रकर्षः ।

**पदार्थ**—विप्रकर्षः = विश्लेष ।

**सू०अ०**—(इससे आगे) (संयुक्त व्यञ्जनों का) विश्लेष विभाग कहा जाएगा ।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयम्। आपरिच्छेदसमाप्तेर्युक्तस्य विप्रकर्षो भवति।।५९।।**

**व्याख्या**—यह अधिकार सूत्र है । इससे आगे विहित विधानो में संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण (अलग होना) कहा जाएगा ।

## क्लिष्टश्लिष्टरत्नक्रियाशार्ङ्गेषु तत्स्वरवत्पूर्वस्य ।।६०।।

**पदच्छेद**—क्लिष्टश्लिष्टरत्नक्रियाशार्ङ्गेषु । तत्स्वरवत्पूर्वस्य ।

**पदार्थ**—क्लिष्टश्लिष्टरत्नक्रियाशार्ङ्गेषु = क्लिष्ट, श्लिष्ट, रत्न, क्रिया और शार्ङ्ग-(इन पदों) में । पूर्वस्य = पूर्ववर्ती (व्यञ्जन) का । तत्स्वरवत् = उसी के स्वर के समान ।

**सू०अ०**—क्लिष्ट, श्लिष्ट, रत्न, क्रिया और शार्ङ्ग–इन पदों में (संयुक्त व्यञ्जनों का विभाग) हो जाता है तथा पूर्ववर्ती (व्यञ्जन) का उसी स्वर के समान (स्वर होता है) ।

**वृत्तिः—क्लिष्टादिषु युक्तस्य विप्रकर्षो भवति । विप्रकृष्टस्य च यः पूर्वो वर्णो निरर्थस्तस्य तत्स्वरता भवति । तेनैव पूर्वेण स्वरेण पूर्वो वर्णः सार्थो भवति–इत्यर्थः । किलिट्ठं (ष्टकारविप्रकर्षे लकारेण सह पूर्वस्वरतया च किलिजाते,**

**३-१० ष्ट = ठ, ३-५० ठद्वित्वं, ३-५१ पूर्ववत् ठ् = ट्, ५-३० बिन्दुः)। सिलिट्ठं (२-४३ श् = स्, शेषः पूर्ववत्)। रअणं (विप्रकर्षात् रत-जाते, ३-१ त्लोपः, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। किरिआ (२-२ यूलोपः, विप्रकर्षादिकं पूर्ववत्)। सारंगो (२-४३ श् = स्, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५-१ ओ) ।।६०।।**

**व्याख्या**—क्लिष्ट, श्लिष्ट, रत्न, क्रिया और शार्ङ्ग-इन पदों में संयुक्त व्यञ्जन अलग-अलग हो जाते हैं। अलग होने पर परवर्ती व्यञ्जन का जो स्वर होता है, वही स्वर पूर्ववर्ती व्यञ्जन का भी होता है। जैसे-

१. **क्लिष्टम्**—प्रस्तुत सूत्र संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण तथा परवर्ती स्वर के समान पूर्ववर्ती का स्वर-किलिष्टम्। ३.१० से ष्टकार के स्थान पर ठकार-किलिठम्। ३.५० से ठकार का द्वित्व-किलिट्ठम्। ३.५ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-किलिट्ठम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**किलिट्ठं**।

२. **श्लिष्टम्**—प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष तथा परवर्ती स्वर के समान पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर-शिलिष्टम्। ३.४३ से शकार का सकार-सिलिष्टम्। ३.१० से टकार का ठकार–सिलिठम्। ३.५० से ठकार का द्वित्व–सिलिट्ठम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-सिलिट्ठम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सिलिट्ठं**।

३. **रत्नम्**—प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण तथा परवर्ती के समान पूर्ववर्ती का स्वर-रतनम्। ३.२ से तकार का लोप-रअनम्। २.४२ से नकार का णकार-रअणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**रअणं**।

४. **क्रिया**—प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष और परवर्ती के समान पूर्ववर्ती का स्वर-किरिया। २.२ से यकार का लोप–**किरिआ**।

५. **शार्ङ्गः**—२.४३ से शकार का सकार-सार्ङ्गः। प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष और परवर्ती के समान पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर-सारङ्गः। ४.१७ वर्गान्त ङकार का अनुस्वार-सारंगः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सारंगो**।

## कृष्णे वा।।६१।।

**पदच्छेद**—कृष्णे। वा।

**पदार्थ**—कृष्णे = कृष्ण-(इस पद) में। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—कृष्ण (इस पद) में विकल्प से (संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष होता है तथा परवर्ती के समान पूर्ववर्ती का स्वर हो जाता है)।

**वृत्तिः—कृष्णशब्दे युक्तस्य वा विप्रकर्षो भवति, विष्णौ तु न भवत्येव।**

**कसणो (१-२७ ऋ = अ,' ष्णस्य विप्रकर्षे षण-जाते, २-४३ ष् = स्, ५-१ ओ)। कह्णो (३-३३ सूत्रे स्पष्टम्) ।।६१।।**

**व्याख्या**—कृष्ण (इस पद) में विकल्प से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण तथा परवर्ती के समान पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर होता है) किन्तु विष्णु–इस पद में विश्लेष नहीं होता। जैसे–

१. **कृष्णः**—१.२७ से ऋकार का अकार-कष्णः। प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेषण तथा परवर्ती के समान पूर्ववर्ती व्यञ्जनों का स्वर-कषणः। २.५३ से षकार का सकार-कसणः। ५.१ से सु के साथ अन्त्य अकार का ओकार–**कसणो**। पक्ष में-२.२७ से ऋकार का अकार-कष्णः। ३.३३ से ष्ण का ण्ह-कण्हः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**कण्हो**।

## श्रीह्रीक्रान्तक्लान्तक्लेशम्लानस्वप्नस्पर्शहर्षार्हगर्हेषु ।।६२।।

**पदच्छेद**—इः। श्रीहीक्रीतक्लान्तक्लेशम्लानस्वप्नस्पर्शहर्षार्हगर्हेषु।

**पदार्थ**—श्रीह्रीक्रान्तक्लान्तक्लेशम्लानस्वप्नस्पर्शहर्षार्हगर्हेषु = श्री, ह्री, क्रीत, क्लान्त, क्लेश, म्लान, स्वप्न, स्पर्श, हर्ष, अर्ह और गर्ह–इन पदों में। इः = इकार।

**सू०अ०**—श्री, ह्री, क्रीत, क्लान्त, क्लेश, म्लान, स्वप्न, स्पर्श, हर्ष, अर्ह और गर्ह–इन पदों में (विश्लेष होता है तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर) इकार (होता है)।

**वृत्तिः—एषु युक्तस्य विप्रकर्षो भवति, पूर्वस्य इकारः तत्स्वरता च भवति। सिरी (२.४३ श् = स्, विप्रर्षत्वे पूर्वस्य इत्वे, तत्स्वरताया च सिरी इति जातम्)। एवं-हिरी। किरीतो। किलन्तो (विप्रकर्षे पूर्वस्येत्वे, ४-१७ वर्गान्तो बिन्दुर्वा, ५-१ ओ)। किलेसो (स्पष्टम्)। मिलाणं (पूर्ववत् इत्वं, तत्स्वरता च, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः)। सिविणो (१-३ सूत्रे स्पष्टम्)। फरिसो (३-३५ स्प् = फ्, इत्वं तत्स्वरता च, २-४३ श् = स्, ५-१ ओ)। एवमुत्तरत्रापि। हरिसो। अरिहो। गरिहो (स्पष्टाः)। श्रीः, ह्रीः, क्रीतः, क्लान्तः, क्लेशः, म्लानम्, स्वप्नः, स्पर्शः, हर्षः, अर्हः, गर्हः ।।६२।।**

**व्याख्या**—श्रीः, ह्रीः, क्रीतः, क्लान्तः, क्लेशः, म्लानम्ः, स्वप्नः, स्पर्शः, हर्षः, अर्हः और गर्हः–इन पदों में संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष होता है तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार होता है। जैसे–

१. **श्री**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार होने पर–शिरी। २.४३ से शकार का सकार–**सिरी**।

२. **ह्री**—प्रस्तुत सूत्र से विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार–**हिरी**।

३. **क्रीतः**—प्रस्तुत सूत्र से विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार-किरीतः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**किरीतो**।

४. **क्लान्तः**—प्रस्तुत सूत्र से विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार-किलान्तः। १.२ से आकार का अकार-किलन्तः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**किलान्तो**।

५. **क्लेशः**— प्रस्तुत सूत्र से विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार-किलेशः। २.४३ से शकार का सकार-किलेसः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**किलेसो**।

६. **म्लानम्**—प्रस्तुत सूत्र से विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर इकार-मिलानम् २.४३ से नकार का णकार-मिलाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**मिलाणं**।

७. **स्वप्नः**—१.३ से आदि अकार का इकर–स्विप्नः। ३.३ से वकार का लोप-सिप्नः। प्रस्तुत सूत्र से संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का इकार–सिपिनः। २.१५ से पकार का वकार–सिविनः। २.४२ से नकार का णाकर–सिविणः। ५.१ से सु के साथ अकार का–**सिविणो**।

८. **स्पर्शः**—३.३५ से स्प् का फ्-फर्श। प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन को इकार फरिशः। २.४३ शकार का सकार-फरिसः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**फरिसो**।

९. **हर्षः**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन को इकार-हरिषः। २.४३ से षकार का सकार-हरिसः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**हरिसो**।

१०. **अर्हः**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का इकार-अरिहः। ५.१ सु के साथ अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**अरिहो**।

११. **गर्हः**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन को इकार-गरिहः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**गरिहो**।

## अः क्ष्माश्लाघयोः ।।६३।।

**पदच्छेद**—अः। क्ष्माश्लाघयोः।

**पदार्थ**—क्ष्माश्लाघ्योः = क्ष्मा और श्लाधा (इन पदों) में। अः = अकार।

**सू० अ०**—क्ष्मा और श्लाघा (इन पदों) में (संयोग विश्लेष होता है तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर) अकार (होता है)।

**वृत्तिः—क्ष्माश्लाघा इत्येतयोर्युक्तस्य विप्रकर्षो भवति, पूर्वस्य अकारस्तत्स्वरता च भवति। खमा (३-३९ क्ष् = ख्, शेषः स्पष्टम्)। सलाहा (२-४३ श् = स्, विप्रकर्षः, पूर्वस्याऽत्वं, तत्स्वरता च, २-२७ घ् = ह्)॥६३॥**

**व्याख्या**—क्ष्मा और श्लाघा (इन पदों) में संयोग का विश्लेष होता है तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर) अकार (होता है)। जैसे–

१. **क्ष्मा**—३.३९ से क्ष् का ख्-ख्मा। प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर अकार–**खमा**।

२. **श्लाघा**—२.४३ शकार का सकार-स्लाघा। प्रस्तुत सूत्र से संयोग विश्लेष तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर-अकार-सलाघा। २.२७ धकार का हकार–**सलाहा**।

## स्नेहे वा॥६४॥

**पदच्छेद**—स्नेहे। वा।

**पदार्थ**—स्नेह (इस पद) में। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—स्नेह (इस पद) में विकल्प से (संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर अकार होता है)।

**वृत्तिः—स्नेहशब्दे युक्तस्य बिप्रकर्षो वा भवति, पूर्वस्य च अकारस्तत्स्वरता च भवति। सणेहो (पूर्ववत् विप्रकर्षादिकं, २-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। णेहो (३-१ सूत्रे स्पष्टम्)॥६४॥**

**व्याख्या**—स्नेह–इस पद में विकल्प से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर अकार होता है। जैसे–

१. **स्नेहः**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर अकार-सनेहः। २.४२ से नकार का णकार-सणेहः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**सणेहो**। पक्ष में ३.१ से सकार का लोप-नेहः। २.४२ से नकार का णकार-णेहः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णेहो**।

## उः पद्मतन्वीसमेषु॥६५॥

**पदच्छेद**—पद्मतन्वीसमेषु। उः।

**पदार्थ**—पद्मतन्वीसमेषु = पदम् और तन्वी के समान (पदों) में। उः = उकार।

**सू०अ०**—पद्म और तन्वी (तथा इन के समान) (पदों) में (संयोग का विश्लेष होता है और पूर्ववर्ती व्यंजन का स्वर) उकार (होता है)।

**वृत्तिः—पद्मशब्दे तन्वी–इत्येवं समेषु च युक्तस्य विप्रकर्षो भवति, पूर्वस्य**

**च उकारस्तत्स्वरता च भवति। पउमं (३-२ प्लोपः, शेषः स्पष्टम्)। तणुई (२-४२ न् = ण्, उत्वादिषु, व्लोपश्च)। लहुई (२-२७ घ् = ह्, शेषः पूर्ववत्)। तन्वी। लघ्वी।।६५।।**

**व्याख्या**—पद्म और तन्वी तथा तत्समान पदों में संयोग का विश्लेष होता है और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर उकार होता है। जैसे–

१. **पद्मम्**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर उकार-पदुमम्। ३.२ से दकार का लोप-पउमम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पउमं**।

२. **तन्वी**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर उकार-तनुवी। २.४२ से नकार का णकार–तणुवी। २.२ से वकार का लोप–**तणुई**।

३. **लघ्वी**—प्रस्तुत सूत्र से संयोग का विश्लेष तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर उकार–लघुवी। २.२७ से घकार का हकार-लहुवी। २.२ से वकार का लोप–**लहुई**।

## ज्यायामीत्।।६६।।

**पदच्छेद**—ज्यायाम्। ईत्।

**पदार्थ**—ज्यायाम् = ज्या (इस पद) में। ईत् = ईकार।

**सू०अ०**—ज्या इस पद में (संयोग का विश्लेष होता है और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर) ईकार (होता है)।

**वृत्तिः—ज्याशब्दे युक्तस्य विप्रकर्षो भवति पूर्वस्य च ईकारस्तत्स्वरता च। जीआ (२-२ य्लोपः)।।६६।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य तृतीयः परिच्छेदः ।। ॥**

**व्याख्या**—ज्या इस पद में संयोग का विश्लेष होता है और पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर ईकार होता है। जैसे–

१. **ज्या**—प्रस्तुत सूत्र से संयोक का विश्लेष तथा पूर्ववर्ती व्यञ्जन का स्वर ईकार–जीया। २.२ से यकार का लोप–**जीआ**।

॥ इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश'
का तृतीय परिच्छेद पूर्ण हुआ ॥

# चतुर्थः परिच्छेदः
## ( सङ्कीर्णविधिम् )

### सन्धावचामज्लोपविशेषा बहुलम् ।।१।।

**पदच्छेद**—सन्धौ । अचाम् । अज्लोपविशेषाः । बहुलम् ।

**पदार्थ**—सन्धौ = सन्धि में । अचाम् = अचों ( = स्वरों) की । बहुलम् = बहुलता से (= प्रायः) । अज्लोपविशेषाः = अच् विशेष (= स्वर-विशेष) और लोपविशेष ।

**सू०अ०**—स्वरों की सन्धि में बहुलता से स्वर-विशेष और लोप-विशेष (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अचामिति प्रत्याहारग्रहणम् । अजिति च । सन्धौ वर्तमानानामचां स्थाने अज्विशेषा लोपविशेषाश्च बहुलं भवन्ति । अज्विशेषास्तावत्जउणअडं, जउणाअडं ( २-३ सूत्रे स्पष्टंजउणा, तटमिति २-२ तूलोपः, २-२० ट् = ड्, अत्र बहुलग्रहणात् 'णा' इत्यत्र ह्रस्वत्वं विकल्पेन, ५-३० सोर्विन्दुः) । णइसोत्तो, णईसोत्तो ( २-४२ न् = ण्, २-२ दूलोपः, ह्रस्वविकल्पः पूर्ववत्, सोत्तो ३-५२ सूत्रे द्रष्टव्यः । अत्र विशेषः ४-१८ पुं०) । बहुमुहं, बहूमूहं ( २-२७ ख् = ह्, ५-३० बिन्दुः, शेषः पूर्ववत्) । कण्णउरं, कण्णऊरं ( ३-२ र्लोपः, ३-५० ण्द्वित्वं, २-१ प्लोपः, शेषः पूर्ववत्) । सिरोवेअणा, सिरवेअणा ( २-४३ श् = स्, ४-६ सूलोपे अज्विशेष ओ = सिरो इति, वेअणा १-३४ सूत्रे स्पष्टम्, शेषः पूर्ववत्) । पीआपीअं, पिआपिअं । सीआसंअं, सिआसिअं ( २-२ तूलोपः, शेषं ह्रस्वविकल्पादि पूर्ववत्) । सवोमूहो ( ३-२ र्लोपः, २-१५ प् = व्, ओत्वमूत्वे बाहुलकात्, शेषः पूर्ववत्) । सरोरूहं, सररूहं ओत्वविकल्पः, शेषं स्पष्टम्) । लोपविशेषाः-राउलं, राअउलं (जलोपे विकल्पेनाऽलोपः, २-२ कूलोपः, ५-३० बिन्दुः) । तुहद्धं तहअद्धं ( ६-३१ तव = तुह, विकल्पेन बाहुलकादकार-लोपे, ३-३ रकारलोपः, ५-३० बिन्दुः) । महद्धं, महअद्धं ( ६-५० मम = मह, शेषः पूर्ववत्) । वावडणं, वाअवडणं ( २-१५ प् = व्, वावतन इति जाते, ८-५१ त् = ड्, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः, अलोपाभावे स्पष्टम्) । कुम्भारो, कुम्भ-आरो (अनादिग्रहणात् २-२ कूलोपो न, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, २-२ कलोपे, ४-१ भकारोत्तरवर्त्यकारलोपे, ५-१ ओ, अलोपाभावे स्पष्टम्) । पवणुद्धअं, पवणउद्धअं**

**(प्राय इति वलोपो न, २-४२ न् = ण्, पूर्ववदकारलोपः, पवण् उद्धतमिति जाते, २-२ त्लोपः, ५-३० बिन्दुः, अलोपाभावे पूर्ववत्) । यमुनातटं, नदीस्रोतस्, बहुमुखं, कर्णपूरं, शिरोवेदना, पीतापीतं, सीतासीतं (शीताशीतं), सर्वमुखः (सर्पमुखः), सरोरुहं, राजकुलं, सवार्द्धं, ममार्द्धं पादपतनं, कुम्भकारः, पवनोद्धतम् । संयोगपरे सर्वत्र पूर्वस्याचो लोपः, [ह्रस्वश्च। यथा-णत्थि, सक्कन्ती, णिक्कन्तो, अत्तो-इत्यादयः] (स्पष्टाः) । क्वचिन्नित्यं, क्वचिदन्यदेव बहुलग्रहणात् । तेनान्यदपि लाक्षणिकं कार्य भवति ।।१।।**

**व्याख्या**—स्वरों की सन्धि में बहुलता से स्वर-विशेष और लोप-विशेष हो जाता हैं।

**विशेष**—१. यहाँ 'सन्धि' पद का प्रयोग ध्यातव्य है। संस्कृत में दो स्वरों सम्मिलन को स्वर-सन्धि कहा जाता है। जैसे विद्यालय, रमेश, दध्यानय, गङ्गोदकम् इत्यादि। इस प्रकार संस्कृत में किसी स्वर के स्थान में तभी परिवर्तन होते हैं जब उसके बाद कोई स्वर हो। अन्यथा स्वर अपरिवर्तित रहते हैं। किन्तु प्राकृत में स्वरों के स्थान पर उस समय भी अन्य आदेश हो जाता है जब उनके बाद में व्यञ्जन होते हैं। इस प्रकार कहीं-कहीं दो स्वरों के स्थान पर एक नया स्वर आ जाता है तो कहीं-कहीं स्वर का सर्वथा लोप हो जाता है।

२. यह सूत्र बहुल विधि वाला है। इस प्रकार कहीं यह विधान प्रयुक्त होता और कहीं नहीं। किसी-किसी स्थान पर विकल्प होता है और कहीं अन्यथा परिवर्तन हो जाता है। जैसे-

१. **यमुनातटम्**—२.३१ से यकार का जकार-जमुनातटम्। २.३ से मकार का लोप–जउनातटम्। २.४२ से नकार का णकार–जउणातटम्। २.२ से तकार का लोप-जउणाअटम्। २.२० से टकार का डकार-जउणाअडम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**जउणातडं**। यहाँ बहुलता से का ग्रहाण होने के कारण णा के स्थान पर अकार का विकल्प से ह्रस्वत्व = अकार होना-जउणअडं।

२. **नदीस्रोतः**—२.४२ से नकार का णकार-णदीस्रोतः। २.२ से दकार का लोप-णईस्रोतः। ३.३ से रेफ का लोप-णईसोतः। ३.५२ से तकार का द्वित्व-णईसोत्तः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**णईसोत्तो**। यहाँ बहुलता से ग्रहण होने से ईकार का विकल्प से इकार–**णइसोत्तो**।

३. **बहुमुखम्**—२.२७ से खकार का हकार-बहुमुहम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**बहुमुहं**। विकल्प होने से उकार का ऊकार–**बहूमूहं**।

४. **कर्णपूरम्**—३.३ से रेफ का लोप-कणपूरम्। ३.५० से णकार का द्वित्व-

कण्णपूरम् । २.२ से पकार का लोप-कण्णऊरम् । ५.३० से मकार का लोप–**कण्णऊरं** । बहुलता से कहने से विकल्प से ऊकार का उकार–**कण्णउरं** ।

५. **शिरोवेदना**—२.४३ से शकार का सकार-सिरोवेदना । १.३४ से एकार का इकार-सिरोविदना । २.२ से दकार का लोप-सिरोविअना । २.४२ से नकार का णकार-**सिरोविअणा** । यहाँ ओकार का अच्-विशेष होने से–**सिरविअणा** ।

६. **पीतापीतम्**—२.६ से दोनों तकार का लोप-पीआपीअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पीआपीअं** । बहुलता से होने के कारण ईकार का ह्रस्व इकार–**पिआपिअं** ।

७. **शीताशीतम्**—२.४३ से शकार का सकार-सीतासीतम् । २.२ से दोनों तकार का लोप-सीआसीअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सीआसीअं** । बहुलता से होने के कारण ईकार का इकार–**सिआसिअं** ।

८. **सर्पमुखः**—३.३ से रेफ का लोप-सपमुखः । २.१५ से पकार के स्थान पर वकार-सवमुखः । १.६ से अकार का ओकार-सवोमुखः । २.२७ से खकार का हकार-सवोमुहः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सवोमुहो** । बहुलता से कहने के कारण विकल्प से उकार का ऊकार–**सवोमूहो** ।

९. **सरोरूहम**—५.३० से मकार का अनुस्वार-सरोरूहं । यहाँ ओकार बाहुलक है अतः **सरोरूहं** और **सररूहं** दोनों रूप वनते हैं।

**लोपविशेष**—

१. **राजकुलम्**—२.२ से जकार और ककार का लोप-राअउलम्। प्रस्तुत सूत्र से अकार का लोप--राउलम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**राउलं** । बहुलक के कारण लोप न होने पर–**राउउलं** ।

२. **तवार्द्धम्**—६.३१ से तव = तुह–तुहार्द्धम् । ३.३ से रेफ का लोप–तुहाद्धम् । प्रस्तुत सूत्र से अकार का लोप–तुहद्धम् । ५.३० से मकार का लोप–**तुहद्धं** । पक्ष में लोपाभाव होने पर–**तुहअद्धं** ।

३. **ममार्द्धम्**—६.५० से मम का महा–महार्द्धम् । शेष तवार्द्धम् के समान ।

४. **पादयतनम्**—२.१५ से पकार का वकार-वातनम् । २.२ से दकार का लोप-वाअवतनम् । ८.५१ से तकार का डकार-वाअवदनम् । २.४२ से नकार का णकार-वाअवडणम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वाअवडणं** । प्रस्तुत सूत्र से अकार का बाहुलक से लोप–**वावडणं** ।

५. **कुम्भकारः**—२.२ से अनादि ककार का लोप-कुम्भआरः । ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**कुम्भआरो** । प्रस्तुत सूत्र से

विकल्प से आकार का लोप–**कुम्भारो**। पक्ष में–**कुम्भआरो**।

६. **पवनोद्धतम्**—पवनउद्धतम्–२.४२ से नकार का णकार–पवण-उद्धतम्। प्रस्तुत सूत्र से अकार का लोप–**पवणुद्धतम्**। २.२ से तकार का लोप–पवणुद्धअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पवणुद्धअं**। अकार का लोप होने पर–**पवणउद्धअं**।

## उदुम्बरे दोर्लोपः ।।२।।

**पदच्छेद**—उदुम्बरे। दोः। लोपः।

**पदार्थ**—उदुम्बरे = उदुम्बर (इस पद) में। दोः = दुकार का। लोपः = लोप।

**सू०अ०**—उदुम्बर (इस पद) में दुकार का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—उदुम्बरशब्दे दु इत्येतस्य लोपो भवति। उम्बरं (४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ५-३० सोर्बिन्दुः) ।।२।।**

**व्याख्या**—उदुम्बर-इस पद में दुकार का लोप हो जाता है। जैसे–

१. **उदुम्बरम्**—इस पद में दकार का लोप-उम्बरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**उम्बरं**।

## कालायसे यस्य वा ।।३।।

**पदच्छेद**—कालायसे। यस्य। वा।

**पदार्थ**—कालायसे = कालायस-(इस पद) में। यस्य = (स्वरसहित) यकार का। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—कालायस-(इस पद) में (स्वरसहित) यकार का विकल्प से (लोप हो जाता है)।

**वृत्तिः—कालायसशब्दे यस्य वा लोपो भवति। कालासं, कालाअसं। (स्पष्टम्) ।।३।।**

**व्याख्या**—कालायस-इस पद में स्वरसहित यकार का विकल्प से लोप होता है। जैसे-

१. **कालायसम्**—प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से यकार का लोप-कालासम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कालासं**। पक्ष में २.२ से यकार का लोप–**कालाअसं**।

## भाजने जस्य ।।४।।

**पदच्छेद**—भाजने। जस्य।

**पदार्थ**—भाजने = भाजन (इस पद) में। जस्य = स्वरसहित जकार का।

**सू०अ०**—भाजन (इस पद में) स्वरसहित जकार का (विकल्प से लोप होता है)।

**वृत्तिः—भाजनशब्दे जकारस्य लोपो वा भवति । भाणं, भाअणं (२-४२ भ्= ण्, ५-३० बिन्दुः, पक्षे २-२ सूत्रेण केवलजकाररलोपो भवति) ।।४।।**

**व्याख्या**—भाजन इस पद में स्वरसहित जकार का विकल्प से लोप होता है। जैसे–

१. **भाजनम्**—प्रस्तुत सूत्र से स्वरसहित जकार का लोप-भानम्। २.४२ से नकार का जकार–भाणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**भाणं**। पक्ष में २.२ से केवल जकार का लोप–**भाअणं**।

## यावदादिषु वस्य ।।५।।

**पदच्छेद**—यावदादिषु। वस्य।

**पदार्थ**—यावदादिषु = यावत् (आदि पक्षों में। वस्य = (स्वरसहित। वकार का।

**सू०अ०**—यावत् (आदि पदों) में स्वर सहित वकार ाक (विकल्प से लोप हो जाता है)।

**वृत्तिः—यावदित्येवमादिषु वकारम्य वा लोपो भवति । जा-जावता । ता-तावता (२-३१ य् = ज्, ४-६ त्लोपः, पक्षे-स्पष्टम्) । अणुत्तन्त, अणुवत्तन्त (२-४२ न् = ण्, वलोपे ३-३ रलोपः, ३-५० त्द्वित्वं, ७-१० मान = न्त, वलोपाभावे स्पष्टम्) । जीअं, जीविअं (२-२ त्लोपः, ५-३० बिन्दुः, शेषं स्पष्टम्) । एअं, एव्वं (३-५८ वद्वित्वं, ५-३० बिन्दुः) । एअ, एव्व (३-५८ व्द्वित्वं) । कुअलअं, कुवलअं । (विकल्पेन स्वररहितवलोपे २-२ य्लोपः, ५-३० बिन्दुः) यावत्, तावत् पारावतः, अनुवर्तमानं, जीवितं, एवम्, एव, कुवलयम् इत्येवमादयः ।।५।।**

**व्याख्या**—यावत् आदि पदों में स्वरसहित वकार का लोप हो जाता है। जैसे–

१. **यावत्**—२.३१ से यकार का जकार-जावत्। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से स्वरसहित वकार का लोप-जात्। ४.६ से तकार का लोप–**जा**। पक्ष में–**जाव**।

२. **तावत्**—प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से स्वरसहित वकार का लोप-तात्। ४.६ से तकार का लोप–**ता**। पक्ष में लोपाभाव–**ताव**।

३. **पारावतः**—प्रस्तुत सूत्र से स्वरसहित वकार का विकल्प से लोप-पारातः। २.२ से तकार का लोप-पाराअः। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप–**पाराओ**। पक्ष में लोपाभाव–**पारावओ**।

४. **अनुवर्तमानम्**—२.४२ से नकार का णकार-अणुवर्तमानम्। प्रस्तुत सूत्र से स्वरसहित वकार का विकल्प से लोप–अणुर्तमानम्। ३.३ से रेफ का लोप–

अणुतमानम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-अणुत्तमानम् । ७.१० से मान का न्त-अणुत्तन्तम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**अणुत्तन्तं** । पक्ष में लोपाभाव–**अणुवत्तन्तं** ।

५. **जीवितम्**—प्रस्तुत सूत्र से स्वरसहित वकार का विकल्प से लोप-जीतम् । २.२ से तकार का लोप-जीअम् । ५.३० से अकार का अनुस्वार–**जीअं** । पक्ष में लोपाभाव–**जीविअं** ।

६. **एवम्**—प्रस्तुत सूत्र से वकार का विकल्प से लोप-एअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**एअं** । पक्ष में लोपाभाव–**एवं** । ३.५८ से वकार का द्वित्व–**एव्वं** ।

७. **एव**—प्रस्तुत सूत्र से वकार का विकल्प से लोप-**एअ** । पक्ष में लोपाभाव-एव । ३.५८ से वकार का द्वित्व–**एव्व** ।

८. **कुवलयम्**—प्रस्तुत सूत्र से वकार का विकल्प से द्वित्व-कुअलयम् । २.२ से यकार का लोप–कुअलअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**कुअलअं** । पक्ष में लोपाभाव–**कुवलअं** ।

## अन्त्यहलः ।।६।।

**पदच्छेद**—अन्त्यहलः ।

**पदार्थ**—पद के अन्त में विद्यमान (अन्त्य) व्यञ्जन (हल्) का ।

**सू०अ०**—पद के अन्त में विद्यमान व्यञ्जन का (लोप हो जाता है) ।

**वृत्तिः—वेति निवृत्तम् । शब्दानां योऽन्त्यो हल् तस्य लोपो भवति । जसो (२-३१ य् = ज्, २-४२ श् = स्, ४-१८ पुंस्त्वं, ५-१ ओ) । णहं (२-४२ न् = ण्, ४-१९ पुंस्त्वाभावः, ५-३० बिन्दुः)। सरो (जसोवत् । कम्मो (३-३ रलोपः, ३-५० मद्वित्वं, शेषं पूर्ववत्) । जाव, ताव (४-५ सूत्रे द्रष्टव्यम्) । यशः, नभः, सरः, कर्म, यावत्, तावत् ।।६।।**

**व्याख्या**—विकल्प की यहाँ से विवृत्ति हो जाता है। पद के अन्त में विद्यमान व्यञ्जन का लोप हो जाता है। जैसे–

१. **यशः**—२.३१ से यकार का जकार-जशः । २.४३ से शकार का सकार-जसः । ४.१८ से पुलिंग अतः ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**जसो** ।

२. **नमभ्**—२.४२ से मकार का सकार-णभम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**णभं** ।

३. **सरः**—४.१८ से पुल्लिग-अतः ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सरो** ।

४. **कर्म**—३.३ से रेफ का लोप-कम । ३.५० से मकार का द्वित्व-कम्म । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**कम्मो** ।

५. **यावत्**—द्रष्टव्य पूर्ववर्ती सूत्र।

६. **तावत्**—द्रष्टव्य पूर्ववर्ती सूत्र।

## स्त्रियामात् ।।७।।

**पदच्छेद**—स्त्रियाम्। आत्।

**पदार्थ**—स्त्रियाम् = स्त्रीलिङ्ग में। आत् = आकार।

**सू०अ०**—स्त्रीलिङ्ग में विद्यमान (अन्त्य व्यञ्जन का) आकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्त्रियां वर्त्तमानस्यान्त्यहल आकारो भवति। सरिआ (स्पष्टम्) पडिवआ (१-२ सूत्रे स्पष्टम्)। वाआ (स्पष्टम्)। सरित्, प्रतिपद्, वाक्।।७।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में विद्यमान अन्त्य व्यञ्जन का आकार हो जाता है। जैसे-

१. **सरित्**—प्रस्तुत सूत्र से तकार का आकार–**सरिआ**।

२. **प्रतिपद्**—३.३ से रेफ का लोप-पपित्। २.८ से तकार का डकार-पडिपत्। २.१५ से पकार का वकार-पडिवत्। प्रस्तुत सूत्र से तकार का आकार–**पडिवआ**।

३. **वाक्**—प्रस्तुत सूत्र से ककार का आकार–**वाआ**।

## रो रा ।।८।।

**पदच्छेद**—रोः। राः।

**पदार्थ**—रोः = रेफ का। राः = राकार।

**सू०अ०**—(स्त्रीलिङ्ग में पदान्त) रेफ का राकार हो जाता है।

**वृत्तिः—स्त्रियामन्त्यस्य हलो रेफस्य रा इत्ययमादेशो भवति। धुरा, गिरा (स्पष्टम्) ।।८।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में पदान्त रेफ के स्थान पर राकार हो जाता है। जैसे–

१. **धुर्**—प्रस्तुत सूत्र से पदान्त रेफ के स्थान पर रा–**धुरा**।

२. **गिर्**—प्रस्तुत सूत्र से रेफ के स्थान पर राकार–**गिरा**।

## न विद्युति ।।९।।

**पदच्छेद**—न। विद्युति।

**पदार्थ**—विद्युति = विद्युत् (इस पद) में। न नहीं।

**सू०अ०**—विद्युत् (इस पद) में (पदान्त व्यञ्जन के स्थान पर आकार) नहीं (होता)।

**वृत्तिः—विद्युच्छब्दे आकारो न भवति । विज्जू (३-२७ द्य् = ज्, ४-६ त्लोपः, ३-५० जद्वित्वं, ५-१८ दीर्घः) । विद्युत् ।।९।।**

**व्याख्या**— यह ४.७ का अपवाद है। विद्युत् (इस पद में स्थित पदान्त व्यञ्जन तकार के स्थान पर आकार नहीं होता है। जैसे–

१. **विद्युत्**—३.२६ से द्यकार के स्थान पर जकार-विजुत्। ३.५० से जकार का द्वित्व-विज्जुत्। ५.१८ से उकार का ऊकार-विज्जूत्। ४.६ से तकार का लोप-विज्जू।

## शरदो दः ।।१०।।

**पदच्छेद**—शरदोः। दः।

**पदार्थ**—शरदोः = शरद् (शब्द) का। दः = द।

**सू०अ०**—शरद् (इस पद) के (अन्त्य व्यञ्जन का) द (हो जाता है)।

**वृत्तिः—शरच्छब्दस्यान्त्यहलो दो भवति । सरदो (२-४३ श् = स्, ४-१८ पुंसवत्, ५-१ ओ) ।।१०।।**

**व्याख्या**—शरद् इस पद के अन्त्य व्यञ्जन् द् का द हो जाता है। जैसे–

१. **शरद्**—२.४३ से शकार का सकार-सरद्। प्रस्तुत सूत्र से द् का द सरद्। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**सरदो**।

## दिक्प्रावृषोः सः ।।११।।

**पदच्छेद**—दिक्प्रावृषोः। सः।

**पदार्थ**—दिक्प्रावृषोः = दिक् और प्रावृट् (इन पदों) का। सः = स।

**सू०अ०**—दिक् और प्रावृट् = (इन पदों) का (अन्य व्यञ्जन) स (हो जाता है)।

**वृत्तिः—दिक्छब्दस्यान्त्यहलः प्रावृट्शब्दस्यापि सकारो भवति । दिसा (स्पष्टम्) पाउसो (१-३० सूत्रे स्पष्टम्) ।।११।।**

**व्याख्या**—दिक् और प्रावृट्-पदों का अन्य व्यञ्जन स हो जाता है। जैसे–

१. **दिक्**—प्रस्तुत सूत्र से ककार का सकार-दिस। ४.१ से अकार का ओकार–**दिसो**।

२. **प्रावृट्**—३.३ से रेफ और वकार का लोप-पाऋट्। १.२९ से ऋकार का उकार = पाउट्। प्रस्तुत सूत्र से टकार का स-पाइस। ५.१ से सहित अकार का ओकार–**पाउसो**।

## मो बिन्दुः ।।१२।।

**पदच्छेद**—मः । बिन्दुः ।

**पदार्थ**—मः = मकार का । बिन्दुः = अनुस्वार ।

**सू०अ०**—(पदान्त) मकार का अनुस्वार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अन्त्यस्य हलो मकारस्य बिन्दुर्भवति । अच्छं (४-२० विकल्पेन पुंसि अमि, ४-३ अमोऽकारस्य लोपः, शेषं ३-३० सूत्रे स्पष्टम्) । वच्छं (स्पष्टम्) । भद्दं (३-३ र्लोपः, ३-५० द्वित्वं, शेषं पूर्ववत्) । अग्गिं (३-२ नलोपः, ३-५० ग् द्वित्वं, शेषं पूर्ववत्) । वणं । धणं । (२-४२ न् = ण्, शेषं पूर्ववत्) ।।१२।।**

**व्याख्या**—पद के अन्त में विद्यमान मकार का अनुस्वार हो जाता है। जैसे–

१. **अक्षि**—४.२० से विकल्प से पुल्लिङ्ग-अक्षम्। ३.३ से क्षकार का छकार-अछम्। ३.५० से छकार का द्वित्व–अछ्छम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-अच्छम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**अच्छं** ।

२. **वृक्षम्**—१.२७ से ऋकार का अकार-वक्षम्। ३.३१ से क्षकार का छकार-वछम्। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वृच्छम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**वच्छं** ।

३. **भद्रम्**—३.३ से रेफ का लोप-भदम्। ३.५० से दकार का द्वित्व भद्दम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**भद्दं** ।

४. **अग्निम्**—३.२ से नकार का लोप-अगिम्। ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गिम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार-अग्गिं ।

५. **दृष्टम्**—१.२७ से ऋकार का अकार-दष्टम्। ३.१० से ष्टकार का ठकार-दठम्। ३.५० से ठकार का द्वित्व-दठ्ठम्। ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार-दट्ठम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**दट्ठं** ।

६. **वनम्**—३.४२ से नकार का णकार-वणम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**वणं** ।

७. **धनम्**—३.४२ से नकार का णकार-धणम्। प्रस्तुत सूत्र से मकार का अनुस्वार–**धणं** ।

## अचि मश्च ।।१३।।

**पदच्छेद**—अचि । मः । च ।

**पदार्थ**—अचि = स्वार (अच्) बाद में होने पर । मः = मकार । च = भी ।

**सू०अ०**—स्वर बाद में होने पर (पदान्त मकार के स्थान पर) मकार भी (होता है) ।

**वृत्तिः—अचि परतो मो भवति वा । फलमवहरइ, फलं अवहरइ (स्पष्टम्) ।।१३।।**

**व्याख्या**—च का सम्बन्ध पूर्ववर्ती सूत्र से है। पूर्ववर्ती सूत्र में विधान किया गया है कि पदान्त मकार का अनुस्वार हो जाता है। इस सूत्र में कहा गया है कि स्वर बाद में होने पर पदान्त मकार के स्थान पर मकार भी हो जाता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वर वाद में होने पर पदान्त मकार के स्थान पर मकार और अनुस्वार दोनों होते हैं। जैसे–

**१. फलम् अवहरति**—२.२ से तकार का लोप-फलम् अवहरइ । प्रस्तुत सूत्र से ४.१२ से मकार का मकार–**फलम् अवहरइ** । पक्ष में ४.१३ से अन्त्य मकार का अनुस्वार–**फलं अवहरइ** ।

## नञोर्हलि ।।१४।।

**पदच्छेद**—नञोः । हलि ।

**पदार्थ**—हलि = व्यञ्जन (हल्) बाद में होने पर । नञोः = नकार और ञकार के स्थान पर ।

**सू०अ०**—व्यञ्जन बाद में होने पर नकार और ञकार के स्थान पर (मकार भी होता है) ।

**वृत्तिः—नकारञकारयोर्हलि परतो बिन्दुर्भवति मकारश्च । नस्य-अंसो, अम्सो (५-१ ओ, शेषं स्पष्टम्) । कंसो, कम्सो । ञस्य-वंचणीअं, वम्चणीअं (२-४२ न् = ण्, २-२ यलोपः, ५-३० बिन्दुः, शेषं स्पष्टम्) । विंझो, विम्झो (३-२८ ध्य् = झ्, नूकारस्य बिन्दौ मकारे च ३-५६ सूत्रेण द्वित्वादिबाधः) ।।१४।।**

**व्याख्या**—व्यञ्जन बाद में होने पर नकार और ञकार के स्थान पर मकार होने के विषय में भी विकल्प है। पक्ष में अनुस्वार भी होता है। जैसे–

**१. नकार का**—

(क) **अम्सः**—प्रस्तुत सूत्र से व्यञ्जन बाद में होने के कारण नकार का मकार-अम्सः । अम्सः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**अम्सो** । पक्ष में अनुस्वार–**अंसो** ।

(ख) **कन्सः**—प्रस्तुत से नकार का मकार-कम्सः । ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार–**कम्सो** । पक्ष में अनुस्वार–**कंसो** ।

(ग) **विन्ध्यः**—प्रस्तुत सूत्र से नकार का मकार-विम्ध्यः । ३.२८ से ध्यकार का झकार-विम्झः । ३.५० से द्वित्व का निषेध और ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार–**विम्झो** । पक्ष में नकार का अनुस्वार–**विंझो** ।

२. ञकार का—

(क) **वञ्चनीयम्**—प्रस्तुत सूत्र से ञकार का मकार-वम्चनीयम् । २.४२ से नकार का णकार-वम्चणीयम् । २.४२ से नकार का णकार-वम्चणीयअं । २.२ से यकार का लोप-वम्चनीअम् । पक्ष में ञकार का अनुस्वार–**वंचणीयम्** ।

## वक्रादिषु ।।१५।।

**पदच्छेद**—वक्रादिषु ।

**पदार्थ**—वक्र इत्यादि (पदों) में ।

**सू०अ०**—वक्र इत्यादि (पदों) में (अनुस्वार का आगम होता है) ।

**वृत्तिः—वक्रादिषु शब्देषु बिन्दुरागमो भवति । वंकं (३-३ र्लोपः,५-३० बिन्दुः)। तंसं (३-३ रकारयोर्लोपः, ३-२ य्लोपः, शेषं स्पष्टम्) । हंसो ३-३ रेफालोपः व्लोपश्च, ५-१ ओ)। अंसू (३-३ र्लोपः, २-४३ श् = स्, ३-३ र्लोपः,५-१८ उदीर्घः) । मंसू (३-६ श्लोपः, २-४३ श् = स्, ३-३ र्लोपः, ५-१८ उदीर्घः) । गुंठी (१-२९ ऋ = उ, ३-१० ष्ट् = ठ्, ५-१८ दीर्घः) । मंथं (१-२२ उ = अ, ३-१२ स्त् = थ्, ५-३० बिन्दुः) । मणंसिणो (१-२ सूत्रे स्पष्टम्) । दंसणं (३-३ र्लोपः, २-४३ श् = स्, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः) । फंसो (३-३६ सूत्रे स्पष्टम्) । वण्णो (३-३ र्लोपः, ३-५० ण्द्वित्वं, ५-१ ओ) । पडिंसुदं (३-३ र्लोपः, २-८ त् = ड्, २-४३ श् = स्, ३-३ र्लोपः, १२-३ त् = द्, ५-३. बिन्दुः, २-४२ श् = स्, ५-१ ओ) । अंसो (स्पष्टम्) । अहिमुंको (२-२७ भ् = ह्, ३-१ त्लोपः, ५-१ ओ) । वक्र-त्र्यस्र-ह्रस्व-अश्रु-श्मश्रु-गृष्टि-मुस्त-मनस्विनी-दर्शन-स्पर्श-वर्ण-प्रतिश्रुत-अश्व-अभिमुक्त-इत्यादयः ।।१५।।**

**व्याख्या**—वक्र इत्यादि (पदों) में (अनुस्वार का आगम होता है)। जैसे-

१. **वक्रम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-वंक्रम् । ३.३ से रेफ का लोप-वंकम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**वंकं** ।

२. **त्र्यसम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-त्रयंस्रम् । ३.३ से दोनों रेफो का लोप-

त्यंसम्। ३.२ से यकार का लोप-तंसम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**तंसं**।

३. **ह्रस्वम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-ह्रंस्वम्। ३.३ से रेफ और वकार का लोप-हंसम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**हंसं**।

४. **अश्रु**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-अंश्रु। ३.३ रेफ का लोप-अंशु। २.४३ से शकार का सकार-अंसु। ५.१८ से उकार का दीर्घ–**अंसू**।

५. **श्मश्रु**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-श्मंश्रु। ३.६ से शकार का लोप-मंश्रु। ३.३ से रेफ का लोप-मंशु। २.४३ से शकार का सकार-मंसु। ५.१८ से उकार का दीर्घ–**मंसू**।

६. **गृष्टिः**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-गृंष्टिः। १.२९ से ऋकार का उकार-गुंष्टिः। ३.१० से ष्टकार का ठकार-गुंठि। ५.१८ से इकार का दीर्घ और ४.६ से सु का लोप–**गुंठी**।

७. **मुस्तम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-मुंस्तम्। १.२२ से इकार का अकार-मंस्तम्। ३.१२ से स्तकार का हकार-मंथम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**मंथं**।

८. **मनस्विनी**—२.४२ से दोनों नकार का णकार-मणस्विणी। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-मणंस्विणी। ३.३ से वकार का लोप–**मणंसिणी**।

९. **दर्शनम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारगम दंर्शनम्। ३.३ से रेफ का लोप-दंशनम्। २.४२ से शकार का सकार-दंसनम्। २.४२ से नकार का णकार-दंसणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**दंसणं**।

१०. **स्पर्शः**—३.३६ से स्प का फ-फर्शः। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम्। फंर्शः। ३.३ से रेफ का लोप-फंशः। २.४३ से शकार का सकार-फंसः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**फंसो**।

११. **वर्णः**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-वंर्णः। ३.३ से रेफ का लोप-वंणः। ३.५० से णकार का द्वित्व-वंण्णः। ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार–**वंण्णो**।

१२. **प्रतिश्रुतम्**—३.३ से रेफ का लोप-पतिश्रुतम्। २.८ से तकार का डकार-पडिश्रुतम्। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-पडिंश्रुतम्। ३.३ से रेफ का लोप-पडिंशुतः। २.४३ से शकार का सकार-पडिंसुतम्। १२.३ से तकार का दकार-पडिंसुदम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पडिंसुदं**।

१३. **अश्वः**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वादागम-अंश्वः। ३.३ से वकार का लोप-अंशः।

४.४३ से शकार का सकार-अंसः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार– **अंसो**।

१४. **अभिमुक्तः**—२.२७ से भकार का हकार-अहिमुक्तः। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम् अहिंमुक्तः। ३.२ से तकार का लोप-अहिंमुंकः। ५.१ से सु के सहित अकार का ओकार–**अहिमुंको**।

## मांसादिषु वा ।।१६।।

**पदच्छेद**—मांसादिषु। वा।

**पदार्थ**—मांसादिषु = मांस इत्यादि (पदों) में। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—मांस इत्यादि (पदों) में विकल्प से (अनुस्वार का लोप) होता है।

**वृत्तिः—मांसादिषु शब्देषु वा बिन्दुः प्रयोक्तव्यः। मंसं, मासं (स्पष्टम्)। कहं, कह (२-२७ थ् = ह्, शेषं स्पष्टम्)। णूणं, णूण (स्पष्टम्)। ताहिं, तहि (स्पष्टम्)। असुं, असु (स्पष्टम्)। तदयमपठितो मांसादिर्गणः। यत्र क्वचिद्वृत्तभङ्ग-भयात् त्यज्यमानः क्रियमाणश्च बिन्दुर्भवति, स मांसादिषु द्रष्टव्यः ।।१६।।**

**व्याख्या**—मांस इत्यादि पदों में अनुस्वार का लोप होने के विषय में विकल्प है। कहीं-कहीं होता है और कहीं नहीं होता। जैसे–

१. **मांसम्**—प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वारागम-मांसम्। १.२ से आकार का अकार-अकार-मंसम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार का लोप-मासं। पक्ष में–**मंसं**।

२. **कथम्**—२.२७ से थकार का हकार-कहम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार कहं। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वार का लोप–**कहं**। पक्ष में कंहं।

३. **नूनम्**—३.४२ से नकार का णकार-णूणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-णूणं। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वार का लोप-णूण। पक्ष में–**णूणं**।

**विशेष**—मांसादि गण पठित नहीं है। अर्थात् ये पद सीमा से रहित है। जहाँ छन्दोभङ्ग के भय से अनुस्वार नहीं किया जाता या अतिरिक्त अनुस्वार का आगम किया जाता है, उनपदों को मांसादि गण में समझना चाहिए।

## ययि तद्वर्गान्तः ।।१७।।

**पदच्छेद**—ययि। तद्वर्ग्यान्तः।

**पदार्थ**—ययि = यय् (प्रत्याहार के व्यञ्जन) बाद में होने पर। तद्वर्ग्यान्तः = उस वर्ग का अन्तिम (व्यञ्जन)।

**सू०अ०**—यय् (प्रत्याहार के व्यञ्जन) बाद में होने पर (अनुस्वार विकल्प से) उस वर्ग का अन्तिम (व्यञ्जन) हो (जाता है)।

**वृत्तिः—यथि परतो बिन्दुस्तद्वर्गान्तो वा भवति । सङ्का (२-४३ श् = स्, शेषं स्पष्टम्) । सङ्खो (५-१ ओ, शेषं पूर्ववत्) । अङ्को–अङ्कं स्पष्टम्) । सञ्चरइ (७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्) । सण्ढो (२-४३ ष् = स्) । सन्तरइ (स्पष्टम्) । सम्पत्ती (५-१८ दीर्घः, शेषं स्पष्टम्) । ययीति किम्? अंसो (४-१४ सूत्रे स्पष्टम्) । वाऽधिकारत् पङ्कं, बिन्दुः, सङ्का, सङ्खो । (सुगमानि) ।।१७।।**

**व्याख्या**—यय् प्रत्याहार के अन्तर्गत स्पर्श वर्ण तथा अन्तस्थ वर्ण आते हैं। स्पर्श वर्ण तथा अन्तःस्थ वर्ण बाद में होने पर अनुस्वार विकल्प से उस वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है। कवर्ग बाद मे होने पर ङकार, चवर्ग बाद में होने पर ञकार, टवर्ग बाद में होने पर णकार, तवर्ग बाद में होने पर नकार तथा पवर्ग बाद में होने पर मकार होता है। विकल्प का तात्पर्य यह है कि कहीं-कहीं तो वर्गो का अन्तिम वर्ण होता है और कहीं-कहीं अनुस्वार ही रहता है। जैसे-

१. **शङ्का**—२.४३ से शकार का सकार-**सङ्का** । पक्ष में-**सङ्का** ।

२. **शङ्खः**—२.४३ शकार का सकार-सङ्खः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सङ्खो** । पक्ष में-**संखो** ।

३. **सञ्चरति**—७.१ से ति का इ-**सञ्चरइ** । पक्ष में-**सञ्चरइ** ।

४. **सन्तरति**—७.१ से ति का इ-**सन्तरइ**-पक्ष में-**संतरइ** ।

५. **षण्डः**—२.४३ से षकार का सकार-सण्डः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-**सण्डो** । पक्ष में-**संडो** ।

६. **सम्पत्तिः**—५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु के का लोप-**सम्पत्ती** । पक्ष में-**संपत्ती** ।

**बिन्दुः**—५.१८ से इकार का ईकार-**बिन्दू** । पक्ष में-**बिन्दू** ।

**विशेष**—यय् बाद में होने पर ही अनुस्वार का विकल्प से परवर्गान्त होता है। अन्यथा नहीं । जैसे- **अंशः**—४.१४ से नकार का अनुस्वार-**अंसो** ।

## नसान्तप्रावृट्शरदः पुंसि ।।१८।।

**पदच्छेद**—नसान्तप्रावृट्शरदः । पुंसि ।

**पदार्थ**—नसान्तप्रावृट्शरदः = नकारान्त, सकारान्त, (पद) तथा प्रावृष् और शरद् (ये) । पुंसि = पुलिङ्ग में ।

**सू०अ०**—नकारान्त और सकारान्त (पद) तथा प्रावृप् और शरद् (ये) पुल्लिंग में (होते है) ।

**वृत्तिः—नकारान्ताः सकारान्ताश्च प्रावृट्शरदौ च पुंसि प्रयोक्तव्याः । नान्ताः-**

**कम्मो (४-६ अन्त्यनकारलोपः, ३-३ र्लोपः, ३-५० म्द्वित्त्वं, ५-१ ओ)। जम्मो (३-४३ सूत्रे स्पष्टम्)। वम्मो (३-३ र्लोपः, ३-५० म्द्वित्वं, ४-६ न्लोपः, ५-१ ओ)। सान्ताः-जसो (२-३१ सूत्रे स्पष्टम्)। तमो (४-६ स्लोपः, पुंस्त्वे ५-१ ओ)। सरो। पाउसो (१-३० सूत्रे स्पष्टम्)। सरदो ।।१८।।**

**व्याख्या**—नकार है अन्त में जिनके ऐसे पद और सकार है अन्त में जिनके ऐसे पद तथा प्रावृट् और शरद्–ये पद पुल्लिंग में होते हैं। जैसे–

१. **नकारान्त**—

(क) **कर्मन्**—३.३ से रेफ का लोप-कमन्। ३.५० से मकार का द्वित्व-कम्मन्। ४.६ से अन्त्य नकार का लोप-कम्म। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–कम्मो।

(ख) **जन्मम्**—३.४३ से न्म का म-जमन्। ३.५० से मकार का द्वित्व-जम्मन्। ४.६ से अन्त्य नकार का लोप। ५.१ से अकार का ओकार–जम्मो।

(ग) **वर्मन्**—३.३ से रेफ का लोप-वमन्। ३.५० से मकार का द्वित्व-वम्मन्। ४.६ से नकार का लोप और ५.१ से अकार का ओकार–**वम्मो**।

२. **सकारान्त**—

(क) **तमस्**—४.६ से सकार का लोप-तम। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार–**तमो**।

(ख) **सरस्**—४.६ से सकार का लोप-सर। ५.१ से अन्त्य अकार का ओकार-**सरो**।

३. **प्रावृष्**—३.३ से रेफ और वकार का लोप-पाऋष्। १.२९ से ऋकार का उकार-पाउष्। ४.११ से षकार का सकार–पाउस्। प्रस्तुत सूत्र से पुल्लिङ्ग पाउसः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार-पाउसो।

४. **शरद्**—२.४३ से शकार का सकार-सरद्। प्रस्तुत सूत्र से पुल्लिंग-सरदः। ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**सरदो**।

## न शिरोनभसी ।।१९।।

**पदच्छेद**—न। शिरोनभसी।

**पदार्थ**—शिरोनभासी = शिरस् और नभस् (ये पद)। न = नहीं।

**सू०अ०**—शिरस् और नभस् (ये पद) (पुल्लिंग) नहीं (होते)।

**वृत्तिः—शिरस्, नभस्, इत्येतौ न पुंसि प्रयोक्तव्यौ। सिरं (४-६ स्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। णहं ।।१९।।**

**व्याख्या**—यह पूर्ववर्ती सूत्र का अपवाद है। शिरस् और नभस–ये पद पुल्लिंग नहीं होते । जैसे–

**१. शिरस्**—२.४३ से शकार का सकार सिरस् । ४.६ से अन्त्य सकार का लोप-और । ५.३० से अनुस्वार–**सिरं** ।

**२. नभस्**—२.४२ से नकार का णकार-णभस् । ४.६ से सकार का लोप और ५.३० से अनुस्वार–**कणं** । २.२७ से भकार का हकार–

## पृष्ठाक्षिप्रश्नाः स्त्रियां वा ।।२०

**पदच्छेद**—पृष्ठाक्षिप्रश्नाः । स्त्रियां । वा ।

**पदार्थ**—पृष्ठाक्षिप्रश्नाः । स्त्रियां वा ।

**सू०अ०**—पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न–(ये पद) विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में (होते हैं) ।

**वृत्तिः—एते स्त्रियां वा प्रयोक्तव्याः । पुट्ठी, पुट्ठं (१-२९ ऋ = उ, ३-१० ष्ट = ठ, ३-५० ठ्द्वित्वं, ३-५१ ठ् = ट्, स्त्रीत्वे ई, पक्षे-पूर्ववत्कार्येषु ५-३० बिन्दुः)। (एवम्)-अच्छी, अच्छं (३-३० सूत्रे स्पष्टम्)। अच्छो पुंस्त्वे तु (५-१ ओ)। पण्हा, पण्हो (३-३ र्लोपः, ३.३३श्न = ण्ह, स्त्रीत्वे आत्वं, पुंस्त्वे ५-१ ओ) । पृष्ठम् । अक्षि । प्रश्नः ।।२०।।**

**व्याख्या**—पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न–ये पद विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में होते हैं। विकल्प से कहने का तात्पर्य यह है कि ये पद यहीं स्त्रीलिङ्ग में होते है और कहीं पृष्ठ और अक्षि में पद नपुंसकलिङ्ग तथा प्रश्न यह पद पुलिङ्ग होता है। जैसे–

**१. पृष्ठः**—१.२९ से ऋकार का उकार–पुष्ठ । ३.१० से ष्ट का ठ्-पुठ । ३.५० से ठकार का द्वित्व-पुठ्ठ । ३.५१ से पूर्ववर्ती ठकार का टकार पुट्ठ । प्रस्तुत सूत्र से स्त्रीलिङ्ग होने से अकार का ईकार–**पुट्ठी** । पक्ष में नपुंसक लिङ्ग होने से ५.३० से अनुस्वार–**पुट्ठं** ।

**२. अक्षि**—३.३० से क्षकार का छकार-अछि । ३.५० से छकार का द्वित्व-अछ्छि । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-अच्छि । प्रस्तुत सूत्र से स्त्रीलिङ्ग होने से इकार का ईकार–**अच्छी** । पक्ष में नपुंसकलिङ्ग होने से ५.३० से अनुस्वार–**अच्छं** । और पुलिङ्ग होने पर ५.१ से ओकार–**अच्छो** ।

**३. प्रश्नः**—३.३ से रेफ का लोप-पश्न । ३.३३ से श्न क ण्ह-पण्ह । प्रस्तुत सूत्र से स्त्रीलिङ्ग होने से अकार का आकार–**पण्हा** । पक्ष में पुल्लिंग होने से ५.१ से अकार का ओकार–**पण्हो** ।

## ओदवापयोः ।।२१।।

**पदच्छेद**—ओत् । अवापयोः ।

**पदार्थ**—अवापयोः = अब और अप (इन दोनों उपसर्गों) का ओत् = ओकार ।

**सू०अ०**—अव और अप (इन दोनों उपसर्गों) का (विकल्प से) ओकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अव, अप इत्येतयोरुपसर्गयोर्वा आत्वं भवति । ओहासो, अवहासो । ओसारिअं, अवसारिअं (२-२ तूलोपः, ५-३० बिन्दुः) । अवहासः, अपसारि-तम् ।।२१।।**

**व्याख्या**—अव और अप-इन दोनों उपसर्गों का विकल्प से ओकार हो जाता है। जैसे–

१. **अवहासः**—प्रस्तुत सूत्र से अव का ओ-ओहासः । ५.१ से सु के साथ अकार का ओकार–**ओहासो** । पक्ष में–**अवहासो** ।

२. **अपसारितम्**—प्रस्तुत सूत्र से अप का ओ-ओसारितम् । २.२ से तकार का लोप–ओसारिअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**ओसरिअं** । पक्ष में- २.१५ से पकार का वकार-अवसारितम् । २.२ से तकार का लोप-अवसारिअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार–**अवसारिअं** ।

## तल्त्वयोर्दात्तणौ ।।२२।।

**पदच्छेद**—तल्त्वयोः । दात्तणौ ।

**पदार्थ**—तल् और त्व (इन प्रत्ययों) का । दात्तणौ = दा और त्तण ।

**सू०अ०**—तल् और त्व (–इन प्रत्ययों) का (क्रमशः) दा और त्तण (हो जाता है) ।

**तल्-त्व-इत्येतयोः प्रत्यययोर्यथासंख्यं दा, त्तण इत्येतावादेशौ स्तः । पीणदा (२-४२ न्=ण्) । मूढदा (१२-३ त्=द्) । पीणत्तणं । मूढत्तणं (५-३० बिन्दुः) ।।२२।।**

**व्याख्या**—तल् प्रत्यय का दा और त्व प्रत्यय का त्तण हो जाता है। जैसे–

१. **पीनता**—२.४२ से नकार का णकार-पीणता । प्रस्तुत सूत्र से तल् प्रत्यय का दा–**पीणदा** ।

२. **मूढता**—प्रस्तुत सूत्र से तल् प्रत्यय का दा-मूढदा ।

३. **पीनत्वम्**—२.४३ से नकार का णकार-पीणत्वम् । प्रस्तुत सूत्र से त्व प्रत्यय का

तण-पीणत्तणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पीणत्तणं**।

४. **मूढत्वम्**—प्रस्तुत सूत्र से त्व प्रत्यय का त्तण-मूढत्तणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**मूढत्तणं**।

## क्त्व ऊणः ।।२३।।

**पदच्छेद**—क्त्वः। ऊणः।

**पदार्थ**—क्त्वः = क्त्वा (प्रत्यय) का। ऊणः = ऊण।

**सू०अ०**—क्त्वा (प्रत्यय) का 'ऊण' (हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्त्वा-प्रत्ययस्य ऊण इत्ययमादेशो भवति। घेऊण (८-१६ ग्रह = घेत्। सोऊण (३-३ र्लोपः, २-४३ श् = स्, उ = ओ गुणेन)। काऊण (८-१७ कृञ् = का)। दाऊण (स्पष्टम्)। गृहीत्वा, श्रुत्वा, कृत्वा दत्त्वा ।।२३।।**

**व्याख्या**—क्त्वा इस प्रत्यय के स्थान पर ऊण हो जाता है। जैसे-

१. **ग्रहीत्वा**—८.१३ से ग्रह का घे-घेत्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्वा का ऊण–**घेऊण**।

२. **श्रुत्वा**—३.३ से रेफ का लोप-शुत्वा। २.४३ से शकार का सकार-सुत्वा। उकार का गुण-सोत्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्वा का ऊण–सोऊण।

३. **कृत्वा**—८.१७ से कृञ् के स्थान पर का-कात्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्वा के स्थान पर ऊण–**काऊण**।

४. **दत्वा**—अकार का दीर्घ-दात्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्वा के स्थान पर ऊण–**दाऊण**।

## तृन इरः शीले ।।२४।।

**पदच्छेद**—तृनः। इरः। शीले।

**पदार्थ**—शीले = शील (अर्थ) में। तृनः = तृन् (प्रत्यय) के स्थान पर। इरः = इर।

**सू०अ०**—शील (अर्थ) में तृन् (प्रत्यय) के स्थान पर इर (होता है)।

**वृत्तिः—शीले यस्तृन्प्रत्ययो विहितस्तस्य इर इत्ययमादेशो भवति। भ्रमणशीलो भ्रमिरो। हसनशीलो हसिरो (५-१ ओ, स्पष्टप्राये) ।।२४।।**

**व्याख्या**—शील अर्थ में विहित तृन् प्रत्यय के स्थान पर इर होता है। जैसे-

१. **भ्रमणशीलः**—भ्रमिरो।

२. **हसनशीलः**—हसिरो।

## आल्विल्लोल्लालवन्तेन्ता मतुपः ।।२५।।

**पदच्छेद**—आल्विल्लोल्लालवन्तेन्ताः। मतुपः।

**पदार्थ**—मतुपः = मतुप् (प्रत्यय) के स्थान पर। अल्विल्लोल्लावन्तेन्ता = आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और इन्त।

**सू०अ०**—मतुपः (प्रत्यय) के स्थान पर आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त और इन्त (होते हैं)।

**वृत्तिः—आलु, इल्ल, उल्ल, आल, वन्त, इन्त, इत्येत आदेशा मतुपः स्थाने भवन्ति। आलुस्तवत्-इसालू (३-३ रलोपः, २-४३ श् = स्, आलकृते, ५-१८ दीर्घः)। णिद्दालू (२-५२ न् = ण्, ३-३ र्लोपः, ३-५० द्द्वित्वं, शेषं पूर्ववत्)। इल्लः-विआरिल्लो (२-२ अलोपः, इल्ले कृते, ५-१ ओ)। मालाइल्लो (५-१ ओ, शेषं स्पष्टम्)। उल्लः-विआरुल्लो (२-२ कलोपः, शेषं स्पष्टम्)। आलः-घणालो (२-४२ न् = ण्, ५-१ ओ)। सद्दालो (३-३ व्लोपः, ३-५० द्द्वित्वं, ५-१ ओ)। वन्तः-घणवन्तो (स्पष्टम्)। जोवणवन्तो (२-३१ य् = ज्, प्राय इति वलेपो न, २-४२ न् = ण्,५-१ ओ)। इन्त;-रोसाइन्तो (२-४३ ष् = स्, ५-१ ओ)। पाणाइन्तो (३-३ र्लोपः, शेषं स्पष्टम्)। यथादर्शनमेते प्रयोक्तव्याः न सर्वे, सर्वत्र। इर्ष्यावत्, निद्रावत्, विकारवत्, मालावत्, धनवत्, शब्दवत्, यौवनवत्, रोषवत्, प्राणवत्,। हणुमा, हणुमन्तो (२-४३ न् = ण्, मतुपोऽन्त्यस्यात्वपक्षे, मन्तादेशः, ५-१ ओ)।।२५।।**

**व्याख्या**—मतुप् प्रत्यय के स्थान पर (पूर्ववर्ती स्वर के साथ आलु, उल्ल, आल, वन्त और इन्त आदेश होते है। जैसे-

**१. आलु—**

**(क) इर्ष्यावत्**—३.३ रेफ का लोप-इष्यावत्। २.४२ से षकार का सकार-इस्यावत्। २.२ से यकार का लोप-इसावत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर आलु–**इसालु**।

**(ख) निद्रावत्**—२.४२ से नकार का णकार-णिद्रावत्। ३.३ से रेफ का लोप-णिदावत्। ३.५० से दकार का द्वित्व-णिद्दावत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर आलु-णिद्दालु। ५.१८ से उकार का दीर्घ–**णिद्दालू**।

**२. इल्ल—**

**(क) विकारवत्**—२.२ से ककार का लोप-विआरवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर उल्ल–विआरिल्ल। ५.१ से अकार का ओकार–विआरिल्लो।

**(ख) मालावत्**—प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर इल्ल-मालाइल्ल। ५.१ से अकार का ओकार–**मालाइल्लो**।

**३. उल्ल—**

**(क) विकारवत्**—२.२ से ककार का लोप-विआरवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के

स्थान पर उल्ल-विआरुल्ल। ५.१ से अकार का ओकार-**विआरुल्लो**।

**४. आल—**

**(क) धनवत्**—२.४२ से नकार का णकार-धणवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर आल-धणाल। ५.१ से अकार का ओकार-**धणालो**।

**(ख) शब्दवत्**—२.४३ से शकार का सकार-सब्दवत्। ३.३ से बकार का लोप-सदवत्। ३.५० से दकार का द्वित्व-सद्दवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर आल-सद्दाल। ५.१ से अकार का ओकार-**सद्दालो**।

**५. वन्त—**

**(क) धनवत्**—२.४२ से नकार का णकार-धणवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् के स्थान पर वन्त-धणवन्त। ५.१ से अकार का ओकार-**धणवन्तो**।

**(ख) यौवनवत्**—२.३१ से यकार का जकार-जौनवतम्। १.४१ से औकार का ओकार-जोवनवत्। ३.४२ से नकार का णकार-**जोवणवन्तो**।

**६. इन्त—**

**(क) रोषवत्**—२.४३ से षकार का सकार-रोसावत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् का इन्त-रोषाइन्त। ५.१ से अकार का ओकार-**रोसाइन्तो**।

**(ख) प्राणवत्**—३.३ से रेफ का लोप-पाणवत्। प्रस्तुत सूत्र से वत् का इन्त प्राणइन्त्। ५.१ से अकार का ओकार-**पाणाइन्तो**।

**विशेष—१.** इन सभी प्रत्ययों का प्रयोग सर्वत्र नहीं होता। जिन-जिन स्थलों पर जिन प्रत्ययों का प्रयोग देखा गया है, वहीं ये प्रत्यय प्रयुक्त होते है।

**२.** कहीं कहीं मतुप् के स्थान पर मा, अथा, मन्तो भी हो जाता है। जैसे-

**(क) हनुमान**—२.४३ से णकार के स्थान पर णकार-हणुमान और मतुप् के स्थान पर मा-**हणुमा**। मन्तो होने पर-हणुमन्तो।

**३.** किन्हीं शैषिक प्रत्ययों के स्थान पर इल्ल या उल्ल प्रत्यय होता है। जैसे-

**(क) पौरस्त्यम्**—पुरोभवम्-शैषिक प्रत्यय भवम् के स्थान पर इल्ल-पुरिल्लम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पुरिल्लं**।

**(ख) आत्मीयम्**—१.२ से आकार का अकार-अत्मीयम्। ३.४८ से त्म् का प्-आपीयम्। प्रस्तुत सूत्र से उल्ल प्रत्यय-अप्पुल्लम्। ३.५० से मकार का अनुस्वार-अप्पुल्लं।

**४.** कहीं कहीं परिमाणार्थक प्रत्यय के योग में किम् इत्यादि पदों के स्थान पर केद्दह, केतिअ आदि रूप होते है। जैसे-

(क) **किमत्**—केद्दह, केत्तिअ। ५.३० से अनुस्वार-**केदहं, केत्तिअं**।

(ख) **यावत्**—२.३१ से यकार का जकार-जावत्। प्रत्यय होने पर-जेद्दह, जेत्तिअ। ५.३० से अनुस्वार–**एद्दहं, एत्तिअं**।

(ग) **एतावत्**—प्रत्यय होने पर **एद्दह, एत्तिअ**। ५.३० से अनुस्वार–**एद्दह, एत्तिअं**।

५. **कृत्वस्** प्रत्यय के स्थान पर 'हुत्तम्' होता है। जैसे–

(क) **सहस्रकृत्वम्**—३.३ से रेफ का लोप-सहसकृत्वम्। ३.५० से सकार का द्वित्व-सहस्सकृत्वम्। कृत्वस्। का हुत्तम्-सहस्सहुत्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सहस्सहुत्तं**।

(ख) **शतकृत्वम्**—२.४३ से श का स-सतकृत्वम्। २.२ से तकार का लोप-सअकृत्वम्। कृत्वस् का हुत्तम्-सअहुत्तम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**सअहुत्तं**।

६. जातिवाचक पदों से बाद में स्वार्थ में विकल्प से 'क' प्रत्यय होता है। जैसे-

(क) **पद्मकम्**—३.५९ संयोग का विश्लेष-पदमकम्। २.२ से ककार का लोप-पदुमअम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार–**पदुमअं**। पक्ष में 'क' का अभाव–**पदुमं**।

## विद्युत्पीताभ्यां वा लः ॥२६॥

**पदच्छेद**—विद्युत्पीताभ्याम्। वा। लः।

**पदार्थ**—विद्युत्पीताभ्याम् = विद्युत् और पीत (इन पदों से)। वा = विकल्प से। लः = ल।

**सू०अ०**—विद्युत् और पीत (इन पदों से स्वार्थ में) विकल्प से ल (प्रत्यय) (होता है)।

**वृत्तिः—विद्युत्पीतशब्दाभ्यां परतः स्वार्थे लप्रत्ययो भवति। विज्जू (३-२७ द्य् = ज्, ३-५० जद्वित्वं, ५-१८ दीर्घः)। विज्जुली (ईबन्तः स्त्रियां, शेषं पूर्ववत्)। पीअं (२-२ त्लोपः, ५-३० बिन्दुः)। पीअलं (स्पष्टम्) ॥२६॥**

**व्याख्या**—विद्युत् और पीत-इन दोनों पदों से स्वार्थ में विकल्प से ल प्रत्यय होता है। जैसे–

१. **विद्युत्**—३.२७ से द्य का ज-विजुत्। ३.५० से जकार का द्वित्व-विज्जुत्। प्रस्तुत सूत्र से ल प्रत्यय–**विज्जुल**। स्त्रीलिङ्ग में इवन्त–**विज्जुली**। पक्ष में-३.२७ से द्य का ज-विजुत्। ३.५० से जकार का द्वित्व-विज्जुत्। ५.१८ से उकार का ऊकार और ४.६ से तकार का लोप-विज्जू।

२. **पीतम्**—२.२ से तकार का लोप-पीअम्। प्रस्तुत सूत्र से ल प्रत्यय-पीअलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**पीअलं**। पक्ष में-**पीअं**।

## वृन्दे वो रः ।।२७।।

**पदच्छेद**—वृन्दे। वोः। रः।

**पदार्थ**—वृन्देः = वृन्द (इस पद) में। वोः = वकार से वाद में। रः = रेफ।

**सू०अ०**—वृन्द (इस पद) में वकार से बाद में (स्वार्थ में विकल्प से) र होता है।

**वृत्तिः—वृन्दशब्दे वकारात्परः स्वार्थे रेफो वा प्रयोक्तव्यः। व्रन्दं (१-२७ ऋ = अ, वकारात्परे रेफे कृते, ४-१७ वर्गान्तः, ५-३० बिन्दुः)। वंदं (१-२७ ऋ = अ, शेषं स्पष्टम्) ।।२७।।**

**व्याख्या**—वृन्द इस पद में वकार से वाद मे स्वार्थ में रेफ हो जाजा है। जैसे–

१. **वृन्दम्**—१.१७ से ऋकार का अकार-वन्द। प्रस्तुत सूत्र से वकार से बाद में रेफ-व्रन्द। ५.३० से अनुस्वार-व्रन्दं। पद में-**वंदं**।

## करेण्वां रणोः स्थितिपरिवृत्तिः ।।२८।।

**पदच्छेद**—करेण्वां। रणोः। स्थितिपरिवृत्तिः।

**पदार्थ**—करेण्वाः = करेणु (इस पद) के रणोः-रेफ और लकार का। स्थिति-परिवृत्तिः स्थान का परिवर्तन।

**सू०अ०**—(स्त्रीलिङ्ग में) करेणु (इस पद) के रेफ और णकार का स्थान परि-वर्तन (हो जाता है)।

**वृत्तिः—करेणुशब्दे रेफणकारयोः स्थितिपरिवृत्तिर्भवति। कणेरू। पुंसि न भवति, करेणू (५-१८ दीर्घः) ।।२८।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में करेणु-इस पद में रेफ और णकार का स्थान परिवर्तन (अर्थात् रेफ के स्थान पर णकार और णकार के स्थान पर रेफ) हो जाता है। यह परिवर्तन स्त्रीलिङ्ग वाले करेणु पद में होता है, पुलिङ्ग में नहीं। जैसे–

१. **करेणुः**—स्त्रीलिङ्ग में प्रस्तुत सूत्र से रेफ और णकार का स्थान परिवर्तन-कणेरुः। ५.१८ से उकार का ऊकार-कणेरू। पुलिङ्ग में ५.१८ से उकार का दीर्घ-करेणू।

## अलाने नलोः ।।२९।।

**पदच्छेद**—आलाने। नलोः।

**पदार्थ**—आलाने = आलान-(इस पद) में । नलोः = मकार और लकार का ।

**सू०अ०**—आलान (इस पद) में नकार और लकार का (स्थान परिवर्तन हो जाता है) ।

**वृत्तिः—आलानशब्दे लकारनकारयोर्हल्मात्रयोः स्थितिपरिवृत्तिर्भवति। आणालखम्भो (३-२७ सूत्रे स्पष्टम्) ।।२९।।**

**व्याख्या**—आलान–इस पद में नकार और लकार का (परस्पर) स्थान परिवर्तन हो जाता है । जैसे–

१. **आलानस्तम्भः**—प्रस्तुत सूत्र से नकार और लकार का स्थान परिवर्तन-आनालस्तम्भः । २.४२ से नकार का णकार-आलाणस्तम्भः । ३.१२ से स्त का ख-आलाणखम्भः । ५.१ से सु सहित अकार का ओकार–**आलाणखम्भो** ।

## बृहस्पतौ बहोर्भऔ ।।३०।।

**पदच्छेद**—बृहस्पतौ । बहोः । भऔ ।

**पदार्थ**—बृहस्पतौ = बृहस्पति (इस पद) में । बहोः = बकार और हकार का । भऔ = भकार और अकार ।

**सू०अ०**—बृहस्पति (इस पद) में बकार और हकार के स्थान पर (क्रमशः) भकार और अकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—बृहस्पतिशब्दे बकारहकारयोर्यथासंख्यं भकाराकारौ भवतः । भअप्फई (१-१७ ऋ = अ, वह-इत्यस्य भअकृते, ३-३५ स्प = फ्, ३-५० फ्द्वित्वं, २-२ तूलोपः, ५-१८ दीर्घः) ।।३०।।**

**व्याख्या**—बृहस्पति इस पद में बकार का भकार और हकार का अकार होता है। जैसे–

१. **बृहस्पतिः**—१.१६ से ऋकार का अकार-बहस्पतिः । प्रस्तुत सूत्र से बकार का भकार और हकार का अकार-भअस्पति । ३.५० से स्प् का फ् । भअफतिः । ३.५० से फकार का द्वित्व-वअफफतिः । ३.५१ से पूर्ववर्ती फकार का पकार-भअप्फतिः । २.२ से तकार का लोप-भअप्फइः । ५.१८ से इकार का दीर्घ और ४.६ से सु का लोप–**भअप्फती** ।

## मलिने लिनोरिलौ वा ।।३१।।

**पदच्छेद**—मलिने । लिनोः । रिलौ । वा ।

**पदार्थ**—मलिने = मलिन (इस पद) में । लिनोः = लिकार और नकार के स्थान पर । वा = विकल्प से । इलौ = इकार और लकार ।

**सू०अ०**—मलिन (इस पद) में लिकार और नकार के स्थान पर विकल्प से (क्रमशः) इकार और लकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—मलिनशब्दे लिकारनकारयोर्यथासंख्यमिकारलकारौ वा भवतः। मइलं, मलिणं (पक्षे- २-४२ न् = ण्, बिन्दुः) ।।३१।।**

**व्याख्या**—मलिन-इस पद में लिकार के स्थान पर इकार और नकार के स्थान पर लकार हो जाता है। जैसे-

१. **मलिनम्**—प्रस्तुत सूत्र से लिकार के स्थान पर इकार और नकार के स्थान पर लकार-मइलम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**मइलं**। पक्ष में २.४२ से नकार के स्थान पर णकार-मलिणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-मलिणं।

## गृहे घरोऽपतौ ।।३२।।

**पदच्छेद**—गृहे। घरः। अपतौ।

**पदार्थ**—अपतौ = पति (यह पद) बाद में न होने पर। 'गृहे' = गृह के स्थान पर। घर = घर।

**सू०अ०**—पति (–यह पद) बाद में होने पर गृह के स्थान पर घर हो जाता है।

**वृत्तिः—गृहशब्दे घर इत्ययमादेशो भवति, पतिशब्दे परतो न भवति। घरं (५-३० बिन्दुः) = भवनम्। अपताविति किम्? गहपई (१-१८ ऋ = अ, २-१५ प् = व्, २-३ त्लोपः, ५-१८ दीर्घः) ।।३२।।**

**व्याख्या**—'गृह' के स्थान पर 'घर' होता है किन्तु 'पति'–यह पद बाद में होने पर 'गृह' के स्थान पर 'घर' नहीं होता। जैसे-

१. **गृहम्**—प्रस्तुत सूत्र से गृह के स्थान पर घर-घरम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**घरं**।

२. **गृहपतिः**—१.१८ से ऋकार का अकार-गहपतिः। २.१५ से पकार का वकार-गहवतिः। २.२ से तकार का लोप-गहवइः। ५.१८ से इकार का ईकार और ४.६ से सु का लोप-**गहवई**।

## दाढादयो बहुलम् ।।३३।।

**पदच्छेद**—दाढादयः। बहुलम्।

**पदार्थ**—दाढादयः = दाढा इत्यादि (पद)। बहुलम् = प्रायः।

**सू०अ०**—दाढा इत्यादि (पद) प्रायः (निपातन से होते हैं)।

**वृत्तिः—दाढा-इत्येवमादयः शब्दा बहुलं निपात्यन्ते दंष्ट्रादिषु। दंष्ट्रा = दाढा।**

**इदानीं-एण्हि । दुहिता = धीआ, धूदा । चातुर्यं = चातुलिअं । मण्डूकः = मण्डूरो । गृहेनिहितं = घरेणिहितं । उत्पलं = कन्दोट्ठो । गोदावरी = गोला । ललाटं = णिडालं । भूः = भुमआ । वैदूर्य्यं = वेलुरिअं । उभयपार्श्वं = अवहोवासं । चूतः = माइंदो, माअंदो । दंष्ट्रादिषु दाढादयो निपातसिद्धाः शब्दाः संस्कृतशब्दानुसारेण देससंकेतप्रवृत्तभाषाशब्दानुसारेण च यथा यथं लिङ्गेषु प्रयोज्याः, स्पष्टाश्चैतेऽतोऽलंविस्तरेण । आदिशब्दोऽयं प्रकारे, तेन सर्व एव देशसंकेतप्रवृत्तभाषाशब्दाः परिगृहीताः ।।३३।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य चतुर्थः परिच्छेदः ।। ।।**

**व्याख्या**—श्रवण, अनुमान, अध्याहार, वाक्यार्थ और परिकल्पना के आधार पर द्रंष्टा इत्यादि के स्थान पर दाढा इत्यादि (पद) प्रायः निपातन से होते हैं। जो प्राकृत शब्द संस्कृत से नहीं निकले हुए है, प्रत्युत देशी शब्द हैं, उन सभी की गणना इस गण में होती है। जैसे–

दंष्ट्रा = द्ाढा । इदानीम् = एण्हिं । दुहिता = धीआ, धूदा । चातुर्यम् = चातुलिअं । मण्डूकः = मण्डूरो । गृहेनिहितम् = घरेणिहितं । उत्पलम् = कन्दोटोट्ठो । गोदावरी = गोला । ललाटम् = णिडालं । भूः = भूमआ । वैदूर्यम् = वेलुरिअं । उभयपार्श्वम् = अवहोवासं । चूत = माइंदो, माअंदो ।

**विशेष**—

(१) दंष्ट्र इत्यादि के स्थान पर दाढा इत्यादि निपातन से सिद्ध पद संस्कृत शब्दों के अनुसार और लोक में प्रचालित भाषा के शब्दों के अनुसार जिस भी किसी प्रकार से लिङ्ग में प्रयुक्त है, वे स्पष्ट है । बहुल के प्रयोग से स्पष्ट है कि ये शब्द कहीं निपातन से है, और कहीं नित्य होते है।

(२) प्राकृत-प्रकाश की सञ्जीवनी और सुबोधिनी व्याख्या में ऐसे निपातन वाले शब्दों की सूची दी गयी है जो इस प्रकार है—

दंष्टाललाटपत्तीनां स्युभ्रुवो व्याकुलस्य च ।
दाढा-णिडाल-पाइक्क-भुमआ-वावलाः क्रमात् ।।

अधोवैदूर्यशुक्तीनां वधूभ्रमितशब्दयोः ।
हेट्ठं वेरुल्लिअं सुप्पी अउज्झा चाथ भामिअं ।।

दुहित्राकृष्टयोस्तद्वत् स्यात् श्वश्रूलेलिहानयोः ।
धूआ आअट्ठिअं चैव अत्ता लल्लक्कमेव च ।।

मण्डलीसमयेदानीं निलयानां भवन्त्यमी ।
विचिल्लिअं च अच्छुक्कं एण्हिं चाथ निलेहणं ।।

कडसी अवहो आसं श्मशानोभयपार्श्वयोः ।
उत्पलस्य तु कंदोट्टं कोड्डं कौतूहलस्य च ॥
स्यात् जल्ललुइणी चेति लज्जावत्या निपातनम् ।
शालिवाहनशब्दस्य हालो शालाहणो तथा ॥
गोदावर्या गोला स्यादित्याद्या पाक्षिकाः पुनः ।
अहो वेदुज्जअं सुत्ती बह्वाद्या एवमादयः ॥
मातृष्वसृपितृस्वस्रोरत इत्वं सलुक् ततः ।
पक्षे च स्वसृशब्दस्य छा इत्येतन्निपात्यते ॥

॥ इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का चतुर्थ परिच्छेद पूर्ण हुआ ॥

# पञ्चमः परिच्छेदः

## ( विशेष्यस्य सुबन्तविधानम् )

### अत ओत् सोः ।।१।।

**पदच्छेद**—अतः । ओत् । सोः ।

**पदार्थ**—अतः = अकारान्त । सो = सु के स्थान पर । ओत् = ओकार ।

**सू०अ०**—अकारान्त (प्रतिपदिक) से बाद वाले सु के स्थान पर (पूर्ववर्ती अकार के साथ) ओकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अकारान्ताच्छब्दात्परस्य सोः स्थाने ओत्वं भवति। वच्छो (१-३२। ३-३० । ३-३१ सुत्रेषु स्पष्टम्) । वसहो (१-२७ । २-४३ सूत्रे स्पष्टम्) । परिसो (१-२३ सूत्रे स्पष्टम्) । वृक्षः, वृषभः, पुरुषः ।।१।।**

**व्याख्या**—अकार है अन्त में जिसके ऐसे प्रतिपदिक से बाद वाले प्रथमा विभक्ति के एक वचन वाले प्रत्यय सु के स्थान पर पूर्ववर्ती अकार के सहित ओकार हो जाता है। जैसे–

१. **वृक्षः**—१.३२ से ऋकार का अकार-वक्षः । ३.३ से क्षकार का छकार-वछः । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छः । प्रस्तुत सूत्र से सु का पूर्ववर्ती अकार के साथ ओकार–**वच्छो** ।

२. **वृषभः**—१.३२ से ऋकार का अकार-वषभः । २.४३ से षकार का सकार-वसभः । २.२७ से भकार का हकार-वसहः । प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती अकार के साथ सु का ओकार–**वसहो** ।

३. **पुरुषः**—१.२३ से उकार का इकार-पुरिषः । २.४३ से षकार का सकार-पुरिसः । प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती अकार के सहित सु का ओकार–**पुरिसो** ।

### जश्शसोर्लोपः ।।२।।

**पदच्छेद**—जश्शसोः । लोपः ।

**पदार्थ**—जश्शसोः = जश् और शस् का । लोपः = लोप ।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रतिपादिक से बाद में) जश् और शस् का लोप (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अत इत्यनुवर्तते । अकारान्तस्यान्तरं यौ जश्शसौ तयोर्लोपो भवति । वच्छा सोहंति । 'जश्शसृङस्यांसु दीर्घः' इति दीर्घे कृते पश्चाल्लोपो जसः (१-२७ ऋ = अ, ३-३१ छत्वविकल्प, ३-५० द्वित्वं, ३-५१ छ् = च्, ५-११ जसि दीर्घे कृते लोपः, सोहंति इति २-४३ श् = स्, २-२७ भ् = ह्, ७-४ न्ति) । वृक्षाः शोभन्ते । वच्छे णिअच्छह (पूर्ववत् वृक्ष = वच्छ, ५.१२ सुपीत्येत्वे कृते शसो लोपः, णिअच्छह इति २-४२ न् = ण्, २-२ यलोपः, ७-१८ त् = ह) । वृक्षान्नियच्छत ।।२।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जश् और द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् अकारान्त प्रातिपदिक से बाद में लुप्त हो जाता है। जैसे-

१. **वृक्षाः शोभन्ति**—वृक्षाः–१.२६ से ऋ का अ = वक्ष । ३.३१ से क्षकार का विकल्प से छकार-वृछ । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छः । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ । ५.११ जश बाद में होने से अकार का दीर्घ और प्रस्तुत सूत्र से जश् का लोप-**वृच्छा** । **शोभन्ति**-२.४३ से शकार का सकार-सोभन्ति । २.२७ से भकार का हकार-सोहन्ति । **वच्छा सोहन्ति** ।

२. **वृक्षान् नियच्छत**—वृक्षान् १.२७ से ऋकार का अकार वक्षान् । ३.३१ से क्षकार का छकार-वछ । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छच्छान् । ५.१२ से शस् बाद में होने से अकार का एकार और प्रस्तुत सूत्र से शस् का लोप–वच्छे । नियच्छत-२.४२ से न का ण-णियच्छत । २.२ से यकार का लोप-णिअच्छत । ७.१८ से तकार का हकार-**णिअच्छह** । **वच्छे णिअच्छह** ।

## अतोऽमः ।।३।।

**पदच्छेद**—अतः । अमः ।

**पदार्थ**—अतः = अकारान्त (प्रातिपदिक) से बाद वाले । अमः = अम् का ।

**सू०अ०**—अकारान्त (प्रातिपदिक) से बाद वाले अम् का (अकार लुप्त हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अकारान्तस्यानन्तरं योऽम् द्वितीयैकवचनं तदकारस्य लोपो भवति । वच्छं पेक्खइ । 'मो बिन्दुः' (४-१२) इति बिन्दुः । वृक्षं पश्यति ।।३।।**

**व्याख्या**—अम् द्वितीया विभक्ति के एकवचन में लगने वाला सुप् प्रत्यय है। जब वह अकारान्त प्रातिपदिक से बाद में आता है तो उसका अकार लुप्त हो जाता है। जैसे–

**वृक्षं पश्यति**—वृक्षम्—१.२७ से ऋकार का अकार-वक्षम्। ३.३१ से क्षकार का छकार-वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार को चकार–वच्छ। ५.३० से मकार का अनुस्वार-वच्छं। पश्यति-२.१८ से दृश् का पेक्ख-पेक्खति। २.२ से तकार का लोप-पेक्खइ। **वच्छं पेक्खइ**।

## टामोर्णः ॥४॥

**पदच्छेद**—टामोः। णः।

**पदार्थ**—टामोः = टा और आम् का। णः = ण।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) टा और आम् का ण (हो ज़ाता है)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरं टामोस्तृतीयैकवचनषष्ठीबहुर्वचनयोर्णकारो भवति। वच्छेण। 'ए च सुपी' त्येत्वम् (५-१२ एत्वे कृते, टा = ण)। वच्छाण ('जश्शस्ङस्यांसु दीर्घ' इति दीर्घः)। वृक्षेण। वृक्षाणाम्॥४॥**

**व्याख्या**—टा तृतीया विभक्ति के एकवचन और आम् षष्ठी विभक्ति के बहुवचन का सुप् प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले इन प्रत्ययों के स्थान पर ण हो जाता है। जैसे–

१. **टा का-वृक्षेण**—१.२७ से ऋ का अ-वक्ष। ३.३१ से क्षकार का विकल्प से छकार-वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। ५.१२ से अकार का एकार और प्रस्तुत सूत्र से टा का ण–**वच्छेण**।

२. **आम् का—वृक्षाणाम्**—१.२७ से ऋ का अ-वक्ष। क्षकार का विकल्प से छकार-वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। ५.१ से आम् बाद में होने के कारण अकार का दीर्घ-वच्छा। प्रस्तुत सूत्र से आम् का ण-वच्छणण।

## भिसो हिं ॥५॥

**पदच्छेद**—भिसः। हिं।

**पदार्थ**—भिसः = भिस् के स्थान पर। हिं = हिंकार।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) भिस् के स्थान पर हिं (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य भिसो हिं भवति। वच्छेहिं। 'ए च सुपी' त्येत्वम्, (५-१२ एत्वं, शेषं स्पष्टम्) वृक्षैः॥५॥**

**व्याख्या**—भिस् तृतीया विभक्ति बहुवचन का सुप् प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद में भिस् के स्थान पर हिं होता है। जैसे–

**१. वृक्षैः**—१.२७ से ऋकार का अकार-वक्ष। ३.३१ से क्षकार का छकार-वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। ५.१२ से भिस् बाद में होने के कारण अकार का एकार-वच्छे। प्रस्तुत सूत्र से भिस् का हिं–**वच्छेहिं**।

## ङसेरादोदुहयः ।।६।।

**पदच्छेद**— ङसेः। आदोदुह्यः।

**पदार्थ**—ङसे = ङसि के स्थान पर। आदोदुह्हयः = आ, दो, दु तथा हि।

**सू० अ०**—(अकारान्त प्रातिपादिक से बाद वाले) ङसि के स्थान पर आ, दो, दु और हि (होते है)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य ङसेः पञ्चम्येकवचनस्य स्थाने आ, दो, दु, हि- इत्येत आदेशा भवन्ति। वच्छा, वच्छादो, वच्छादु, वच्छाहि। जश्शसूङस्यांसु दीर्घत्वम् (स्पष्टाः)। वृक्षात्।।६।।**

**व्याख्या**—ङसि पञ्चमी विभक्ति एकवचन का सुप् प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले ङसि के स्थान पर आ, दो, दु और हि होते हैं। जैसे–

**१. वृक्षात्**—१.२७ से ऋ का अ-वक्ष। ३.३१ से क्ष का छ-वछ। ३.५० से छ का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। ५.११ से ङसि बाद में होने से अकार का दीर्घ-वच्छा। प्रस्तुत सूत्र से ङसि के स्थान पर आ, दो, दु और हि–**वच्छा, वच्छादा, वच्छादु, वच्छहिं**।

## भ्यसो हिन्तो सुन्तो ।।७।।

**पदच्छेद**—भ्यसः। हिन्तो। सुन्तो।

**पदार्थ**—भ्यसः = भ्यस् के स्थान पर। हिन्तो सुन्तो = हिन्तो और सुन्तो।

**सू० अ०**—(आकरान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) भ्यस् के स्थान पर हिन्तो और सुन्तो (होते हैं)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य भ्यसो हिन्तो, सुन्तो, इत्येतावादेशौ भवतः। वच्छाहिन्तो, वच्छासुन्तो। 'ए च सुपी' (५-१२) ति चकारेण दीर्घत्वम् (स्पष्टम्) ।।७।।**

**व्याख्या**—भ्यस् चतुर्थी और पञ्चमी विभक्ति के बहुचवन का सुप् प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले भ्यस् के स्थान पर हिन्तो और सुन्तो होते हैं। जैसे–

१. **वृक्षेभ्यः**—१.२७ से ऋ का अ-वक्ष। ३.३१ से क्ष का छ–वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। ५.११ से अकार का दीर्घ-वच्छा। प्रस्तुत सूत्र से भ्यस् का हिन्तो और सुन्तो-**वच्छाहिन्तो, वच्छासुन्तो**।

## स्सो ङसः ।।८।।

**पदच्छेद**—स्सः। ङसः।

**पदार्थ**—ङसः = ङस् के स्थान पर। स्सः = स्स।

**सू०अ०**—(आकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) ङस् के स्थान पर स्स होता है।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य ङसः स्स इत्यादेशो भवति। वच्छस्स (स्पष्टम्)। वृक्षस्य ।।८।।**

**व्याख्या**—ङस् षष्ठी विभक्ति के एकवचन का सूप् प्रत्यय हैं। अकारान्त प्रतिपादिक से बाद वाले इस प्रत्यय के स्थान पर स्स होता है। जैसे-

१. **वृक्षस्य**—१.२७ से ऋ का अ–वक्ष। ३.३१ से क्ष का छ–वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व–वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार–वच्छ। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का स्स–**वच्छस्स**।

## ङेरेम्मी ।।९।।

**पदच्छेद**—ङेः। एम्मी।

**पदार्थ**—ङेः = ङि के स्थान पर। एम्मी = ए और म्मि।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रातिपादिक से बाद वाले) ङि के स्थान पर ए और म्मि (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य ङेः ए, म्मि इत्यादेशौ भवतः। वच्छे, वछम्मि। 'क्वचिन्ङसिङ्योर्लोपः' (५-१३) इत्यकारलोपः (स्पष्टम्)। वृक्षे ।।९।।**

**व्याख्या**—ङि सप्तमी विभक्ति एकवचन का प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद इसके स्थान पर ए और म्मि होता है। जैसे–

१. **वृक्षे**—१.२७ से ऋकार का अकार-वक्ष। ३.३१ से क्ष का छ-वछ। ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ। ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ। प्रस्तुत सूत्र से ङि का म्मि-**वच्छम्मि**। ५.१३ से अकार का लोप और प्रस्तुत सूत्र से ङि का ए-**वच्छे**।

## सुपः सुः ।।१०।।

**पदच्छेद**—सुपः । सुः ।

**पदार्थ**—सुपः = सुप् के स्थान पर । सुः = सु ।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) सुप् के स्थान पर सु (होता है)।

**वृत्तिः—अतोऽनन्तरस्य सुपः सु इत्यादेशो भवति । वच्छेसु = वृक्षेषु । 'ए च सूपी' (५-१२) त्येत्वम् (एवं वत्सशब्दरूपाण्यपि बोध्यानि) ।।१०।।**

**व्याख्या**—सुप् सप्तमी बहुवचन का विभक्ति प्रत्यय है। अकारान्त प्रातिपदिक से बाद में इसके स्थान पर सु होता है। जैसे-

**१. वृक्षेषु**—१.२७ से ऋकार का अकार-वक्ष । ३.३१ से क्षकार का छकार-वछ । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ । ५.१२ से सुप् बाद में होने से अकार का एकार-वच्छे । प्रस्तुत सूत्र से सुप् का सु-**वच्छेसु** ।

## जश्शस्ङस्यांसु दीर्घः ।।११।।

**पदच्छेद**—जश्शस्ङस्यांसु । दीर्घः ।

**पदार्थ**—जश्शस्ङ्स्यांसु = जश्, शस्, ङसि और आम्–ये बाद में होने पर । दीर्घः = दीर्घ ।

**सू०अ०**—जस्, शस्, ङसि और आम् बाद में होने पर (अकारान्त प्रातिपदिक का अकार) दीर्घ (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—जसादिषु परतोऽतो दीर्घो भवति । वच्छा सोहन्ति । 'जश्शसोर्लोप' इति जसो लोपः (५-२ सूत्रे स्पष्टम्) । वत्साः शोभन्ते । वच्छादो, वच्छादु, वच्छाहिं आगदो । वत्सात् । 'ङसेरादोदुह्यः' (५-६)। वच्छाण = वत्सेन । 'टामोर्णः (५-४) ।।११।।**

**व्याख्या**—जस्, शस्, ङसि और आम् बाद मे होने पर अकारान्त प्रतिपादिक का अन्त्य अकार दीर्घः अर्थात् आकार हो जाता है। जैसे-

**१. जश् और शस् बाद में होने पर**—वृक्षाः = वच्छा (द्रष्टव्य ५.२ और ३ का उदाहरण-१) ।

**२. ङसि बाद में होने पर**—वृक्षाणाम् = वच्छाण (द्रष्टव्य ५.६ का उदाहरण-२)।

**३. आम् बाद में होने पर**—वृक्षाणाम् = वच्छाण (द्रष्टव्य ५.४ का उदहारण-२)।

## ए च सुप्यङिङसोः ।।१२।।

**पदच्छेद**—ए । च । सुपि । अङिङसोः ।

**पदार्थ**—अङिङसो = ङि और ङस् को छोड़कर । सुपि = सुप् बाद में होने पर । ए = ए । च = भी ।

**सू०अ०**—ङि और ङस् प्रत्यय को छोड़कर अन्य सुप् बाद में होने पर (प्रातिपादिकान्त्य अकार का) एकार भी (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अतोऽकारस्यैत्वं भवति सुपि परतो ङिङसौ वर्जयित्वा, चकाराद्दीर्घश्च । वच्छे (वृक्षान्) पेक्खह । 'जश्शसोर्लोपः' (५-२) । (१२-१८ दृश् = पेक्ख, ८-१९ थ = ह, = पश्यत) । वच्छेण । 'टामोर्णः'। वृक्षेण । वच्छेहिं = वक्षैः । वच्छेसु = वृक्षेषु । चकाराद्दीर्घश्चेति । वच्छाहिंतो, वच्छज्ञसुंतो, वच्छासुंतो, वृक्षे । भ्यसो हिंतो सून्तो । अङिङसोरिति किम्? वच्छम्मि = वृक्षे । वच्छस्स = वृक्षस्य।।१२।।**

**व्याख्या**—सूत्र से प्रयुक्त चकार से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित प्रातिपदिकान्त्य अकार का ग्रहण हो जाता है। ङि और ङस् को छोड़कर अन्य सुप् बाद में होने पर प्राति-पदिकान्त्य अकार का एकार होता है और दीर्घ भी होता है। जैसे–

**१. एकार का—(क)** वृक्षान् = वच्छे (द्रष्टव्य ५.२ उदाहरण-२) ।

**(ख) वृक्षेण** = वच्छेण (द्रष्टव्य ५.४ उदाहरण-२) ।

**(ग)** वृक्षैः = वच्छेहिं (द्रष्टव्य ५.५ उदाहरण) ।

**(घ)** वृक्षेषु = वच्छेसु (द्रष्टव्य ५.१० उदाहरण) ।

**२. दीर्घ (क)** वृक्षेभ्यः = वच्छाहिन्तो, वच्छासुंतो (द्रष्टव्य ५.७ उदाहरण) ।

**विशेष**—ङि और ङस् बाद में होने पर ए तथा दीर्घ नहीं होता है। जैसे-

**१. ङि बाद में होने पर**—वृक्षे = वच्छम्मि (द्रष्टव्य ५.९ का उदाहरण) ।

**२. ङस् बाद में होने पर**—वृक्षस्य = वच्छस्स (द्रष्टव्य ५.८ का उदाहरण) ।

## क्वचिद् ङसिङ्योर्लोपः ।।१३।।

**पदच्छेद**—क्वचित् = ङसिङ्योः । लोपः ।

**पदार्थ**—क्वचित् = कहीं कहीं । ङसिङ्योः = ङसि और ङि का लोप = लोप ।

**सू०अ०**—(अकारान्त प्रातिपदिक से बाद में) कहीं-कहीं ङसि और ङि बाद में होने पर हो (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अतो ङसि, ङि-इत्येतयोः परतः क्वचिल्लोपो भवति । वच्छा**

**आगदो। 'ङसेरादोदुह्य' इति आ (आगदो इति आङ्पूर्वकगमेः क्तान्तस्य १२-३ त = द, ५-१ ओ)। वच्छे ठिअं = वत्से स्थितम्। 'ङेरेम्मी' (५-९) इत्येत्वम्, (ठिअं० स्था = ष्ट = ठ, शेषं संस्कृतवद्) ।।१३।।**

**व्याख्या**—कहीं-कहीं ङसि और ङि बाद में होने पर (अकारान्त प्रातिपादिक के अन्त्य अकार का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **वृक्षे = वच्छे**–५.९ से ङि के स्थान पर ए होने पर अकारान्त प्रतिपादिक वच्छ (द्रष्टव्य ५.९ का उदाहरण) के अन्त्य अकार का का लोप होकर वच्छे रूप बनता है।

## इदुतोः शसो णो ।।१४।।

**पदच्छेद**—इदुतोः। शसो। णः।

**पदार्थ**—इदुतोः = इकारान्त और उकारान्त (प्रातिपदिक) से बाद वाले। शसः = शस् के स्थान पर। णो = णो।

**सू०अ०**—इकारान्त और उकारान्त (प्रातिपदिक) से बाद वाले शस् के स्थान पर णो (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इदुदन्तयोः शसो णो भवति। अग्गिणो पेक्खह (४-१२ सूत्रे अग्गि इत्यत्र निष्पादितात् शसो णो। अग्नीन्। वाउणो पेक्ख (२-२३ यलोपः, शेषं पूर्ववत्) वायून्। ('पेक्ख' इति शौरसेन्यां दृशेः पेक्खादेशो भवति, तस्याश्च 'प्रकृतिः संस्कृतम्' इति संस्कृतवद् हेर्लुक् भवति) ।।१४।।**

**व्याख्या**—इकारान्त और उकारान्त प्रातिपदिक से वाद वाले शस् के स्थान पर णो हो जाता है। जैसे-

१. **इकारान्त—अग्नीन्**—३.२ से नकार का लोप–अग्नि। ३.५० से गकार का द्वित्व अग्गि। प्रस्तुत सूत्र से इकारान्त प्रातिपादिक से बाद में वाले शस् के स्थान पर णो-**अग्गिणो**।

२. **उकारान्त—वायून्**—वायु-२.२ से यकार का लोप-वाउ। प्रस्तुत सूत्र से शस् का णो-**वाउणो**।

## ङसो वा ।।१५।।

**पदच्छेद**—ङसः। वा।

**पदार्थ**—ङसः = ङस् के स्थान पर। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—(इकारान्त और उकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले) ङस् के स्थान पर विकल्प से (णो होता है)।

**वृत्तिः—इदुदन्तयोर्ङसो वा णो भवति। अग्गिणो, अग्गिस्स स्पष्टम्)। वाउणो, वाउस्स (२-२ यलोपे कृते, ङसो णो, पक्षे ५-८ = स्स)। अग्नेः, वायोः ।।१५।।**

**व्याख्या**—पूर्ववर्ती सूत्र से इकारान्त और उकारान्त तथा णो होने का अध्याहार हो रहा है। इस प्रकार इकारान्त और उकारान्त ङस के स्थान पर विकल्प से णो होता है-यह अर्थ है। पक्ष में ५.८ से स्स भी होता है। जैसे-

१. **इकारान्त–अग्नेः**—अग्नि = ३.२ से नकार का लोप-अगि। ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का णो-**अग्गिणो**। पक्ष में ५.८ से ङस् का स्स-**अग्गिस्स**।

२. **उकारान्त–वायोः**—वायु = २.२ से यकार का लोप-वाउ। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का णो-वाउणो। पक्ष में ५.८ से ङस् का स्स-**वाउस्स**।

## जसश्च ओ यूत्वम् ।।१६।।

**पदच्छेद**—जसः। ओ। यूत्वम्।

**पदार्थ**—जसः-जस् के स्थान पर। ओ = ओ। यूत्वम् = ईकार तथा ऊकार।

**सू०अ०**—(इकारान्त और उकारान्त प्रातिपादिक से बाद वाले) जस् के स्थान पर (विकल्प से) ओ (हो जाता है) (और अन्त्य इकार तथा उकार का क्रमशः ईकार तथा ऊकार हो (जाता है)।

**वृत्तिः—इदुदन्तयोर्जस आकारादेशो भवति, इदुतोश्च ईत्वम्, ऊत्वं वा चकाराद् णो च। अग्गीओ। वाऊओ। अग्गिणो। वाउणो (स्पष्टानि)। अग्नयः। वायवः ।।१६।।**

**व्याख्या**—इकारान्त और उकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले जस् के स्थान पर विकल्प से ओ हो जाता है और इकारान्त तथा उकारान्त प्रातिपदिकों का अन्त्य स्वर इकार और उकार दीर्घ क्रमशः ईकार और ऊकार हो जाते हैं। जैसे-

१. **अग्नयः**—अग्नि-३.२ से नकार का लोप-अगि। ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ओकार और इकार दीर्घ-**अग्गीओ**। पक्ष में ५.१४ से णो-अग्गिणो।

२. **वायवः**—वायु-२.२ से यकार का लोप-वाउ। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ओ और उकार का दीर्घ-**वाऊओ**। पक्ष में ५.१४ से णो-**वाउणो**।

## टा णा ।।१७।।

**पदच्छेद**—टा। णा।

**पदार्थ**—टा = टा। णा = णा।

**सू०अ०**—(इकारान्त और उकारान्त प्रतिपदिक से बाद वाला) टा णा (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इदुदन्तयोष्टाविभक्तेः णा इत्ययमादेशो भवति। अग्गिणा। वाउणा (स्पष्टे)। अग्निना। वायुना।।१७।।**

**व्याख्या**—तृतीया विभक्ति एकवचन का प्रत्यय 'टा' इकारान्त तथा उकारान्त प्रतिपादिक से बाद में णा हो जाता है। जैसे-

१. **अग्निना**—अग्नि-३.२ से नकार का लोप-अगि। ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि। प्रस्तुत सूत्र से टा का णा-**अग्गिणा**।

२. **वायुना**—वायु २.२ से यकार का लोप-वाउ। प्रस्तुत सूत्र से टा का णा-**वाउणा**।

## सुभिस्सुप्सु दीर्घः ।।१८।।

**पदच्छेद**—सुभिस्सुप्सु। दीर्घः।

**पदार्थ**—सुभिस्सुप्सु = सु, भिस् और सुप् बाद में होने पर। दीर्घः = दीर्घ।

**सू०अ०**—सु, भिस् और सु बाद में होने पर (इकारान्त तथा उकारान्त प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर) दीर्घ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इदुदन्तयोः सु, भिस्, सुप् इत्येतेषु दीर्घो भवति। सु–अग्गी (३-२ नलोपः, ३-५० गद्वित्वं, ४-६ सोर्लोपः, शेषं स्पष्टम्)। अग्निः। वाऊ (२-२ यलोपः, शेषं स्पष्टम्)। वायुः। भिस्–अग्गीहिं (४-६ सोर्लोपः, ५-५ भिस् = हिं,)। अग्निभिः। वाऊहिं (२-२ यलोपः, शेषं पूर्ववत्)। वायुभिः। सुप्–अग्गीसु (३-२ नलोपः, ३-५० गद्वित्वं, दीर्घः, २-४३ ष् = स्)। अग्निषु। वाऊसु (२-२ यलोपः, दीर्घः, २-४३ ष् = स्)। वायुषु।।१८।।**

**व्याख्या**—प्रथमा एकवचन के प्रत्यय सु, तृतीया बहुवचन के प्रत्यय भिस् और सप्तमी बहुवचन के प्रत्यय सुप् बाद में होने पर इकारान्त तथा उकारान्त प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे-

१. **प्रथमा एकवचन**—

(क) **अग्निः**—३.२ से नकार का लोप-अगिः। ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गिः। प्रस्तुत सूत्र से इकार का दीर्घ-अग्गीः। ४.६ से सु का लोप-अग्गी।

(ख) **वायुः**—२.२ से यकार का लोप-वाउः। प्रस्तुत सूत्र से उकार का दीर्घ-वाऊः। ४.६ से सुकार का लोप-**वाऊ**।

२. **तृतीया बहुवचन—**

**(क) अग्निभिः**—३.२ से नकार लोप-अगि। ३.५० से गकार का द्वित्व–अग्गि। ५.५ से भिस् का हिं-आग्गिहिं। प्रस्तुत सूत्र से स्वर का दीर्घ-अग्गीहिं।

**(ख) वायुभिः**—३.२ से यकार का लोप-वाउ। ५.५ से भिस् का हिं–वाउहिं:। प्रस्तुत सूत्र से उकार का दीर्घ-वाऊमिस्। ५.५ से भिस् का हिं-**वाऊहिं**।

३. **सप्तमी बहुवचन मे**

**(क) अग्निषु**—३.२ से नकार का लोप-अगिषु ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गिषु। प्रस्तुत सूत्र से इकार का दीर्घ-अग्गीषु। २.४३ से षकार का सकार-**अग्गीसु**।

**(ख) वायुषु**—३.२ से यकार का लोप-वाउषु। प्रस्तुत सूत्र से उकार का दीर्घ-वाऊषु। २.५ से षकार का सकार-**वाऊसु**।

## स्त्रियां शस उदोतौ ।।१९।।

**पदच्छेद**—स्त्रियाम्। शसः। उदोतौ।

**पदार्थ**—स्त्रियाम् = स्त्रीलिङ्ग में। शसः = शस् के स्थान पर। उदोतौ = उकार और ओकार।

**सू०अ०**—स्त्रीलिङ्ग में शस् के स्थान पर उकार और ओकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्त्रियां वर्तमानस्य शस उत् ओत् इत्येतावादेशौ भवतः। मालाउ, मालाओ। (स्पष्टे)। मालाः। णईउ, णईओ (२-३८ न् = ण्, २-२ दलोपः, शेषं स्पष्टम्)। नदीः। बहूउ, बहूओ (२-२७ ध् = ह्, शेषं स्पष्टम्)। वधूः ।।१९।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्गमें प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय शस् के स्थान पर उकार और औकार होते है। जैसे-

१. **मालाः**—प्रस्तुत सूत्र से शस् का उकार अथवा ओकार-**मालाउ, मालाओ**।

२. **नदी**—२.३८ से नकार का णकार-णदी। २.२ से दकार का लोप-णई। प्रस्तुत सूत्र से शस् का उकार अथवा ओकार-**णईउ, णईओ**।

३. **बधूः**—२.२७ से धकार का हकार-बहूः। प्रस्तुत सूत्र से शस् का उकार अथवा ओकार-**बहूउ, बहूओ**।

## जसो वा ।।२०।।

**पदच्छेद**—जसः। वा।

**पदार्थ**—जसः = जस् के स्थान पर। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—(स्त्रीलिङ्ग में) जस् के स्थान पर विकल्प से (उकार तथा ओकार होते हैं)।

**वृत्तिः—जसः स्त्रियाम् उत् ओत् इत्येतावादेशौ वा भवतः। पक्षे अदन्तवत्। मालाउ, मालाओ। माला (स्पष्टम्, अदन्ते ५-२ जसो लोपः)। मालाः ।।२०।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय जस् के स्थान पर विकल्प से उकार तथा ओकार होते हैं। पक्ष में पुल्लिंग के समान ५.२ से जस् का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **मालाः**—प्रस्तुत सूत्र से जस् के स्थान पर उकार अथवा ओकार-**मालाउ, मालाओ**। पक्ष में ५.२ से जस् का लोप-**माला**।

## अमि ह्रस्वः ।।२१।।

**पदच्छेद**—अमि। ह्रस्वः।

**पदार्थ**—अमि = अम् बाद में होने पर। ह्रस्वः = ह्रस्व।

**वृत्तिः—अमि परतः स्त्रियां ह्रस्वो भवति। मालं (ह्रस्वे जाते, ५-३ अकार-लोपः, ४-१२ मकारबिन्दुः)। मालाम्। णइं (२-४२ न् = ण्, २-२ दलोपः ४-१ अमोऽकारलोपः, ४-१२ बिन्दुः)। नदीम्। बहुं (२-२७ ध् = ह्, शेषं स्पष्टम्) वधूम् ।।२१।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में अम् बाद में होने पर प्रातिपदिक का अन्त्य दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे-

१. **मालाम्**—प्रस्तुत सूत्र से अम् बाद में होने से प्रातिपादिक के अन्त्य दीर्घ स्वर का ह्रस्व-मालम्। ५.३ से अम् के अकार का लोप और ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**मालं**।

२. **नदीम्**—२.४२ से नकार का णकार-णदीम्। २.२ से दकार का लोप-णईम्। प्रस्तुत सूत्र से प्रातिपदिक के दीर्घ स्वर का ह्रस्व-णइ-अम्। ४.१ से अम् के मकार का लोप-णइम्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**णइं**।

३. **वधूम्**—२.२७ से धकार का हकार-बहू। प्रस्तुत सूत्र से प्रातिपदिक के दीर्घ स्वर का ह्रस्व-बहुअम्। ४.१ से अम् के अकार का लोप-बहुम्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**बहुं**।

## टाङस्ङीनामिदेददातः ।।२२।।

**पदच्छेद**—टाङस्ङीनाम्। इदेददातः।

**पदार्थ**—टाङस्ङीनाम् = टा, ङस् और ङि के स्थान पर। इदेतदातः = इकार,

एकार, अकार और आकार।

**सू०अ०**—(स्त्रीलिङ्ग में) टा, ङस् और ङि के स्थान पर इकार, एकार, अकार और आकार (होते है)।

**वृत्तिः—टा, ङस्, ङि, इत्येतेषां स्त्रियाम् इत्, आत्, एत् अत् इत्येत आदेशा भवन्ति। टा–णईइ, णईए, णईअ, णईआ, कअं। (२-४२ सूत्रे नकारस्य णः, दलोपः २-४२ शेषं स्पष्टम्)। नद्या। कअं इति (१-२७ सूत्रे स्पष्टम्) कृतम्। ङस्–णईइ, णईए, एाईअ, वणं। (णई पूर्ववत्, अन्यत्स्पष्टम्)। नद्याः। (वणं इति ४-१२ सूत्रे स्पष्टम्)। ङि-णईइ, णईए, णईअ, णईआ, ठिअं (पूर्ववत् णईशब्दः, शेषं सुगमम्)। नद्याम्। (ठिअं इति ५-१३ सूत्रे स्पष्टम्)। स्थितम्।।२२।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिंग वाले प्रातिपदिक से बाद में तृतीया एक वचन के प्रत्यय टा, षष्ठी एक वचन के प्रत्यय ङस् और सप्तमी एक वचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर इकार, एकार अकार और आकार होते है। जैसे-

१. **तृतीया एकवचन—नद्या**-नदी-२.४३ से नकार का णकार-णदी। २.२ से दकार का लोप-णई। प्रस्तुत सूत्र से टा के स्थान पर इकार, एकार अकार और आकार-**णईइ, णईए, णईअ, णईआ**।

२. **षष्ठी एकवचन-नद्याः**—नदी-२.४३ से नकार का णकार और २.२ से दकार का लोप-णई। प्रस्तुत सूत्र से ङस् के स्थान पर इकार, एकार अकार तथा आकार-**णईइ, णईए, णईअ, णईआ**।

३. **सप्तमी एकवचन-नद्याम्**—२.४३ से नकार का णकार और २.२ से दकार का लोप-णई। प्रस्तुत सूत्र से ङि के स्थान पर इकार, एकार, अकार तथा आकार-**णईइ, णईए, णईअ, णईआ**।

## नातोऽदातौ ।।२३।।

**पदच्छेद**—न। आतः। अदातौ।

**पदार्थ**—आतः = आकार से बाद। अदातौ = अकार और आकार। न = नहीं।

**सू०अ०**—(स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त प्रातिपदिक के) आकार से बाद (टा, ङस् और ङि के स्थान पर) अकार और आकार नहीं (होता है)।

**वृत्तिः—आत आकारान्तस्य स्त्रीलिङ्गस्यानन्तरं टा-ङस्-ङीनाम् अत्, आत्, इत्येतावादेशौ न भवतः। पूर्वेण प्राप्तौ निषिध्येते। मालाइ, मालाए। कअं। धणं, ठिअं। (५-२२ सूत्रावदेतावेन भवतः, अन्यत्स्पष्टम्) मालया।।२३।।**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त प्रातिपदिक के आकार से बाद में तृतीया एक वचन के प्रत्यय आ, षष्ठी एकवचन के प्रत्यय ङस् और सप्तमी एकवचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर अकार और आकार नहीं होते। प्रस्तुत सूत्र से पूर्ववर्ती सूत्र ५.२२ में विहित स्त्रीलिंग वाले आकारान्त प्रातिपादिक से बाद में टा, ङस् और ङि के स्थान पर अकार और आकार होने का निषेध किया गया है। इस प्रकार आकारान्त से बाद वाले टा, ङस्, और ङि के स्थान पर इकार और एकार का होना ही प्राप्त होता है। जैसे-

**१. मालाया**—माला + टा-५.२२ से टा के स्थान पर इकार और एकार तथा सूत्र से अकार और आकार होने का निषेध-**मालाइ**, **मालाए**।

**विशेष**—इसी प्रकार प्रस्तुत सूत्र से ङस् और ङि के स्थान पर भी अकार और आकार होने के निषेध को समझ लेना चाहिए। इस प्रकार षष्ठी एक वचन में मालाया: और सप्तमी एकवचन मालायाम्-दोनों के स्थान पर मालाइ और मालाए दोनों समान रूप बनते हैं।

## आदीतौ बहुलम् ।।२४।।

**पदच्छेद**—आदीतौ। बहुलम्।

**पदार्थ**—आदीतौ = आकार और ईकार। बहुलम् = बहुलता से, प्राय:।

**सू०अ०**—(आकारान्त प्रातिपदिक के अन्त्य स्वर आकार के स्थान पर प्राय: बहुलता से आकार और ईकार होता है।

**वृत्तिः—स्त्रियामाकारान्तादात: स्थाने आत्, ईत् इत्येतौ बहुलं प्रयोक्तव्यौ। सहमाणा, सहमाणी (२-४२ न् = ण्, शेषं स्पष्टम्)। हलद्दा हलद्दी (१-१३ सूत्रे द्रष्टव्ये)। सुप्पणहा, सुप्पणही (३-३ रलोप:, ३-५० पद्वित्वं, ४-१ ह्रस्व:, २-४२ न् = ण्, २-२७ ख् = ह्, शेषं स्पष्टम्)। छाहा, छाही। (२-१८ सूत्रे द्रष्टव्यं, शेषं स्पष्टम्) ।।२४।।**

**व्याख्या**—(आकारान्त प्रातिपदिक के अन्त्य स्वर आकार के स्थान पर प्राय: बहुलता से आकार और ईकार होता है। जैसे-

**१. सहमाना**—२.४२ से नकार का णकार-**सहमाणा**। प्रस्तुत सूत्र से आकार का आकार तथा ईकार-**सहमाणा**, **सहमाणी**।

**२. हरिद्रा**—२.३० से रेफ का लकार-हलिद्रा। ३.३ से रेफ का लोप--हलिदा। ३.५० से लकार का लोप-हलिद्दा। प्रस्तुत सूत्र से आकार का आकार तथा ईकार-हलिद्दा, लिद्दी।

**३. शूर्पनखा**—२.४३ से शकार का सकार-सूर्पनखा। ४.१ से ऊकार का उकार-

सुर्यनखा। ३.३ से रेफ का लोप-सुपनखा। ३.५० से पकार का द्वित्व-सुप्पनखा। २.४२ से नकार का णकार-सुप्पणखा। २.२७ से खकार का हकार-सुप्पणहा। प्रस्तुत सूत्र से अन्त्य का बहुलता से आकार और ईकार-**सुप्पणहा, सुप्पणही**।

४. **छाया**—२.१८ से यकार का हकार-छाहा। प्रस्तुत सूत्र से आकार का प्रायः आकार और ईकार-छाहा, छाही।

## न नपुंसके ।।२५।।

**पदच्छेद**—न। नपुंसके।

**पदार्थ**—नपुंसके = नपुंसक लिङ्ग में। न = नहीं।

**सू०अ०**—नपुंसक लिङ्ग में (दीर्घ) नहीं (होता)।

**वृत्तिः—प्रथमैकवचने नपुंसके दीर्घत्वं न भवति। 'सौ दीर्घः पूर्वस्येत्यनेन इदुदन्तयोः प्राप्तं पूर्वस्य दीर्घत्वं 'नपंसके' इत्यनेन बाध्यते। दहिं (५-३० सोबिन्दुः, शेषं स्पष्टम्)। महुं (२-२७ घ् = ह्, शेषं स्पष्टम्)। हविं (४-६ षूलोपः, २-२ प्रायो-ग्रहणात् वलोपो न, शेषं पूर्ववत्)। दधि, मधु, हविः ।।२५।।**

**व्याख्या**—नपुंसक लिङ्ग में सु, भिस् और सुप् बाद में होने पर इकारान्त और उकारान्त प्रातिपदिक के अन्त्य ह्रस्व स्वर के स्थान पर ५.१८ में विहित दीर्घ नहीं होता। जैसे-

१. **दधि**—२.२७ से धकार का हकार-दहिम्। प्रस्तुत सूत्र से इकार के दीर्घ होने का निषेध-दहिम्। ५.३० से सु के स्थान पर अनुस्वार दहिं।

२. **मधु**—२.२७ से धकार का हकार और प्रस्तुत सूत्र से इकार के दीर्घ होने का निषेध-महु। ५.३० से सु के स्थान पर अनुस्वार-**महुं**।

३. **हवि**—प्रस्तुत सूत्र से इकार के दीर्घ होने का निषेध और ५.३० से सु के स्थान पर अनुस्वार-**हविं**।

## इज्जश्शसोर्दीर्घश्च ।।२६।।

**पदच्छेद**—इत्। जश्शसोः। दीर्घः। च।

**पदार्थ**—जश्शसोः = जस् और शस् के स्थान पर। इत् = इकार। दीर्घः = दीर्घ। च = भी।

**सू०अ०**—(नपुंसकलिङ्ग में) जस् और शस् के स्थान पर इकार (होता है) और (प्रातिपदिक का अन्त्य ह्रस्व स्वर) दीर्घ भी (हो जाता है)।

**वृत्तिः—नपुंसके वर्तमानयोर्जश्शसोः स्थान इदादेशो भवति, पूर्वस्य च दीर्घः । वणाइ (२-४२ न् = ण्, जश्शसोरिदादेशः पूर्वस्य दीर्घः । दहीइ । महूइ (पूर्ववत्) वनानि । दधीनि । मधूनि ।।२६।।**

**व्याख्या**—नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय जस् और द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय शस् के स्थान पर इकार हो जाता है और प्रातिपदिक का अन्त्य ह्रस्व स्वर दीर्घ भी हो जाता है। जैसे-

१. **वनानि**—वन-२.३५ से नकार का णकार-वण । प्रस्तुत सूत्र से जश् तथा शस् के स्थान पर इ और प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ-**वणाइ** ।

२. **दधीनि**—दधि-२.२७ से धकार का हकार-दहि । प्रस्तुत सूत्र से जश् तथा शस् के स्थान पर इकार और प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ-**दहीइ** ।

३. **मधूनि**—मधु-२.२७ से यकार का हकार-महु । प्रस्तुत सूत्र से जश् और शस् के स्थान पर इकार और प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ-**महूइ** ।

**विशेष**—प्रथमा और द्वितीया दोनों के बहुवचन में जस् और शस्–दोनों के स्थान यह आदेश होने के कारण एक समान रूप ही बनते हैं।

## नामन्त्रणे सावोत्त्वदीर्घबिन्दवः ।।२७।।

**पदच्छेद**—न । आमन्त्रणे । सौ । आत्वदीर्घबिन्दवः ।

**पदार्थ**—आमन्त्रणे = सम्बोधन में । सौ = सु के स्थान पर । ओत्वदीर्घबिन्दवः = ओकार दीर्घ तथा अनुस्वार । न = नहीं ।

**सू० अ०**—सम्बोधन में सु के स्थान पर ओकार, दीर्घ और अनुस्वार नहीं (होते)।

**वृत्तिः—आमन्त्रणे गम्यमाने सौ परत ओत्वदीर्घबिन्दवो न भवन्ति । 'अत ओत् सो' रित्योत्वं प्राप्तम् । 'सुभिस्सुप्सु दीर्घ' इति दीर्घः । 'सोबिन्दुर्नपुंसके' इति बिन्दुः प्राप्तः । हे वच्छ, हे अग्गि, हे वाउ, हे दहि, हे महु (व्याख्यातप्रायाः पूर्वमेव, विशेषकृत्यं सुस्पष्टम्) ।।२७।।**

**व्याख्या**—प्रथमा के एक वचन में पुल्लिंग ५.१ से अकारान्त प्रतिपदिक से बाद में सु के स्थान पर ओकार, इकारान्त प्रतिपादिकों से बाद में दीर्घ हो जाता है और नपुंसक लिङ्ग में अनुस्वार हो जाता है किन्तु सम्बोधन में ये विकार नहीं होते। प्रत्युत ४.६ से सु का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **हे वृक्ष**—१.३६ से ऋकार का अकार-वक्ष । ३.३१ से क्ष का छ-वछ । ३.५० से छकार का द्वित्व-वछ्छ । ३.५१ से पूर्ववर्ती छकार का चकार-वच्छ । प्रस्तुत सूत्र से सु के ओकार होने का अभाव और ४.६ से सु का लोप-**हे वच्छ** ।

२. **हे अग्नि**—३.२ से नकार का लोप-अगि । ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि ।

प्रस्तुत सूत्र से ५.१८ से प्राप्त इकार के दीर्घ होने का निषेध और ४.६ से सु का लोप-**अग्गि**।

३. **हे वायु**—२.२ से यकार का लोप-वाउ। प्रस्तुत सूत्र से ५.१८ से प्राप्त उकार के दीर्घ होने का निषेध और ४.६ से सु का लोप-**वाउ**।

४. **हे वन**—२.४२ से नकार का णकार-वण। प्रस्तुत सूत्र से पदान्त स्वर अकार के दीर्घ होने और अनुस्वार होने का निषेध-**वण**।

५. **हे दधि**—२.२७ से धकार का हकार-दहि। प्रस्तुत सूत्र से ५.१८ से प्राप्त इकार के दीर्घ होने का निषेध और ४.६ से सु का लोप-**दधि**।

६. **हे मधु**—२.२७ से धकार का हकार-महु। प्रस्तुत सूत्र से ५.१८ से प्राप्त उकार का दीर्घ होने का निषेध और ४.६ से सु का लोप-**महु**।

## स्त्रियामात एत्॥२८॥

**पदच्छेद**—स्त्रियाम्। आतः। एत्।

**पदार्थ**—स्त्रियाम् = स्त्रीलिङ्ग में। आतः = आकार के स्थान पर। एत् = एकार।

**सू०अ०**—स्त्रीलिङ्ग में (सम्बोधन में) (आकारान्त प्रातिपदिक के) आकार के स्थान पर एकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्त्रियामामन्त्रणे आतः स्थाने एत्वं भवति सौ परतः। हे माले, हे साले। (स्पष्टे) 'अन्त्यस्य हल' इति सोर्लोपः॥२८॥**

**व्याख्या**—स्त्रीलिङ्ग में आकारान्त प्रातिपदिक के आकार के स्थान पर (सम्बोधन में) एकार हो जाता है। जैसे-

१. **हे माला**—प्रस्तुत सूत्र से आकार के स्थान पर सम्बोधन में एकार और ४.६ से सु का लोप-**माले**।

२. **हे शाले**—शाला २.४३ से शकार का सकार-साला। प्रस्तुत सूत्र से आकार का एकार और ४.६ से सु का लोप-**साले**।

## ईदूतोर्ह्रस्वः॥२९॥

**पदच्छेद**—ईदूतोः। ह्रस्वः।

**पदार्थ**—ईदूतोः = ईकार और उकार के स्थान पर। ह्रस्वः = ह्रस्व।

**सू०अ०**—(ईकारान्त और उकारान्त प्रातिपदिक के) ईकार और ऊकार के स्थान पर ह्रस्व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—आमन्त्रणे स्त्रियाम्। ईदूतोर्ह्रस्वो भवति सौ परतः। हे णइ, हे बहु॥२९॥**

**व्याख्या**—ईकारान्त और ऊकारान्त प्रातिपदिकों के ईकार और ऊकार के स्थान पर सम्बोधन में ह्रस्व हो जाता है। जैसे-

१. **हे नदि-नदी**—२.४२ से नकार का णकार-णदी। २.२ से दकार का लोप-णई। प्रस्तुत सूत्र से ईकार का ह्रस्व और ४.६ से सु का लोप-**णइ**।

२. **हे वधु-वधू**—२.२७ से धकार का हकार-बहू। प्रस्तुत सूत्र से ऊकार का ह्रस्व और ४.६ से सु का लोप-**बहु**।

## सोर्बिन्दुर्नपुंसके ।।३०।।

**पदच्छेद**—सोः। बिन्दुः। नपुंसके।

**पदार्थ**—नपुंसके = नपुसंके। लिङ्ग में। सोः = सु के स्थान पर। बिन्दुः = अनुस्वार।

**सू०अ०**—नपुंसकलिङ्ग में सु के स्थान पर अनुस्वार हो (जाता है)।

**वृत्तिः—नपुंसके वर्त्तमानस्य सोर्बिन्दुर्भवति। वणं, दहिं, महुं। (स्पष्टम्)।३०।**

**व्याख्या**—प्रथमा एक वचन के प्रत्यय सु के स्थान पर नपुंसकलिङ्ग में अनुस्वार हो जाता है। जैसे-

१. **वनम्**—२.४२ से नकार का णकार-वणम्। प्रस्तुत सूत्र से सु के स्थान पर अनुस्वार-**वणं**।

२. **दधि**—२.२७ से धकार का हकार-दहि। प्रस्तुत सूत्र से सु के स्थान पर अनुस्वार-**दहिं**।

३. **मधु**—२.२७ से धकार का हकार-मधु। प्रस्तुत सूत्र से सु का अनुस्वार-**महुं**।

## ऋत आरः सुपि ।।३१।।

**पदच्छेद**—ऋतः। आरः। सुपि।

**पदार्थ**—सुपि = सुप् बाद में होने पर। ऋतः = ऋकार के स्थान पर। आरः = आर।

**सू०अ०**—सुप् (प्रत्यय) बाद मे होने पर ऋकार के स्थान पर आर (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ऋकारान्तस्य सुपि परत आर इत्यादेशो भवति। भत्तारो सोहइ (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, ५-१ ओ)। भर्ता। (२-४३ श् = स्, युवर्णस्य गुणः, २-२७ भ् = ह्, ७-१ त = इ) शोभते।भत्तारं पेक्खसु (५-३ अमोऽकारलोपः, ४-१२ मबिन्दुः, शेषं पूर्ववत्)। भतारम् (१२-१८ दृश = पेक्ख, ७-४ म्)। भर्त्तारं पश्यामः। भत्तारेण कअं (५-१२ एत्वं, ५-४ टा = ण) ।।३१।।**

**व्याख्या**—सुप् (अर्थात् सभी विभक्ति प्रत्यय) बाद में होने पर ऋकारान्त प्रातिपदिक के ऋकार के स्थान पर आर हो जाता है। जैसे-

१. **भर्त्ता**—भर्तृ + सु-। ३.३ से रेफ का लोप-भतृ + सु। ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ। प्रस्तुत सूत्र से ऋ के स्थान पर-आर भत्तार + सु। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**भत्तारो**।

२. **भर्त्तारम्**—भर्तृ + अम्। ३.३ से रेफ का लोप-भतृ + अम्। ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ + अम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का आर-भत्तार + अम् ५.३ से अम् के अकार का लोप-भत्तार + म्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**भत्तारं**।

३. **भर्तृणा**—भर्तृ + टा-३.३ से रेफ का लोप-भतृ। ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का आर-भत्तार + टा। ५.१२ से ओकार का एकार = भत्तारे + टा। ५.१ से टा का ण। भत्तारेणा।

## मातुरात् ।।३२।।

**पदच्छेद**—मतुः। आत्।

**पदार्थ**—मातुः = मातृ का। आत् = आकार।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) मातृ (के ऋकार का) आकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—मातृसम्बन्धित ऋकारस्याकारो भवति। माआ (२-२ तलोपः)। सोहइ (२-४२ श् = स्, सोहन्तिवत् गुणः, ७-१ इ) शोभते। माअं पेक्खसु (३-३ तलोपः, ५-२१ ह्रस्वः, ५-३ अमोऽकारलोपः ४-१२ बिन्दुः। अन्यत् स्पष्टम्)। माअइ, माआए (२-२ तलोपः, ५-२२ अत्वे कृते) कअं।।३२।।**

**व्याख्या**—सुप् बाद में होने पर मातृ-इस प्रातिपदिक के ऋकार का आकार हो जाता है। जैसे-

१. **माता**—मातृ + सु-२.२ से तकार का लोप-माऋ। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का आकार ४.६ से सु का लोप-**माआ**।

२. **मातरम्**—मातृ + अम्-२.२ से तकार का लोप-माऋ + अम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का अकार माआ + अम्। ५.२१ से अम् बाद में होने पर दीर्घ स्वर आकार का ह्रस्व-माआअम्। ४.१ से अम् के अकार का लोप-माअ + म्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**माअं**।

३. **मातृणा**—भातृ + टा-२.२ से तकार का लोप-माऋ + टा। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का आकार-माआ ५.२२ से टा के स्थान पर इकार और एकार-**माआइ, माआए**।

## उर्ज्जश्शसूटाङस्सुप्सु वा ।।३३।।

**पदच्छेद**—उः । जश्शस् टाङस्सुप्सु ।

**पदार्थ**—जश्शस्टाङस्सुप्सु = जस्, शस्, टा, ङस् और सुप् बाद में होने पर । वा = विकल्प से । उः = उकार ।

**सू०अ०**—जस्, शस्, टा, ङस् और सुप् बाद में होने पर (ऋकारान्त प्रतिपादिक के ऋकार के स्थान पर) विकल्प से उकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—जश्शस्टाङस्सुप्सु परत ऋकारस्य स्थाने उकारादेशो भवति वा । जस्- भत्तुणो (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वं, ५-१६ णो)। भत्तारा (५-३१) = आर, णो, शेषं पूर्ववत्) । भत्तारे (५-३१ ऋ = आर, ५-१२ एत्वं, ५-२ शसो लोपः, शेषं पूर्ववत्) । टा, भत्तुणा (५-१७ टा = णा, शेषं पूर्ववत्) भत्तारेण (पूर्ववत् रलोपादिकं, ५-३१ ऋ = आर, ५-१२ एत्वं, ५-४ टा = ण) । ङस्, भत्तुणो (५-१५ शेषं पूर्ववत्) । भत्तारस्स (रलोपे तद्वित्वे च कृते ५-३१ आर, ५-८ ङसः स्सः) सुप्, भत्तूसु (५-११ दीर्घः, शेषं स्पष्टम्) । भत्तारेसु (५-२२ एत्वं, शेषं पूर्ववत्) ।।३३।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का विभक्ति प्रत्यय जस्, द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् तृतीया एक वचन का प्रत्यय टा, षष्ठी एकवचन का प्रत्यय ङस् और सप्तमी एक वचन का प्रत्यय सुप् बाद में होने पर ऋकारान्त प्रतिपादिक का ऋकार उकार हो जाता है। जैसे-

१. **भर्त्तारः**—भर्तृ + जस् । ३.३ से रेफ का लोप-भतृ + जस् । ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ + जस् । प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का उकार-भत्तु + जस् । ५.१६ से जस् का णो-**भत्तुणो** । पक्ष में ५.३१ से ऋ का आर-भत्तार-जस् । ५.११ से दीर्घ और ५.२ से जस् का लोप-**भत्तारा** ।

२. **भर्तॄन्**— भर्तृ + शस् । ३.३ से रेफ का लोप-भतृ + शस् । ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ । प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का उकार-भत्तु + शस् । ५.१४ से शस् का णो-भत्तुणो । पक्ष में-भत्तृ + शस् । ५.३१ से ऋकार का आर-भत्तार + शस् । ५.१२ से शस् का एकार-**भत्तारे** ।

३. **भर्त्तृणा**—भर्त्तृ + टा । ३.३ से रेफ का लोप और ५.३० से तकार का द्वित्व-भत्तृ । प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का उकार-भत्तु + टा । ५.१७ से टा का णा-**भत्तुणा** । पक्ष में भत्तृ + टा । ५.३१ से ऋकार का आर-भत्तार + टा । ५.१२ से टा बाद में होने से अकार का एकार-भतारे + टा । ५.१४ से टा का ण-**भत्तारेण** ।

४. **भूर्त्तः**—भर्तृ + ङस्-३.३ से रेफ का लोप और ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ऋाकर का उकार-भत्तु + ङस्। ५.१५ से २स् का णो-भत्तारस्स। पक्ष में-५.३१ से ऋ का आर-भत्तार + ङस। ५.८ से ङस् का स्स-भत्तारस्स।

५. **भर्त्तरि**—भर्तृ + सुप्-३.३ से रेफ का लोप और ३.५० से तकार का द्वित्व-भत्तृ + सुप्। प्रस्तुत सूत्र से ऋकार का उकार-भत्तु-सुप्। ५.११ से उकार का दीर्घ-भत्तू + सुप्। ५.१० से सुप् का सु-**भत्तूसु**। पक्ष में भत्तृ + सुप्। ५.३१ से ऋकार का आर-भत्तार + सुप्। ५.१२ से अकार का एकार-भत्तारे + सुप्। ५.१० से सुप् का सु-भत्तारेसु।

## पितृभ्रातृजामातृणामरः ।।३४।।

**पदच्छेद**—पितृभ्रातृजामातृणाम्। अरः।

**पदार्थ**—पितृभ्रातृजामातृणाम् = पितृ, भातृ और जामातृ का। अरः = अर।

**सू०अ०**—पितृ, भातृ और जामातृ का (ऋकार) (सुप् बाद में होने पर) अर होता है।

**वृत्तिः—पित्रादीनां सुपि परत ऋतोऽरो भवति। आरापवादः। पिअरं (२-२ तलोपः, ५-३ अमोऽकारस्य लोपः, ४-१२ मो बिन्दुः)। पिअरेण (५-१२ एत्वं, ५-४ टा = ण, शेषं पूर्ववत्)। भाअरं, भाअरेण। जमाअरं, जामाअरेण (पूर्ववत्) ।।३४।।**

**व्याख्या**—यह पूर्ववर्ती विधान ५.३३ का अपवाद है। पितृ भातृ और जामातृ का (ऋकार) सुप् (सप्तमीविभक्ति का प्रत्यय) बाद में होने पर अर होता है। जैसे-

१. **पितृ का**—

(क) **पितरम्**—पितृ + अम्। प्रस्तुत सूत्र में ऋ का अर-पितर + अम्। २.२ से तकार का लोप-पिअर + अम्। २.२ से अम् के अकार का लोप और ४.१२ से मकार का अनुस्वार-पिअरं।

(ख) **पितृणा**—पितृ + टा। २.२ से तकार का लोप-पिऋ + टा। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-पिअर + टा। ५.१२ से टा से पूर्व वाले अकार का एकार-पिअरे + टा। ५.४ से टा का ण-**पिअरेण**।

२. **भातृ का**—

(क) **भ्रातरम्**—भ्रातृ+अम्। ३.३ से रेफ का लोप-भतृ। २.२ से तकार का लोप-भाऋ + अम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर। भाअर + अम्। ५.३ से

अम् के अकार का लोप और ४.१२ मकार का अनुस्वार-**भाअरं**।

**(ख) भ्रातृणा**—भातृ+टा। ३.३ से रेफ का लोप-भातृ + टा। २.२ से तकार का लोप-भाऋ + टा। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-भाअर + टा। ५.१२ से टा से पूर्व वाले अकार का एकार भाअरे + टा। ५.१२ से टा का ण-**भाअरेण**।

**३. जामातृ का**—

**(क) जामातरम्**—जामातृ + अम्। २.२ से तकार का लोप-जामाऋ + अम्। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-जामाअर + अम्। ५.३ से अम् के अकार का लोप और ४.१२ से मकार ाक अनुस्वार-**जामाअरं**।

**(ख) जामातृणा**—जामातृ+टा। २.२ से तकार का लोप-जामाऋ + रा। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-जामाअर+टा। ५.१२ से टा से पूर्व वाले अकार का एकार-जामाअरे + टा। ५.१२ से टा का ण-जामाअरेण।

## आ च सौ ।।३५।।

**पदच्छेद**—आ। च। सौ।

**पदार्थ**—सौ = सु बाद में होने पर। आ = आ। च = भी।

**सू०अ०**—सु बाद में होने पर (पितृ, भ्रातृ और जामातृ का ऋकार) आकार भी (होता है)।

**वृत्तिः—पित्रादीनामाकारो भवति सौ परतः। चकारदरश्च। पिआ (स्पष्टम्)। पिअरो (५-१ ओ, शेषं स्पष्टम्)। भाआ, भाअरो। जामाआ, जामाअरो ।।३५।।**

**व्याख्या**—सु बाद में होने पर पितृ भातृ और जमातृ के ऋकार का आकार भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च पद से इनके ऋकार का अर भी होना प्राप्त है। इस प्रकार सु बाद में होने पर पितृ, भातृ और जामातृ के ऋकार के स्थान पर आ और अर-ये दोनों होते हैं। जैसे-

**१. पिता**—पितृ + सु-२.२ से तकार का लोप-पिऋ + सु। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का आ और ४.६ से सु का लोप-पिआ। पक्ष में ३.३४ से ऋ का अर-पिअर + सु। ५.१ से सु से पूर्व अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**पिअरो**।

**२. भ्राता**—भ्रातृ + सु-३.३ से रेफ का लोप-भातृ + सु। २.२ से तकार का लोप-भाऋ + सु। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का आ और ४.६ से सु का लोप-**भाआ**। पक्ष में-५.३४ से ऋ का अर-भाअर+सु। ५.१ से अ का ओ और ४.६ से सु का लोप-**भाअरो**।

**३. जामाता**—जामातृ + सु-२.२ से तकार का लोप-जामाऋ + सु। प्रस्तुत सूत्र से

ऋ का आ और ४.६ से सु का लोप-**जामाआ**। पक्ष में- ५.३४ से ऋ का अर-जामाअर + सु। ५.१ से अ का ओ और ४.६ से सु का लोप-**जामाअरो**।

## राज्ञश्च ।।३६।।

**पदच्छेद**—राज्ञः। च।

**पदार्थ**—राज्ञः = राजन् का। च = भी।

**सू०अ०**—(सु बाद में होने पर) राजन् का भी (आकार होता है)।

**वृत्तिः—राजन्-शब्दस्य आ इत्ययमादेशो भवति सौ परतः। राआ (स्पष्टम्) ।।३६।।**

**व्याख्या**—सु बाद में होने पर राजन् का अन्त्य स्वर नकार के सहित आ जाता है। जैसे-

१. **राजा**—राजन् + सु। २.२ से जकार का लोप-राअन्। प्रस्तुत सूत्र से अकार के सहित अन्त्य स्वर का आ-**राआ**।

## आमन्त्रणे वा बिन्दुः ।।३७।।

**पदच्छेद**—आमन्त्रणे। वा। बिन्दुः।

**पदार्थ**—आमन्त्रणे = सम्बोधन में। वा = विकल्प से। बिन्दुः = अनुस्वार।

**सू०अ०**—सम्बोधन में (राजन् के अन्त्य स्वर का) विकल्प से अनुस्वार (होता है)।

**वृत्तिः—राजन्-शब्दस्य आमन्त्रणे वा बिन्दुः स्यात्। हे राअं (४-६ न्लोपः, २-२ जलोपः, शेषमदन्तवत्)। हे राअ (५-२७ बिन्दुर्न) ।।३७।।**

**व्याख्या**—सम्बोधन में राजन् क अन्त्य स्वर विकल्प से अनुस्वार होता है। जैसे-

१. **हे राजन्**—२.२ से जकार का लोप-राअन्। प्रस्तुत सूत्र से अनुस्वार-**राअं**। पक्ष में ५.२७ से अनुस्वार का निषेध-**राअ**।

## जश्शसूङसां णो ।।३८।।

**पदच्छेद**—जश्शसूङसाम्। णो।

**पदार्थ**—जश्शसूङसाम् = जस्, शस् और ङस् के स्थान पर। णो = णो।

**सू०अ०**—(राजन् से परवर्ती) जस्, शस् और ङस् के स्थान पर णो (हो जाता है)।

**वृत्तिः—राज्ञ उत्तरेषां जस्-शस्-ङ् इत्येतेषां णो इत्ययमादेशो भवति। राआणो (पूर्ववत् नलोपे कृते, ५-४४ ज = आ, शेषं स्पष्टम्)। पेक्खन्ति (पूर्ववत् दृशेः पेक्ख आदेशे, झिस्थाने ७-४ न्तिः) राजानः पश्यन्ति। राआणो**

**पेक्ख (शसि रूपमेतत्, स्पष्टं पूर्ववत्) । राज्ञः पश्य । राइणो धणं (४-६ न-लोपः, २-२ जलोपः, ५-३० इः)। राज्ञः। (रण्णो धणं २-२ जलोपः, ५-४२ णद्वित्वं, अन्त्यलोपश्च, अलोपो, ह्रस्वश्च संयोगे ४-१ सूत्रे द्रष्टव्यम्) ।।३८।।**

**व्याख्या**—राजन् इस प्रातिपदिक से परवर्ती प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय जस्, द्वितीया बहुवचन के प्रत्यय शस् और षष्ठी एक वचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर णो हो जाता है। जैसे-

१. **राजानः**—राजन् + जस् । ५.४४ से ज का आ-राआन् +जस् । ४.६ से नकार का लोप राआ + जस् । प्रस्तुत सूत्र से जस् का णो + **राआणो** ।

२. **राज्ञः**—राजन् + शस्–पूर्ववर्ती उदाहरण के समान राआ + शस् होकर प्रस्तुत सूत्र से शस् के स्थान पर णो-**राआणो** ।

३. **राज्ञः**—राजन् + ङस् । प्रथम उदाहरण के समान राआ + ङस् होकर ४.१ से आकार का इकार राइ+ङस् प्रस्तुत सूत्र से ङस् का णो-**राइणो** । ५.४२ से णकार का द्वित्व और अन्त्य जकार का लोप-राण्णो । ४.१ से संयोग बाद में होने से आकार का ह्रस्व होकर **रण्णो** भी बनता है।

## शस एत् ।।३९।।

**पदच्छेद**—शसः । एत् ।

**पदार्थ**—शसः = शस् के स्थान पर । एत् = एकार ।

**सू०अ०**—(राजन् से बाद) शस् के स्थान पर (विकल्प से) एकार (भी होता है) ।

**वृत्तिः—राज्ञः परस्य शस ए इत्ययमादेशो भवति । राए पेक्ख (नजयोः पूर्ववल्लोपः, ५-१ आलोपः) राज्ञः । (पूर्ववत् पेक्खादेशः) पश्य । राआणो पेक्ख (पूर्वसूत्रे स्पष्टम्।।३९।।**

**व्याख्या**—इस सूत्र में राजन् शब्द से बाद वाले शस् के एकार होने के विषय में विकल्प से कहा गया है। पक्ष में ३.३८ से णो भी होता है। जैसे-

१. **राज्ञः**—राजन् + शस्-५.४४ से ण के स्थान पर आ-राआन् + शस् । ४.६ से नकार का लोप-राआ + शस् । ४.१ से आकार का लोप-श + शस् । प्रस्तुत सूत्र से शस् का ए-**राए** । पक्ष में **राआणः** (देखिए ५.३८ का उदाहरण-२) ।

## आमो णं ।।४०।।

**पदच्छेद**—आमः । णम् ।

**पदार्थ**—आमः = आम् के स्थान पर । णं = णं ।

**सू०अ०**—(राजन्-से बाद में) आम् के स्थान पर णं (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—राज्ञः उत्तरस्यामः षष्ठीबहुवचनस्य णं इत्ययमादेशो भवति ।**

**राआणं (४-६ नलोप, ५-४४ ज = आ)। राज्ञाम् ।।४०।।**

**व्याख्या**—राजन्-इस प्रतिपादिक से बाद में षष्ठी बहुवचन वाले आम् प्रत्यय के स्थान पर णं होता है। जैसे-

१. **राआम्**—राजन् + आम्-५.४४ से ज का आ-राआन् + आम्। ४.६ से नकार का लोप-राआ + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का णं-**राआणं**।

## टा णा ।।४१।।

**पदच्छेद**—टा। णा।

**पदार्थ**—टा = टा। णा = णा।

**सू०अ०**—राजन् (प्रतिपदिक से बाद में) टा का णा (हो जाता है)।

**वृत्तिः—राज्ञ उत्तरस्यः टाविभक्ते णा इत्ययमादेशः स्यात्। राइणा (४-६ नलोपे, ५-४३ ज = इ, शेषं स्पष्टम्) राज्ञा ।।४१।।**

**व्याख्या**—राजन् इस प्रतिपदिक से बाद में तृतीया एकवचन के प्रत्यय टा के स्थान पर णा हो जाता है। जैसे-

१. **राआ**—राजन् + टा- ४.४३ से ज का इ-राइन् + टा। ४.६ से नकार का लोप-राइ + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा का णा-**राइणा**।

## ङसश्च द्वित्वं वान्त्यलोपश्च ।।४२।।

**पदच्छेद**—ङसः। च। द्वित्वम्। वा। अन्त्य लोपः। च।

**पदार्थ**—ङसः = ङस् के स्थान पर। च = भी। वा = विकल्प से। द्वित्वम् = द्वित्व। अन्त्य लोपः = अन्त्य का लोप। च = भी।

**सू०अ०**—राजन् से बाद में ङस् (और टा के स्थान पर णा) होने पर विकल्प से द्वित्व होता है। अन्त्य (णकार) का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—राज्ञ उत्तरस्य ङसादेशस्य टादेशस्य च वा विकल्पेन द्वित्वं भवति, अन्त्यस्य च लोपः। रण्णो (५-३८ सूत्रे स्पष्टम्)। राइणो धणं। (५-४१ सूत्रे स्पष्टम्)। रण्णा, राइणा कअं (४-६ नलोपः, ५-४१ टा = णा, द्वित्वे, अन्त्यजलोपे ह्रस्वे च) ।।४२।।**

**व्याख्या**—(प्रातिपदिक) राजन् से बाद में डस् के स्थान पर ५.३८ से णो तथा टा के स्थान पर ५.४१ से णा होता है। इन दोनों परिस्थियों में विकल्प से णकार का द्वित्व होता है और अन्त्य अर्थात् अकार के सहित जकार का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **राज्ञः**—राजन् + ङस्। ४.६ से नकार का लोप-राज + ङस्। ५.३८ से ङ्स्

का णो-राज + णो। प्रस्तुत सूत्र से अन्त्य का लोप और णकार का द्वित्व राण्णो। ४.१ से आकार का ह्रस्व-**रण्णो**। पक्ष में ५.४४ से ज का इ = राइन् + ङस्। ४.६ से नकार का लोप-राइ + ङस्। ५.३८ से ङस् का णो-**राइणो**।

२. **राज्ञा**—राजन् + टा। ४.६ से नकार का लोप राज + टा। ५.४१ से टा का णा-राज + णा। प्रस्तुत सूत्र से अन्त्य ज का लोप और णकार का द्वित्व-राण्णा। ४.१ से आदि आकार का ह्रस्व-**रण्णा**। पक्ष में-५.४३ से ज का इ-राइन् + टा ४.६ से नकार का लोप-राइ + टा। ५.४१ से टा का णा **राइणा**।

## इदद्वित्वे ।।४३।।

**पदच्छेद**—इत्। अद्वित्वे।

**पदार्थ**—अद्वित्वे = द्वित्व न होने पर। इत् = इकार।

**सू०अ०**—द्वित्व न होने पर (अन्त्य जकार का) इकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—वेति निवृत्तम्। ङसादेशस्य टादेशस्य च अकृते द्वित्वे राज्ञ इत्त्वं भवति। राइणा, (स्पष्टम्)। कृते द्वित्वे त्वित्वं न भवत्येव। रण्णा, रण्णो (५-४२ सूत्रे, ५-२८ सूत्रे च स्पष्टम्) ।।४३।।**

**व्याख्या**—प्रतिपादिक राजन् से बाद वाले ङस् का ५.३८ णो और टा का ५.४१ से णा होने पर जब णकार का ५.४२ से विकल्प से कारण द्वित्व नहीं होता तो अन्त्य ज के स्थान पर इ हो जाता है। जैसे-

१. **राज्ञः**—राजन् + ङस् (द्रष्टव्य-५.३८ का उदाहरण-३)।

२. **राज्ञा**—राजन् + टा (द्रष्टव्य-५.४१ का उदाहरण)।

## आ णोणमोरङसि ।।४४।।

**पदच्छेद**—आ। णोणमोः। अङसि।

**पदार्थ**—णोणमोः = णो और णं बाद में होने पर। आ = आ। अङसि = ङस् (का णकार) वाद में न होने पर।

**सू०अ०**—णो और णं बाद में होने पर (राजन् के ज का) आ (हो जाता है) (किन्तु) ङस् (का णकार) बाद में होने पर नहीं (होता)।

**वृत्तिः—णोणमोः परयो राज्ञो जकारस्य आकारादेशः स्यात्, अङसि षष्ठ्येकवचने न भवति। राआणो पेक्खन्ति। राआणो पेक्ख (५-३८ सूत्रे व्याख्याताः)। राआणं धणं (५-२० सूत्रे स्पष्टम्)। अङसीति किम्? राइणो, रण्णो धणं। शेषमदन्तवत्। राअं, राएहिं। राआ, राआदो, राआदु, राआहि (५-६ सूत्रेण आ-दो-दु-ह्यः ङसेः स्थाने प्रयुज्यन्ते, शेषं स्पष्टम्)। राअम्मि, राए (५-९ ङेः ए-म्मि)। राएसु, राएसुं (५-१२ एत्वे, शेषं स्पष्टम्)। राजानं,**

**राजभिः, राज्ञः, राजभ्यः, राज्ञि, राजसु ।।४४।।**

**व्याख्या**—प्रातिपदिक राजन् से बाद में विभक्ति प्रत्यय के स्थान में णो और णम् होने पर राजन् के ज का आ हो जाता है। किन्तु षष्ठी एक वचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर णो होने पर जकार आकार नहीं होता है। जैसे-

१. **राजानः**—राजन् + जस् । ४.६ से नकार का लोप-राज+जस् । ५.३८ से जस् का णो-राज+णो । प्रस्तुत सूत्र से णो बाद में होने से ज का आ-**राआणो** ।

२. **राज्ञः**—राजन् + शस् । ४.६ से नकार का लोप-राज + शस् । ५.३८ शस् का णो-राज-णो । प्रस्तुत सूत्र से णो बाद में होने से ज का आ-**राआणो** ।

३. **राज्ञाम्**—राजन् + आम् । ४.६ से नकार का लोप-राज+आम् । ५.४० से आम् का णं-राज + ण । बाद में होने से प्रस्तुत सूत्र से ज का आ-**राआणं** ।

**विशेष**—(१) ङस् के स्थान पर णो होने पर ज का आ नहीं होता है-जैसे-

१. **राज्ञः**—राजन् + ङस् । ४.६ से नकार का लोप-राज + ङस् । ५.३८ से ङस् का णो-राज + णो । ङस् के स्थान पर णो होने के कारण यहाँ ज का आ नहीं होता प्रत्युत ५.४३ से इ हो जाता है-**राइणो** । पक्ष में ५.४२ से णकार का द्वित्व तथा विकल्प से ज का लोप होता है-राण्णो । ४.६ से अदि आकार का हस्व-रण्णो । विकल्प के कारण पक्ष में जकार का इकार-**राइणो** भी बनता है।

२. राजन् के शेष विभक्तियों के रूप अकारान्त प्रतिपदिक के समान चलते हैं। जैसे-

(क) **राजानम्**—राजन् + अम् । ३.२ से जकार का लोप-राअन् + अम् । ४.६ से नकार का लोप-राअ + अम् । ५.३ से अम् के अकार का लोप-राअ + म् । ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**राअं** ।

(ख) **राजभिः**—राजन् + भिस्-२.२ से जकार का ४.६ से नकार का लोप-राअ + भिस् । ५.१२ से अकार का एकार-राए + भिस् । ५.५ से भिस् का हिं-**राएहिं** ।

(ग) **राज्ञ;**—राजन्+ङस् । २.२ से जकार तथा ४.६ से नकार का लोप-राअ+ङस् । ५.११ से अकार का दीर्घ-राआ + ङस् । ५.६ से ङस् के स्थान पर आ, दो, दु और हि-**राआ, राआदो, राअदु** और **राआहि** ।

(घ) **राजभ्यः**—राजन् + भ्यस् । २.२ से जकार और ४.६ से नकार का लोप-राअ + भ्यस् । ५.११ से अकार का दीर्घ-राआ + ङस् । ५.७ से भ्यस् का -हिन्तो और सुन्तो-**राआहिन्तो, राआसुन्तो** ।

(ङ) **राज्ञे**—राजन् + ङे । २.२ से जकार तथा ४.६ से नकार का लोप-राअ + ङि । ५.९ से ङे का ए और म्मि-**राए, राअम्मि** ।

(च) **राज्ञि**—राजन् + ङि। २.२ से जकार और ४.६ से नकार का लोप-राअ+ङि। ५.९ से ङि का ए और म्मि-**राए, राअम्मि**।

(छ) **राजसु**—राजन् + सुप्-२.२ से जकार और ४.६ से नकार का लोप-राअ + सुप्। ५.१२ से अकार का एकार-राए + सुप्। ५.१० से सुप् का सु-**राएसु**।

## आत्मनोऽप्पाणो वा ।।४५।।

**पदच्छेद**—आत्मनः। अप्पाणः। वा।

**पदार्थ**—आत्मनः = आत्मन् के स्थान पर। वा = विकल्प से। अप्पाणः = अप्पण।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) आत्मन् (इस प्रातिपदिक) के स्थान पर विकल्प से अप्पाण (होता है)।

**वृत्तिः—आत्मनाऽप्पाण इत्यादेशो भवति वा। अप्पा, अप्पाणो (४-६ न्लोपः, शेषं स्पष्टम्) ।।४५।।**

**व्याख्या**—सु बाद में होने पर आत्मन्-इस प्रातिपदिक के स्थान पर विकल्प से अकारान्त अप्पाण होता है। जैसे-

१. **आत्मा**—आत्मन्-सु। प्रस्तुत सूत्र से आत्मन् के स्थान पर विकल्प से अप्पाण-अप्पाण + सु। ५.१ से अकार का ओकार और ४.६ से सु का लोप-**अप्पाणो**। पक्ष में ३.४८ से त्म का प-अपन्। ३.५० से पकार का द्वित्व-अप्पन् + सु। ४.६ से न का लोप-अप्प + सु। ५.४६ से राजन् के समान अतः ५.३६ से सु का आ-**अप्पा**।

## इत्वद्वित्ववर्जं राजवदनादेशे ।।४६।।

**पदच्छेद**—इत्वद्वित्ववर्जम्। राजवत्। अनादेशे।

**पदार्थ**—इत्वद्वित्ववर्जम् = इकार होने और द्वित्व होने को छोड़कर। अनादेशे = विशेष विधान न होने पर। राजवत् = राजन् के समान)।

**सू०अ०**—विशेष आदेश (=विधान) न होने पर (आत्मन् में) राजन् के समान (कार्य होते हैं), इकार होने और द्वित्व होने को छोड़कर।

**वृत्तिः—आत्मनाऽनादेशे राजवत्कार्य स्यादित्वद्वित्वे वर्जयित्वा। अप्पा, अप्पणो, अप्पणा, अप्पणो (५-३८ सूत्रानुसारतः जसादीनां णोत्वादिकं सर्वं राजवत्)। आत्मा, आत्मानः, आत्मना, आत्मनः ।।४६।।**

**व्याख्या**—विशेष विधान न होने पर आत्मन् के भी रूप राजन् के समान

होते है किन्तु आत्मन् में राजन् के समान २.४३ से इकार तथा द्वित्व होने पर नहीं होता। जैसे-

१. **आत्मा—अप्पा**, **अप्पाणो** (द्रष्टव्य ५.४५ का उदाहरण)।

२. **आत्मनः**—आत्मन्+ङस्। ४.१ से आ का अ-अत्मन् + ङस्। ३.४८ से त्म का प-अपन् + ङस्। ३.५० से पकार का द्वित्व-अप्पन् + ङस्। ४.६ से नकार का लोप अप्प-ङस्। ३.३८ से ङस् का णो-**अप्पणो**।

३. **आत्मना**—आत्मन् + टा। ४.१ से आ का अ-अत्मन् + टा। ३.४८ त्म का प-अपन्। ३.५० से पकार का द्वित्व-अप्पन् + टा। ४.६ से नकार का लोप-अप्प + टा। ५.४१ से आ का णा-अप्पणा।

## ब्रह्माद्या आत्मवत्।।४७।।

**पदच्छेद**—ब्रह्माद्याः। आत्मवत्।

**पदार्थ**—ब्रह्माद्याः = ब्रह्मन् आदि। आत्मवत् = आत्मन् के समान।

**सू०अ०**—ब्रह्मन् इत्यादि (नकारान्त प्रातिपदिका) के रूप आत्मन् के समान (होते हैं)।

**वृत्तिः—ब्रह्माद्या शब्दाः लक्ष्यानुसारेण आत्मवत् साधवो भवन्ति। बम्हा, बम्हाणो। जुवा, जुवाणो। अद्धा, अद्धाणो। ब्रह्मन्। युवन्। एवमादयो लक्ष्यानुसारेण अनुगन्तव्याः।।४७।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य पञ्चमः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—ब्रहमन् इत्यादि नकारान्त प्रतिपदिकों के रूप आत्मन् के समान ही होते हैं। जैसे-

१. **ब्रह्मा**—ब्रह्मन् + सु-३.३ से रेफ का लोप-बह्मन् + सु। ३.८ ह्म का म्ह-बम्हन् + सु। ४.६ से नकार का लोप-बम्ह + सु। ५.३६ से सु का आ-**बम्हा**।

२. **युवा**—युवन् + सु। २.३१ से यकार का जकार-जुवन् + सु। ४.६ से नकार का लोप-जुव + सु। ५.३६ से सु का आ-**जुवा**। विकल्प से ५.४५ से **जुवाणो**।

३. **अध्वा**—अध्वन् + सु। ३.३ से वकार का लोप-अधन् + सु। ३.५० से धकार का द्वित्व-अध्धन्। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार का दकार-अद्धन् + सु। ४.६ से नकार का लोप-अद्ध + सु। ५.३६ से सु का आ-**अद्धा**। विकल्प से ५.४५ से–**अद्धाणो**।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का पञ्चम परिच्छेद पूर्ण हुआ।।

# षष्ठः परिच्छेदः

## (सर्वनाम सुबन्तविधानम्)

### सर्वादेर्जस एत्वम् ।।१।।

**पदच्छेद**—सर्वादेः । जसः । एत्वम् ।

**पदार्थ**—सर्वादेः = सर्व इत्यादि के । जसः = जस् के स्थान पर। एत्वम् = एकार ।

**सू०अ०**—सर्व इत्यादि के जस् के स्थान पर एकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—सर्वादिरुत्तरस्य जस एत्वं भवति । सव्वे ( ३-३ रलोपः, ३-५० वद्वित्वम्) । जे (२-२१ य = ज) । एवमग्रेऽपि ज्ञेयम् । ते (४-६ दलोपः) । के (६-१३ किम् = क) । कदरे (१२-३ त = द) । सर्वे । ये । ते । के । कतरे ।।१।।**

**व्याख्या**—सर्व इत्यादि प्रातिपदिकों से बाद वाले प्रथमा बहुवचन के प्रत्यय जस् के स्थान पर एकार हो जाता है। जैसे-

१. **सर्वे**—सर्व + जस्-३.३ से रेफ का लोप सव + जस्। ३.५० से वकार का द्वित्व-सव्व + जस्। ४.१ से अकार का लोप-सव्व् + जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ए-**सव्वे**।

२. **ये**—यत् + जस्-२.३१ यकर का जकार-जत् + जस्। ४.६ से तकार का लोप-ज+जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ए-**जे**।

३. **ते**—तत् + जस्। ४.६ से तकार का लोप-त + जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ए-**ते**।

४. **के**—किम् + जस्। ६.१३ से किम् का क-क + जस्। ४.१ से अकार का लोप-क् + जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् का ए-**के**।

### ङेः स्सिम्मित्थाः ।।२।।

**पदच्छेद**—ङेः । स्सिम्मित्थाः ।

**पदार्थ**—ङेः = ङि के स्थान पर। स्सिंम्मित्थाः = स्सिं, म्मि और त्थ ।

**सू०अ०**—(सर्व इत्यादि से बाद में) ङि के स्थान पर स्सिं, म्मि और त्थ होते हैं।

**वृत्तिः—ङेः सप्तम्येकवचनस्य सर्वादिपरस्थितस्य स्थाने स्सिं, म्मि, त्थ इत्येत आदेशा भवन्ति। सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ (पूर्ववत् रलोपो वद्वित्वं च, शेषं स्पष्टम्)। इअरस्सिं, इअरम्मि, इअरत्थ (२-२ त्लोपः, शेषं स्पष्टम्)। सर्वस्मिन्, इतरस्मिन्॥२॥**

**व्याख्या**—सर्व इत्यादि से बाद में सप्तमी एकवचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर स्सिं, म्मि और त्थ होते हैं। जैसे-

१. **सर्वस्मिन्**—सर्व + ङि-३.३ रेफ का लोप-सव + ङि। ३.५० से वकार का द्वित्व-सव्व + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि के स्थान पर स्सिं, म्मि और स्थ-**सव्वस्सिं**, **सव्वम्मि** और सव्वत्थ।

२. **इतरस्मिन्**—इतर + ङि-२.२ से तकार का लोप-इअर + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि के स्थान पर स्सिं, म्मि और त्थ-इअरस्सिं, इअरम्भि, इअरत्थ।

## इदमेतत्किंयत्तद्भ्यष्टा इणा वा॥३॥

**पदच्छेद**—इदमेतत्कियत्तद्म्यः। टा। इणा। वा।

**पदार्थ**—इदमेतत्किंयत्तद्म्यः = इदम्, एतत्, किम्, यत् और तत् से बाद में।

**सू०अ०**—इदम्, एतत्, किम्, यत् और तत् से बाद में टा के स्थान पर विकल्प से इणा (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इदम्, एतद्, यद्, तद् इत्येतेभ्यः टा इत्यस्य इणादेशो भवति वा। इमिणा (६-१४ इदम् = इम, ४-१ अलोपः, शेषं स्पष्टम्)। एदिणा (४-६ दूलोपः, १२-३ त् = द्, ४-१ अलोपः)। किणा (६-१३ किम् = कः, ४-१ अलोपः)। जिणा, तिणा (२-३१ य् = ज्, ४-६ दलोपः)। पक्षेइमेण, एदेण, केण, जेण, तेण। (६-१४ इदम् = इद, ५-४ सूत्रोदाहृत-(वच्छेण)वद-दन्तकार्य्याणि पक्षान्तरे ज्ञेयानि)। एवमुत्तरत्रापि। अनेन, एतेन, केन, येन, तेन॥३॥**

**व्याख्या**—इदम्, एतत्, किम्, यत् और तत्-इन सर्वनामप्रातिपदिकों से बाद वाले तृतीया एकवचन के प्रत्यय टा के स्थान पर विकल्प से इणा हो जाता है। जैसे-

१. **अनेन**—इदम् + टा। ६.१४ से इदम् का इदम्-इम् + टा। ४.१ से अकार का लोप-इम् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा के स्थान पर इणा-**इमिणा**। पक्ष में ६.१४

से इदम् का इम् + टा। ५.१२ से एकार-इमे + टा। ५.४ से टा का ण-**इमेण**।

२. **एतेन**—एतत् + टा-१.२३ से तकार का दकार-एदत् + टा। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-एद + टा। ४.१ से अकार का लोप-एद् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा के स्थान पर इणा-**एदिणा**। पक्ष में-एद + टा। ५.१२ से एकार-एदे + टा। ५.४ से टा का ण-**एदेण**।

३. **केन**—किम् + टा-६.१३ से किम् का कः+टा। ४.६ से विसर्ग का लोप-क + टा। ४.१ से अकार का लोप-क् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा के स्थान पर इणा-**किणा**। पक्ष में-क + टा। ५.१२ से एकार-के + टा। ५.४ से टा का ण-**केण**।

४. **येन**—यत् + टा-२.३१ से यकार का जकार-जत् + टा। ४.६ से तकार का लोप-४.१ से अकार का लोप-ज् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा का इणा-**जिणा**। पक्ष में- ज+टा ५.१२ से एकार-जे + टा। ५.४ से टा ण-**जेण**।

५. **तेन**—तत् + टा-४.६ से अन्त्य तकार का लोप-त + टा। ४.१ से अकार का लोप-त् + ट। प्रस्तुत सूत्र से टा का इणा-**तिणा**। पक्ष में-त + टा। ५.१२ से एकार-ते + टा। ५.४ से टा का ण-**तेण**।

## आम एसिं ।।४।।

**पदच्छेद**—आमः। एसिं।

**पदार्थ**—आमः = आम् के स्थान पर। एसिं = एसिं।

**सू०अ०**—आम् के स्थान पर (विकल्प से) एसिं (हो जाता है)

**वृत्तिः—इदमदिभ्य उत्तरस्य आम एसिं इत्ययमादेशो वा भवति। इमेसिं (पूर्ववददन्तत्वं, ४-१ अलोपः, शेषं स्पष्टम्)। इमाण (५-४ आम = ण, ५-११ दीर्घः, शेषं स्पष्टम्)। एदेसिं (४-६ दलोपः, एत इति जाते १२-३ त् = द्, शेषं स्पष्टम्)। एदाण (५-४ आम् = ण, ५-११ दीर्घः)। केसिं (६-१३ किम् = क, ४-१ अलोपः, शेषं स्पष्टम्)। काण (५-४ आम् = ण, ५-११ दीर्घः)। तेसिं (पूर्ववददन्तत्वमकारलोपश्च, शेषं स्पष्टम्)। ताण (५-४ आम् = ण, ५-११ दीर्घम्, शेषं पूर्ववत्)। एषाम्। एतेषाम्, केषाम्, येषाम्, तेषाम्।।४।।**

**व्याख्या**—इदम्, किम्, यत् और यत् से बाद में षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय आम् के स्थान पर विकल्प से एसिं हो जाता है। जैसे-

१. **एषाम्**—इदम् + आम्-६.१४ से इदम् का इम-इम + आम्। ४.१ से अकार का लोप-इम् + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् के स्थान पर एसिं-**इमेसिं**। पक्ष में-

इदम् + आम्। इम + आम्। ५.११ से अकार का दीर्घ-इमा + आम्। ५.४ से आम् का ण-**इमाण**।

२. **एतेषाम्**—एतत् + आम्-१२.३ से पूर्व तकार का दकार-एदत् + आम्। ४.६ से तकार का लोप-एद + आम्। ४.१ अकार का लोप-एद् + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का एहिं-एदेहिं। पक्ष में-एद + आम्। ५.११ से अकार का दीर्घ-एदा + आम्। ५.४ से आम् का ण-एदाण।

३. **केषाम्**—किम् + आम्। ६.१३ किम् का क:-क + आम्। ४.६ से विसर्ग का लोप-क + आम्। ४.१ से अकार का लोप-क् + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का एसिं-**केसिं**। पक्ष में-क + आम्। ५.११ से अकार का दीर्घ-का + आम्। ५.४ से आम् का ण-**काण**।

४. **येषाम्**—यत् + आम्-२.३१ से यकार का जकार-जत् + आम्। ४.६ से तकार का लोप-ज + आम्। ४.१ से अकार का लोप-ज् + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का एसिं-**जेसिं**। पक्ष में-ज + आम्। ५.११ से अकार का दीर्घ-जा + आम्। ५.४ से अम् का ण-**जाण**।

५. **तेषाम्**—तत् + आम्। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-त + आम्। ४.१ से अकार का लोप-त् + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का **एसिं**-तेसिं। पक्ष में-त + आम्। ५.११ से अकार का दीर्घ-ता + आम्। ५.४ से आम् का ण-**ताण**।

## किंयत्तद्भ्यो ङस आसः ।।५।।

**पदच्छेद**— किंयत्तद्भ्य:। ङस:। आस:।

**पदार्थ**—किंयत्तद्भ्य: = किम्, यत् और तत् से बाद में। ङस: = ङस के स्थान पर। आस: = आस।

**सू०अ०**—किम्, यत् और तत् से बाद में ङस = स्थान पर (विकल्प से) आस हो जाता है।

**वृत्तिः—किम्, यद् तद्, एभ्य उत्तरस्य ङस आस इत्ययमादेशो भवति वा। कास, कस्स। जास, जस्स। तास, तस्स। (५-८ स्स, एवमुत्तरत्रापि, अदन्त-मकारलोपादिकं च पूर्ववत्कार्यम्) ।।५।।**

**व्याख्या**—किम्, यत् और तत् से बाद में षष्ठी एकवचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर विकल्प से आस हो जाता है। जैसे-

१. **कस्य**—किं + ङस्-६.१३ से किं का क: + ङस्। ४.६ से विसर्ग का लोप-

क + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् का आस-**कास** । पक्ष में ५.८ से ङस् का स्स-**कस्स** ।

२. **यस्य**—यत् + ङस् । २.३१ से यकार का जकार-जत् + ङस् । ४.६ से तकार का लोप-ज + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् का आस-**जास** । पक्ष में-५.८ से ङस् का स्स-**जस्स** ।

३. **तस्य**—तत् + ङस् । ४.६ से तकार का लोप-त + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् का आस-**तास** । पक्ष में ५.८ से ङस् का-**तस्स** ।

## ईद्भ्यः स्सोसे ।।६।।

**पदच्छेद**—ईद्भ्यः । स्सासे ।

**पदार्थ**—ईद्भ्यः = ईकारान्त से बाद में । स्सासे = स्सा और से ।

**सू०अ०**—ईकारान्त (= स्त्रीलिङ्ग वाले किम् इत्यादि) से बाद में (ङस् के स्थान पर विकल्प से) स्सा और से (होता है) ।

**वृत्तिः—ईकारान्तेभ्यः किमादिभ्यः उत्तरस्य ङसः स्सा से इत्येतावादेशौ भवतः । किस्सा, कीसे, कीआ, कीए, कीअ, कीइ । जिस्सा, जीसे, जीआ, जहीए, जीअ, जीइ । तिस्सा, तीसे, तीआ, तीए, तीइ । (स्त्रियां ४-६ किम् = कः, स्त्रीप्रत्यये आपि जाते, ५-२४ बाहुलकात् आत्वे ईत्वे च कृते, ङसः स्सा, संयोगे ह्रस्वः, एवमेव यत्तद्भ्यामपि, पक्षे-५-२२ सूत्रेण ङसःस्थाने इदादयो यथायथं प्रत्येकं योज्याः) । कस्याः, यस्याः, तस्याः ।।६।।**

**व्याख्या**—ईकारान्त अर्थात् स्त्रीलिङ्ग में, किम् इत्यादि से बाद में षष्ठी एकवचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर विकल्प से स्सा और से होता है । जैसे-

१. **कस्याः**—किम् + ङस् । ६.१३ किम् का कः-क + ङस् । ५.७ से विसर्ग का आ-का + ङस् । ५.२४ से वहुलता के कारण आ का ई-की + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् के स्थान स्सा और से-कीस्सा और कीसे । ४.१ से स्सा संयोग बाद में होने से दीर्घ का हस्व-**किस्सा, कीसे** । पक्ष में ५.२२ से आम् के स्थान पर इकार, एकार अकार तथा आकार-**कीइ, कीस, कीअ** और **कीआ** ।

२. **यस्याः**—यत् + ङस् । २.३१ से यकार का जकार-जत् +ङस् । ४.७ त् का आ-आ+ङस् । ४.२४ से बहुलता के कारण आ का ई-जी + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् का स्सा और से-जीस्सा, जीसे । ४.१ से स्सा संयोग बाद में होने से दीर्घ का हस्व-**जिस्सा, जीसे** । पक्ष में-४.२२ से ङस् का इकार एकार अकार और आकार-**जीइ, जीए, जीअ** और **जीआ** ।

३. **तस्याः**—तत् + ङस्-४.७ से अन्त्य तकार का आ-ता + ङस्। ४.२४ से बहुलता के कारण आ का ई-ती + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का स्सा और से-तीस्सा, तीसे। ४.१ से संयोग स्सा बाद में होने से दीर्घ का ह्रस्व-**तिस्सा तीए**। पक्ष में-४.२२ से ङस का इकार, एकार, अकार और आकार-**तीइ, तीए तीअ** और **तीआ**।

## ङेर्हि ।।७।।

**पदच्छेद**—ङेः। हि।

**पदार्थ**—ङेः = ङि के स्थान पर। हिं = हि।

**सू०अ०**—ङि के स्थान पर (विकल्प से) हि (हो जाता है)।

**वृत्तिः—किमादिभ्य उत्तरस्य ङेः हिं इत्ययमादेशो भवति वा। कहिं, कस्सिं, कम्मि, कत्थ,। जहिं, जस्सिं, जम्मि, जत्थ। तहिं, तस्सिं, तम्मि, तत्थ (६-२ ङि = स्सिं, म्मि, त्थ)। कस्मिन्, यस्मिन्, तस्मिन् ।।७।।**

**व्याख्या**—किम् इत्यादि से बाद में सप्तमी एक वचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर हि हो जाता है। जैसे-

१. **कस्मिन्**—किम् + ङि-६.१३ से किम् का कः-क + ङि। ४.६ से विसर्ग का स्सिं, म्मि और त्थ-**कस्सिं, कम्मि, कत्थ**।

२. **यस्मिन्**—यत् + ङि-२.३१ से यकार का जकार-जत् + ङि। ४.६ से तकार का लोप-ज + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि का हिं-**जहिं**। पक्ष में ६.२ से ङि का स्सिं म्मि और त्थ-**कस्सिं, जम्मि** और **जत्थ**।

३. **तस्मिन्**—तत् + ङि-४-६ से अन्त्य तकार का लोप-त + ङि-प्रस्तुत सूत्र से ङि का हिं-**तहिं**। पक्ष में ६.२ से ङि का स्सिं, म्मि और त्थ-**तस्सिं, तम्मि** और **तत्थ**।

## आहे इआ काले ।।८।।

**पदच्छेद**—आहे। इआ। काले।

**पदार्थ**—काले = काल (अर्थ) में। आहे = आहे। इआ = इआ।

**सू०अ०**—काल (अर्थ) में (किम् आदि से बाद में ङि के स्थान पर) विकल्प से आहे (और) इआ होता है।

**वृत्तिः—किंयत्तद्भ्यो ङेः काले आहे, इआ इत्यादेशौ वा भवतः। काहे, जाहे, ताहे,। कइआ, जइआ, तइआ (पूर्ववददन्तत्वं, ५-१ अकारलोपः, शेषं स्पष्टम्)। कहिं-इत्यादयोऽपि। कदा, यदा, तदा ।।८।।**

**व्याख्या**—काल अर्थ में प्रयुक्त होने पर किम्, यत् और तस् से बाद में ङि के स्थान पर विकल्प से आहे और इआ होता है। जैसे-

१. **कदा**—किं + ङि-६.१३ से किं का कः-कः + ङि। ६.४ से विसर्ग का लोप-क + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि का आहे और इआ-**काहे**, **कइआ**। पक्ष में ६.७ से **कहिं** और ६.२ से **कस्सि**, **कम्मि**, **कत्थ**।

२. **यदा**—यत् + ङि-२.३१ से यकार का जकार-जत् + ङि। ६.४ से तकार का लोप-ज + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि का आहे और इआ-**जाहे**, **जइआ**। पक्ष में ६.७ से **जहिं** और ६.२ से **जस्सि**, **जम्मि** और **जत्थ**।

३. **तदा**—तत् + ङि। ६.४ से अन्त्य तकार का लोप-त + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि का आहे और इआ-**ताहे**, **तइआ**। पक्ष में ६.७ से **तहिं** और ६.२ से **तस्सिं**, **सम्मि** और **तत्थ**।

**विशेष**—ये प्रत्यय काल में ही प्रयुक्त होते हैं जैसे कस्मिन् काले-**काहे**, **कइआ**।

## त्तो दो ङसेः ॥९॥

**पदच्छेद**—त्तो। दो। ङसेः।

**पदार्थ**—ङसे = ङस् के स्थान पर। त्तो = त्तो। दो = दो।

**सू०अ०**—(किम् आदि से बाद में) ङस् के स्थान पर त्तो और दो (होता है)।

**वृत्तिः—किंयत्तद्भ्यो ङसेः त्तो, दो इत्येतावादेशौ भवतः। कत्तो, कदो। जत्तो, जदो, तत्तो तदो। स्पष्टान्येतानि पदानि (६-७। ६-२)। कस्मात्, यस्मात्। तस्मात् सूत्रविहिताः प्रत्यया अपि काले प्रयोक्तव्याः ॥९॥**

**व्याख्या**—काल अर्थ में किम् इत्यादि से बाद में पञ्चमी विभक्ति वाले प्रत्यय ङस् के स्थान पर त्तो और दो होता है। जैसे-

१. **कस्मात्**—किम् + ङस्। ६.१ से किम् का कः-कः + ङस्। ४.६ से विसर्ग लोप-क+ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का त्तो और दो-**कत्तो**, **कदो**।

२. **यस्मात्**—यत् + ङस् २.३१ से य का ज-जत् + ङस्। ४.६ से तकार का लोप-ज + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का त्तो और दो-**जत्तो**, **जदो**।

३. **तस्मात्**—तत् + ङस्। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-त+ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का त्तो और दो-**तत्तो**, **तदो**।

**विशेष**—ये प्रत्यय भी काल अर्थ में ही प्रयुक्त होते है। जैसे- कस्मात् कालात् = कत्तो, कदो।

## तद ओश्च ।।१०।।

**पदच्छेद**—तदः । ओः । च ।

**पदार्थ**—तत् से बाद में । ओः = ओ । च = भी ।

**सू०अ०**—तत् से बाद में (ङस् के स्थान पर) ओ भी (होता है) ।

**वृत्तिः—तद उत्तरस्य ङसेरोकारादेशो भवति वा । तो (अदन्तत्वे त इति जाते, ४-१ अलोपः, ततो ङसेः ओत्वे) । तो । तत्तो, तदो (६-९ ङसेः त्तो, दो) ।।१०।।**

**व्याख्या**—तत् से बाद में ङस् के स्थान पर ओ भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च शब्द से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित ङस् के त्तो और दो होने का भी ग्रहण होता है। जैसे-

१. **तस्मात्**—तत् + ङस् । प्रस्तुत सूत्र से ङस् का ओ-ततो । ६.९ से ङस् का त्तो और दो भी-तत्तो, तदो (द्रष्टव्य पूर्ववर्ती सूत्र का उदाहरण) ।

## ङसा से ।।११।।

**पदच्छेद**—ङसा । से ।

**पदार्थ**—ङसा = ङस् के साथ । से = से ।

**सू०अ०**—(तत् का) ङस् के साथ (विकल्प से) से (होता है) ।

**वृत्तिः—वेति वर्तते । तदो ङसा सह से इत्यमादेशो भवति । पक्षे यथा-प्राप्तम् । से (स्पष्टम्) । तास (६-५ ङस आसादेशः, ४-१ त इत्यस्याकार-लोपः) ।।११।।**

**व्याख्या**—तीनों लिङ्गों में तत् का षष्ठी एक वचन के प्रत्यय ङस् के साथ विकल्प से 'से' होता है। जैसे-

१. **तस्स**—तत् + ङस् -प्रस्तुत सूत्र से ङस् के साथ तत् का विकल्प से से-**से** । पक्ष में-४.६ अन्त्य तकार का लोप त + ङस् । ६.५ ङस् का आस-**तास** तथा ५.८ से ङस् स्स-तस्स ।

## आमा सिं ।।१२।।

**पदच्छेद**—आमा । सिं ।

**पदार्थ**—आमा = आम् के सहित । सिं = सिं ।

**सू०अ०**—(तत् का) आम् के सहित (विकल्प से) सिं (होता है) ।

**वृत्तिः—तद आमा सह सिं इत्ययमादेशो वा भवति । सिं (स्पष्टम्) । ताण (६-४ सूत्रे स्पष्टम्) । तेषाम्, तासाम् ।।१२।।**

**व्याख्या**—तत् का षष्ठी बहुवचन के प्रत्यय आम् के सहित विकल्प से सिं हो जाता है। जैसे-

१. **तेषाम्-तासाम्**— तत् + आम् । प्रस्तुत सूत्र से आम् के सहित तत् का विकल्प से सिं-सिं । पक्ष में-त + आम्-४.१ से अकार का लोप-त् + आम् । ४.६ से आम् का ण-**ताण** । ५.११ से अकार का दीर्घ ता + आम् । ६.४ से आम् का ण-**ताण** । तथा त + आम्-४.१ से अकार का लोप-त् + आम् । ६.४ से आम् का एसिं-**तेसिं** ।

## किमः कः ।।१२।।

**पदच्छेद**—किमः । कः ।

**पदार्थ**—किमः = किम् के स्थान पर । कः = कः ।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) किम् के स्थान पर कः (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—किंशब्दस्य सुपि परतः क इत्ययमादेशो भवति । को (४-१ अलोपः, ५-१ ओ) । के (४-१ अलोपः, ३-१ एत्वम्) । केण (५-२२ एत्वं, ५-४ टा = ण) । केहिं (५-१२ ए, ५-५ भिस् = हिं) । कः, के, कैः ।।१३।।**

**व्याख्या**—सभी विभक्ति प्रत्यय (सुप्) बाद में होने पर किं के स्थान पर कः हो जाता है। जैसे-

१. कः—किम् + सु । प्रस्तुत सूत्र से किम् के स्थान पर कः-कः + सु । ४.६ से बिसर्ग का लोप-क + सु । ४.१ से अकार का लोप-क् + सु । ५.१ से सु का ओ-**को** ।

२. **के**—किम् + जस् । प्रस्तुत सूत्र से किम् का कः-कः + जस् । ४.६ से विसर्ग का लोप-क + जस् । ५.१२ से अकार का एकार-के + जस् । ३.२ से जस् का लोप-**के** ।

३. **केन**—किम् + टा । प्रस्तुत सूत्र से किम् का कः-कः + टा । ४.६ से विसर्ग का लोप-क + टा। ५.१२ से अकार का एकार-के + टा । ५.४ से टा का ण-**केण** ।

४. **कैः**—किम् + भिस् । प्रस्तुत सूत्र से किम् का कः-कः + भिस् । ४.६ से विसर्ग का लोप-क + मिस् । ५.१२ से अकार का एकार- के + भिस् । ५.५ से भिस् का हिं-केहिं ।

## इदम इमः ।।१४।।

**पदच्छेद**—इदमः । इमः ।

**पदार्थ**—इदमः = इदम् के स्थान पर । इमः = इम ।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) इदम् के स्थान पर इम (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—सुपि परत इदम इम इत्ययमादेशो भवति । इमो (४-१ अलोप, ५-१ ओ) । इमे (६-१ जस् = ए, शेषं पूर्ववत्) । इमं (५-३ अमोऽकारलोपः, ४-१२ वर्गान्तबिन्दुः, शेषं स्पष्टम्) । इमेण (४-१२ अ = ए, ५.४ टा = ण) । इमेहिं (५-५ भिस् = हिं, शेषं पूर्ववत्) ।।१४।।**

**व्याख्या**—सभी विभक्ति प्रत्यय (सुप्) बाद में होने पर इदम् के स्थान पर इम हो जाता है। जैसे-

१. **अयम्**—इदम् + सु । प्रस्तुत सूत्र से इदम् के स्थान इम-इम + सु । ४.१ से अकार का लोप-इम् + सु । ५.१ से सु का ओ-**इमो** ।

२. **इमे**— इदम् + जस् । प्रस्तुत सूत्र से इदम् के स्थान पर इम-इम + जस् । ४.१ से अकार का लोप-इम् + जस् । ६.१ से जस् का ए-**इमे** ।

३. **इमम्**—इदम् + अम् । प्रस्तुत सूत्र से इदम् का इम-इम + अम् । ५.३ से अम् के अकार का लोप-इम + म् । ४.३० से मकार का अनुस्वार-**इमं** ।

४. **अनेन**—इदम् + टा । प्रस्तुत सूत्र से इदम् का इम-इम + टा । ४.१२ से अकार का एकार-इमे + टा । ५.४ से टा का ण-इमेण ।

५. **एतैः**—इदम् + भिस् । प्रस्तुत सूत्र से इदम् का इम-इम + भिस् । ४.१२ से अकार का एकार-इमे + भिस् । ५.५ से भिस् हिं-**इमेहिं** ।

## स्सस्सिमोरद्वा ।।१५।।

**पदच्छेद**—स्सस्सिमोः । अत् । वा ।

**पदार्थ**—स्सस्सिमोः = स्स और स्सिं बाद में होने पर । वा = विकल्प से । अत् = अकार ।

**सू०अ०**—स्स और स्सिं बाद में होने पर (इदम् का) विकल्प से अ (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—स्स-स्सिमोः परत इदमोऽदादेशो वा भवति । अस्स । इमस्स । (५-८ ङस् = स्स, शेषं स्पष्टम्) अस्सिं । इमस्सिं (६-२ स्सिं, शेषं स्पष्टम्) ।।१५।।**

**व्याख्या**—ङस् षष्ठी एक वचन के प्रत्यय के स्थान पर हुआ स्स और सप्तमी एकवचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर हुआ सिं बाद में होने पर इदम् का विकल्प से अ हो जाता है। जैसे-

१. **अस्य**—इदम् + ङस्। ५.८ से ङस का स्स-इदम् + स्स्। प्रस्तुत सूत्र से इदम् का अ-**अस्स**। पक्ष में ६.१४ से इदम् का इम-इमस्स।

२. **अस्मिन्**—इदम् + ङि। ६.२ से ङि का स्सि। इदम् + स्सिं। ४.१४ से इदम् का अ-अस्सिं। पक्ष में-६.१४ से इदम् का इम-**इमस्सिं**।

## ङेर्देन हः ।।१६।।

**पदच्छेद**—ङेः। देन। हः।

**पदार्थ**—देन = दकार के साथ। ङेः = ङि के स्थान पर। हः = ह।

**सू०अ०**—(इदम् में) दकार के साथ ङे के स्थान पर (विकल्प से) ह (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इदमा दकारेण सह ङेः स्थाने हकारादेशो वा भवति। इह (स्पष्टम्)। पक्षे-अस्सि, इमस्सि, इमस्मि (पूर्ववत्) ।।१६।।**

**व्याख्या**—इदम् से बाद में सप्तमी एकवचन का प्रत्यय ङि होने पर इदम् के दकार के साथ ङि के स्थान पर विकल्प से ह हो जाता है। जैसे-

१. **अस्मिन्**—इदम् + ङि। ४.६ से मकार का लोप-इद + ङि। प्रस्तुत सूत्र से द के साथ ङि का ह-**इह**। पक्ष में ६.१५ से **अस्सिं**, ६.१४ से **इमस्सिं, इमम्मि**।

## न त्थः ।।१७।।

**पदच्छेद**—न। त्थः।

**पदार्थ**—त्थः = त्थ। न = नहीं।

**सू०अ०**—(इदम् से बाद में ङि के स्थान पर) त्थ नहीं (होता है)।

**वृत्तिः—इदमः परस्य ङेः त्थ इत्ययमादेशो न भवति। 'ङे' स्सिम्मित्था' इति प्राप्ते प्रतिषिध्यते। इह, अस्सि, इमस्सि, इमस्मि, (शेषं ६-१६ सूत्रे द्रष्टव्यानि) ।।१७।।**

**व्याख्या**—इदम् से बाद में सप्तमी एकवचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर त्थ नहीं होता है। इस प्रकार ६.१६ से **इह**, १६.१५ से **अस्सिं** और ६.१४ से **इमस्सिं** ही होता है।

## नपुंसके स्वमोरिदमिणमिणमो ।।१८।।

**पदच्छेद**—नपुंसके । स्वमोः । इदमि-इणमिणमो ।

**पदार्थ**—नपुसंसके = नपुंसक लिङ्ग में । स्वमोः = सु और अम् बाद में होने पर । इदंमिण-मिणमो = इदम्, इणम् और इणमो ।

**सू०अ०**—नपुंसक लिङ्ग में सु और अम् बाद में होने पर (इदम् के स्थान पर) इदम्, इणम्, और इणमो (होते हैं) ।

**वृत्तिः—नपुंसकलिङ्गे इदमः स्वमोः परतः सविभक्तिकस्य इदं, इणं, इणमो-इत्येते त्रय आदेशा भवन्ति । इदं, इणं, इणमो धणं (स्पष्टानि) । इदं धनम् ।।१८।।**

**व्याख्या**—नपुंसक लिङ्ग में प्रथमा एकवचन का प्रत्यय सु और द्वितीया एकवचन का प्रत्यय अम् बाद में होने पर इदम् के स्थान पर इदम्, इणम और इणमो हो जाता है। जैसे-

१. **इदम्**—इदम + सु । प्रस्तुत सूत्र से इदम् के स्थान पर इदम्, इणम् और इदमो- इदं + सु, इणं + सु, इणमो + सु । ४.६ से सु का लोप-**इदं, इणं, इणमो** । इसी प्रकार द्वितीया एकवचन में भी अम् के स्थान पर होते है।

## एतदः सावोत्वं वा ।।१९।।

**पदच्छेद**—एतदः । सौ । ओत्वम् । वा ।

**पदार्थ**—एतदः = एतत् से बाद में । सौ = सु के स्थान पर । वा = विकल्प से । ओत्वम् = ओकार होता है।

**सू०अ०**—एतत् से बाद में होने वाले सु के स्थान पर विकल्प से ओकार होता है।

**वृत्तिः—एतच्छब्दस्य सौ परतः ओत्वं वा भवति । नित्ये प्राप्ते विकल्प्यते । एस । एसो । (४-६ तूलोपः, ६-२२ त् = स्) एषः ।।१९।।**

**व्याख्या**—एतत् से बाद वाले सु के स्थान पर विकल्प से ओकार होता है। जैसे-

१. **एषः**—एतत् + सु । ४.६ से तकार का लोप-एत + सु । ६.२२ से तकार का सकार एस + सु । ४.१ से अकार का लोप-एस्+सु । प्रस्तुत सूत्र से सु का ओ- **एसो** । पक्ष में-एस + सु । ४.६ से सु का लोप-**एस** ।

## त्तो ङसेः ।।२०।।

**पदच्छेद**—त्तो । ङसेः ।

**पदार्थ**—ङसेः = ङस के स्थान पर। त्तो = त्तो।

**सू०अ०**—(एतत् से बाद में) ङस् के स्थान पर (विकल्प से) त्तो (होता है)।

**वृत्तिः—एतदः परस्य ङसेः त्तो इत्ययमादेशो भवति। एत्तो (संस्कृतानुसारं, ४-६ सूत्राद्वातलोपः, एत इति जाते, ६-२० ङदःा = त्तो, ६-२१ तलोपः)। एदादो, एदादु, एदाहि (४-६ तलोपः, १२-३ त् = द्, ५-११ दीर्घः, ५-६ ङसि = दो, दु, हि)। एतस्मात्॥२०॥**

**व्याख्या**—एतत् से बाद में पञ्चमी एकवचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर विकल्प से त्तो होता है। जैसे-

१. **एतस्मात्**— एतत् + ङस्। ६.४ से तकार का लोप-एत + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का त्तो-एत + त्तो। ६:२ से त का लोप-**एत्तो**। पक्ष में ४.६ से तकार का लोप-एत + ङस्। १२.३ से त्कार का दकार-एद + ङस्। ५.११ से ङस् बाद में होने से अकार का दीर्घ-एता + ङस्। ५.६ से ङसि का-दो, दु और हि-**एदादो एदादु, एदाहि**।

## त्तोत्थयोस्तलोपः॥२१॥

**पदच्छेद**—त्तोत्थयोः। तलोपः।

**पदार्थ**—त्तो और त्थ बाद में होने पर। तलोपः = त का लोप।

**सू०अ०**—त्तो और त्थ बाद में होने पर 'त' का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एतदस्तकारस्य त्तोत्थयोः परतो लोपो भवति। एत्तो। एत्थ (६-२ ङि = त्थ, अन्यत् पूर्ववत्)। एतस्मात्, एतस्मिन्॥२१॥**

**व्याख्या**—६.२० से पञ्चमी एकवचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर हुआ त्त और ६.२ से सप्तमी एकवचन के प्रत्यय ङि के स्थान पर हुआ आत्थ बाद में होने पर एतत् के 'त' का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **एतस्मात्**—एतत् + ङस्-४.६ से अन्त्य तकार श का लोप-एत + ङस्। ६.२० से ङस् का त्त एत + त्त। प्रस्तुत सूत्र से तकार लोप-**एत्तो**।

## तदेतदोः सः सावनपुंसके॥२२॥

**पदच्छेद**—तदेतदोः। सः। सौ। नपुंसके।

**पदार्थ**—नपुंसके = नपुंसक लिङ्ग में न होने पर। सौ = सु बाद मे होने पर। तदेतदोः = तत् और एतत् के (तकार के) स्थान पर। सः = सकार।

**सू०अ०**—नपुंसक लिङ्ग में न होने पर यदि सु बाद में हो तो तत् और एतत्

के तकार के स्थान पर स (होता है)।

**वृत्तिः—तच्छब्दस्य एतच्छब्दस्य च यस्तकारस्तस्य सकारादेशो भवति, अनपुंसके सौ परतः। सो पुरिसो। सो माहिला। एस, एसो। एसा (४-६ दलोपे, ६-१९ ओत्वविकल्पः, स्त्रीत्वे-५-२४ आत्वं, महिलाशब्दस्तत्समः)। साविति किम्? एदे। ते (४-६ दलोपः, १२-३ त = द, ६-१ जस् ए) एते। ते। एदं। तं (४-६ दलोपः, ५-३ अमोऽकारलोपः, ४-१२ बिन्दुः)। एतम्, एनम्। तम्। अनपुंसक इति किम्? तं एदं धणं (नपुंसकत्वात्र तकारस्य सकारः, ५-३० सोर्बिन्दुः, पूर्ववदन्यत्) तदेतद्धनम्।।२२।।**

**व्याख्या**—नपुंसक लिङ्ग में होने पर अर्थात् पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में प्रथमा एकवचन का प्रत्यय सु बाद में होने पर तत् और एतत् के 'त' के स्थान पर सकार हो जाता है। जैसे-

१. **सः**—तत् + सु। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-त + सु। प्रस्तुत सूत्र से तकार का सकार-स + सु। ४.१ से अकार का लोप स् + सु। ५.१ से सु का ओ-**सो**।

२. **सा**—तत् + सु। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-त + सु। प्रस्तुत सूत्र से तकार का सकार-स + सु। ५.२४ से स्त्रीलिङ्ग में अकार का आकार-सा + सु। ४.६ से सु का लोप-**सा**।

३. **एषः**—एतत् + सु। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-एत + सु। प्रस्तुत सूत्र से तकार का सकार-एस + सु। ४.१ से अकार का लोप-एस् + सु। ५.१ से सु का ओ-**एसो**।

४. **एषा**—एतत् + सु। ४.६ से अन्त्य तकार का लोप-एत + सु। प्रस्तुत सूत्र से तकार का सकार-एस + सु। ५.२४ से स्त्रीलिङ में अकार का आकार-एसा + सु। ४.६ से सु का लोप-**एसा**।

## अदसो दो मुः।।२३।।

**पदच्छेद**—अदसः। दः। मुः।

**पदार्थ**—अदसः = अदस् के। दः = द के स्थान पर। मुः = मु।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) अदस् के 'द' के स्थान पर मु (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अदसो दकारस्य सुपि परतो मु इत्ययमादेशो भवति। अमू पुरिसो। अमू महिला (४-६ स्लोपः, अमु जाते, ५-१८ दीर्घः, ४-६ सोर्लोपः)। अमूनो पुरिसा। अमूओ महिलाओ (५-१६ जस् = ओ, स्त्रियाम् ५-२० जस ओत्वं, पूर्ववत् दीर्घादि)। अमुं वणं, अमूइ बणाइ (५-३ अमो मकारस्य**

**लोपः, ४.१२ से बिन्दुः, ५.२६ जस् = इ, पूर्वस्य दीर्घः) अदो वनम् । अमूनि वनानि ।।२३।।**

**व्याख्या**—सभी विभक्ति के प्रत्यय (सुप्) बाद में होने पर अदस् के द के स्थान पर मु हो जाता है। जैसे-

१. **अमुः**—अदस् + सु । ४.६ से स् का लोप-अद + सु । प्रस्तुत सूत्र से द का मु-अमु + सु । ५.१८ से उकार का दीर्घ-अमू + सु । ४.६ से सु का लोप-**अमू** । स्त्रीलिङ्ग में भी अमु + सु होने पर ५.१८ से दीर्घ ४.६ से सु का लोप होकर-**अमू** ।

२. **अमू**—अदस् + जस् । ४.६ से सकार का लोप तथा प्रस्तुत सूत्र से द का मु-अमु + जस् । ५.१८ से उकार का दीर्घ अमू + जस् । ५.३० से जस् का ओ-**अमूओ** । स्त्रीलिङ्ग में अमु + जस् होकर ५.१८ से दीर्घ-अमू + जस् और ५.२० से जस् का ओ-**अमूओ** ही होता है।

३. **अमुम्**—अदस् + सु (नपुंसकलिङ्ग)-४.६ से सकार का लोप-अद + सु । ६.२३ से द का मु-अमु + सु । ४.१२ से अनुस्वार-**अमुं** ।

४. **अमूइ**—अदस् + जस् । ४.६ से सकार का लोप और ६.२३ से द का मु-अमु + जस् । ५.३६ से जस् का इ और पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ-**अमूइ** ।

## हश्च सौ ।।२४।।

**पदच्छेद**—हः । च । सौ ।

**पदार्थ**—सौ = सु बाद में होने पर । हः = ह । च = भी

**सू०अ०**—सु बाद में होने पर (अदस् के दकार के स्थान पर) ह भी (होता है) ।

**वृत्तिः—अदसो दकारस्य सौ परतो हकारादेशो भवति । अह पुरिसो । अह महिला । अह वणं । (४-६ अदसः) । दोदशोऽयमोत्वात्वबिन्दून् त्रिष्वपि लिङ्गेषु परत्वाद् बाधते ।।२४।।**

**व्याख्या**—सु बाद में होने पर अदस् के दकार के स्थान पर (विकल्प से) हकार भी हो जाता है। जैसे-

१. **अमुः**—अदस् + सु । ४.६ से सकार का लोप-अद + सु । प्रस्तुत सूत्र से दकार का हकार-अह + सु । पुनः ४.६ से सु का लोप-**अह** । पक्ष में ६.२३ से द का मु-अमु + सु । ५.१८ से उ का दीर्घ और ४.६ से सु का लोप-**अमू** ।

## पदस्य ।।२५।।

**पदच्छेद**—पदस्य ।

**पदार्थ**—पदस्य = पद के स्थान पर।

**सू०अ०**—(अब) पद के स्थान पर (यह अधिकार चलेगा)।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयम् आशब्दविधानात्। यदित ऊर्ध्वमनुक्रमिष्यामः, पदस्य तद्भवतीत्येवं वेदितव्यम्। तश्च तत्रैवोदाहरिष्यामः ।।२५।।**

**व्याख्या**—इससे बाद में जो विधान के किये जाएगे, वहाँ उन विधानों को पद के स्थान पर होगा यह जानना चाहिए।

## युष्मदस्तं तुमं ।।२६।।

**पदच्छेद**—युष्मदः = युष्मद् के स्थान पर। तं = तं। तुमं = तुमं।

**सू०अ०**—(सु बाद में होने पर) (सु के सहित) युष्मद् के स्थान पर तं और तुमं (होते हैं)।

**व्याख्या**—सु बाद में होने पर सु के सहित युष्मद् के स्थान पर तं और तुमं होते हैं। जैसे-

**त्वम्**— युष्मद् + सु। प्रस्तुत सूत्र से सु सहित युष्मद् का **तं** और **तुमं**।

## तुं चामि ।।२७।।

**पदच्च्छेद**—तं। च। अमि।

**पदार्थ**—अमि = अम् बाद में होने पर। तं = तं। च = भी।

**सू०अ०**—अम् बाद में होने पर युष्मद् के स्थान पर अम् के साथ तं भी (होता है)।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य अमि परतः तुं इत्यादेशो वा भवति, तुमं च। तुं पेक्खामि, तुमं पेक्खामि (१२-१ दृश् = पेक्ख, ७-३० आत्वम्) ।।२७।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र में आदिष्ट तुमं का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार प्रस्तुत सूत्र के अनुसार अम् बाद में होने पर भी अम् के सहित युष्मद् के स्थान पर तं और तुमं दोनों होते हैं। जैसे-

**त्वाम्**—युष्मद् + अम्। प्रस्तुत सूत्र से अम् बाद में होने पर अम् के सहित युष्मद् के स्थान पर तुं और तुमं-**तुं**, **तुमं**।

## तुज्झे तुम्हे जसि ।।२८।।

**पदच्छेद**—तुज्झे। तुम्हे। जसि।

**पदार्थ**—जसि = जस् बाद में होने पर। तुज्झे = तुज्झे। तुम्हे = तुम्हे।

**सू० अ०**—जस् बाद में होने पर (जस् के सहित युष्मद् के स्थान पर) तुज्झे और तुम्हे (होता है)।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य जसि परतः जुज्झे, तुह्ये इत्येतावादेशौ भवतः। तुज्झे आगदा, तुह्ये आगदा ।।२८।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जस् बाद में होने पर जस् के सहित युष्मद् के स्थान पर तुज्झे और तुम्हे हो जाता है। जैसे-

१. **यूयम्**— युष्मद् + जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् के सहित युष्मद् का तुज्झें और तुम्हे-**तुज्झे, तुम्हे**।

## वो च शसि ।।२९।।

**पदच्छेद**—वो। च। शसि।

**पदार्थ**—शसि = शस् बाद में होने पर। वो = वो। च = भी।

**सू० अ०**—शस् बाद में होने पर (शस्) के सहित युष्मद् के स्थान पर) वो भी (होता है)।

**वृत्तिः—शसि युष्मदः पदस्य वो इत्यादेशो भवति, चकारत्, तुज्झे तुह्ये च। वो पेक्खामि। तुज्झे, तुह्ये पेक्खामि (पेक्खामि (६-२७ सूत्रे स्पष्टम्)।।२९।।**

**व्याख्या**—द्वितीया विभक्ति बहुवचन का प्रत्यय शस् बाद में होने पर शस् के सहित युष्मद् के स्थान पर वो भी होता है। च से पूर्ववर्ती सूत्र ६.२८ में विहित तुज्झे और तुम्हें का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार शस् बाद में शस् के सहित युष्मद् के स्थान पर वो, तुज्झे और तुम्हे होता है। जैसे-

१. **युष्मान्**— युष्मद् + जस्। प्रस्तुत सूत्र से जस् सहित युष्मद् का वो-**वो** तथा पूर्ववर्ती सूत्र से-**तुज्झे** और **तुम्हे**।

## टाङ्योस्तइ तए तुमए तुमे ।।३०।।

**पदच्छेद**—टाङ्योः। तइ तए तुमए तुमे।

**पदार्थ**—टाङ्योः = टा और ङि बाद में होने पर। तइ तए तुमए तुमे-तइ, तए, तुमए और तुमे।

**सू० अ०**—टा और ङि बाद में होने पर (टा और ङि के सहित युष्मद् के स्थान पर) तइ, तए, तुमए और तुमे (होता है)।

**वृत्तिः—युष्मदुत्तरयोः टा, ङि-इत्येतयोः तइ, तए, तुमए, तुमे इत्येत आदेशा भवन्ति। टा-तइ, तए, तुमए, तुमे कअं। ङि-तइ, तए, तुमए, तुम,**

**ठिअं । पूर्ववत् स्पष्टानि ।।३०।।**

**व्याख्या**—यदि युष्मद् से बाद में तृतीया एकवचन का प्रत्यय टा और सप्तमी एक वचन का प्रत्यय ङि होता है तो टा और ङि के सहित युष्मद् के स्थान पर तइ, तए, तुमए और तुमे होता है। जैसे-

१. **त्वया**—युष्मद् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा के सहित युष्मद् के स्थान पर-**तइ, तए, तुमए** और **तुमे**।

२. **त्वयि**—युष्मद् + ङि। प्रस्तुत सूत्र से ङि के सहित युष्मद् के स्थान पर तई, तए, तुमए और तुमे-**तइ, तए, तुमए** और **तुमे**।

**विशेष**—इस प्रकार स्पष्ट है कि युष्मद् के तृतीया एकवचन और सप्तमी एकवचन के रूप एक समान ही होते हैं।

## ङसि तुमो-तुह-तुज्झ-तुह्म-तुम्माः ।।३१।।

**पदच्छेद**—ङसि। तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुम्माः।

**पदार्थ**—ङसि = ङस् बाद में होने पर। तुमो-तुह-तुज्झ-तुम्ह-तुम्माः = तुमो, तुह तुज्झ, तुम्ह और तुम्मः।

**सू०अ०**—ङस् बाद में होने पर (ङस् के सहित युष्मद् के स्थान पर) तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्ह और तुम्म होता है।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य ङसि तुमो, तुह, तुज्झ, तुह्म, तुम्म इत्येत आदेशा भवन्ति। तुमो पदं। तुह, तुज्झ, तुह्म,तुम्म पदं ।।३१।।**

**व्याख्या**—यदि षष्ठी विभक्ति एक वचन का प्रत्यय ङस् बाद में हो तो ङस् के सहित युष्मद् के स्थान पर तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्ह और तुम्भ होता है। जैसे-

१. **तव**—युष्मद् + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् के सहित युष्मद् के स्थान पर-**तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्ह** और **तुम्म**।

## आङि च ते दे ।।३२।।

**पदच्छेद**—आङि्। च। ते दे।

**पदार्थ**—च = और। आङि। आकारान्त (सुप्) बाद में होने पर।

**सू०अ०**—आङि् = आकारान्त (प्रत्यय बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर) ते और दे (हो जाता है)।

**वृत्तिः—आङि तृतीयैकवचने चकारद् ङसि च परतो युष्मदः पदस्य ते, दे इत्येतावादेशौ भवतः। ते कअं। दे कअं। ते धणं, दे धणं ।।३२।।**

**व्याख्या**—सूत्र से प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती ६.३१ में विहित ङसि का भी ग्रहण होता है। आकारान्त सुप् प्रत्यय टा है। इस प्रकार आकारान्त सुप् प्रत्यय टा बाद में होने पर और ङस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर ते और दे हो जाता है। जैसे-

१. **त्वया**—युष्मद् + टा। प्रस्तुत सूत्र से टा के सहित युष्मद् के स्थान पर **ते** और **दे**।

२. **तव**—युष्मद् + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् के सहित युष्मद् के स्थान पर **ते** और **दे**।

## तुमाइ च ।।३३।।

**पदच्छेद**—तुमाइ। च।

**पदार्थ**—तुमाइ = तुमाइ। च = भी।

**सू०अ०**—(आकारान्त सुप् प्रत्यय बाद में होने पर प्रत्यय सहित युष्मद् के स्थान पर) तुमाइ भी (होता है)।

**वृत्तिः—आङि युष्मदः पदस्य तुमाइ इत्ययमादेशो भवति। तुमाइ कअं ।।३३।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित आङि बाद में होने पर प्रत्यय सहित युष्मद के स्थान पर ते और दे होने का ग्रहण होता है। इस प्रकार आकारान्त प्रत्यय टा वाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर तुमाइ भी होता है। जैसे-

१. **त्वया**—युष्मद् + टाप्। प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर- **तुमाइ**।

## तुज्झेहिं तुह्मेहिं तुम्मेहिं भिसि ।।३४।।

**पदच्छेद**—तुज्झेहिं-तुम्हेहिं, तुम्मेहिं। भिसि।

**पदार्थ**—भिसि = भिस् बाद में होने पर तुज्झेहि, तुम्हेहिं, तुम्मेहिं = तुज्झेहिं, तुम्हेहिं और तुम्मेहिं।

**सू०अ०**—भिस् बाद में होने पर (प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर तुज्झेहिं तुम्हेहिं और तुम्मेहिं (होता है)।

**वृत्तिः—भिसि परतो युष्मदः पदस्य तुज्झेहिं, तुह्मेहिं, तुम्मेहिं इत्येय आदेशा भवन्ति। तुज्झेहिं, तुह्मेहि, तुम्मेहिं कअं ।।३४।।**

**व्याख्या**—तृतीया विभक्ति का प्रत्यय भिस् बाद में होने पर प्रत्यय सहित युष्मद् के स्थान पर पर तुज्झेहिं और तुम्मेहिं तुम्हेहिं होता हैं जैसे-

## ङसौ तत्तो-तइत्तो-तुमादो-तुमादु-तुमाहि ।।३५।।

**पदच्छेद**—ङसौ । तत्तो-तइत्तो-तुमादो-तुमादु-तुमाहि ।

**पदार्थ**—ङसौ = ङस् बाद में होने पर । तत्तो-तइत्तो-तुमादो-तुमादु-तमाहि = तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु और मुम्हाहि ।

**सू०अ०**—ङस् बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर) तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु और तुमाहि (होता है) ।

**वृत्तिः—ङसौ परतो युष्मदः पदस्य तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु, तुमाहि इत्येत आदेशा भवन्ति । तत्तो आगदो । तइत्तो-तुमादो-तुमादु-तुमाहि आगदो । त्वदागतः ।।३५।।**

**व्याख्या**—पञ्चमी एकवचन वाला प्रत्यय ङस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तमादु और तुमाहि हो जाता है। जैसे-

१. **त्वत्**—युष्मद्+ङस् । प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर-**तत्तो, तइत्तो**, **तुमादो**, **तुमादु** और **तुमाहि** ।

## तुम्हाहिन्तो तम्हासुन्तो भ्यसि ।।३६।।

**पदच्छेद**—तुम्हाहिन्तो-तुम्हासुन्तो । भ्यसि ।

**पदार्थ**—भ्यसि = भ्यस् बाद में होने पर । तुम्हाहिन्तो-तुम्हासुन्तो = तुम्हाहिन्तो और तुम्हासिन्तो ।

**सू०अ०**—भ्यस् बाद में होने पर (प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर) तुम्हाहिन्तो और तुम्हासुन्तो (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य पञ्चमीबहुवचने भ्यसि तुह्माहिंतो, तुह्मासुन्तो इत्येतावादेशौ भवतः। तुम्हाहिंतो, तुम्हासुन्तो आगदो ।।३६।।**

**व्याख्या**—पञ्चमी बहुवचन का प्रत्यय भ्यस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर तुम्हाहिन्तो और तुम्हासुन्तो हो जाता है। जैसे-

**युष्मत्**— युष्मद् + भ्स् । प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर-**तुम्हाहिन्तो**, **तुम्हासुन्तो** ।

## वो-भे-तुज्झाणं-तुम्हाणमामि ।।३७।।

**पदच्छेद**—वो-भे तुज्झाणं-तुम्हाणं । आमि ।

**पदार्थ**—आमि = आम् बाद में होने पर । वो-भे-तुज्झाणं-तुम्हाणं = वो, भे, तुज्झाणं और तुम्हाणं ।

**सू०अ०**—आम् बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर) वो, भे, तुज्झाणं और तुम्हाणं (होते हैं) ।

**वृत्तिः—आमि परतो युष्मदः पदस्य वो, भे, तुज्झाणं, तुह्माणं इत्येत आदेशा भवन्ति । वो धणं । भे धणं । तुज्झाणं, तुह्माणं, धणं ।।३७।।**

**व्याख्या**—षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय आम् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर वो, भे, तुज्झाणं और तुम्हाणं होते हैं। जैसे-

**युष्माकम्**—युष्मद् + आम्- प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित युष्मद् के स्थान पर **वो, भे, तुज्झाणं** और **तुम्हाणं** ।

## ङौ तुमम्मि ।।३८।।

**पदच्छेद**—ङौ । तुमम्मि ।

**पदार्थ**—ङौ = ङि बाद में होने पर । तुमम्मि = तुमम्मि ।

**सू०अ०**—ङि बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर) तुमम्मि (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य ङौ परतः तुमम्मि इत्यादेशो भवति । तुमम्मि ठिअं । पूर्वोक्ताश्च तइ-प्रभृतयश्चत्वारोऽप्यादेशा भवन्ति ।।३८।।**

**व्याख्या**—सप्तमी एक वचन का प्रत्यय ङि बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर तुमम्मि हो जाता है। जैसे-

**त्वयि**—युष्मद् + ङि-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर- **तुमम्मि** ।

## तुज्झेसु तुह्मेसु सुपि ।।३९।।

**पदच्छेद**—तुज्झेषु-तुम्हेसु । सुपि ।

**पदार्थ**—सुपि = सुप् बाद में होने पर । तुज्झेसु-तुम्मेसु = तुज्झेसु और तुम्मेसु ।

**सू०अ०**—सुप् बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर) तुज्झेसु और तुम्मेसु (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—युष्मदः पदस्य सप्तमीबहुवचने तुज्झेसु, तुह्मेसु इत्येतावादेशौ भवतः । तुज्झेसु ठिअं । तुह्मेसु ठिअं ।।३९।।**

**व्याख्या**—सप्तमी बहुवचन का प्रत्यय सुप् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित युष्मद् के स्थान पर तुज्झेसु और तुम्हेसु हो जाता है। जैसे-

**युष्मासु**—युष्मद् + सुप्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय सहित युष्मद् के स्थान पर- **तुज्झेषु** और **तुम्हेसु**।

## अस्मदो हमहमहअं सौ ।।४०।।

**पदच्छेद**—अस्मदः। हमहमहअं। सौ।

**पदार्थ**—सौ = सु बाद में होने पर। अस्मदः = अस्मद् के स्थान पर। हमहमहअं = हं, अहं और अहअं।

**सू०अ०**—सु बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित) अस्मद् के स्थान पर हं, अहं और अहअं (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य सौ परतो हं, अहं, अहअं इत्येत आदेशा भवन्ति। हं, अहं, अहअं करेमि (१२-१५ कृञ् कर, ७-३ मि, ७-३४ एत्वम्) ।।४०।।**

**व्याख्या**—प्रथमा विभक्ति एकवचन का प्रत्यय सु बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर हं, अहं और अहअं-ये तीनों रूप होते हैं। जैसे-

१. **अहम्**—अस्मद् + सु-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर **हं**, **अहं** और **अहअं**।

## अहम्मिरमि च ।।४१।।

**पदच्छेद**—अहम्मिः। अमि। च।

**पदार्थ**—अमि = अम् बाद में होने पर। अहम्मिः = अहम्मि। च = भी।

**सू०अ०**—अम् बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर) अहम्मि भी होता है।

**वृत्तिः—अमि परतोऽस्मदः पदस्य अहम्मि इत्ययमादेशो भवति, सौ च। अहम्मि पेक्ख। अहम्मि करेमि। मां प्रक्षस्व। अहं करोमि ।।४१।।**

**व्याख्या**—द्वितीया एक वचन का प्रत्यय अम् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर अहम्मि भी होता है। सूत्र में प्रत्युक्त च से पूर्व सूत्र ६.४० में होने वाले हं, अहं और अहअं का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार द्वितीया एक वचन में अस्मद् के अहम्मि, हं, अहं, और अहअं ये चार रूप होते है। जैसे-

१. **माम्**—अस्मद् + अम्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय अम् के सहित अस्मद् के स्थान पर **अहम्मि** और पूर्वसूत्र में विहित होने वाले **हं**, **अहं** और **अहअं**।

## मं ममं ।।४२।।

**पदच्छेद**—मं ममं ।

**पदार्थ**—मं ममं = मं और ममं ।

**सू०अ०**—(अम् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर) मं और ममं (भी होते हैं) ।

**वृत्तिः—अमीति वर्तते । अस्मदः पदस्य अमि परतो मं ममं-इत्येतावादेशौ भवतः । मं, ममं पेक्ख ।।४२।।**

**व्याख्या**—अम् बाद में होने पर प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर मं और ममं भी होते है । जैसे-

१. **माम्**—अस्मद् + अम् । प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित **मं** और **ममं** ।

## अम्हे जश्शसोः ।।४३।।

**पदच्छेद**—अम्हे । जश्शसोः ।

**पदार्थ**—जश्शसोः = जस् और शस् बाद में होने पर । अम्हे ।

**सू०अ०**—जस् और शस् बाद में होने पर (प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर) अम्हे होता है ।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य जश्शसोः परतः अम्हे इत्ययमादेशो भवति । अम्हे आगदा । अम्हे पेक्ख ।।४३।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जस् और द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर अम्हे हो जाता है । जैसे-

१. **वयम्**—अस्मद् + जस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर- **अम्हे** ।
२. **अस्मान्**—अस्मद् + शस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर- **अम्हे** ।

## णो शसि ।।४४।।

**पदच्छेद**— णो । शसि ।

**पदार्थ**—शसि = शस् बाद में होने पर । णो = णो ।

**सू०अ०**—द्वितीया बहुवचन का (प्रत्यय शस् बाद में होने पर अस्मद् के स्थान) णो (होता है) ।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य शसि परतो णो इत्ययमादेशो भवति । णो पेक्ख = अस्मान् प्रेक्षस्व ।।४४।।**

**व्याख्या**—द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर णो होता है । जैसे-

१. **अस्मान्**— अस्मद् + शस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय शस् बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर **णो** होता है ।

इस प्रकार अस्मद् के द्वितीया बहुवचन में रूप बनते है- प्रस्तुत सूत्र से **णो** और पूर्ववर्ती सूत्र ६.४३ से **अम्हे** ।

## आङि मे ममाइ ।।४५।।

**पदच्छेद**—अङि । मे ममाइ ।

**पदार्थ**—आङि = आकारान्त (विभ्रक्ति प्रत्यय टा) बाद में होने पर । में ममाइ = में और ममाइ ।

**सू०अ०**—आकारान्त (विभक्तिप्रत्यय = टा) बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर) में और ममाइ (होता है) ।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य आङि परतो मे, ममाइ इत्येवावादेशौ भवतः । मे कअं, ममाइ कअं ।।४५।।**

**व्याख्या**—विभक्ति प्रत्ययों में आकारान्त प्रत्यय टा है । वह टा बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर में और ममाइ होता है । जैसे-

१. **मया**—अस्मद् + टा-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर-**मे** और **ममाइ** ।

## ङौ च मइ-मए ।।४६।।

**पदच्छेद**—ङौ । च । मइ-मए ।

**पदार्थ**—ङौ = ङि बाद में होने पर । च = भी । मइ-मए = मई और मए ।

**सू०अ०**—ङि बाद में होने पर भी (प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर) मइ और मए (होता है) ।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य ङौ परतो मइ, मए इत्येतावादेशौ भवतः । चकारा-त्तृतीयैकवचने च । मइ, मए ठिअ । मइ, मए कअं ।।४६।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ६.४५ में निर्दिष्ट आकारान्त प्रत्यय टा का भी ग्रहण होता है । इस प्रकार ङि और टा बाद में होने पर प्रत्यय सहित अस्मद्

के स्थान पर मइ और मए होता है। जैसे-

१. **मयि**—अस्मद् + ङि + प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित अस्मद् के स्थान पर-**मइ** और **मए**।

२. **मया**—अस्मद् + टा-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर-**मइ** और **मए**।

**विशेष**—इस प्रकार तृतीया के एक वचन में प्रस्तुत सूत्र से मइ और मए तथा पूर्ववर्ती सूत्र ६.४५ से मे और ममाइ मे चार रूप बनते हैं।

## अह्मेहिं भिसि ।।४७।।

**पदच्छेद**—अम्हेहिं। भिसि।

**पदार्थ**—भिसि = भिस् बाद में होने पर। अम्हेहिं = अम्हेहिं।

**सू०अ०**—भिस् बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर) अम्हेहिं (होता है)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य भिसि अह्मेहिं इत्ययमादेशो भवति। अह्मेहिं कअं ।।४७।।**

**व्याख्या**—तृतीया बहुवचन का प्रत्यय भिस् बाद में होने पर सूत्र से प्रत्यय-सहित अस्मद् के स्थान पर-**अम्हेहिं** होता है।

## मत्तो-मइत्तो-ममादो-ममादु-ममाहि ङसौ ।।४८।।

**पदच्छेद**—मत्तो-मइत्तो-ममादो-ममादु-ममाहि। ङसौ।

**पदार्थ**—ङसौ = ङसि बाद में होने पर। मत्तो-मइत्तो-मयादो-ममादु-ममाहि = मत्तो, मइत्तो, मयादो, ममादु और ममाहि।

**सू०अ०**—ङसि बाद में होने पर (प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर) मत्तो, मइत्तो, मयादो, ममादु और ममाहि (होते हैं)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य ङसौ परत एत आदेशा भवन्ति। मत्तो गदो। मइत्तो, ममादो, ममादु, ममाहि, गदो (स्पष्टानि, क्तान्तस्य गमेः १२-१३ त् = द्, ५-१ ओ) ।।४८।।**

**व्याख्या**—पञ्चमी एकवचन का प्रत्यय ङसि बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर मत्तो, मइत्तो, मयादो, ममादु और ममाहि (होते हैं)। जैसे-

१. **मत्**—अस्मद् + ङसि-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर **मत्तो, मइत्तो, मयादो, ममादु** और **ममाहि**।

## अम्हाहिन्तो-अम्हासुन्तो भ्यसि ।।४९।।

**पदच्छेद**—अम्हाहिन्तो-अम्हासुन्तो । भ्यसि ।

**पदार्थ**—भ्यसि = भ्यस् बाद में होने पर । अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तो = अम्हाहिन्तो और अम्हासुन्तो ।

**सू०अ०**—भ्यस् बाद में होने पर (प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर) अम्हाहिन्तो और अम्हासुन्तो होता है ।

**वृत्तिः—अम्हाहिन्तो अम्हासुन्तो भ्यसि परतो आम्हाहिन्तो, आह्मासुन्तो इत्येतावादेशौ भवतः । अह्मासुन्तो गदो ।।४९।।**

**व्याख्या**—पञ्चमी बहुवचन का प्रत्यय-सहीत बाद में होने पर प्रत्यय अस्मद् के स्थान पर अम्हाहिन्तो और अम्हासुन्तो होता है । जैसे-

१. **अस्मत्**—अस्मत् + भ्यस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर **अम्हाहिन्तो** और **अम्हासुन्तो** ।

## मे-मम-मह-मज्झ ङसि ।।५०।।

**पदच्छेद**—मे-मम-मह-मज्झ । ङसि ।

**पदार्थ**—ङसि = ङस् बाद में होने पर । मे-मम-मह-मज्झ = मे, मम, मह और मज्झ ।

**सू०अ०**—ङस् बाद में होने पर (प्रत्यय-सहित अस्मद् के स्थान पर) मे, मम, और मज्झ (होते हैं) ।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य ङसि परत एत आदेशा भवन्ति । मे धणं । मम, मह, मज्झ धणं ।।५०।।**

**व्याख्या**—षष्ठी एकवचन का प्रत्यय ङस् बाद में होने पर प्रत्यय-सहित अस्मद् के स्थान पर मे, मम, और मज्झ होते हैं । जैसे-

१. **मम**—अस्मद् + ङसि-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय-सहित अस्मद् के स्थान पर **मे, मम, मह** और **मज्झ** ।

## मज्झणो अम्हा अम्हाणमम्हे आमि ।।५१।।

**पदच्छेद**—मज्झणो-अम्ह अम्हाणमम्हे । आमि ।

**पदार्थ**—आमि = आम् बाद में होने पर । मज्झणो-अम्ह-अम्हाणमम्हे = मज्झणो, अम्ह, अम्हाणं और अम्हे ।

**सू०अ०**—आम् बाद में होने पर (प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर मज्झणो, अम्ह, अम्हाणं और अम्हे (होते है)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य आमि परत एत आदेशा भवन्ति। मज्झणो, अह्म, अह्माणं, अह्मे धणं। अस्माकं धनम्॥५१॥**

**व्याख्या**—षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय आम् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर मज्झणो, अम्ह, अम्हाणं और अम्हे हो जाते हैं। जैसे-

**अस्माकम्**—अस्मद् + आम्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर-**मज्झणो, अम्ह, अम्हाणं** और **अम्हे**।

## ममम्मि ङौ॥५२॥

**पदच्छेद**—ममम्मि। ङौ।

**पदार्थ**—ङौ = ङि बाद में होने पर। ममम्मि = ममम्मि।

**सू०अ०**—ङि बाद में होने पर (प्रत्ययसहित अस्मद् के स्थान पर) ममम्मि (होता है)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य ङौ परतौ ममम्मि इत्यादेशो भवति। ममम्मि ठिअं। पूर्वोक्तौ मइ, मए इत्येतौ च॥५२॥**

**व्याख्या**—सप्तमी एकवचन का प्रत्यय ङि बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर ममम्मि हो जाता है। जैसे-

१.**मयि**—अस्मद् + ङि प्रस्तुत सूत्र से-**ममम्मि**। ६.४६ से **मई, मए** भी होता है।

## अह्मेसु सुपि॥५३॥

**पदच्छेद**—अम्हेसु। सुपि।

**पदार्थ**—सुपि = सुप् बाद में होने पर। अम्हेसु = अम्हेसु।

**सू०अ०**—सुप् बाद में होने पर (प्रत्यय सहित अस्मद् के स्थान पर) अम्हेसु (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्मदः पदस्य सप्तमीबहुवचने सुपि परतः अह्मेसु इत्ययमादेशो भवति। अह्मेसु ठिअं॥५३॥**

**व्याख्या**—सप्तमी विभक्ति बहुवचन का प्रत्यय सुप् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर अम्हेसु होता है। जैसे-

१. **अस्मासु**—अस्मद् + सु-प्रत्यय के सहित अस्मद् के स्थान पर-**अम्हेसु**।

## द्वेर्दो ।।५४।।

**पदच्छेद**—द्वेः । दो ।

**पदार्थ**—द्वे = द्वि के स्थान पर । दो = दो ।

**सू०अ०**—(सुप बाद में होने पर) द्वि के सथान पर दो (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—पदस्येति निवृत्तम् । सुपीति वर्तते । द्विशब्दस्य दो इत्ययमादेशो भवति सुपि परतः । दोहिं (प्राकृते द्विवचनं नास्तीति नियमात् द्विशब्दात् भिसः स्थाने ५-५ हिं, शेषे स्पष्टम्) । द्वाभ्याम्, द्वयोः ।।५४।।**

**व्याख्या**—सुप् (विभक्ति) प्रत्यय बाद में होने पर द्वि के स्थान पर दो हो जाता है । द्वि नित्य बहुवचन में होता है क्योंकि प्राकृत में द्विवचन का अभाव है । जैसे-

१. **तृतीया बहुवचन में**—द्वि + भिस्-प्रस्तुत सूत्र से द्वि के स्थान पर दो-दो + सुप् । ५.५ से भिस् के स्थान पर हिं-दोहिं ।

२. **सप्तमी बहुवचन में**—द्वि + सुप्-द्वि + सुप् । प्रस्तुत सूत्र से द्वि के स्थान पर दो सुप् । ५.६ से सुप् का सु-**दोसु** ।

## त्रेस्ति ।।५५।।

**पदच्छेद**—त्रेः । ति ।

**पदार्थ**—त्रेः = त्रि के स्थान पर । ति = ति ।

**सू०अ०**—(सुप् बाद में होने पर) त्रि के स्थान पर ति (होता है) ।

**वृत्तिः—त्रिशब्दस्य सुपि परतः ति इत्यादेशो भवति । तीहिं । तीसु (५-१८ दीर्घः, ५-५ भिस् = हिं) । त्रिभिः । त्रिषु ।।५५।।**

**व्याख्या**—विभक्ति प्रत्यय बाद में होने पर त्रि के स्थान पर ति होता है । जैसे-

१. **त्रिभिः**—त्रि + भिस्-प्रस्तुत सूत्र से त्रि के स्थान पर ति-ति + भिस् । ५.१८ से इकार का दीर्घ-ती + भिस् । ५.५ से भिस् का हिं-तीहिं ।

२. **त्रिषु**—त्रि + सुप्-प्रस्तुत सूत्र से त्रि का ति-ति + सुप् । इकार का दीर्घ-ती + सुप् । ५.५ से सुप् का सु-तीसु ।

## तिण्णि जश्शस्भ्याम् ।।५६।।

**पदच्छेद**—तिण्णिं । जश्शस्भ्याम् ।

**पदार्थ**—जश्शस्भ्याम् = जस् और शस् के साथ । तिण्णिं = तिण्णिं।

**सू०अ०**—(जस् और शस् बाद में होने पर) जस् और शस् के सहित (त्रि के

स्थान पर) तिण्णिं (हो जाता है)।

**वृत्तिः—त्रिशब्दस्य जश्शस्भ्याम् सह तिण्णि इत्यादेशो भवति। तिण्णि आगदा। तिण्णि पेक्ख (स्पष्टानि)। त्रय आगताः। त्रीन् प्रेक्षस्व।।५६।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जस् और द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् बाद में होने पर जस् और शस् के सहित त्रि के स्थान पर तिण्णिं हो जाता है। जैसे-

**१. त्रयः**—त्रि + जस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित त्रि के स्थान पर-**तिण्णिं**।

**२. त्रीन्**—त्रि + शस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित त्रि के स्थान पर-**तिण्णिं**।

## द्वेर्दुवे-दोणि वा।।५७।।

**पदच्छेद**—द्वेः। दुवे–दोणि। वा।

**पदार्थ**—द्वेः = द्वि के स्थान पर। वा विकल्प से। दुवे-दोणि = दुवे और दोणि।

**सू०अ०**—(जस् और शस् बाद में होने पर) (प्रत्यय के सहित) द्वि के स्थान पर दुवे और दोणि (हो जाता है)।

**वृत्तिः—द्विशब्दस्य जस्शस्भ्यां सह दुवे, दोणि इत्येतावादेशौ वा भवतः। दुवे कुणन्ति। दोणि कुणन्ति। पक्षे-दो कुणन्ति। द्वौ कुरूतः। दुवे पेक्ख। दोणि पेक्ख। दो पेक्ख। (८-१३ कृञ् = कुण, द्विवचनाभावनियमात् ७-४ झि = न्ति, कुणन्ति, शेषं स्पष्टम्)। द्वौ प्रेक्षस्व।।४७।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जस् और द्वितीया बहुवचन का प्रत्यय शस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित द्वि के स्थान दुवे और दोणि हो जाता है। जैसे-

१. **प्रथमा बहुवचन में**—द्वि + जस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित द्वि के स्थान पर-**दुवे** और **दोणि**।

२. **द्वितीया बहुवचन में**—द्वि + शस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित द्वि के स्थान पर-**दुवे** और **दोणि**।

## चतुरश्चतारो-चत्तारि।।५८।।

**पदच्छेद**—चतुरः। चत्तारो-चत्तारि।

**पदार्थ**—चतुरः = चतुः के स्थान पर। चत्तारो-चत्तारि = चत्तारो और चत्तारि।

**सू०अ०**—(जस् और शस् बाद में होने पर) चतुः के स्थान पर चत्तारो और चत्तारि (होता है)।

**वृत्तिः—चतुश्शब्दस्य जश्शस्भ्यां सह चत्तारो, चत्तारि इत्येतावादेशौ भवतः।**

**चत्तारो, चत्तारि पुरिसा कुणन्ति (१-२३ रू = रि, ५-११ दीर्घः, ५-२ जसो लोपः)। चत्तारि पुरिसे पेक्ख (५-१२ अ = ए, ५-२ शसो लोपः, अन्यत् पूर्ववत्) ।।५८।।**

**व्याख्या**—जस् और शस् बाद में होने पर प्रत्यय के सहित चतुः के स्थान पर चत्तारो और चत्तारि हो जाता है। जैसे-

१. **चत्वारः**—चतु + जस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित चतुः के स्थान पर-**चत्तारो** और **चत्तारि**।

२. **चतुरः**—चतुः + शस्-प्रस्तुत सूत्र से प्रत्यय के सहित चतुः के स्थान पर-**चत्तारो** और **चत्तारि**।

## एषामामो ण्हं ।।५९।।

**पदच्छेद**—एषाम्। आमः। ण्हं।

**पदार्थ**—एषाम् = इनमें परवर्ती। आमः = आम् के स्थान पर। ण्हं = ण्हं।

**सू०अ०**—इन (द्वि, त्रि और चतुः) से परवर्ती आम् के स्थान पर ण्हं (हो जाता है)।

**वृत्तिः—एषां द्वित्रिचतुःशब्दानामामः स्थाने ण्हं इत्ययमादेशो भवति। दोण्हं धणं (६-५४ द्वि = दो, शेषं स्पष्टम्)। तिण्हं धहं (६-५५ त्रि = ति, शेषं स्पष्टम्)। चतुण्हं धणं (४-६ रलोपः, शेषं स्पष्टम्) ।।५९।।**

**व्याख्या**—इन द्वि, त्रिः और चतुः से बाद में यदि षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय आम् हो तो उस आम् के स्थान पर ण्हं हो जाता है जैसे-

१. **द्वि का**—द्वि आम्-६.५४ से द्वि का दो-दो + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का ण्हं-**दोण्हं**।

२. **त्रि का**—त्रयाणाम्-त्रि + आम्। ६.५५ से त्रि का ति-ति + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का ण्हं-**तिण्हं**।

३. **चतुः का**—चतुः + आम्। ४.६ से विसर्ग लोप-चतुः + आम्। प्रस्तुत सूत्र से आम् का ण्हं-**चतुण्हं**।

## शेषोऽदन्तवद् ।।६०।।

**पदच्छेद**—शेषः। अदन्तवत्।

**पदार्थ**—शेषः = अवशिष्ट। अदन्तवत् = अकारान्त (प्रातिपदिक) के समान।

**सू०अ०**—अवशिष्ट (विभक्तियों के रूप) अकारान्त (प्रतिपादिक) के समान होते हैं।

**वृत्तिः—शेषः सुब्विधिरदन्तवद्भाति । अकारान्तात् 'भिसो हिं' इत्ययमादेश उक्त इकारोकारान्तादपि भवति । अग्गीहिं । वाऊहिं (५-१८ सूत्रं स्पष्टम्)। एवं मालाहिं । णईहिं । बहूहिं । अग्गिस्स (३-२ नलोपः, ३-५० गद्वित्वं, ५-८ ङस् = स्स) । अग्गीसु। वाऊसु (पूर्ववत् यलोपदीर्घौ)। एवं दोहिं (६-५४ द्वि = दो, ५-५ भिस् = हिं)। तीहिं (६-५५ त्रि = ति, ५-१८ दीर्घः) । वाऊहिं (४-६ रलोपः, २-२ तलोपः, ५-१८ दीर्घः, शेषं पूर्ववत्) ।।६०।।**

**व्याख्या**—विभक्ति प्रकरण में सभी प्रातिपादिकों के सभी विभक्तियों का विधान नहीं किया गया है-केवल विशिष्ट का ही विधान किया है । जिन प्रातिपदिकों के जिन विभक्तियों का विधान नहीं हुआ है उनको अदन्त प्रातिपादिक के रूप के समान समझ लेना चाहिए । जैसे-

**१.** अकारान्त प्रातिपादिक से बाद वाले भिस् के स्थान पर होने वाला हिं इकारान्त और उकारान्त प्रतिपदिकों से बाद में भी होता है ।

**(क) अग्निभिः**—अग्नि + भिस्-३.२ से नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व अग्गि + भिस् । ३.१८ से इकार का दीर्घ-अग्गी + भिस् । ५.५ से अदन्त के समान मिस् का हिं-**अग्गीहिं** ।

**(ख) वायुभिः**—वायु + भिस्-२.२ से यकार का लोप वाउ + मिस् । ३.१८ से उकार का दीर्घ-वाऊ + भिस् । अदन्त के समान ५.५ से भिस् का हिं-**वाऊहिं** ।

**(ग) मालाभिः**—माला + भिस् । अदन्त के समान भिस् का हिं-वाऊहिं ।

**(घ) नदीभिः**—नदी + भिस् । २.४२ से नकार का णकार-णदी + भिस् । २.२ से दकार का लोप-णई + भिस् । अदन्त के समान ५.५ से भिस् का हिं-णईहिं ।

**(ङ) वधूभिः**—वधू + भिस्-२.२७ से धकार का हकार-वह् + भिस् । अदन्त के समान ५.५ से भिस् का हिं-**वधूहिं** ।

**२.** अकारान्त प्रातिपदिक से बाद वाले ङस् के स्थान पर ५.६ से होने वाला स्स इकारान्त उकारान्त आदि प्रतिपादिकों से बाद में भी होता है ।

**(क) अग्नेः**—अग्नि + ङस्-३.२ नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि + ङस् का अदन्तवत् ५.६ से ङस् का स्स-**अग्गिस्स** ।

**(ख) वायोः**—वायु + ङस् २.२ से यकार का लोप-वाउ + ङस् । अदन्तवत् ५.८ से ङस् का स्स-वाउस्स ।

३. अकारान्त प्रातिपदिकों से बाद में ङस् का ५.६ से दो, दु और ह हो जाता है। यह इकारान्त, उकारान्त आदि प्रातिपदिकों से बाद में भी होता है।

(क) **अग्नेः**—अग्नि + ङस्-२.२ नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि + ङस्। ५.३८ से इकार का दीर्घ-अग्गी + ङस्। अदन्तवत् ५.६ से ङस् का दो, दु और ह-**अग्गीदो, अग्गीदु, अग्गीह**।

(ख) **वायोः**—वायु + ङस् २.२ से यकार का लोप-वाउ + ङसि्। ५.१८ से उकार दीर्घ-वाऊ + ङस्। अदन्तवत् ५.६ से ङस् का दो, दु और ह-**वाऊदो, वाऊदु, वाऊह**।

४. अकारान्त प्रतिपदिक से बाद वाले सुप् के स्थान पर ५.१० से होने वाला सु इकारान्त उकारान्त आदि सभी प्रातिपादिकों से बाद में होता है।

(क) **अग्निषु**—२.२ से नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व अग्गि + सुप्। ५.१८ से इकार का दीर्घ-अग्गी + सुप्। अदन्तवत् ५.१० से सुप् का सु-**अग्गीसु**।

(ख) **वायुषु**—वायु + सुप्-२.२ से यकार का लोप-वाउ + सुप्। सुप् ५.१८ से उकार का दीर्घ वाऊ + सुप्। अदन्तवत् ५.१० से सुप् का सु-वाऊसु।

५. इसी प्रकार संख्या वाचक प्रातिपदिकों का भी विधान न होने पर समझ लेना चाहिए।

(क) **द्वि का तृतीया बहुवचन में**—द्वि + भिस्-६.५० से द्वि का दो-दो + भिस्। अदन्तवत् ५.५ से भिस् का हिं-**दोहिं**।

(ख) **त्रिभिः**—त्रि + भिस्-६.५५ से त्रि का ति-ति + भिस्। ५.१८ से इकार का दीर्घ-ती + भिस्। अदन्तवत् ५.५ से भिस् का हिं-तीहिं।

(ग) **चतुर्भिः**—चतुः + भिस्-४.६ से विसर्गलोप चतु + भिस्। २.२ से तकार का लोप-चउ + भिस्। ५.१८ से उकार का दीर्घ-चऊ + भिस्। अदन्तवत् ५.५ से भिस् का हिं-**चऊहिं**।

**विशेष**—इसी प्रकार सभी प्रतिपादिकों से बाद में अविहित विभक्ति प्रत्ययों के स्थान पर अदन्तवत् आदेश को समझना चाहिए।

## न ङिङस्योरेदोतौ ।।६१।।

**पदच्छेद**—न। ङिङस्योः। एदातौ।

**पदार्थ**—ङिङस्योः = ङि और ङसि के स्थान पर। एदातौ = एकार और आकार। न = नहीं।

**सू०अ०**—ङि और ङसि के स्थान पर (अदन्तवत्) होने वाला एकार और आकार नहीं होता।

**वृत्तिः—इकारोकारान्तानां ङिङस्योरदन्तवद् एकाराकारौ न भवतः। अग्गिम्मि (६-५२ ङि = म्मि, शेषं अग्गिस्सेतिवत्)। वाउम्मि (२-२ यलोपः, शेषं स्पष्टम्)। अग्गीदो, वाऊदो। अग्गीदु, वाऊदु। अग्गीहि, वाऊहि (५-६ ङसि = दो, दु, हि, शेषं पूर्ववत् स्पष्टम्) ॥६१॥**

**व्याख्या**—यह सूत्र पूर्ववर्ती सूत्र ६.६० का अपवाद है। अकारान्त से अन्य अर्थात् इकारान्त उकारान्त इत्यादि प्रातिपदिकों से बाद में सप्तमी एकवचन वाले प्रत्यय ङि के स्थान पर ५.९ से होने वाला ए और पञ्चमी एकवचन वाले प्रत्यय ङसि के स्थान पर ५.६ से होने वाला आ नही होता है। जैसे-

**१. ङि के स्थान पर—**

**(क) अग्नौ**—अग्नि + ङि। ३.२ से नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि + ङि। प्रस्तुत सूत्र से अदन्तवत् ५.९ से ङि के स्थान पर होने वाले ए का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होने से ६.५२ से प्राप्त म्मि-**अग्गिम्मि**।

**(ख) वायौ**—वायु + ङि-२.२ से यकार का लोप-वाउ + ङि। प्रस्तुत सूत्र से अदन्तवत् ५.९ से ङि के स्थान पर होने वाले ए का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होने के कारण ६.५२ से प्राप्त म्मि-**वाउम्मि**।

**२. ङसि के स्थान पर—**

**(क) अग्ने**—अग्नि + ङसि। ३.२ से नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि + ङसि। ५.१८ से इकार का दीर्घ अग्गी + ङसि। प्रस्तुत सूत्र से ५.६ से ङसि के स्थान पर आ होने का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होने से उसी ५.६ से ङसि के स्थान पर होने वाला-दो, दु हि-**अग्गीदो, अग्गीदु, अग्गीहि**।

**(ख) वायोः**—वायु + ङसि-२.२ से यकार का लोप-वाउ + ङसि। ५.१८ से उकार का दीर्घ-वाऊ + ङसि। प्रस्तुत सूत्र से ५.६ से ङसि के स्थान पर आ होने का प्रस्तुत सूत्र से निषेध होने से उसी सूत्र ५.६ से प्राप्त ङसि के स्थान होने वाला दो, दु, हि-**वाऊदो, वाऊदी** और **वाऊहि**।

## ए भ्यसि ॥६२॥

**पदच्छेद**—ए। भ्यसि।

**पदार्थ**—भ्यति = भ्यस् के स्थान पर। ए = ए।

**सू०अ०**—भ्यस् के स्थान पर (अदान्तवत्) होने वाला एकार (भी नहीं होता है)।

**वृत्तिः—नेत्यनुवर्तते । भ्यसि परत इकारोकारान्तयोरदन्तवदेत्वं न भवति । अग्गीहिन्तो, वाऊहिन्तो, अग्गीसुन्तो, वाऊसुन्तो (५-६, १२ सूत्रयोर्बाधः, ५-११ दीर्घः, ५-७ भ्यस् = हिन्तो, सुन्तो, शेषं पूर्ववत्) ।।६२।।**

**व्याख्या**—यह सूत्र भी ६.६० का अपवाद है। अकारान्त से अन्य अर्थात् इकारान्त उकारान्त इत्यादि प्रातिपादिकों से बाद में पञ्चमी बहुवचन के प्रत्यय भ्यस् के स्थान पर 'ए' नहीं होता। जैसे-

१. **अग्नीभ्यः**—३.२ से नकार का लोप और ३.५० से गकार का द्वित्व-अग्गि + भ्यस्। ५.११ से उकार का दीर्घ-वाऊ + भ्यस्। ५.१२ से भ्यस् का हिन्तो, सुन्तो-**अग्गिहिन्तो, अग्गिसुन्तो**।

२. **वायुभिः**—वायु + भ्यस्। २.२ से यकार का लोप-वाउ + भ्यस्। ५.११ से उकार का दीर्घ-वाऊ + भ्यस्। ५.१२ से भ्यस् का हिन्तो-सुन्तो-**वाऊहिन्तो, वाऊसुन्तो**।

## द्विवचनस्य बहुवचनम् ।।६३।।

**पदच्छेद**—द्विवचनस्य। बहुवचनम्।

**पदार्थ**—द्विवचनस्य = द्विवचन के स्थान पर। बहुवचनम् = बहुवचन।

**सू०अ०**—द्विवचन के स्थान पर बहुवचन (होता है।)

**वृत्तिः—सर्वासां विभक्तीनां सुपां तिङा च द्विवचनस्य बहुवचनं प्रयोक्तव्यम् । वृक्षौ, वच्छा । वृक्षाभ्याम्, वच्छेहिं, वच्छाहिन्तो । वृक्षयोः, वच्छेसु, वच्छाण । (स्पष्टं, पञ्चमपरिच्छेदे व्याख्याताः) । तिङा यथा-तिष्ठाः, चिट्ठन्ति (१२-१६ स्था = चिट्ठ, ७-४ झि = न्ति) ।।६३।।**

**व्याख्या**—प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। वहाँ द्विवचन के स्थान पर बहुवचन होता है। जैसे-

१. **वृक्षौ**—वृक्ष + जस् (दृष्टव्य ५.२ का उदाहरण)।

२. **वृक्षाभ्याम्**—वृक्ष + भ्यस् (द्रष्टव्य ५.५ और ५.६ का उदाहरण)।

३. **वृक्षयोः**—वृक्ष + सुप् (द्रष्टव्य ५.१० का उदाहरण)।

## चतुर्थ्याः षष्ठी ।।६४।।

**पदच्छेद**—चतुर्थ्याः। षष्ठी।

**पदार्थ**—चतुर्थ्याः = चतुर्थी के स्थान पर। षष्ठी = षष्ठी।

**सू०अ०**—चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी (होती है)।

**वृत्ति:—चतुर्थीविभक्तेः स्थाने षष्ठीविभक्तिर्भवति । बह्मणस्स देहि ( ३ - ३ रलोपः ५ - १ ० ङस् = स्स, देहीति संस्कृतसमः) । बह्मणाणं देहि । ब्राह्मणाय देहि । ब्रह्मणेभ्यो देहि (५ - ११ आमि दीर्घः, ५ - ४० आम् = णं, शेषं स्पष्टम्) ।।६४।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य षष्ठः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—प्राकृत में चतुर्थी का अभाव होता है। अत: संस्कृत के चतुर्थी के स्थान पर प्राकृत में षष्ठी होती है। जैसे-

१. **ब्राह्मणाय**—प्रस्तुत सूत्र से चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी-ब्राह्मण + ङस्-३.३ से रेफ का लोप-बाह्मण + ङस्। ४.१ से आ का अ-बह्मण + ङस् ३.८ से ह्म का म्ह बम्हण + ङस्। ५.१० से ङस् का स्स-**बम्हणस्स**।

२. **ब्राहमणेम्यः**—प्रस्तुत सूत्र से चतुर्थी के स्थान पर षष्ठी-ब्राह्मण + आम्। ३.३ से रेफ का लोप-बाह्मण + आम्। ४.१ से आ का अ-बह्मण + आम्। ३.८ से ह्म का म्ह्-बम्हण + आम्। ५.४० से आम् का णं-**बम्हणं**।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश'
का षष्ठ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# सप्तमः परिच्छेदः
## ( तिङन्तविधानम् )

### ततिपोरिदेतौ ।।१।।

**पदच्छेद**—ततिपोः । इदेतौ ।

**पदार्थ**—ततिपोः = त और तिप् के स्थान पर । इदेतौ = इ और ए ।

**सू०अ०**—त और तिप् के स्थान पर इ और ए (होते हैं) ।

**वृत्तिः—त, तिप्-इत्येतयोरेकस्य स्थाने इत्, एत् इत्येतावादेशौ भवतः । पढइ (२-२४ ठ् = ढ, शेषं स्पष्टम्), पढए । सहइ, सहए । (यथाक्रमं तिप इः, तस्य ए) पठित । पठतः । सहति । सहते ।।१।।**

**व्याख्या**—प्रथम पुरुष एकवचन के परस्मैपद में तिप् और आत्मने पद में त प्रत्यय होता है । प्राकृत में तिप् के स्थान पर इ और त के स्थान पर ए हो जाता है । जैसे-

१. **पठति**—पठ् + तिप् । ८.७१ से पठ् का अदन्त पठ + तिप् । २.२४ से ठ् का ढ्-पढ + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से तिप् का इ-**पढइ** ।

२. **सहति**—सह् + तिप् । ८.७१ से सह् का अदन्त-सह + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से तिप् का इ-सहइ ।

३. **पठते**—पठ् + त । ८.७१ से पठ् का अदन्त-पठ + त । प्रस्तुत सूत्र से त का ए-**पठए** ।

४. **सहते**—सह् + त । ८.७१ से सह् का अदन्त सह + त । प्रस्तुत सूत्र से त का ए-**सहए** ।

### थास्सिपोः सि-से ।।२।।

**पदच्छेद**—थास्सिपोः । सि-से ।

**पदार्थ**—थास्सिपोः = थाः और सिप् के स्थान पर । सि-सि = सि और से ।

**सू०अ०**—थाः और सिप् के स्थान पर सि और से (होता है) ।

**वृत्तिः—थास्, सिप्-इत्येतयोरेैकस्य स्थाने सि, से इत्येतावादेशौ भवतः ।**

**पढसि । पढसे । सहसि । सहसे । (पूर्ववत् ठ् = ढ, अन्यत्सुगमम्) ।।२।।**

**व्याख्या**—मध्यम पुरुष एकवचन के परस्मैपद में सिप् और आत्मनेपद में था: प्रत्यय होता है। प्राकृत में सिप् के स्थान पर इ और था: के स्थान पर ए हो जाता है। जैसे-

१. **पठसि**—पठ् + सिप्। ८.७१ से ठ का अदन्त-पठ + सिप्। २.२४ से ठ् का ढ्-पढ + सिप्। प्रस्तुत सूत्र से सिप् का सि-**पढसि**।

२. **सहसि**—सह् + सिप्। ८.७१ से अदन्त-सह् + सिप्। प्रस्तुत सूत्र से सिप् का सि-**सहसि**।

३. **पठसे**—पठ् + स्था:। ८.७१ से अदन्त-सह + स्था:। २.२४ से ठ् का ढ् = पढ + स्था:। प्रस्तुत सूत्र से सिप् का स्था: का से-**पढसे**।

४. **सहते**—सह् + स्था:। ८.७१ से अदन्त-सह + स्था:। प्रस्तुत सूत्र से स्था: का से -**सहसे**।

## इड्मिपोर्मिः ।।३।।

**पदच्छेद**—इड्मिपो:। मि:।

**पदार्थ**—इड्मिपो: = इट् और मिप् के स्थान पर। मि: = मि।

**सू०अ०**—इट् और मिप् के स्थान पर मि होता है।

**वृत्तिः—इट्, मिप्-इत्येतयोः स्थाने मिर्भवति । पढामि । हसामि । सहामि (७-३०आत्वम्) ।।३।।**

**व्याख्या**—संस्कृत में उत्तम पुरुष एक वचन में परस्मैपद में मिप् और आत्मनेपद में इट् प्रत्यय होता है। प्राकृत में इस के स्थान पर मि होता है। जैसे-

१. **पठामि**—पठ् + मिप्-८.४ से अदन्त पठ + मिप्। २.२४ से ठ् का ढ-पढ + मिप्। प्रस्तुत सूत्र से मिप् का मि-**पढामि**।

२. **पठे**—पठ् + इट्-८.७१ से अदन्त-पठ + इट्। २.२४ से ठ् का ढ्-पढ + इट्। ७.३० से अ का आ- पढा + इट्। प्रस्तुत सूत्र से इट् का मि-**पढामि**।

३. **हसामि**—हस् + मिप् अथवा इट्-८.७१ से अदन्त और ७.३० से अकार दीर्घ-हसा + मिप् अथवा इट् प्रस्तत से मि-हसामि।

४. **सहामि**—हसामि के समान समझ लेना चाहिए।

**विशेष**—इस प्रकार उत्तम पुरुष एकवचन में परस्मैपद और आत्मनेपद में समान ही बनते हैं।

## न्तिहेत्थामोमुमा बहुषु ।।४।।

**पदच्छेद**—न्तिहेत्थामोमुमाः । बहुषु ।

**पदार्थ**—बहुषु = बहुवचन में । न्तिहेत्थामोमुमाः = न्ति, ह-इत्था, मो-मु-म ।

**सू०अ०**—बहुवचन में (प्रथम पुरुष में) न्ति, (मध्यमपुरुष में, ह और इत्था तथा उत्तम पुरुष में मो, मु और म-होते हैं ।

**वृत्तिः—बहुषु वर्तमानानां तिङां स्थाने न्ति, ह, इत्था, मा, मु, म इत्येत आदेशा भवन्ति । प्रथमपुरुषस्य, रमंति । पढंति । हसंति (२-२४ ठ् = ढ, झि = न्ति कृते, ४-१७ बिन्दु, अन्यत् स्पष्यम्) । मध्यमस्य-रमह, पढह, हसह, पढित्था (मध्यमपुरुषे थ = ह, इत्थ इति द्वावादेशौ, शेषं स्पष्टम्) । उत्तमस्य-पढामो, पढंमु पढम (उत्तमस्य मो, मु म इत्येत आदेशाः, ७-३० आत्वविकल्पः,शेषं स्पष्टम्) ।।४।।**

**व्याख्या**—बहुवचन में प्रथम पुरुष परस्पैपद से झि और आत्मनेपद पद से झ के स्थान पर न्ति मध्यमपुरुष में परस्मैपद से थ और आत्मने पद से ध्वम् के स्थान पर ह और इत्था तथा उत्तमपुरुष में परस्मैपद से मस् और आत्मने पद से महिङ् स्थान पर मो, मु और म होते हैं ।

इस प्रकार प्रथमपुरुष बहुवचन में झि और झ दोनों के स्थान पर न्ति, मध्यम पुरुष बहुवचन थ और ध्वम् दोनों के स्थान पर ह और इत्था-ये दोनों रूप तथा उत्तम पुरुष बहुवचन में मस् और महिङ् इन दोनों के स्थान पर मो, मु और म ये तीन रूप बनते है । जैसे-

**१. प्रथमपुरुष बहुवचन**—

(क) **पठन्ति, पठन्ते**—पठ् + झि या पठ् + झ । ८.७१ से अदन्त पठ + झि या पठ + झ । २.२४ से ठ् का ढ्-पढ + झि या पठ + झ । प्रस्तुत सूत्र से झि और झ का न्ति-**पढन्ति, पढ्न्ति** ।

(ख) **हसन्ति, हसन्ते**—हस् + झि या हस् + झ । ८.७१ अदन्त-हस् + झि या हस् + झ । प्रस्तुत सूत्र से झि और झ का न्ति-**हसन्ति, हसन्ति** ।

(ग) **रमन्ति, रमन्ते**—रम् + झि या रम् + झ । ८.७१ से अदन्त-रम + झि या रम + झ । प्रस्तुत सूत्र से झि और झ का न्ति-**रमन्ति, रमन्ति** ।

**२. मध्यमपुरूष बहुवचन**—

(क) **पठथ, पठध्वम्**—पठ् + ध या पठ् + ध्वम् । ८.७१ से अदन्त पठ + थ या पठ + ध्वम् । २.२४ से ठ् का ढ्- पढ + थ या पढ + ध्वम् । प्रस्तुत सूत्र

से थ और ध्वम् प्रत्येक के स्थान ह और इत्था-**पढह, पढित्था** या **पढह, पढित्था** ।

**(ख) हसथ, हसध्वम्**—हस् + थ या हस् + ध्वम् । ८.७१ से अदन्त हस् + थ, हस + ध्वम् । प्रस्तुत सूत्र से थ और ध्वम् प्रत्येक के स्थान पर ह और इत्था-**हसह, हसित्था** या **हसह, असित्था** ।

**(ग) रमथ, रमध्वम्**—रम् + थ, रम् + ध्वम् । ८.७१ से अदन्त-रम + थ या रम + ध्वम् । प्रस्तुत सूत्र से थ और ध्वम् प्रत्येक के स्थान पर ह और इत्था-**रमह, रमित्था** और **रमह-रमित्था** ।

**३. उत्तमपुरुष बहुवचन**—

**(क) पठामः, पठामहे**—पठ् + मस् या पठ + महिङ् । ८.१७ से अदन्त पठ + मस् पठ + महिङ् । २.२४ से ठ का ढ-पढ + मस् या पढ + महिङ् । ७.३० से अकार का दीर्घ-पढा + मस्, पढा + महिङ् । प्रस्तुत सूत्र मस् और महिङ् प्रत्येक के स्थान पर मो, मु और म-**पढामो, मढामु, पढाम** या **पढामो, पढामु, पढाम** ।

**(ख) हसामः, हसामहे**—हस् + मस् या हस् + महिङ् । ८.७१ अदन्त हस + मस् या हस् + महिङ् । ७.३० से अकार का दीर्घ-हसा + मस्, हसा + महिङ् । प्रस्तुत सूत्र से मस् और महिङ् प्रत्येक के स्थान पर मो, मु और म-**हसामो, हसामु, हसाम** या **हसामो, हसामु** और **हषाम** ।

**(ग) रमामः, रमामहे**—रम् + मस् या रम् + महिङ् । ८.७१ से अदन्त-रम + मस् या रम + महिङ् । ७.३० से अकार का दीर्घ-रमा + मस् या रमा + महिङ् । प्रस्तुत सूत्र मस् और महिङ् प्रत्येक के स्थान पर मो, मु और म- **रमामो, रमामु, रमाम** या **रमामो, रमामु रमाम** ।

## अत ए-से ।।५।।

**पदच्छेद**—अतः । ए-से ।

**पदार्थ**—अतः = अकारान्त (धातुओं) से बाद में । ए-से = ए और से ।

**स० अ०**—अकारान्त (धातुओं) से बाद में ए और से (होता है) ।

**वृत्तिः—नित्यार्थ वचनं यतो विशेषणम् । ततिपोः सिप्थासोः ए से इत्यादेशावत एव परौ भवतो, नान्यस्मात् । ततिपोः, रमए, पढए । सिप्थासोः रमसे, पढसे (रम् = त = ए-रमए । २-२४ ठ् = ढ, पढ-ति = ए पढए । रम्-थाम् = से-रमसे । पढ-सिप् = से-पढसे) । अत इति किम्? होइ (८-१ भू-हो, ७-१ ति = इ) । भवति ।।५।।**

**व्याख्या**—७.१ में प्रथमापुरुष एकवचन के प्रत्यय त के स्थान पर ए होने और ७.२ में मध्यमपुरुष एकवचन के प्रत्यय के स्थान पर से होने का विधान किया गया है। ये ए और से अकारान्त धातुओं से बाद में ही होते हैं, अन्य धातुओं से बाद में प्रथमा एक वचन में इ और द्वितीया एकवचन में सि ही होता है। जैसे-

१. **रमते**—रम् + त-८.७१ से अदन्त-रम + त। ७.१ से त का ए-**रमए**।

२. **पठ्यते**—पठ् + त। ७.७१ से अदन्त-पठ् + त। २.२४ से ठ का ढ-पढ + त। ७.१ से त का ए-**पढए**।

३. **रमसे**—रम् + थाः। ७.७१ से अदन्त-रम + स्था। ७.२ से थाः का से-**रमसे**।

४. **पठ्यसे**—पठ् + स्थाः। ७.७१ से अदन्त-पठ + स्थाः। ७.२ से स्था का से-**पठसे**।

## अस्तेर्लोपः ॥६॥

**पदच्छेद**—अस्तेः। लोपः।

**पदार्थ**—तिप् (इत्यादि) बाद में होने पर अस् (धातु) का। लोपः = लोप।

**सू०अ०**—तिप् (इत्यादि) बाद में होने पर अस् धातु का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्तेर्धातोः थास्सिपोरादेशयोः परतो लोपो भवति। सुत्तो सि (७-२ सिप् = सि, शेषं ३-१ सूत्रं स्पष्टम्)। पुरिसो सि (१-३३ सूत्रं स्पष्टम्)। सुप्तोऽसि। पुरुषोऽसि ॥६॥**

**व्याख्या**—तिङ् प्रत्यय बाद में होने पर अस् धातु का लोप (हो जाता है)।

१. **सुप्तो असि**—सुप्तः-३.१ से पकार का लोप और ३.५० से तकार का द्वित्व-सुत्तः। ५.१ से सु का ओ-सुत्तो। असि-अस् + सिप्। ७.४ से सिप् का सि-अस् + सि। प्रस्तुत सूत्र से अस् का लोप-**सुत्तो सि**।

२. **पुरुषो असि**—पुरुषः-१.३३ से स का रि-पुरिषः। २.४३ से ष का स-पुरिसः। ५.१ से सु का ओ-पुरिसो। असि-पूर्ववर्ती उदाहरण के समान प्रस्तुत सूत्र से अस् का लोप-**पुरिसो सि**।

## मिमोमुमानामधो हश्च ॥७॥

**पदच्छेद**—मि-मो-मु-मानाम्। अधः। हश्च।

**पदार्थ**—मि-मो-मु-मानाम् = मि, मो, मु और म। अधः = बाद में। हः च = ह भी।

**सू०अ०**—मि, मो, मु और म (के मकार) से बाद में हकार भी (प्रयुक्त होता है)।

**वृत्तिः—मिमोमुमानामस्तेः परेषामधो हकारः प्रयोक्तव्यः । असतेश्च लोपः । गओ म्हि, गअ म्हो । गअ म्ह (२-२ तलोपः, ५-१ ओ), (७-२ मिप् = मि, ७-३ मस् = मा, मु, म, ५-२ जसो लोपः) गतोऽस्मि । गताः स्मः ।।७।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त पूर्ववर्ती सूत्र ७.६ में विहित अस् के लोप का ग्रहण होता है । उत्तमपुरुष के एक वचन और बहुवचन में अस् धातु का लोप हो जाता है तथा एकवचन में मिप् के स्थान पर ७.३ से हुए मि तथा बहुवचन में मस् के स्थान पर हुए ७.४ से मो, मु और म के मकार से बाद में हकार का प्रयोग भी होता है । जैसे-

१. **गतो अस्मि**—गतः । २.२ से तकार का लोप-गअः । ५.१ से सु का ओ-गओ । अस्मि-अस् + मिप् । ७.३ से मिप् का मि-अस् + मि । ७.६ से अस् का लोप और प्रस्तुत सूत्र से म् बाद में ह का प्रयोग-म्हि । **गओ म्हि** ।

२. **गता स्मः**—गताः । २.२ से तकार का लोप-गआः । ५.२ से जस् का लोप-गआ । स्मः-अस् + मस् । ७.४ से मस् का मो-अस् + मो । ७.६ से अस् का लोप और प्रस्तुत सूत्र से म् बाद हकार का योग-म्हो ।

## यक ईअइज्जौ ।।८।।

**पदच्छेद**—यकः । ईअइज्जौ ।

**पदार्थ**—यकः = यक् के स्थान पर । ईअइज्जौ = ईअ और इज्ज ।

**सू०अ०**—यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज (होता है) ।

**वृत्तिः—यकः स्थाने ईअ इज्ज इत्यादेशौ भवतः । पढीअइ । पढिज्जइ । सहीअइ । सहिज्जइ । (स्पष्टम्) पठ्यते । सह्यते ।।८।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्मवचाच्य में संस्कृत के धातुओं से यक् प्रत्यय लगता है, किन्तु प्राकृत में उसके स्थान पर ईअ और इज्ज प्रत्यय होते हैं । जैसे-

१. **पठ्यते**—पठ् + यक् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज पठ् + ईअ, इज्ज + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-पठ् + ईअ, इज्ज + इ-**पठीअइ, पठिज्जइ** ।

२. **सह्यते**—सह् + यक् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज सह् + ईअ, इज्ज + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**सहीअइ, सहिज्जइ** ।

## नान्त्यद्वित्वे ।।९।।

**पदच्छेद**—न । अन्त्यद्वित्वे ।

**पदार्थ**—अन्त्य द्वित्वे = अन्त्य में दो व्यञ्जन होने पर । न = नहीं ।

**सू० अ०**—धातु के अन्त्य में दो व्यञ्जन हो जाने पर यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज नहीं (होता)।

**वृत्तिः—धातोरन्त्यद्वित्वे सति यक ईअ इज्ज इत्यादेशौ न भवतः। हस्सइ। गम्मइ (८-५८ गमादीनां द्वित्वम्)। हस्यते। गम्यते। गमादीनां विकल्पेन [द्वित्व-विधानात्] द्वित्वविधाने उक्तावादेशौ न भवतः, द्वित्वाविधाने तु भवत एव। गमी-अइ, गमिज्जइ (पक्षे-७-८ ईअ इज्ज-आदेशौ, शेषं पूर्ववत् स्पष्टम्)॥९॥**

**व्याख्या**—८.५२, ८.५८ इत्यादि में जिन धातुओं के अन्त्य व्यञ्जन के द्वित्व होने का विधान किया गया है, उन द्वित्व को प्राप्त अन्त्य वर्ण वाले व्यञ्जन से बाद में यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज नहीं होता। जैसे-

१. **हस्यते**—हस् + यत् + त-८.५८ से हस् के अन्त्य व्यञ्जन का विकल्प से द्वित्व होने पर प्रस्तुत सूत्र से यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज होने का अभाव तथा ७.१ से त के स्थान पर इ-**हस्सइ**। पक्ष में विकल्प न होने पर यक् के स्थान पर ७.८ से ईअ और इज्ज और ७.१ से त का इ-**हसीअइ, हसिज्जइ**।

२. **गम्यते**—गम् + यक् + त-८.५८ से मकार का द्वित्व होने पर प्रस्तुत सूत्र से यक् के स्थान पर ईअ और इज्ज होने का अभाव और तथा ७.१ से त का इ-**गम्मइ**। पक्ष में द्वित्व न होने पर यक् का ईअ तथा इज्ज और ७.१ से त का इ-**गमीअइ, गमिज्जइ**।

३. **शक्यते**—सक् + यत् + त-८.५२ से शक् के अन्त्य व्यञ्जन का नित्य द्वित्व होने से यत् के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से ईअ और इज्ज होने का अभाव और ७.१ से त का इ और ए-शक्कइ। ५.४२ से श का स-**सक्कइ, सक्कए**।

## न्तमाणौ शतृशानचोः॥१०॥

**पदच्छेद**—अन्तमाणौ। शतृशानचोः।

**पदार्थ**—शतृशानचोः = शतृ और शानच् (प्रत्ययों) के स्थान पर। न्तमाणौ = न्त और माण।

**सू० अ०**—शतृ और शानच् (प्रत्ययों) के स्थान पर न्त और माण होते है।

**वृत्तिः—शतृ-शानच् इत्येतयोरेकैकस्य न्त, माण इत्येतावादेशौ भवतः। पढन्तो। पढमाणो। हसन्तो। हसमाणो (पूर्ववत् पढ, शतृ = न्तजाते ५-१ ओ, एवं शानचोऽपि माण आदेशः, ५-१ ओत्वं च)॥१०॥**

**व्याख्या**—शतृ और शानच्-इन दोनों प्रत्ययों के स्थान पर न्त और माण होते है। जैसे-

१. **पठन्**—पठ् + शतृ + सुप्-८.७१ से पठ् का अदन्त-पठ + शतृ + सु। २.२४ से ठ् का ढ-पढ + शतृ + सु। प्रस्तुत सूत्र शतृ का न्त और माण-पढन्त + सु पढमाण + सु। ५.१ से सु का ओ-**पढन्तो, पढमाणो**।

२. **हसन्**—हस् + शतृ + सु-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + शतृ + सु। प्रस्तुत सूत्र से शतृ का न्त और माण-हसन्त + सु। हसमाण + सु। ५.१ से सु का ओ-**हसन्तो, हसमाणो**।

## ई च स्त्रियाम्।।११।।

**पदच्छेद**—ई। च। स्त्रियाम्।

**पदार्थ**—स्त्रियाम् = स्त्रीलिङ्ग में। ई च = ई भी।

**सू०अ०**—स्त्रीलिङ्ग में शतृ और शानच् के स्थान पर ई भी (होता है)।

**वृत्तिः—स्त्रियां वर्तमानयोः शतृशानचोरीकारादेशो भवति, न्तमाणौ च। हसई, हसन्ती, हसमाणा। वेवई, वेवन्ती, वेवमाणा (वेप० २-१५ प = व, शेषं स्पष्टम्, ई, न्ती, माणा)।।११।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित शतृ और शानच् के स्थान पर न्त और माण होने का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार स्त्रीलिङ्ग में प्रस्तुत सूत्र से शतृ और शानच् के स्थान पर ई तथा पूर्ववर्ती सूत्र से न्त और माण होना भी प्राप्त होता है। जैसे-

१. **हसती**—हस् + शतृ + सु-प्रस्तुत सूत्र से स्त्रीलिङ्ग में शतृ का ई-हस + ई + सु। ४.६ से सु का लोप-**हसई**। पूर्ववर्ती सूत्र ७.१० से **हसन्ती** और **हसमाणा**।

## धातोर्भविष्यति हिः।।१२।।

**पदच्छेद**—धातोः। भविष्यति। हि।

**पदार्थ**—भविष्यति = भविष्यत् (काल) में। धातोः = धातु से बाद में। हि = हि।

**सू०अ०**—भविष्यत् काल में धातु से बाद हि (का आगम होता है)।

**वृत्तिः—भविष्यति काले धातोः परो हिशब्दः प्रयोक्तव्यः। होहिइ (८-१ भू= हो, ७-१ ति = इ)। हसिहिइ (७-३३ अ = इ, शेषं पूर्ववत्)। होहिन्ति। हसिहिन्ति (७-४ झि = न्ति, ४ = २७ बिं०, शेषं पूर्ववत्)। भविष्यति। हसिष्यति। भविष्यन्ति।।१२।।**

**व्याख्या**—भविष्यत् काल में धातु और तिङ् प्रत्यय के मध्य में हि का आगम होता है। जैसे-

१. **भविष्यति**—भू + लृट् + तिप्। ८.१ से भू के स्थान पर हो-हो + लृट् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत् काल में धातु से बाद लृडर्थ में हि का आगम-होहि + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**होहिइ**।

२. **हसिष्यति**—हस् + लृट् +तिप्। ८.१ से हस् का अदन्त-हस + लृट् + तिप्। ४.१ से अन्त्य अ का इ-हसि + लृट् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत् काल में लिडर्थ में हि का आगम-हसि + हि + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**हसिहिइ**।

३. **भविष्यन्ति**—भू + लृट् + झि। ८.१ से भू का हो-हो + लृट् + झि। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत् काल में लिडर्थ में धातु से बाद हि आगम-हो + हि + झि। ७.३ से झि का नित-**होहिन्ति**।

४. **हसिष्यन्ति**—हस् + लृट् +झि। ८.७१ से हस् का अदन्त हस + लृट् +झि। ४.१ से अ का इ-हसि + लृट् + झि। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत् काल में लिडर्थ हि प्रत्यय का धातु से बाद में आगम-हसि + हिं + झि। ७.३ से झि का न्ति-**हसिहिन्ति**।

## उत्तमे स्सा-हा च ।।१३।।

**पदच्छेद**—उत्तमे। स्सा-हा च।

**पदार्थ**—उत्तमे = उत्तमपुरुष में। स्सा-हा = स्सा और हा। च = भी।

**सू०अ०**—उत्तमपुरुष में स्सा और हा (का) भी (आगम होता है)।

**वृत्तिः—भविष्यत्युत्तमे स्सा हा इत्येतौ प्रयोक्तव्यौ चकाराद् हिश्च। होस्सामि, होहामि, होहिमि। होस्सामो, होहामो, होहिमो (७-३ मिप् = मि, मस् = मो, शेषं स्सा, हा, हि आदेशाः, ७-३० इ, आ, शेषं स्पष्टम्) इत्यादि। भविष्यामि, भविष्यामः ।।१३।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ७.१२ से भविष्यत्काल में धातु से बाद में हि के भी आगम होने का ग्रहण होता है। इस प्रकार भविष्यत्काल में उत्तम-पुरुष में प्रस्तुत सूत्र से धातु से बाद में स्सा और हा का तथा पूर्ववर्ती सूत्र हि का आगम होता है। जैसे-

१. **भविष्यामि**—भू + लृट् + मिस्- ८.१ भू का हो-हो + लृट् + मिस्। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत काल उत्तमपुरूष में धातु से बाद लृडर्थ स्सा और हा का आगम-हो + स्सा, हा + हा + मिस् ७.३ से मिस् का मि-**होस्सामि, होहामि**। ७.१२ से-**होहामि**।

२. **भविष्यामः**—भू + ऌट् + मस्-८.१ से भू का हो-हो + ऌट् + मस्। प्रस्तुत सूत्र से उत्तमपुरुष में ऌडर्थ में स्सा और हा का धातु से बाद में आगम-हो + स्सा, हा + मस्। ७.४ से मिस् का मो, मु, म-**होस्सामो, होस्सामु, होस्साम, होहामो, होहामु, होहाम**। तथा ५.१२ से हि का आगम होने पर-**होहिमो, होहिमु, होहिम**।

## मिना स्सं वा ।।१४।।

**पदच्छेद**—मिना। स्सं। वा। सूत्र स्पष्टम् सूत्र स्पष्टम्

**पदार्थ**—मिना = मिस् प्रत्यय के साथ। वा = विकल्प से। स्सं = स्सं।

**सू०अ०**—मिस् प्रत्यय के सहित विकल्प से स्सं (भी होता है)।

**वृत्तिः—भविष्यत्युत्तमे मिना सह धातोः परः स्संशब्दः प्रयोक्तव्यो वा। होस्सं। पक्षे-होस्सामि, होहामि, होहिमि (८-१ भू = हो धातोः मिना सह स्सं, पक्षे-धातोः उत्तमे परे ७-१४ सूत्रं स्पष्टम्) ।।१४।।**

**व्याख्या**—भविष्यत्काल में उत्तमपुरुष एक वचन में मिस् के सहित स्सं भी होता है। विकल्प कहने से पूर्ववर्ती सूत्र ७.१२ में विहित हि का तथा ७.१३ में विहित सा और हा का आगम भी होता है। जैसे-

१. **भविष्यामि**—भू + ऌट् + मिस्-८.१ से भू का हो-हो + ऌट् + मिस्। प्रस्तुत सूत्र से भविष्यत् काल में ऌडर्थ मिस् के सहित विकल्प से स्सं-होस्सं। ७.१३ से स्सा और हा का आगम-**होस्सामि, होहामि** (द्रष्टव्य ७.१३ का उदाहरण-१) तथा ७.१२ से हि का आगम-**होहिमि** (द्रष्टव्य ७.१८ का उदाहरण-१)।

## मोमुमैर्हिस्सा-हित्था ।।१५।।

**पदच्छेद**—मोमुमैः। हिस्सा-हित्था।

**पदार्थ**—मोमुमैः = मो, मु और म के सहित। हिस्सा-हिस्सा और हित्था।

**सू०अ०**—(भविष्यत्काल में) ओ, मु और म के सहित हिस्सा और हित्था (हो जाता है)।

**वृत्तिः—भविष्यति काल उत्तमे बहुवचनादेशस्य मो, मु, म-इत्येतैः सह हिसा, हित्था, इत्येतावादेशौ वा भवतः।होहिस्सा, होहित्था। हसिहिस्सा, हसि-हित्था। एवं मुमयोरपि, इत्यादि (सूत्रविहितैर्मोमुमैः सह, शेषं स्पष्टम्)। भविश्यामः, हसिष्यामः। पक्षे-होहिमो, होस्सामो, होहामो। हसिहिमो, हसिस्सामो, हसिहामो। (पक्षे-७-१३ सूत्रविहितरूपाणि द्रष्टवयानि। सेट्हस्धातोरपि तथैव हि, स्सा,**

**हा इत्येते प्रयोक्तव्याः । एवं ७-४ सूत्रे शिष्टयोर्मुमयोरपि प्रयोगः । यथा-होहिमु, होहिम इत्यादयः) ।।१५।।**

**व्याख्या**—७.४ के अनुसार उत्तमपुरुष बहुवचन में मस् और महिङ् के स्थान होने वाले मो, मु और म के सहित ७.१२ से भविष्यत्काल के लिडर्थ में आने वाले प्रत्यय हि के स्थान पर विकल्प से हिस्सा और हित्था हो जाता है। जैसे-

१. **भविष्यामः**—भू + ऌट् + मस्-८.१ से भू का हो-हो + ऌट् + मस्। ७.४ के अनुसार मस् के स्थान पर-मो, मु और म-हो + ऌट् + मो, मु, हा। ७.१२ से भविष्यत्काल में लिडर्थ में आने वाला प्रत्यय हि-हो + मो, मु, म। प्रस्तुत सूत्र से मो, मु और म के साथ हि के स्थान पर विकल्प से-हिस्सा और हित्था- **होहिस्सा, होहित्था**। पक्ष में ५.१२ से **होहिमो** तथा ५.१३ से **होस्सामो, होस्सामु, होस्साम, होहामो, होहामु** और **होहाम**।

२. **हसिष्यामः**—हस् + ऌट् + मस्। ८.७१ से हस् का अदन्त-हस + ऌट् + मस्। ४.१ से अ का इ-हसि + ऌट् + मस्। ७.४ के अनुसार मस् के स्थान पर मो, मु म-हसि + ऌट् + मो, मु, म। प्रस्तुत सूत्र से मो मु और म के सहित ७.१२ से ऌडर्थ आगम के रूप में आने वाले हि के स्थान पर हिस्सा और हित्था-**हसिहिस्सा** और **हसिहित्था**। पक्ष में ५.१२ से **हसिहिमो हसिहिमु, हसिहिम** और ५.१३ से हसि-**स्सामो, हसिस्सामु,हसिस्साम् हसिहामो, हसिहामु** और **हसिहाम**।

## कृदाश्रुवचिमिरुदिदृशिविदिरूपाणां काहं-दाहं-सोच्छं-वोच्छं-गच्छं-रोच्छं-दच्छं-वेच्छं ।।१६।।

**पदच्छेद**—कृदाश्रुवचिगमिरुदिदृशिविदिरूपाणाम्। काहं-दाहं-सोच्छं-वोच्छं-गच्छं-रोच्छं-दच्छं-वेच्छं।

**पदार्थ**—कृदाश्रुवचिगमिरुदिदृशिविदिरूपाणाम् = कृ, दा, श्रु, वच्, गम्, रुद्, दृश् और विद् के स्थान पर। काहं-दाहं-सोच्छं-वोच्छं-गच्छं-रोच्छं-दच्छं और वोच्छं।

**सू०अ०**—(भविष्यत्काल उत्तमपुरुष एकवचन में) कृ, दा, श्रु, वच्, गम्, रूद् दृशं और विद् के स्थान पर (क्रमशः) काहं-दाहं-सोच्छं-वोच्छं-गच्छं-रोच्छं-दच्छं और वेच्छं (हो जाता है)।

**वृत्तिः—भविष्यति काल उत्तमैकवचने कृआदीनां स्थाने यथासंख्यं काहं प्रभृतय आदेशा भवन्ति। काहं, करिष्यामि। दाहं, दास्यामि। सोच्छं, श्रोष्यामि। वोच्छं, वक्ष्यामि। गच्छं, गमिष्यामि। रोच्छं, रोदिष्यामि। दच्छं, द्रक्ष्यामि। वेच्छं, वेत्स्यामि। इत्यादि ।।१६।।**

**व्याखया**—भविष्यत्काल उत्तमपुरुष के एकवचन में प्रत्यय मिस् के सहित कृ (करना) का काहं, दा (देना) का दाहं, श्रु (सुनना) का सोच्छं, वच् (बोलना) का वोच्छं, गम् (जाना) का गच्छं, रुद् (रोना) का रोच्छं, दृश् (देखना) का दच्छं और विद् (जानना) का वोच्छं हो जाता है। जैसे-

करिष्यामि-काहं, दाष्यामि-दाहं, श्रोष्यामि-सोच्छं, वक्ष्यामि-वोच्छं, गमिष्यामि-गच्छं,च रोदिष्यामि-रोच्छं, द्रक्ष्यामि-दंच्छ, वेत्स्यामि-वेच्छं।

## श्वादीनां त्रिष्वप्यनुस्वारवर्जं हिलोपश्च वा ।।१७।।

**पदच्छेद**—श्वादीनाम्। त्रिषु। अनुस्वारवर्जम्। हिलोपः। च। वा।

**पदार्थ**—त्रिषु = तीनों (पुरुषों) में श्वादीनाम् = श्रु इत्यादि (धातुओं) के स्थान पर। अनुस्वारवर्जम् = अनुस्वार-रहित च = और। वा = विकल्प से। हिलोपः = हि का लोप।

**सू०अ०**—तीनों (पुरुषों) में श्रु इत्यादि (धातुओं) के स्थान पर अनुस्वार-रहित (सोच्छ इत्यादि) होते हैं और विकल्प से हि का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—श्रु इत्येवमादीनां प्रथममध्मोत्तमेषु त्रिष्वपि पुरुषेषु परतो भविष्यति काले सोच्छं इत्यादय आदेशा भवन्ति, अनुस्वारं विहाय हिलोपश्च वा। सोच्छिइ, सोच्छिहिइ। श्रोष्यति। सोच्छिंति, सोच्छिहिंति। श्रोष्यसि (सोच्छादेशे ७-३३ झि = न्ति, ४-७ बिन्दुः, शेषं स्पष्टम्)। सोच्छिसि, सोच्छिहिसि। श्रोष्यसि (७-२ सिप्, थास् सि, शेषं पूर्ववत्)। सोच्छित्था, सोच्छिहित्था। श्रोष्यामि (७-३ मिप् = मि, शेषं पूर्ववत्)। सोच्छिमो, सोच्छिहिमो, सोच्छिस्सामु, सोच्छिमु, सोच्छिहिमु, सोच्छिम, सोच्छिहिम, सोच्छिस्सामो, सोच्छिस्सामु, सोच्छिस्साम। श्रोष्यामः (७-४ मस = मा, मु, म, एवं ७-१२ हि प्रयोगः, ७-१३ स्साप्रयोगे, -मोमुमानां, प्रयोगश्चाऽन्ते कार्यः)। एवं चोच्छादिरपि ।।१७।।**

**व्याख्या**—पूर्ववर्ती सूत्र ७.१६ में निर्दिष्ट कृ और दा (धातु) को छोड़ कर अन्य श्रु, वच्, गम्, रुद्, दृश् और विद् के स्थान पर क्रमशः अनुस्वाररहित सोच्छ, वोच्छ, गच्छ, रोच्छ, दच्छ और वेच्छ हो जाता है। साथ ही साथ विकल्प से भविष्यत्काल में आगम के रूप में आने वाले हि का लोप हो जाता है। विकल्प कहने से स्पष्ट है कि हि के आगमरहित और आगमसहित दोनों रूप बनते है। जैसे-

**१. श्रु का**—

**(क) श्रोत्ष्यति**—श्रु + लृट् + तिप्। ७.१६से श्रु के स्थान पर सोच्छ-सोच्छ + लिट् + तिप्। ७.१२ से भविष्यत्कालिक लिङर्थ हि का आगम-सोच्छ + हि +तिप्। ७.१ से तिप् का इ-सोच्छ + हि + इ। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का

लोप-**सोच्छइ**। पक्ष में हि का लोप न होकर ७.१२ से हि-**सोच्छ-हिइ**।

(ख) **श्रोष्यन्ति**—श्रु + लृट् + झि। ७.१६ से सु के स्थान पर सोच्छ-सोच्छ + लृट् + झि। ७.१२ से भविष्यत्कालिक लृडर्थ हि आगम-सोच्छ + हि + झि। ७.३ से झि का न्ति-सोच्छ + हि + न्ति। ४.१ से अ का इ-सोच्छि + हि + न्ति। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**सोच्छिन्ति**। पक्ष में ७.१२ से हि-**सोच्छिहिन्ति**।

(ग) **श्रोष्यसि**—श्रु + लृट् + सिप्। ७.१६ से श्रु का सोच्छ-सोच्छ + लृट् + सिप्। ७.१२ से हि का आगम-सोच्छ + हि + सिप्। ७.२ से सिप् का सि-सोच्छ + हि + सि। ४.१ से अ का इ-सोच्छि + हि + सि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**सोच्छिसि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**सोच्छिहिसि**।

(घ) **श्रोष्यथ**—श्रु + लृट् + थ। ७.१६ से श्रु का सोच्छ + सोच्छ + लृट् + थ। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-सोच्छ + हि + थ। ७.४ से थ का त्था-सोच्छ + हि + त्था-४.१ से अ का इ-सोच्छि + ह + त्था। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**सोच्छित्था**। पक्ष में ७.१२ से हि-**सोच्छिहित्था**।

(ङ) **श्रोष्यामि**—श्रु + लृट् + मिप्। ७.१६ से श्रु का सोच्छ-सोच्छ + लृट् + मिप्। ७.१२ से हि का आगम-श्रु + हि + मिप्। ७.३ मिप् का मि-सोच्छ + हि + मि। ४.१ से अ का इ-सोच्छि + हि + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**सोच्छिमि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**सोच्छिहिमि**।

(च) **श्रोष्यामः**—श्रु + लृट् + मस्। ७.१६ से श्रु का सोच्छ-सोच्छ + लृट् + मस्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-सोच्छ + हि + मस्। ७.४ से मस् का मो, मु। ४.१ से अ का इ-सोच्छि + हि + मो मु, म, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**सोच्छिमो, सोच्छिमु सोच्छिम**। पक्ष में-७.१२ से हि-**सोच्छिहिमो, सोच्छिहिमु, सोच्छिहिम**। ७.१३ से लृडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**सोच्छिहामो, सोच्छिहामु, सोच्छिहाम, सोच्छिस्सामो, सोच्छिस्सामु, सोच्छिस्साम**।

२. वच् का—

(क) **वक्ष्यशि**—वच् + लिट् + तिप्। ७.१६ से वच् का वोच्छ-वोच्छ + लिट् + तिप्। ७.१२ से लडर्थ हि का आगम-वोच्छ + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-वोच्छ + हि + इ। ४.१ से अ का इ-वोच्छि + हि + इ। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वोच्छिइ**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वोच्छि-हिइ**।

(ख) **वक्ष्यन्ति**—वच् + लृट् + झि। ७.१६ से वच् का वोच्छ-वोच्छ + लृट् + झि। ७.१२ से भविष्यत्कालिक लृडर्थ हि आगम-वोच्छ + हि + झि-७.४ से झि का न्ति-वोच्छ + हि + न्ति। ४.१ से अ का इ-वोच्छि + हि + न्ति। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**वोच्छिन्ति**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वोच्छिहिन्ति**।

(ग) **वक्ष्यसि**—वच् + लृट् + सिप्। ७.१६ से वच् का वोच्छ-वोच्छ + लृट् + सिप्। ७.१२ से हि का आगम-वोच्छ + हि + सिप्। ७.२ से सिप् का सि-वोच्छ + हि + सि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वोच्छसि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वोच्छहिसि**।

(घ) **वक्ष्यथि**—वच् + लृट् + थ। ७.१६से वच् का वोच्छ + वोच्छ + लृट् + थ। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वोच्छ + हि + थ। ७.४ से थ का इत्था + वोच्छ + हि + इत्था। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**वोच्छित्था**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वोच्छिहित्था**।

(ङ) **वक्ष्यामि**—वच् + लृट् + मिस्। ७.१६ से वच् का वोच्छ-वोच्छ + लृट् + मिस्। ७.१२ से हि का आगम-वोच्छ + हि + मिस्। ७.३ मिस् का मि-वोच्छ + हि + मि। ४.१ से अ का इ-वोच्छि + हि + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वोच्छिमि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वोच्छिहिमि**।

(च) **वक्ष्यामः**—वच् + लृट् + मस्। ७.१६ से वच् का वोच्छ-वोच्छ + लृट् + मस्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वोच्छ + हि + मस्। ७.४ से मस् का मो, मु, म-वोच्छ + हि + मो, मु, म। ४.१ से अ का इ-वोच्छि + हि + मो मु, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वोच्छिमो, वोच्छिमु वोच्छिम**। पक्ष में-७.१२ से हि-**वोच्छिहिमो, वोच्छिहिमु, वोच्छिहिम**। ७.१३ से लृडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**वोच्छिहामो, वोच्छिहामु, वोच्छिहाम, ओच्छिस्सामो, ओच्छिस्सामु, ओच्छिस्साम**।

३. गम् का—

(क) **गमिष्यति**—गम् + लृट् + तिप्। ७.१६ से गम् का गच्छ-गच्छ + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि-गच्छ + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-गच्छ + हि + इ। ४.१ से अ का इ-गच्छि + हि + इ। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**गच्छिइ**। पक्ष में ७.१२ से हि-**गच्छिहिइ**।

(ख) **गमिष्यन्ति**—गम् + लृट् + झि। ७.१६ से गम् का गच्छ-गच्छ + लिट् + झि। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-गच्छ + हि + झि। ७.४ से झि का न्ति-

गच्छ + हि + न्ति । ४.१ से अ का इ-गच्छि + हि + न्ति । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**गच्छिन्ति** । पक्ष में ७.१२ से हि-**गच्छिहिन्ति** ।

(ग) **गमिष्यसि**—गम् + लृट् + सिप् । ७.१६ से गम् का गच्छ-गच्छ + लृट् + सिप् । ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-गच्छ + हि + सिप् । ७.२ से सिप् का सि-गच्छ + हि + सि । ४.१ से अ क इ-गच्छि + हि + सि । प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**गच्छिसि** । पक्ष में ७.१२ से हि-**गच्छिहिसि** ।

(घ) **गमिष्यथ**—गम् + लृट् + थ । ७.१६ से गम् का गच्छ + गच्छ + लृट् + थ । ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-गच्छ + हि + थ । ७.४ से थ का इत्था + गच्छ + हि + इत्था । ४.१ से अ का-गच्छि + हि + त्थ । प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**गच्छित्था** । पक्ष में ७.१२ से हि-**गच्छिहित्था** ।

(ङ) **गमिष्यामि**—गम् + लृट् + मिस् । ७.१६ से गम् का गच्छ-गच्छ + लृट् + मिस् । ७.१२ से हि का आगम-गच्छ + हि + मिस् । ७.३ मिस् का मि-गच्छ + हि + मि । ४.१ से अ का इ-गच्छि + हि + मि । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**गच्छिमि** । पक्ष में ७.१२ से हि-**गच्छिहिमि** ।

(च) **गमिष्यामः**—गम् + लृट् + मस् । ७.१६ से गम् का गच्छ-गच्छ + लृट् + मस् । ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-गच्छ + हि + मस् । ७.४ से मस् का मो, मु, म-गच्छ + हि + मो, मु, म । ४.१ से अ का इ-गच्छि + हि + मो मु, म । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**गच्छिमो, गच्छिमु गच्छिम** । पक्ष में-७.१२ से हि-**गच्छिहिमो, गच्छिहिमु, गच्छिहिम** । ७.१३ से लिडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**गच्छहामो, गच्छिहामु, गच्छिहाम, गच्छिस्सामो, गच्छिस्सामु, गच्छिस्साम** ।

**४. रुद् का—**

(क) **रोदिष्यति**—रुद् + लृट् + तिप् । ७.१६ से रुद् का रोच्छ-रोच्छ + लृट् + तिप् । ७.१२ से लृडर्थ हि-का आगम रोच्छ + हि + तिप् । ४.१ से तिप् का इ-रोच्छ + हि + इ । ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + इ । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**रोच्छिइ** । पक्ष में ७.१२ से हि-**रोच्छिहिइ** ।

(ख) **रोदिष्यन्ति**—रुद् + लृट् + झि । ७.१६ से रुद् का रोच्छ-रोच्छ + लृट् + झि । ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-रोच्छ + हि + झि । ७.४ से झि का न्ति-रोच्छ + हि + न्ति । ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + न्ति । प्रस्तुत सूत्र से

विकल्प से हि का लोप-**रोच्छिन्ति**। पक्ष में ७.१२ से हि-**रोच्छिहिन्ति**।

(ग) **रोदिष्यसि**—रूद् + लिट् + सिप्। ७.१६ से रुद् का रोच्छ-रोच्छ + लिट् + सिप्। ७.१२ से लिडर्थ हि का आगम-रोच्छ + हि + सिप्। ७.२ से सिप् का सि-रोच्छ + हि + सि। ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + सि। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**रोच्छिसि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**रोच्छिहिसि**।

(घ) **रोदिष्यथ**—रूद् + लृट् + थ। ७.१६ से रूद् का रोच्छ + रोच्छ + लृट् + थ। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-रोच्छ + हि + थ। ७.४ से थ का-त्था + रोच्छ + हि + त्था। ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + त्था। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**रोच्छित्था**। पक्ष में ७.१२ से हि-**रोच्छहित्था**।

(ङ) **रोदिष्यामि**—रूद् + लृट् + मिस्। ७.१६ से रूद् का रोच्छ-रोच्छ + लृट् + मिस्। ७.१२ से हि का आगम-रोच्छ + हि + मिस्। ३.३ मिस् का मि-रोच्छ + हि + मि। ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**रोच्छिमि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**राच्छिहिमि**।

(च) **रादिष्यामः**—रुद् + लृट् + मस्। ७.१६ से रूद् का रोच्छ-रोच्छ + लृट् + मस्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-रोच्छ + हि + मस्। ७.४ से मस् का मो, मु, म-रोच्छ + लृट हि + मो, मु, म। ४.१ से अ का इ-रोच्छि + हि + मो, मु, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**रोच्छिमो, रोच्छिमु रोच्छिम**। पक्ष में-७.१२ से हि-**रोच्छिहिमो, रोच्छिहिमु, रोच्छिहिम**। ७.१३ से लिडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**रोच्छहामो, रोच्छिहामु, रोच्छिहाम, रोच्छिस्सामो, रोच्छिस्सामु, रोच्छिस्साम**।

५. **दृश का**—

(क) **द्रक्ष्यति**—दृश् + लृट् + तिप्। ७.१६ से दृश् का दच्छ-दच्छ + लिट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि-का आगम दच्छ + हि + तिप्। ४.१ से तिप् का इ-दच्छ + हि + इ। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + इ। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**दच्छिइ**। पक्ष में ७.१२ से हि-**दच्छिहिइ**।

(ख) **द्रक्ष्यन्ति**—दृश् + लिट् + झि। ७.१६ से दृश् का दच्छ-दच्छ + लिट् + झि। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-दच्छ + हि + झि। ७.४ से झि का न्ति-दच्छ + हि + न्ति। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + न्ति। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**दच्छिन्ति**। पक्ष में ७.१२ से हि-**दच्छिहिन्ति**।

(ग) **द्रक्ष्यसि**—दृश् + लिट् + सिप्। ७.१६ से दृश् का दच्छ-दच्छ + लिट् +

सिप्। ७.१२ से लिडर्थ हि का आगम-दच्छ + हि + सिप्। ७.२ से सिप् का सि-दच्छ + हि + सि। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + सि। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**दच्छिसि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**दच्छिहिसि**।

(घ) **द्रक्ष्यथ**—दृश् + लृट् + थ। ७.१६ से दृश् का दृश् + दच्छ + लृट् + थ। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-दच्छ + हि + थ। ४.४ से थ का त्था + दच्छ + हि + त्था। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + त्थ। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**दच्छित्था**। पक्ष में ७.१२ से हि-**दच्छहित्था**।

(ङ) **द्रक्ष्यामि**—दृश् + लृट् + मिस्। ७.१६ से दृश् का दच्छ-दच्छ + लृट् + मिस्। ७.१२ से हि का आगम-दच्छ + हि + मिस्। ४.३ मिस् का मि-दच्छ + हि + मि। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**दच्छिमि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**दच्छिहिमि**।

(च) **द्रक्ष्यामः**—दृश् + लृट् + मस्। ७.१६ से दृश् का दच्छ-दच्छ + लृट् + मस्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-दच्छ + हि + मस्। ७.४ से मस् का मो, मु, म दच्छ + हि + मो, मु, म। ४.१ से अ का इ-दच्छि + हि + मो मु, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**दच्छिमो, दच्छिमु दच्छिम**। पक्ष में-७.१२ से हि-**दच्छिहिमो, दच्छिहिमु, दच्छिहिम**। ७.१३ से लृडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**दच्छिहामो, दच्छिहामु, दच्छिहाम, दच्छिस्सामो, दच्छिस्सामु, दच्छिस्साम**।

६. **विद् का**—

(क) **वेत्स्यति**—विद् + लृट् + तिप्। ७.१६ से विद् का वेच्छ-वेच्छ + लिट् + तिप्। ५.१२ से लृडर्थ हि-का आगम विद् + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-विद् + हि + इ। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + इ। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप **वेच्छिइ**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वेच्छिहिइ**।

(ख) **वेत्स्यन्ति**—विद् + लृट् + झि। ७.१६ से विद् का वेच्छ-वेच्छ + लिट् + झि। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वेच्छ + हि + झि। ५.४ से झि का न्ति-वेच्छ + हि + न्ति। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + न्ति। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वेच्छिन्ति**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वेच्छिहिन्ति**।

(ग) **वेत्स्यसि**—विद् + लृट् + सिप्। ७.१६ से विद् का वेच्छ-वेच्छ + लिट् + सिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वेच्छ + हि + सिप्। २.२ से सिप् का सि-वेच्छ + हि + सि। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + सि। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**वेच्छिसि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वेच्छिहिसि**।

(घ) **वेत्स्यथ**—विद् + लृट् + थ। ७.१६ से विद् का वेच्छ + वेच्छ + लृट् + थ। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वेच्छ + हि + थ। ७.४ से थ का त्था + वेच्छ + हि + त्था। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + त्थ। प्रस्तुत सूत्र से हि का विकल्प से लोप-**वेच्छित्था**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वेच्छहित्था**।

(ङ) **वेत्स्यामि**—विद् + लृट् + मिस्। ७.१६ से विद् का वेच्छ-वेच्छ + लृट् + मिस्। ७.१२ से हि का आगम-वेच्छ + हि + मिस्। ७.३ मिस् का मि-वेच्छ + हि + मि। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वेच्छिमि**। पक्ष में ७.१२ से हि-**वेच्छिहिमि**।

(च) **वेत्स्यामः**—विद् + लृट् + मस्। ७.१६ से विद् का वेच्छ-वेच्छ + लृट् + मस्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-वेच्छ + हि + मस्। ४.४ से मस् का मो, मु, म वेच्छ + लृट हि + मो, मु, म। ४.१ से अ का इ-वेच्छि + हि + मो मु, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से हि का लोप-**वेच्छिमो, वेच्छिमु वेच्छिम**। पक्ष में-७.१२ से हि-**वेच्छिहिमो, वेच्छिहिमु, वेच्छिहिम**। ७.१३ से लृडर्थ में हा और स्सा का आगम होने पर-**वेच्छिहामो, वेच्छिहामु, वेच्छिहाम, वेच्छिस्सामो, वेच्छिस्सामु, वेच्छिस्साम**।

## उ-सु-मु विध्यादिष्वेकस्मिन्।।१८।।

**पदच्छेद**—उ-सु-मु। विध्यादिषु। एकस्मिन्।

**पदार्थ**—एकास्मिन् = एकवचन में। विध्यादिषु = इत्यादि में। उसुमु = उ, सु और मु।

**सू०अ०**—(तीनों पुरुषों के) एकवचन में विधि इत्यादि में (क्रमशः) उ, सु और मु (होते हैं)।

**वृत्तिः—विश्यादिष्वेकस्मिन्नुत्पन्नस्य प्रत्ययस्य यथासंख्यम् उ, सु, मु इत्येत आदेशा भवन्ति। हसउ। हससु। हसमु (स्पष्टं, ७-१ सूत्रस्य बाधः)। हसतु। हस। हसानि।।१८।।**

**व्याख्या**—विधि या आज्ञा के अर्थ में धातुओं से प्रथमपुरुष एकवचन में तिप् के स्थान पर उ, मध्यमपुरुष एकवचन में सिप् के स्थान पर सु और उत्तमपुरुष एकवचन मिस् के स्थान पर प्रत्यय होते है। जैसे-

१. **हसतु**—हस् + लोट् + तिप्-८.७१ से अदन्त-हस + लोट् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से लिङ् में तिप् के स्थान परउ-**हसउ**।

२. **हस्**—हस् + लोट् + सिप्-८.७१ से हस् अदन्त तथा प्रस्तुत सूत्र से सिप् का सु- **हससु**।

३. **हसानि**—हस् + लोट् + मिस्-८.७१ से अदन्त तथा प्रस्तुत सूत्र से मिस् का मु- **हसमु**।

**विशेष**—लोट् भी विध्यादि अर्थो में ही प्रयुक्त होता है। अतः यहाँ लिङ् और लोट् दोनों का ग्रहण होता है।

## न्तु ह मो बहुषु ।।१९।।

**पदच्छेद**—न्तु-ह-मो। बहुषु।

**पदार्थ**—बहुषु = बहुवचन में। न्तु-ह-मो = न्तु, ह और मो।

**सू०अ०**—(विध्यादि में तीनों पुरुष के) बहुवचन में (क्रमशः) न्तु, ह और मो (होते हैं)।

**वृत्तिः—विध्यादिषु बहुषूत्पन्नस्य प्रत्यस्य यथासंख्यं न्तु ह मो इत्येत आदेशा भवन्ति। हसन्तु, हसह, हसमो (७-४ सूत्रस्य बाधः, शेषं स्पष्टम्) ।।१९।।**

**व्याख्या**—विधि या आज्ञा अर्थ में प्रथम पुरुष बहुवचन झि के स्थान पर न्तु, मध्यमपुरुष बहुचन थ के स्थान पर ह और उत्तमपुरुष बहुवचन मस् के स्थान पर मु होता है। जैसे-

१. **हसन्तु**—हस् + लिङ् + झि-८.७१ से हस् का अदन्त तथा प्रस्तुत सूत्र से झि का न्तु-**हसन्तु**।

२. **हसत**—हस् + लिङ् + मस्-८.७१ से हस् का अदन्त तथा प्रस्तुत सूत्र से थ का ह-**हसह**।

३. **हसाम**—हस् + लिङ् + मस्-८.७ से हस् का अदन्त तथा प्रस्तुत सूत्र से मस् का मो-**हसमो**।

## वर्तमानभविष्यदनद्यतनयोर्ज्ज ज्जा वा ।।२०।।

**पदच्छेद**— वर्तमान भविष्यदनद्यतनयोः। ज्ज। ज्जा। वा।

**पदार्थ**—वर्तमान और अनद्यतन भविष्य में। वा = विकल्प से। ज्ञ ज्ञा = ज्ज और ज्जा।

**सू०अ०**—वर्तमान और अनद्यतन भविष्य में विकल्प से ज्ज और ज्जा (होते है)।

**वृत्तिः—वर्तमाने भवष्यिदनद्यतने वियादिषु चोत्पन्नस्य प्रत्ययस्य ज्ज, ज्जा**

**इत्येतावादेशौ वा भवतः । पक्षे-होइ, हसइ-इत्यादि (८-१ भू = हो, पक्षे ७-१ ति = इ, एवं हस्धातोरपि ज्ञेयम् । भविष्यदनद्यतने, होज्ज, होज्जा । पक्षे-होहिइ इत्यादि । विध्यादिष्वेपि । (भविष्यत्यपि होज्जेत्यादि पूर्ववत्, पक्षे ७-१२ सूत्रं स्पष्टम्, विध्यादिष्वपि होज्ज, होज्जा । पक्षे-हो उ, सु, मु इत्यादयः) ।।२०।।**

**व्याख्या**—वर्तमान (लट्) और अनद्यतन भविष्यं (लुट्) के स्थान में तथा पूर्व सूत्र में लिङ् लोट् के स्थान में तिप् इत्यादि के स्थान पर ज्ज और ज्जा होते है । पक्ष में यथास्थान विधान के अनुसार कार्य होते हैं । जैसे-

**१. वर्तमान में—**

**(क) भवति**—भू + तिप्-८.१ से भू का हो-हो + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से तिप् का ज्ज, ज्जा-**होज्ज, होज्जा** । पक्ष में ८.१ से भू का हो-हो + तिप् । ७.१ से तिप् को इ-**होइ** ।

**(ख) हसति**—हस् + तिप् ८.७१ से हस् अदन्त-हस + तिप् । ४.१ से अ का ए-हसे + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से तिप् का ज्ज, ज्जा-**हसेज्ज, हसेज्जा** । पक्ष में ८.७१ से हस् का अदन्त हस + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**हसइ** ।

**२. अनद्यतन भविष्य में—**

**(क) भविष्यति**—भू + लृट् + तिप्-८.१ से भू का हो-हो + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से ज्ज, ज्जा-**होज्ज, होज्जा** । पक्ष में ७.१२ से लृडर्थ हि प्रत्यय का आगम-हो + हि + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-हो + हि + इ । ७.१७ से विकल्प से हि का लोप-**होइ** । पक्ष में ७.१२ से हि-**होहिइ** ।

**३. विधि इत्यादि में—**

**(क) भवतु**—भू + लोट् + तिप्- ८.१ से भू का हो-हो + लृङ् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से ज्ज, ज्जा, **होज्ज, होज्जा** । पक्ष में ८.१ से भू का हो-हो + लोट् + तिप् । ७.१८ से तिप् के स्थान पर उ-**होउ** ।

## मध्ये च ।।२१।।

**पदच्छेद**—मध्ये । च ।

**पदार्थ**—मध्ये = मध्य में । च = भी ।

**सू० अ०**—वर्तमान, अनद्यतन भविष्यत् और विधि आदि में (धातु और प्रत्यय के) मध्य में भी (ज्ज और ज्जा का) आगम हो जाता है ।

**वृत्तिः—वर्तमानभविष्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु च धातुप्रत्ययोर्मध्ये ज्ज ज्जा**

**इत्येतावादेशौ वा भवतः । वर्तमाने-होज्जइ, होज्जाइ । पक्षे-यथाप्राप्तम् । विध्यादिषु-होज्जउ, होज्जउ, (विकरणस्थाने अत्रादेशौ बोध्यौ, शेषं स्पष्टम्)। भवेदित्यादि ।।२१।।**

**व्याख्या**—७.२० के अनुसार वर्तमान, अनद्यतन भविष्यत् और विध्यादि में विकल्प से धातु से बाद प्रत्यय के स्थान पर ज्ज और ज्जा होते हैं। किन्तु प्रस्तुत सूत्र के अनुसार इन स्थलों पर कभी कभी धातु और प्रत्यय के मध्य में इनका (ज्ज और ज्जा का) आगम भी हो जाता है। जैसे-

**१. वर्तमान में**—

(क) **भवति**—भू + लट् + तिप्। ८.१ से भू का हो-हो + लट् + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-हो + लट् + इ। प्रस्तुत सूत्र से ज्ज और ज्जा का आगम-**होज्जइ, होज्जाइ**। पक्ष में पूर्ववर्ती सूत्र ७.२० से **होज्ज, होज्जा** और ७.१ से **होइ**।

**२. अनद्यतन् भविष्यत् में**—

(क) **भविष्यति**—भू + लृट् + तिप्। ८.१ से भू का हो-हो + लृट् + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-हो + लृट् + इ। प्रस्तुत सूत्र सें ज्ज और ज्जा का आगम-**होज्जइ, होज़्जाइ**। पक्ष में ७.२० से **होज्ज, होज्जा** और ७.१२ से **होहिइ**।

**३. विधि में**—

(क) **भवतु**—भू + लोट् + तिप्। ८.१ से भू का हो-हो + लोट् + तिप्। ७.१८ से तिप् का उ-हो + उ। प्रस्तुत सूत्र ज्ज और ज्जा का आगम-**होज्जउ, होज्जाउ**। पक्ष में ७.२० से **होज्ज, होज्जा** और ७.१८ से **होउ**।

## नानेकाचः ।।२२।।

**पदच्छेद**—न। अनेकाचः।

**पदार्थ**—अनेकाचः = अनेक स्वरों वाले (धातुओं) से बाद में। न = नहीं।

**सू०अ०**—अनेक स्वरों वाले (धातु) से बाद में (तिङादि प्रत्ययों से पूर्व) (ज्ज और ज्जा का आगम) नहीं (होता)।

**वृत्तिः—वर्तमानभविध्यदनद्यतनयोर्विध्यादिषु चानेकाचो धातोः प्रत्यये परे मध्ये ज्ज ज्जा इत्येतावादेशौ न भवतः, किन्त्वन्त एव भवतः । हसइ (७-१ सूत्रे स्पष्टम्) । तुवरइ (८-४ जित्वरा = तुवर, ७-१ त = इ) । अन्ते यथा-हसेज्ज । हसेज्जा । तुवरेज्ज । तुवरज्जा (७-३४ अ, ए, ह, से, एवमेव भविष्यद्विध्यादिषु**

**ज्ञेयम्) । एवमन्येऽप्युदाहर्तव्याः ।।२२।।**

**व्याख्या**—जिस धातु में एक से अधिक स्वर है, उस धातु से बाद में प्रत्यय से पूर्व ज्ज और ज्जा का आगम नहीं होता। यह निषेध के ज्ज और ज्जा के आगम के लिए है। वर्तमान, अनद्यतन भविष्यत् और विधि इत्यादि में ७.२० में विहित अन्त्य में प्रत्यय के होने के लिए नहीं।

१. **हसति**—हस + लट् + तिप्-हसइ (द्रष्टव्य ७.१)। ८.७१ से हस् धातु के अदन्त होने से इस धातु में दो स्वर है अत: हस धातु और तिप् के स्थान पर हुए इ के मध्य में इज्ज और इज्जा का आगम नहीं होता। किन्तु ७.२० से तिप् के स्थान पर ७.२० से ज्ज और ज्जा हो जाता है-**हसेज्ज, हसेज्जा**। (द्रष्टव्य ७.२० का उदाहरण १-ख)।

२. **त्वरयति**—त्वर + तिप्-८.४ से त्वर का तुवर-तुवर + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**तुवरइ**। यहाँ तुवर धातु तीन स्वरों वाली है अत: प्रस्तुत सूत्र से तुवर से बाद में इज्ज और इज्जा का आगम नहीं हुआ है। पक्ष में ७.२० से ति के स्थान पर ज्ज और ज्जा-तुवर + ज्ज, ज्जा। ४.१ से अ का ए-**तुवरेज्ज, तुवरेज्जा**।

## ईअ भूते ।।२३।।

**पदच्छेद**—ईअ। भूते।

**पदार्थ**—भूते = भूतकाल में। ईअ = इअ।

**सू० अ०**—भूतकाल में (तिप् के स्थान पर) ईअ होता है।

**वृत्तिः—भूते काले धातोः प्रत्यस्य ईअ इत्ययमादेशो भवति । हुवीअ । हसीअ (८-१ भू = हुव, ति = ईअ, एवमग्रे) । अभवत् । अहसत् ।।२३।।**

**व्याख्या**—भूतकाल (= लङ् और लिट्) में प्रथमपुरुष एकवचन के प्रत्यय तिप् के स्थान पर ईअ होता है। जैसे-

१. **अभवत्**—भू + लङ् + तिप्-८.१ से भू का हुव-हुय + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से तिप् के स्थान पर लङर्थ ईअ-हुव + ईअ। ४.१ से हुव के अकार का लोप-हुव् + ईअ = **हुवीअ**।

२. **अहसत**—हस् + लिङ् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र तिप् के स्थान पर लिङर्थ ईअ प्रत्यय-**हसीअ**।

## एकाचो हीअ ।।२४।।

**पदच्छेद**—एकाचः। हीअ।

**पदार्थ**—एक स्वर वाली धातु से बाद। हीअ = हीअ।

**सू०अ०**—(भूतकाल में) एक स्वर वाली धातु से बाद में (तिप् के स्थान पर) हीअ (होता है)।

**वृत्तिः—भूते काले एकाचो धातोः प्रत्ययस्य हीअ इत्ययमादेशो भवति। होहीअ (स्पष्टम्) ।।२४।।**

**व्याख्या**—जो धातुएँ एक स्वर वाली है, उनसे बाद में भूतकाल में तिप् के स्थान पर हीअ होता है। जैसे-

१. **अभवत्**—भू + लङ् + तिप्-८.१ से भू का हो-हो + लङ् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से तिप् के स्थान पर लिङर्थ हीअ-हो + हीअ = **होहीअ**।

## अस्तेरासिः ।।२५।।

**पदच्छेद**—अस्तेः। आसिः।

**पदार्थ**—अस् धातु के स्थान पर। आसिः = आसि।

**सू०अ०**—(भूतकाल में) अस् (धातु) के स्थान पर (तिप् प्रत्यय के सहित) आसि (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्तेर्भूते काले एकस्मिन्नर्थे आसि इति निपात्यते। आसि राआ। आसि बहू। (राआ ५-३० सूत्रे स्पष्टम्, बहू ४-१९ सूत्रे स्पष्टम्, शेषं स्पष्टम्)। आसीद्राजा। आसीद्वधूः ।।२५।।**

**व्याख्या**—भूतकाल में अस् धातु के स्थान पर प्रथमपुरुष एकवचन के प्रत्यय तिप् के सहित आसि हो जाता है। जैसे-

१. **असीत्**—अस् + लङ् + तिप्। प्रस्तत सूत्र से भूतकाल में तिप् के सहित अस् का **आसि**।

## णिच एदादेरत आत् ।।२६।।

**पदच्छेद**—णिचः। एत्। आदेः। अतः। आत्।

**पदार्थ**—णिचः = णिच् के स्थान पर। एत् = ए। आदेः = आदि (प्रथम)। अतः = अ के स्थान पर। आत् = आ।

**सू०अ०**—णिच् (प्रत्यय) के स्थान पर ए (होता है और) (धातु) के प्रथम अ के स्थान पर आ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—णिच्प्रत्ययस्य एकारादेशो भवति धातोरादेरकारस्य च आत्वं भवति। कारेइ, हासेइ-प्रभृतयः)। कारयति। हासयति। पाठयति ।।२६।।**

**व्याख्या**—प्रेरणार्थक णिच् (प्रत्यय) के स्थान पर ए होता है और धातु के अकार

के स्थान पर आ हो जाता है। जैसे-

१. **कारयति**—कृ + णिच् + तिप्-५.१२ से कृ का कर-कर + णिच् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से णिच् के स्थान पर ए और धातु के आदि अ का आ-कार + ए + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-कार + ए + इ। ४.१ अकार का लोप-**कारेइ**।

२. **हासयति**—पठ् + णिच् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से णिच् का ए और आदि अ का आ-हास् + ए + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**हासेइ**।

३. **पाठयति**—हस् + णिच् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से णिच् का ए और आदि अ का आ-पाठ् + ए + तिप्। २.२४ से ठ् का ढ्-पाढ् + ए + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**पाठेति**।

## आवे च ।।२७।।

**पदच्छेद**—आवे। च।

**पदार्थ**—आवे = आवे। च = भी।

**सू० अ०**—(प्रेरणार्थक णिच् के स्थान पर) आवे भी (होता है)।

**वृत्तिः—णिच आवे इत्ययमादेशो भवति चकारात् पूर्वोक्तं च। करावेइ। हसावेइ। पढावेइ। कारावेइ इत्यादि (णिच आवे कृते, धातोरादेरकारस्यात्वं वा भवति, उदाहृतपदेषु तादृशकार्यदर्शनात्। शेषं स्पष्टम्) ।।२७।।**

**व्याख्या**—प्रेरणार्थक णिच् के स्थान पर आवे भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ७.२६ से भी निर्दिष्ट णिच् के स्थान पर ए भी होने का ग्रहण होता है। इस प्रकार णिच् के स्थान पर ए और आवे दो प्रत्यय होते है किन्तु दोनों प्रत्ययों को दो अलग-अलग सूत्रों में विधान करने का प्रयोजन यह है कि णिच् के स्थान पर ए होने पर आदि अ का दीर्घ आकार हो जाता है किन्तु आवे होने पर वह दीर्घ नहीं होता। जैसे-

१. **कारयति**—कृ + णिच् + तिप्-८.१२ से कृ का कर-कर + णिच् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवे-कर + आवे + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**कारावेइ**। ७.२६ से **कारेइ** भी।

२. **हासयति**—हस् + णिच् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवे-हस् + आवे + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-हसावेइ। ७.२६ से **हासेइ** भी।

३. **पाठयति**—पठ् + णिच् + सिप्-२.२४ से ठ का ढ-पठ् + णिच् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवे और ७.१ से तिप् का इ-**पठावेइ**। ७.२ से **पाढेइ** भी।

## आविः क्तकर्मभावेषु वा ।।२८।।

**पदच्छेद**—आविः । क्तकर्मभावेषु ।

**पदार्थ**—क्तकर्मभावेषु = क्त (प्रत्यय) बाद में होने पर और कर्म तथा भाव (अर्थ) में । आविः = आवि ।

**वृत्तिः—णिच आविरादेशो भवति वा क्तप्रत्यये परतो भावकर्मणोश्च । कराविअं । हसाविअं । पढाविअं (८-१२ कृञ् = कर, णिच् = आवि, २-२ तलोपः, ५-३० सोर्बिन्दुः, कारितम्-एवमग्रेऽपि) । कारिअं । हासिअं । पाढिअं । पक्षे-संस्कृतानुसारं कारितमिति सिद्धे, २-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः, पढितमत्र २-२४ ठ = ढ, शेषं पूर्ववत्) । भावकर्मणोश्च-कराविज्जइ । हसाविज्जइ । पढाविज्जइ (णिच् आवि, ७-१ त = इ कृते, ७-११ यकः स्थाने ज्ज एवमग्रे) । कारिज्जइ । हासिज्जई । पाढिज्जइ (णिचि = कारितिजाते, ७-२१ यकः-ज्ज, एवमग्रे) । कारितम् । हासितम् । पाठितम् । कार्यते । हास्यते । पाठ्यते ।।२८।।**

**व्याख्या**—क्त प्रत्यय बाद में होने पर और कर्म तथा भाव अर्थ में णिच् प्रत्यय के स्थान पर आवि हो जाता है । जैसे-

**१. क्त प्रत्यय बाद में होने पर—**

(क) **कारितं**—कृ + णिच् + क्त + सु-५.१२ से कृ का कर-कर + णिच् + क्त + सु । प्रस्तुत सूत्र से क्त बाद में होने पर णिच् का आवि-कर + आवि + क्त + सु । २.२ से ककार का लोप-कर + आवि + त + सु । ५.३० से सु का अनुस्वार-**करावितं** । पक्ष में संस्कृत के अनुसार कारितम्-२.२ से तकार का लोप और ५.३० से सु का अनुस्वार **कारिअं** ।

(ख) **हासितम्**—हस् + णिच् + क्त + सु । प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आविहस् + आवि + क्त + सु । २.२ से ककार का लोप और ५.३० से सु का अनुस्वार-**हसावितं** । पक्ष में संस्कृतानुसार २.२ से तकार का लोप और ५.३० से सु का अनुस्वार-**हासिअं** ।

(ग) **पाठितम्**—पठ् + णिच् + क्त + सु-२.२४ से ठ का ढ-पढ् + णिच् + क्त + सु । प्रस्तुत सूत्र से क्त बाद में होने से णिच् का आवि-पढ् + आवि + क्त + सु । २.२ से ककार का लोप और ५.३० से सु का अनुस्वार-**पाढिअं** ।

**२. कर्म-भाव अर्थ में—**

(क) **कार्यते**—कृ + णिच् + क्त-८.१२ से कृ का कर-कर + णिच् + त । प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवि-कर + आवि + त । ७.१ से त का इ-कर + आवि + इ । ७.२१ से ज्ज का आगम-**कराविज्जइ** । **करिज्जइ** ।

३. **हास्वते**—हस् + णिच् + त-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + णिच् + त। प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवि और ७.१ से त का इ-हस + आवि + इ। ७.२१ से ज्ज का आगम-**हसाविज्जइ**। णिच् बाद में होने से हस का हासि होने पर **हासिज्जइ**।

४. **पाठ्यते**—पठ् + णिच् + त। ८.७१ से पठ् को अदन्त और २.२४ से ठ् का ढ्-पढ + णिच् + त। प्रस्तुत सूत्र से णिच् का आवि और ७.१ से त का इ-पढ + आवि + इ। ७.२१ से ज्ज का आगम-**पढाविज्जइ**। णिच् बाद में होने से पढ का पढि होने पर **पढिज्जइ**।

## नैदावे ।।२९।।

**पदच्छेद**—न। एदावे।

**पदार्थ**—एदावे = ए, आवे। न = नहीं होते।

**सू०अ०**—(क्त बाद में होने पर और कर्म भाव वाच्य में णिच् के स्थान पर) ए और आवे (नहीं होते)।

**वृत्तिः—क्तभावकर्मसु णिच्प्रत्ययस्य एत् आवे इत्येतावादेशौ न भवतः। कारिअं (णिचि = कारि, २-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः)। कराविअं (७-२८ सूत्रे द्रष्टव्यम्)। कारिज्जई। काराविज्जई (७-२७ सूत्रात् चकारानुकर्षणात्, पक्षे-तत्पूर्वसूत्रानुसारं धातोरादेरकारस्यात्वं भवति, शेषं ७-२८ सूत्रे द्रष्टव्यम्) ।।२९।।**

**व्याख्या**—क्त बाद में होने पर और कर्मभाव-वाच्य में प्रेरणार्थक णिच् के स्थान पर ७.२६ में विहित ए तथा ७.२७ में विहित आवे नहीं होते। प्रत्युत ७.२८ में विहित आवि ही होता है। जैसे-

१. **कारितम्—कराविअं कारितं** (द्रष्टव्य ७.२८ उदाहरण-१-क)।

२. **कार्यते—काराविज्जइ, कारिज्जइ** (द्रष्टव्य ७.२८ उदाहरण २-क)।

## अत आ मिपि वा ।।३०।।

**पदच्छेद**—अतः। आ। मिपि। वा।

**पदार्थ**—मिपि = मि बाद में होने पर। अकार के स्थान पर। वा = विकल्प से। आ = आ।

**सू०अ०**—मि बाद में होने पर (अकारान्त धातुओं के) अकार के स्थान पर विकल्प से आ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अकारान्ताद्धातोर्मिपि परत आकारादेशो भवति वा। हसामि, हसमि (स्पष्टम्) ।।३०।।**

**व्याख्या**—वर्तमानकाल में उत्तमपुरुष एकवचन वाले प्रत्यय मिप् के स्थान पर ७.३ से होने वाला म बाद में होने पर अकारान्त धातु के अ का आ हो जाता है। जैसे-

१. **हसामि**—हस् + मिप्-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + मिप्। ७.३ से मिप् का मि-हस + मि। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से अकारान्त धातु के अन्त्य अ का आ-**हसामि**। पंक्ष में-**हसमि**।

## इश्च बहुषु ॥३१॥

**पदच्छेद**—इत्। च। बहुषु।

**पदार्थ**—बहुषु = बहुवचन में। इत् = इ। च = भी होता है।

**सू०अ०**—बहुवचन में (विकल्प से) इ भी होता है।

**वृत्तिः—मिपो बहुषु परतोऽत इकारादेशो भवति चकारादाकारश्च। हसिमो, हसामो। हसिमु, हसामु (७-४ झि = मो, मु, शेषं स्पष्टम्) ॥३१॥**

**व्याख्या**—वर्तमान काल में उत्तमपुरुष बहुवचन में अदन्त धातु के अ का विकल्प से इ भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च से आकार होने का भी ग्रहण होता है। जैसे-

१. **हसामः**—हस् + मस्-८.७१ से हस् का अदन्त हस + मस्। ७.४ से मिस् का मो, मु, म-हस् + मो, मु, म। प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से अन्त्य अ का इ-**हसिमो, हसिमु, हसिम**। पक्ष में ७.३० से आकार-**हसामो, हसामु, हसाम**।

## क्ते ॥३२॥

**पदच्छेद**—क्ते।

**पदार्थ**—क्ते = क्त बाद में होने पर।

**सू०अ०**—क्त बाद में होने पर (अकारान्त धातु के अ का इ हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्तप्रत्यये परतोऽत इर्भवति। हसिअं (२-२ तलोपः, शेषं स्पष्टम्, ५-३० बिन्दुः)। पढिअं (२-२४ ठ = शेषं पूर्ववत्) ॥३२॥**

**व्याख्या**—भूतकालिक क्त प्रत्यय बाद में होने पर अकारान्त धातु के अ का इ हो जाता है। जैसे-

१. **हसितः**—हस् + क्त + सु-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + क्त + सु। प्रस्तुत सूत्र से हस के अन्त्य अ का इ-हसि + क्त + सु। २.२ से तकार का लोप और ५.३० से सु का अनुस्वार-**हसिअं**।

२. **पठितः**—पठ् + क्त + सु-८.७१ से पठ् का अदन्त-पठ + क्त + सु। २.२४ से ठ का ढ-पढ + क्त + सु। प्रस्तुत सूत्र से पढ के अन्त्य अ का इ-पढि + क्त + सु। २.२ से तकार का लोप **पढिअं**।

## ए च क्त्वातुमुन्तव्यभविष्यत्सु ।।३३।।

**पदच्छेद**—ए। च। त्त्वातुमुन्तव्यभविष्यत्सु।

**पदार्थ**—त्त्वातुमुन्-तव्य = भविष्यत्सु = त्त्वा, तुमुन्,तव्य बाद में होने पर और भविष्यत मे। ए = ए। च = भी।

**सू०अ०**—त्त्वा, तुमुन् तव्य बाद में होने पर और भविष्यत्काल में ए भी (होता है)।

**वृत्तिः—क्त्वा, तुमन्, तव्य इत्येतेषु भविष्यति काले च अत एत्वं भवति चकारादिश्च। हसेऊण। हसिऊण (४-४३ क्त्वा = ऊण, शेषं स्पष्टम्)। हसेउं। हसिउं (२-२ तुमः तलोपः, ४-१२ मबिन्दुः, शेषं पूर्ववत्)। हसेअव्वं हसिअव्वं (२-२ तलोपः, ३-५० सोर्बिन्दुः, शेषं स्पष्टम्)। हसेहिइ, हसिहिइ (७-१२ धातोः परो हि-प्रयोगः, शेषं स्पष्टम्) ।।३३।।**

**व्याख्या**—त्त्वा, तुमुन्, तव्य बाद में होने पर और भविष्यत् में (लृट् और लुट्) अकारान्त धातुओं के अकार के स्थान पर ए भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च से ७.३१ में विहित इ का भी ग्रहण होता है। इस प्रकार त्त्वा, तुमुन् और तव्य बाद में होने पर और भविष्यत् काल में अकारान्त धातुओं के अ के स्थान पर ए और इ दोनों होते हैं। जैसे-

१. **हसित्वा**—हस् + त्त्वा-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + त्त्वा। ४.२३ से त्त्वा का ऊण। हस + ऊण। प्रस्तुत सूत्र से अकारान्त धातु के हस के अन्त्य अ का ए-**हसेऊण**। ७.३१ से इकार भी-**हसिऊण**।

२. **हसितुम्**—हस् + तुमुन्-८.७१ से हस् का अदन्त-हस + तुमुन-प्रस्तुत सूत्र से तुमुन का तु-हस + तुं। २.२ से तकार का लोप-हस + उं। अदन्त धातु के अकार का एकार-**हसेउं**। ७.३१ से इकार भी-**हसिउं**।

३. **हसितव्यम्**—हस् + तव्यम्। ८.७१ से हस् अदन्त-हस + तव्यम्। २.२ से तकार का लोप-हस + अव्यम्। ३.२ से यकार का लोप-हास + अवम्। ३.५० से वकार का द्वित्व-हस + तव्वम्। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त्य अकार का ए-हसेअव्यम्। ४.१२ से मकार का अनुस्वार-**हसेअव्वं**। ७.३१ से इकार भी-**हसिअव्वं**।

## लादेशे वा ।।३४।।

**पदच्छेद**—लादेशे । वा ।

**पदार्थ**—लादेशे = लकार का आदेश होने पर । वा = विकल्प से ।

**सू०अ०**—लकार का आदेश होने पर विकल्प से (अकारान्त धातुओं के अ के स्थान पर ए होता है) ।

**वृत्तिः—लकारदेशे वा परतोऽत एत्वं भवति वा । हसेइ, हसइ । पढेइ, पढइ (७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्)। हसेन्ति, हसन्ति (७-४ झि = न्ति, ४-१७ बिन्दुः) । हसेउ, हसउ (७-१८ ति = उ, शेषं स्पष्टम्) ।।३४।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य सप्तमः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—ल का तात्पर्य है, लकार । लकार का आदेश होने पर अदन्त धातु के अ के स्थान पर विकल्प से ए होता है । जैसे-

१. **हसति**—हस् + तिप्-८.७१ से हस् का अदन्त हस + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-हस + इ । प्रस्तुत सूत्र से अ का ए-**हसेइ** । पक्ष में ७.१ से **हसइ** ।

२. **पठति**—पठ् + तिप्-८.७१ से पठ् का अदन्त पठ + तिप् । २.२४ से ठ् का ढ्-तिप् । ७.१ से तिप् का इ-पढ + इ । प्रस्तुत सूत्र से अ का ए-**पढेइ** । पक्ष में ७.१ से **पढइ** ।

३. **हसन्ति**—हस् + झ-८.७१ से हस् का अदन्त हस + झि । ७.४ से झि का का न्ति । प्रस्तुत सूत्र से अ का ए-**हसेन्ति** । पक्ष में ७.४ से **हसन्ति** ।

४. **हसेत्**—हस् + लिङ् + तिप् । ८.७१ से हस् अदन्त-लिङ् + तिप् । ७.१८ से लिङर्थ तिप् का उ-हस + उ । प्रस्तुत सूत्र से अदन्त धातु के अकार का एकार-**हसेउ** । पक्ष में ७.१८ से **हसउ** ।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का सप्तम परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# अष्टमः परिच्छेदः

## ( धात्वादेशविधानम् )

### भुवो हो हुवो ।।१।।

**पदच्छेद**—भुवः । हो-हुवो ।

**पदार्थ**—भुवः = भू के स्थान पर । हो-हुवो = हो और हुव ।

**सू०अ०**—भू के स्थान पर हो और हुव (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—भू सत्तायाम्, एतस्य धातोर्हो, हुव इत्येतावादेशौ भवतः। होइ (७-५ सूत्रे स्पष्टम्) । हुवइ (७-१ ति = इ) । होन्ति, हवन्ति (७-४ झि = न्ति, ४-१७ बिन्दुः, शेषं स्पष्टम्) ।।१।।**

**व्याख्या**—सत्तार्थक भू धातु के स्थान पर हो और हुव होता है । जैसे-

१. **भवति**—भू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू के स्थान पर हो और हुव-हो, हुव + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**होइ, हुवइ** ।

२. **भवन्ति**—भू + झि-प्रस्तुत सूत्र से भू के स्थान पर-हो और हुव-हो, हुव + झि । ७.४ से झि का न्ति-हो, हुव + न्ति । **होन्ति, हुवन्ति** ।

### क्ते हुः ।।२।।

**पदच्छेद**—क्ते हुः ।

**पदार्थ**—क्ते = क्त बाद में होने पर । हुः = हु ।

**सू०अ०**—क्त बाद में होने पर (भू के स्थान पर) हु (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—भुवः क्तप्रत्यये परतो हु इत्यादशो भवति । हुअं ( २-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः) ।।२।।**

**व्याख्या**—क्त बाद में होने पर भू के स्थान पर हु हो जाता है । जैसे-

१. **भूतम्**—प्रस्तुत सूत्र से भू के स्थान पर हु-हुतम् । २.२ से तकार का लोप-हुअम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-हुतं ।

## प्रादेर्भवः ।।३।।

**पदच्छेद**—प्रादेः । भवः ।

**पदार्थ**—प्रादेः = प्र इत्यादि से वाद में । भवः = भव ।

**सू० अ०**—प्र इत्यादि से बाद में (भू के स्थान पर) भव (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—प्रादरुत्तरस्य भूवो भव इत्ययमादेशो भवति । पभवइ (३-३ रलोपः, ७-१ ति = इ) । उब्भवइ (३-१ दलोप, ३-५० भद्वित्वम्, ३-५१ भ् = ब व्, शेषं पूर्ववत्) । सम्भवइ । परिभवइ (४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, शेषं स्पष्टम्) ।।३।।**

**व्याख्या**—प्र इत्यादि उपसर्ग से बाद में भू के स्थान पर मूल हो जाता है । जैसे-

१. **प्रभवति**—प्र + भू + तिप्-३.३ से रेफ का लोप-प + भू + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से भू का भव-प + भव + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**पभवइ** ।

२. **उद्भवति**—उद् + भू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू के स्थान पर भव-उद् +भव + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-उद्पभवइ । ३.१ से द का लोप-उभवइ । ३.५० से भकार का द्वित्व-उभ्भवइ । ३.५१ से भकार का बकार-**उब्भवइ** ।

३. **सम् भवति**—सम् + भू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू का भव-सम्भव + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-सम्भवइ । ४.१७ से म् का अनुस्वार-**संभवइ** ।

४. **परिभवति**—परि + भू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू का भव-परि + भव + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**परिभवइ** ।

## त्वरस्तुवरः ।।४।।

**पदच्छेद**—त्वरः । तुवरः ।

**पदार्थ**—त्वरः = त्वर के स्थान पर । तुवरः = तुवर ।

**सू० अ०**—त्वर के स्थान पर तुवर (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ञित्वरा सम्भ्रमे, अस्य धातोस्तुवर इत्ययमादेशो भवति । तुवरइ (७-१ त = इ, शेषं स्पष्टम्) ।।४।।**

**व्याख्या**—जल्दी करना अर्थ वाली त्वर् धातु के स्थान पर तुवर हो जाता है जैसे-

१. **त्वरयति**—त्वर + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से त्वर् का तुवर-तुवर + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**तुवरइ** ।

२. **त्वरन्ति**—त्वर + झि-प्रस्तुत सूत्र से त्वर का तुवर + झि । ७.४ से झि का न्ति-**तुवरयन्ति** ।

## क्ते तुरः ।।५।।

**पदच्छेद**—क्ते । तुरः ।

**पदार्थ**—क्ते = क्त बाद में होने पर । तुरः = तुर ।

**सू० अ०**—क्त बाद में होने पर (त्वर् के स्थान पर) तुर (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—क्तप्रत्यये तुर इत्ययमादेशो भवति। तुरिअं (७-३२ अ = इ, २-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः) ।।५।।**

**व्याख्या**—भूतकालिक प्रत्यय क्त बाद में होने पर त्वर् के स्थान पर तुर हो जाता है । जैसे-

१. **त्वरम्**—त्वर् + क्त + सु-प्रस्तुत सूत्र से त्वर् का तुर-तुर + क्त + सु । २.२ से त का लोप-तुरअ ७.३२ से अकार का इकार तुरिअ + सु + सु । ५.३० सु का अनुस्वार-**तुरिअं** ।

## घुर्णे घोलः ।।६।।

**पदच्छेद**—घुर्णोः = घोलः ।

**पदार्थ**—घुर्णोः = घुर्ण के स्थान पर । घोलः = घोल ।

**सू० अ०**—घुर्ण के स्थान पर घोल (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—घुण, घूर्ण भ्रमणे, अस्य घातोर्घोल इत्ययमादेशो भवति । घोलइ (७-१ ति = इ) ।।६।।**

**व्याख्या**—भ्रमणार्थक घूर्ण् धातु के स्थान पर घोल हो जाता है । जैसे-

१. **धुर्णति**—घुर्ण + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से घुर्ण् का घोल-घोल + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**घोलइ** ।

## नुदो णोल्लः ।।७।।

**पदच्छेद**—नुदः । णोल्लः ।

**पदार्थ**—नुदः = नुद् के स्थान पर । णोल्लः = णोल्ल ।

**सू० अ०**—नुद् (धातु) के स्थान पर णोल्ल (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—णुद् प्रेरणे, अस्य घातोर्णोल्ल इत्ययमादेशो भवति । णोल्लइ । पणोल्लइ (३-३ प्र-इत्यस्य रेफलोपः, शेषं स्पष्टम्) ।।७।।**

**व्याख्या**—प्रेरणार्थक मुद् धातु के स्थान पर णोल्ल हो जाता है। जैसे-

१. **नुदति**—नुद् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से नुद् के स्थान पर णोल्ल-णोल्ल + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**णोल्लइ**।

२. **प्रणोदति**—प्र + नुद् + तिप्। ३.३ से रेफ का लोप-प + नुद् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से नुद् के स्थान पर णोल्ल-प + णोल्ल + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**पणोल्लइ**।

## दूङो दूमः ।।८।।

**पदच्छेद**—दूङः। दूमः।

**पदार्थ**—दूङः = दूङ् के स्थान पर। दूमः = दूम।

**सू०अ०**—दूङ् के स्थान पर दूम (हो जाता है)।

**वृत्तिः—दूङ् परितापे, अस्य धातोर्दूमादेशो भवति। दूमइ (स्पष्टम्) ।।८।।**

**व्याख्या**—परिताप अर्थ वाली दूङ् धातु के स्थान पर दूम हो जाता है। जैसे-

१. **दूङति**—दूङ् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से दूङ् के स्थान पर दूम-दूम + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**दूमइ**।

## पटेः फलः ।।९।।

**पदच्छेद**—पटेः। फलः।

**पदार्थ**—पटे = पट् के स्थान पर। फलः = फलः।

**सू०अ०**—पट् के स्थान पर फल (हो जाता है)।

**वृत्तिः—पट गतौ, अस्य धातोः फल इत्ययमादेशो भवति। फलिअं (७-३२ अ = इ, २-२ तलोपः, ५-३० बिन्दुः) हिअअं (१-२८ सूत्रे स्पष्टम्) ।।९।।**

**व्याख्या**—गमनार्थक पट्धातु के स्थान पर फल हो जाता है। जैसे-

१. **पटितम्**— पटे + क्त। प्रस्तुत सूत्र पट् का फल-फलितम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**फलितं**।

## पदेः पालः ।।१०।।

**पदच्छेद**—पदेः। पालः।

**पदार्थ**—पदेः = पद् के स्थान पर। पालः = पाल।

**सू०अ०**—पद् के स्थान पर पाल (हो जाता है)।

**वृत्तिः—पद गतौ, अस्य धातोः पाल इत्ययमादेशो भवति। पालेइ (७-३४ अ = ए, ७-१ ति = इ) ।।१०।।**

**व्याख्या**—गमनार्थक पद् धातु के स्थान पर पाल हो जाता है। जैसे-

१. **पदति**—पद् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से पद् के स्थान पर पाल-पाल + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-पाल + इ। ७.३४ से अ के स्थान पर ए-**पालेइ**।

## वृषकृषमृषहृषमृतोऽरिः ।।११।।

**पदच्छेद**—वृषकृषमृषहृषाम्। ऋतः। अरिः।

**पदार्थ**—वृषकृषमृषहृषाम् = वृष्, कृष्, मृष् और हृष् के। ऋतः = ऋ के स्थान पर अरिः = अरि।

**सू०अ०**—वृष्, कृष् मृष् और हृष् के ऋ के स्थान पर अरि (होता है)।

**वृत्तिः—वृषादीनामृतः स्थाने अरि इत्यादेशो भवति। वरिसइ। करिसइ। मरिसइ। हरिसइ (२-४२ ष = स, ७-४ ति = इ, एवमुत्तरत्रापि कृष, मृष, हृष) ।।११।।**

**व्याख्या**—वृष् (बरसना), कृष् (जोतना), मृष् (सहन करना) और हृष् (आनन्दित होना) इन धातुओं के ऋकार के स्थान पर अरि होता है। जैसे-

१. **वर्षति**—वृष + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ऋ के स्थान पर अरि-वरिष् + तिप्। ८.७१ से अदन्त वरिष + तिप्। २.२४ से ष का स-वरिस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वरिसइ**।

२. **कर्षति**—कृष् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अरि-करिष् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-वरिष + तिप्। २.४२ से ष का स-वरिस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वरिसइ**।

३. **मर्षति**—मृष् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अरि-मरिष् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-मरिष + तिप्। २.२४ से ष का स-मरिस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**मरिसइ**।

४. **हर्षति**—हृष् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अरि-हरिष् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-हरिष + तिप्। २.२४ से ष का स-हरिस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**हरिसइ**।

## ऋतोऽरः ।।१२।।

**पदच्छेद**—ऋतः। अरः।

**पदार्थ**—ऋतः = ऋ के स्थान पर। अरः = अर।

**सू०अ०**—(ऋकारान्त धातुओं के) ऋ के स्थान पर अर (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ऋकारान्तस्य धातोर्ऋतः स्थाने अर इत्यादेशो भवति। मृ, मरइ। सृ, सरइ। वृ, वरइ (७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्) ।।१२।।**

**व्याख्या**—जिन धातुओं के अन्त में ऋकार है, उनके ऋ के स्थान पर अर हो जाता है। जैसे-

१. **मरति**—मृ + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-मर + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**मरइ**।

२. **सरति**—सृ + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ऋ क अर-सर + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**सरइ**।

३. **वरति**—वृ + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ऋ का अर-वर + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वरइ**।

## कृञः कुणो वा ॥१३॥

**पदच्छेद**—कृञः। कुणो। वा।

**पदार्थ**—कृञ् के स्थान पर। वा = विकल्प से। कुणो = कुणो।

**सू०अ०**—कृञ् के स्थान पर विकल्प से कुण (होता है)।

**वृत्तिः—डुकृञ् करणे, अस्य धातोः प्रयोगे कुणो वा भवति। कुणइ, करइ (पूर्ववत् स्पष्टम्) ॥१३॥**

**व्याख्या**—करना अर्थ वाली कृ धातु के स्थान पर कुणो हो जाता है। पक्ष में ८.१२ से ऋ का अर भी होता है। जैसे-

१. **करोति**—कृ + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर कुण-कुण + ति। ७.१ से तिप् का इ-**कुणइ**। पक्ष में कृ के ऋ के स्थान पर ८.१२ से अर-कर + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**करइ**।

## जृभो जम्भाअः ॥१४॥

**पदच्छेद**—जृम्भः। जम्भाअः।

**पदार्थ**—जृम्भः = जृम्भ् के स्थान पर जम्भाअ (होता है)।

**सू०अ०**—जृम्भ् के स्थान पर जम्भाअ (होता है)।

**वृत्तिः—जभि, जृभी गात्रविनामे, अस्य धातोर्जम्भाअ इत्ययमादेशो भवति। जम्भाअइ (स्पष्टम्) ॥१४॥**

**व्याख्या**—जँमाइ लेना अर्थ वाली जृम्भ् धातु के स्थान पर जम्भअ होता है। जैसे-

१. **जृम्भति**—जृम्भ् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से जृम्भ के स्थान पर जम्भाअ-जम्भाअ + ति। ७.१ से तिप् का इ-**जम्भाअइ**।

## ग्रहेर्गेण्हः ।।१५।।

**पदच्छेद**—ग्रहे: । गेण्ह: ।

**पदार्थ**—ग्रहे: = ग्रह के स्थान पर । गेण्ह: = गेण्ह ।

**सू०अ०**—ग्रह् के स्थान पर गेण्ह (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ग्रह उपादाने, अस्य धातोर्गेण्हो भवति । गेण्हइ (स्पष्टम्) ।।१५।।**

**व्याख्या**—ग्रहणार्थक ग्रह धातु के स्थान पर गेण्ह हो जाता है । जैसे-

**गृह्णाति**—ग्रह् + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से ग्रह् धातु के स्थान पर गेण्ह-गेण्ह + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-गेण्हइ ।

## घेत् क्त्वातुमुन्तव्येषु ।।१६।।

**पदच्छेद**—घेत् । त्त्वातुमुन्तव्येषु ।

**पदार्थ**—त्त्वातुमून्तव्येषु = त्त्वा, तुमुन् और तव्य बाद में होने पर । घेत् = घेत् ।

**सू०अ०**—त्त्वा, तुमुन् और तव्य (प्रत्यय) बाद में होने पर (ग्रह के स्थान पर) घेत् (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ग्रहेर्घेत् इत्ययमादेशो भवति क्त्वातुमुन्तव्येषु परतः। घेत्तूण (४-२३ क्त्वा = ऊण, ३-५० तूद्वित्वम्,)। घेत्तुं (३-५० तद्वित्वम्, २-१२ मबिन्दुः)। घेत्तव्वं (पूर्ववत्तलोपतद्वित्वम्, ३-२ यलोपः, ३-५०वद्वित्वम्, ५-३० बिन्दुः) ।।१६।।**

**व्याख्या**—पूर्वकालिक क्रिया दिखलाने के लिए त्त्वा, प्रयोजन दिखलाने के लिए तुमुन् और योग्यता दिखलाने के लिए तव्य प्रत्यय का प्रयोग होता है । ये प्रत्यय बाद में होने पर ग्रह् धातु के स्थान पर घेत् होता है । जैसे-

१. **गृहीत्वा**—ग्रह् + त्त्वा-प्रस्तुत सूत्र से ग्रह् के स्थान पर घेत्-घेत् + त्त्वा । ४.३३ से त्त्वा के स्थान पर ऊण-घेत् + ऊण । ३.५० से तकार का द्वित्व-घेत्त् + ऊण = **घेत्तूण** ।

२. **ग्रहीतुम्**—ग्रह् + तुमुन् । ग्रह के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से घेत्-घेत् + तुमुन् २.१५ मकार का अनुस्वार-**घेत्तुं** ।

३. **ग्रहीतव्यम्**—गृह् + तव्य-प्रस्तुत सूत्र से ग्रह का घेत्-घेत् + तव्यम् । ३.५० से यकार का लोप-घेत् + तवम् । ३.५० से वकार का द्वित्व-घेत् + तव्यम् = घेत्तव्यम् । ५३० से मकार का अनुस्वार-घेत्तव्वं ।

## कृञः का भूतभविष्यतोश्च ।।१७।।

**पदच्छेद**—कृञः । का । भूतभविष्यतोः च ।

**पदार्थ**—भूतभविष्यत्तोः = भूत और भविष्यत् (काल) में । कृञः = कृ (धातु) के स्थान पर । का = का । च = और ।

**सू०अ०**—और भूत तथा भविष्यत् काल में कृ (धातु) के स्थान पर का (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—भूतभविष्यतोः कालयोः कृञः का इत्ययमादेशो भवति, चकारात् क्त्वातुमुन्तव्येषु परतः । काहीअ (७-२४ भूते क्तक्तवतोः स्थाने अथवा भूतभविष्यदर्थकलस्थाने हीअ इत्यादेशः) । काहिइ (७-१२ भविष्यति धातोः परः हिर्भवति, ७-१ ति = इ)। काऊण (४-३३ क्त्वा = ऊण)। काउं (२-२ तलोपः, ४-१२ मबिन्दुः) । काअव्वं (२-२ तलोपः, ३-२ मलोपः, ४-१२ मबिन्दुः) ।।१७।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ८.१६ में गृहीत त्त्वा, तुमुन् और तव्य बाद में होने पर का ग्रहण होता है। इस प्रकार त्त्वा, तुमुन् तव्य बाद में होने पर और भूत तथा भविष्यत् काल में कृ धातु के स्थान पर का हो जाता है । जैसे-

१. **कृत्वा**—कृ + त्त्वा-प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर का-का + त्त्वा । ४.३३ से त्त्वा के स्थान पर ऊण-**काऊण** ।
२. **कर्तुम्**—कृ + तुमुन्-कृ के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से का-का + तुम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-**कातुं** ।
३. **कर्त्तव्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर का-का + तव्यम् । ५.३० से मकार का अनुस्वार-कातव्यं ।
४. **अकरोत्**—कृ + लङ् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर का-का + लङ् + तिप् । ७.२४ से भूतकाल में तिप् के स्थान पर हीअ-काहीअ ।
५. **करिष्यति**—कृ + लृट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर का-का + लृट् + तिप् । ७.१२ से लृडर्थ में हि प्रत्यय का आगम-का + हि + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**काहिइ** ।

## स्मरतेर्भरसुमरौ ।।१८।।

**पदच्छेद**—स्मरतेः । भर-सुमरौ ।

**पदार्थ**—स्मरतेः = स्मृ (धातु) के स्थान पर । भरसुमरौ = भर और सुमर ।

**सू०अ०**—स्मृ (धातु) के स्थान पर भर और सुमर (होता है) ।

**वृत्तिः—स्मृ चिन्तायाम्, अस्य धातोर्भर-सुमरौ भवतः। भरइ, सुमरइ (७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्) ।।१८।।**

**व्याख्या**—स्मरण करना अर्थ वाली स्मृ धातु के स्थान पर भर और सुमर होता है। जैसे-

१. **स्मरति**—स्मृ + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से स्मृ धातु के स्थान पर भर और सुमर-भर, सुमर + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**भरइ, सुमरइ**।

## भियो भाबीहौ ।।१९।।

**पदच्छेद**—भियोः। भाबीहौ।

**पदार्थ**—भियोः= भी के स्थान पर। भाबीहौ = भा और बीह।

**सू०अ०**—भी (धातु) के स्थान पर भा और बीह (होता है)।

**वृत्तिः—ञिभी भये, अस्य धातोर्भा-बीहौ भवतः। भाइ, बीहर (पूर्ववत् ति = इ, शेषं स्पष्टम्) ।।१९।।**

**व्याख्या**—भयार्थक भी धातु के स्थान पर भा और बीह होता है। जैसे-

१. **बिभेति**—भी + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से भी के स्थान पर भा और बीह-भा, बीह + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**भाइ, बीहइ**।

## जिघ्रतेः पापाऔ ।।२०।।

**पदच्छेद**—जिघ्रतेः। पापाऔ।

**पदार्थ**—जिघ्रतेः = घ्रा (धातु) के स्थान पर। पापाऔ = पा और पाअ।

**सू०अ०**—घ्रा (धातु) के स्थान पर पा और पाअ (होते हैं)।

**वृत्तिः—घ्रा गन्धग्रहणे, अस्य धातोः पा, पाअ इत्यादेशौ भवतः। पाइ, पाअइ (स्पष्टम्) ।।२०।।**

**व्याख्या**—सूँघना अर्थ वाली घ्रा धातु के स्थान पर पा और पाअ होते हैं। जैसे-

१. **जिघ्रति**—घ्रा + तिप्-घ्रा के स्थान पर प्रस्तुत सूत्र से पा और पाअ-पा, पाअ + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**पाइ, पाअइ**।

## म्लै वावाऔ ।।२१।।

**पदच्छेद**—म्लै। वावाऔ।

**पदार्थ**—म्लै = म्ला के स्थान पर। वावाऔ = वा और वाअ।

**सू०अ०**—म्ला (धातु) के स्थान पर वा और वाअ (होते हैं)।

**वृत्तिः—म्लै हर्षक्षये, अस्य धातोर्वा-वाऔ भवतः । वाइ, वाअइ (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।२१।।**

**व्याख्या**—म्लान होना (कुम्हलाना) अर्थ वाली म्ला धातु के स्थान पर वा और वाअ होते है । जैसे-

१. **म्लायति**—म्ला + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से म्ला के स्थान पर वा और वाअ-वा, वाअ + तिप् । ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**वाइ, वाअइ** ।

## ज्ञो जाणमुणौ ।।२३।।

**पदच्छेद**—ज्ञोः । जाणमुणौ ।

**पदार्थ**—ज्ञोः = ज्ञा के स्थान पर । जाणमुणौ = जाण और मुण ।

**सू०अ०**—ज्ञा (धातु) के स्थान पर जाण और मुण होते हैं ।

**वृत्तिः—ज्ञा अवबोधने, अस्य धातोर्जाण-मुणौ भवतः । जाणइ, मुणइ । (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।२३।।**

**व्याख्या**—ज्ञनार्थ का ज्ञा धातु के स्थान पर जाण और मुण होते हैं । जैसे-

१. **जानाति**—ज्ञा + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ज्ञा के स्थान पर जाण और मुण-जाण, मुण + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**जाणइ, मुणइ** ।

## जल्पेर्लो मः ।।२४।।

**पदच्छेद**—जल्पेः । लोः । मः ।

**पदार्थ**—जल्पेः = जल्प धातु में । लोः = लकार के स्थान पर । मः = मकार ।

**सू०अ०**—जल्प् (धातु) में लकार के स्थान पर । मकार (होता है) ।

**वृत्तिः—जल्प व्यक्तायां वाचि, अस्य धातोर्लकारस्य मकारो भवति । जम्पइ ।।२४।।**

**व्याख्या**—बोलना अर्थ वाली जल्प् धातु में लकार के स्थान पर मकार होता है । जैसे-

१. **जल्पति**—जल्प + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से लकार के स्थान पर मकार-जम्प + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**जम्पइ** ।

## ष्ठाध्यागानां ठाअ-झाअ-गाआः ।।२५।।

**पदच्छेद**—ष्ठाध्यागानां । ठाअ-झाअ-गाआः ।

**पदार्थ**—ष्ठाध्यागानां = ष्ठा, ध्यै और गे के स्थान पर । ठाअ-झाअ-गाआः = ठाअ, झाअ और गाअ ।

**सू०अ०**—ष्ठा, ध्यै, और गै के स्थान पर (क्रमशः) ठाअ, झाअ और गाअ (होते हैं)।

**वृत्तिः—ष्ठा गतिनिवृत्तौ, ध्यै चिन्तायां, गै शब्दे-एतेषां ठाअ, झाअ, गाअ, इत्येत आदेशा भवन्ति। ठाअन्ति, झाअन्ति, गाअन्ति ।।२५।।**

**व्याख्या**—खड़ा होना अर्थ वाली ष्ठा धातु के स्थान पर ठाअ, चिन्ता करना अर्थ वाली ध्यै धातु के स्थान पर झाअ और गान करना अर्थ वाली गै धातु के स्थान पर गाअ होता है। जैसे-

१. **तिष्ठन्ति**—ष्ठा (स्था) + झि। प्रस्तुत सूत्र से ष्ठा के स्थान पर ठाअ-ठाअ + झि। ७.४ से झि का न्ति-**ठाअन्ति**।

२. **ध्यायन्ति**—ध्यै + झि-प्रस्तुत सूत्र से ध्यै के स्थान पर झाअ-झाअ + झि। ७.४ से झ के स्थान पर न्ति-**झाअन्ति**।

३. **गायन्ति**—गै + झ-प्रस्तुत सूत्र से गै के स्थान पर गाअ-गाअ + झि। ७.४ से झ के स्थान पर न्ति-**गाअन्ति**।

## ठाझागाश्च वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु ।।२६।।

**पदच्छेद**—ठाझागाः च। वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु।

**पदार्थ**—वर्तमान भविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु = वर्तमान काल, भविष्यत् काल, विधि इत्यादि के एक वचनों में। ठाझागाः च = ठा, झा और गा भी।

**सू०अ०**—वर्तमान काल, भविष्यत् काल और विधि इत्यादि के एकवचनों में (ष्ठा, ध्यै और गै के स्थान पर क्रमशः) ठा, झा और गा भी (होते हैं)।

**वृत्तिः—ष्ठाध्यागानां ठा, झा, गा इत्यादेशा भवन्ति, चकारात् पूर्वोक्ताश्च वर्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु परतः। ठाइ, ठाअइ। ठाहिइ, ठाअहिइ। ठाउ, ठाअउ। झाइ, झाअइ,। झाहिइ, झाअहिइ। झाउ, झाअउ। गाइ, गाअइ। गाहिइ, गाअहिइ। गाउ, गाअउ ।।२६।।**

**व्याख्या**—वर्तमान काल, भविष्यत्काल और विधि इत्यादि में ष्ठा के स्थान पर ठा, ध्यै के स्थान पर झा और गै के स्थान पर गा भी होते हैं। सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ८.२५ में विहित ष्ठा के स्थान पर ठाअ, ध्यै के स्थान पर झाअ और गै के स्थान पर गाअ होने का भी ग्रहण होता है। जैसे-

१. **स्था का**—

(क) **तिष्ठति**—ष्ठा (स्था) + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ष्ठा का ठा और ८.२५ से ठाअ-ठा, ठाअ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**ठाइ, ठाअइ**।

(ख) **स्थास्यति**—ष्ठा + लिट् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से ष्ठा का ठा और ८.२५ से ठाअ-ठा, ठाअ + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-ठा, ठाअ + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**ठाहिइ, ठाअहिइ**।

(ग) **स्थातु**—स्था + लोट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ष्ठा और ८.२५ से ठाअ-ठा, ठाअ + लोट् + तिप्। ७.१८ से लोडर्थ तिप् का उ-**ठाउ, ठाअउ**।

**२. ध्यै का**—

(क) **ध्यायति**—ध्यै + तिप्-ध्यै का प्रस्तुत से झा और ८.२५ से झाअ-झा, झाअ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**झाइ, झाअइ**।

(ख) **ध्याष्यामि**—ध्यै + लृट् + तिप्-ध्यै का प्रस्तुत सूत्र से झा और ८.२५ से झाअ-झा, झाअ + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-झा, झाअ + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**झाहिइ, झाअहिहि**।

(ग) **ध्यायतु**—ध्यै + लोट् + तिप्-ध्यै का प्रस्तुत सूत्र से झा और ८.२५ से झाअ-झा, झाअ + लोट् + तिप्। ७.१८ से लोडर्थ ति का उ-**झाउ, झाअउ**।

**३. गै का**—

(क) **गायति**—गै + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से गै का गा और ८.२५ से गाअ-गा, गाअ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**गाइ, गाअइ**।

(ख) **गाष्यामि**—गै + लृट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से गै का गा और ८.२५ से गाअ-गा + गाअ + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-गा, गाअ + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**गाहिइ, गाअहिइ**।

(ग) **गायतु**—गै + लोट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से गै का गा और ८.२५ से गाअ-गा, गाअ + लोट् + तिप्। ७.१८ से लोडर्थ तिप् का उ-**गाउ, गाअउ**।

## खादिधाव्योः खाद्यौ ।।२७।।

**पदच्छेद**—खादिधाव्योः । खाधौ ।

**पदार्थ**—खादिधाव्योः = खाद् और धाव के स्थान पर। खाधौ = खा और धा।

**सू०अ०**—खाद् और धाव् के स्थान पर (क्रमशः) खा और धा (हो जाते हैं)।

**वृत्तिः—खाद् भक्षणे, धावु जवे, एतयोर्धात्वोः खा-धा इत्यादेशौ भवतो वर्त्तमानभविष्यद्विध्याद्येकवचनेषु । खाइ (७-१ ति = इ) । खाहिइ (७-१२ धातोः परोहिः, शेषं पूर्ववत्) । खाउ । धाइ । धाहिइ ।धाउ (७-१८ ति = उ, शेषं स्पष्टम्) ।।२७।।**

**व्याख्या**—खाने के अर्थ में खाद् धातु के स्थान पर खा और वेग से दौड़ने के अर्थ में धाव् धातु के स्थान पर धा हो जाता है। जैसे-

१. **खाद् का**—

(क) **खादति**—खाद् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से खाद् का खा-खा + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**खाइ**।

(ख) **खादिष्यति**—खाद् + लृट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से खाद् का खा-खा + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-खा + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**खाहिइ**।

(ग) **खादतु**—खाद् + लोट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से खाद् का खा-खा + लोट् + तिप्। ७.१८ से लोडर्थ तिप् का उ-**खाउ**।

२. **धाव् का**—

(क) **धावति**—धाव् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धाव् का धा-धा + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**धाइ**।

(ख) **धाविष्यति**—धाव् + लृट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धाव् का धा-धा + लृट् + तिप्। ७.१२ से लृडर्थ हि का आगम-धा + हि + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**धाहिइ**।

(ग) **धावतु**—धा + लोट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धाव् का धा-धा + लोट् + तिप्। ७.१८ से लोडर्थ तिप् का उ-**धाउ**।

## ग्रसेर्विसः ।।२८।।

**पदच्छेद**—ग्रसेः। विसः।

**पदार्थ**—ग्रस् के स्थान पर। विसः = विस।

**सू०अ०**—ग्रस् (धातु) के स्थान पर विस (होता है)।

**वृत्तिः—ग्रसु-ग्लसु अदने, अस्य धातोर्विसो भवति। विसइ (७-१ ति = इ, स्पष्टम्) ।।२८।।**

**व्याख्या**—खाने के अर्थ में ग्रस् धातु के स्थान पर विस होता है। जैसे-

१. **ग्रसति**—ग्रस् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ग्रस् के स्थान पर विस-विस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**विसइ**।

## चिञश्चिणः ।।२९।।

**पदच्छेद**—चिञः। चिण।

**पदार्थ**—चिञः = ची के स्थान पर। चिणः = चिण।

**सू०अ०**—ची (धातु) के स्थान पर चिण होता है।

**वृत्तिः—चिञ् चयने, अस्य धातोश्चिणो भवति। चिणइ (स्पष्टम्)।।२९।।**

**व्याख्या**—चयनार्थक ची धातु के स्थान पर चिण होता है। जैसे-

१. **चिनोति**—ची + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ची के स्थान पर चिण-चिण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**चिणइ**।

## क्रीञः किणः ।।३०।।

**पदच्छेद**—क्रीञः। किणः।

**पदार्थ**—क्रीञः = क्री के स्थान पर किणः = किण।

**सू०अ०**—क्री (धातु) के स्थान पर किण (होता है)।

**वृत्तिः—डुक्रीञ् द्रव्यविनिमये, अस्य धातोः किणो भवति। किणइ (७-१ ति = इ, स्पष्टम्) ।।३०।।**

**व्याख्या**—खरीदना अर्थ वाली क्री धातु के स्थान पर किण होता है। जैसे-

१. **क्रीणाति**—कृ + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से क्री के स्थान पर किण-किण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**किणइ**।

## वेः क्के च ।।३१।।

**पदच्छेद**—वेः। क्के। च।

**पदार्थ**—वेः = वि (उपसर्ग से वाद में ) क्के च = क्के भी।

**सू०अ०**—वि (उपसर्ग) से वाद में (क्री धातु के स्थान पर) क्के भी (हो जाता है)।

**वृत्तिः—वेरुत्तरस्य क्रीञः क्के आदेशः किणादेशश्च भवति। विक्केइ, विक्किणइ (पूर्वं स्पष्टम्)। विक्रीणीते ।।३१।।**

**व्याख्या**—वि उपसर्ग से परवर्ती क्री धातु के स्थान पर क्के भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ८.३० से विहित क्री के स्थान पर किण का भी ग्रहण होता है। जैसे-

१. **विक्रीणीते**—वि + क्री + त-प्रस्तुत सूत्र से क्री के स्थान पर क्के-वि + क्के + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**विक्केइ**। पूर्ववर्ती सूत्र से ८.३० से क्री के स्थान पर किण-वि + किण + त। ७.१ से त का इ-**विकिणइ**।

## उद्ध्म उद्धुमा ।।३२।।

**पदच्छेद**—उद्ध्मः । उद्धुमा ।

**पदार्थ**—उद्ध्म के स्थान पर । उद्धमा = उद्धमा ।

**सू०अ०**—उद्धम के स्थान पर उद्धमा (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ध्मा शब्दाग्निसंयोगयोः, अस्य धातोरुत्पूर्वस्स उद्धुमा भवति । उद्ध-माइ (७-१ ति = इ) ।।३२।।**

**व्याख्या**—उद् उपसर्गपूर्वक फूँकना अर्थ वाली ध्मा धातु के स्थान पर उद्धमा हो जाता है । जैसे-

१. **उद्धमति**—उद् + ध्म + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से उद्ध्म के स्थान पर उद्धमा-उद्धमा + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**उद्धुमाइ** ।

## श्रदो धो दहः ।।३३।।

**पदच्छेद**—श्रदो । धो । दहः ।

**पदार्थ**—श्रदः = श्रद् (उपसर्ग) पूर्व में होने पर । धाः = धा के स्थान पर । दहः = दह ।

**सू०अ०**—श्रद् पूर्वक धा धातु के स्थान पर दह (होता है) ।

**वृत्तिः—श्रच्छब्दादुत्तरस्य डुधाञ् धारपोषणयोः, अस्य धातोर्दहादेशो भवति । सद्दहइ (२-४३ श् = स्, ३-३ रलोपः, ३-१ त्लोपः, ३-५० द्द्वित्वम्, ७-१ त = इ) । सद्दहिअं (सद्दहेति पूर्ववत्, ७-३२ अ = इ, २-२ तलोपः, ५-३० सोर्बिन्दुः) ।।३३।।**

**व्याख्या**—श्रद् उपसर्ग पूर्वक धारण करना तथा पोषण करना अर्थ वाली धा धातु के स्थान पर दह होता है । जैसे-

१. **श्रद्दधाति**—श्रद् + धा + तिप्-३.३ से रेफ का लोप-शद् + धा + तिप् । २.४३ से श का स-सद् + धा + तिप् । प्रस्तुत सूत्र धा का दह-सद् + दह + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**सद्दहइ** ।

२. **श्रद्धितम्**—श्रद् + धा + क्त + सु-३.३ से रेफ का लोप और २.४३ से श का स-सद् + धा + क्त + सु । प्रस्तुत सूत्र से धा का दह-श्रद् + दह + क्त + सु । २.२ से ककार और तकार का लोप-सद् + दह + अ + सु । ५.३० से सु का अनुस्वार-सद् + दह + अं । ७.३२ से धातु के अ का इ-**सद्दहिअं** ।

## अवाद् गाहेर्वाहः ।।३४।।

**पदच्छेद**—अवात् । गाहेः । वाहः ।

**पदार्थ**—अवात् = अव से बाद में। गाहेः = गाह् के स्थान पर। वाह = वाह।

**सू० अ०**—अव (उपसर्ग) से बाद में गाह् (धातु) के स्थान पर वाह होता है।

**वृत्तिः—गाहू विलोडने, अस्य धातोरवादुत्तरस्य वाहादेशो भवति। ओवाहइ (४-२१ अव = ओ, ७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्)। पक्षे-अववाहइ (प्रयोग्रहणात् २-२ वलोपो न, शेषं स्पष्टम्)॥३४॥**

**व्याख्या**—यदि अव उपसर्ग पूर्व में हो तो विलोडनार्थक गाह् धातु के स्थान पर वाह होता है। जैसे-

१. **अवगाहति**—अव + गाह + तिप्-४.२१ से अव का विकल्प से ओ-ओ + गाह + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से गाह् का वाह + अ वाह + तिप्। ७.१ से तिप् का इ- **ओवाहइ**। पक्ष में प्रस्तुत सूत्र से गाह् का वाह और ७.१ से तिप् का इ- अववाहइ।

## कासेर्वासः ॥३५॥

**पदच्छेद**—कासेः। वासः।

**पदार्थ**—कासेः = कास के स्थान पर। वासः = वास।

**सू० अ०**—कास धातु के स्थान पर वास (होता है)।

**वृत्तिः—अवादित्यनुवर्त्तते। कासृ शब्दकुत्सायाम्, अस्य धातोरवादुत्तरस्य वासो भवति। ओवासइ, अववासइ (४-२१ अव = ओ, शेषं पूर्ववत् स्पष्टम्)॥३५॥**

**व्याख्या**—पूर्ववर्ती सूत्र से अव उपसर्ग का ग्रहण होता है। अव उपसर्गपूर्वक प्रकाशित करना अर्थ वाली कास् धातु के स्थान पर वास हो जाता है। जैसे-

१. **अवकासयति**—अव + कास + तिप्। ४.२१ से विकल्प से अव का ओ-ओ + कास तिप्। प्रस्तुत सूत्र से कास के स्थान पर वास-ओ + वास + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-ओवासइ। पक्ष में प्रस्तुत सूत्र से कास के स्थान पर वास और ७.१ से तिप् का इ-**अववासइ**।

## निरो माङो माणः ॥३६॥

**पदच्छेद**—निरः। माङः। माणः।

**पदार्थ**—निरः = निः (उपसर्ग) से बाद में। माङः = माङ् के स्थान पर। माणः = माण।

**सू० अ०**—निः (उपसर्ग) से बाद में माङ् (धातु) के स्थान पर माण (हो जाता है)।

**वृत्तिः—माङ् माने, अस्य धातोर्निरुत्तरस्य माणादेशो भवति । णिम्माणइ (३-३ र्लोपः, ३-५० मद्वित्वम्, शेषं पूर्ववत्) ।।३६।।**

**व्याख्या**—निः उपसर्ग पूर्वक नापना अर्थ वाली माङ् धातु के स्थान पर माण हो जाता है । जैसे-

१. **निर्मापयति**—निः + माङ् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से माङ् का माण-निः + माण + तिप्। २.४२ से न् का ण्-णिः + माण + तिप्। ३.३ से विसर्ग के स्थान पर होने वाले रेफ का लोप-णि माण + तिप्। ३.३ से विसर्ग के स्थान पर होने वाले रेफ का लोप णिमाण + तिप्। ३.५० से मकार का द्वित्व-णिम्माण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**णिम्माणइ** ।

## क्षियो झिज्जः ।।३७।।

**पदच्छेद**—क्षियः । झिज्जः ।

**पदार्थ**—क्षियः = क्षि (धातु) के स्थान पर । झिज्जः = झिज्ज ।

**सू०अ०**—क्षि (धातु) के स्थान पर झिज्ज (होता है) ।

**वृत्तिः—क्षि क्षये, अस्य धातोर्झिज्जो भवति । झिज्जइ (स्पष्टम्) ।।३७।।**

**व्याख्या**—क्षयार्थक क्षि धातु के स्थान पर झिज्ज हो जाता है । जैसे–

१. **क्षयति**—क्षि + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से क्षि के स्थान पर झिज्ज-झिज्ज + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**झिज्जइ** ।

## भिदिच्छिदोरन्त्यस्य न्दः ।।३८।।

**पदच्छेद**—भिदिच्छिदोः । अन्त्यस्य । न्दः ।

**पदार्थ**—भिदिच्छिदोः = भिद् और छिद् (धातुओं) के । अन्त्यस्य = अन्त्य वर्ण के स्थान पर । न्दः = न्द ।

**सू०अ०**—भिद् और छिद् (धातुओं) के अन्त्यवर्ण (द्) के स्थान पर न्द (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—भिदिर्, छिदिर् एतयोरन्त्यस्य न्दो भवति। भिन्दइ। छिन्दइ (४-१७ वर्गान्तबिन्दुः, ७-१ ति = इ) ।।३८।।**

**व्याख्या**—तोड़ना अर्थ वाली भिद् और टुकड़े-टुकड़े करना अर्थ वाली छिद् धातु के अन्त्य वर्ण द् के स्थान पर न्द हो जाता है । जैसे-

१. **भिद्यते**—भिद् + त-प्रस्तुत सूत्र से द् के स्थान पर न्द-भिंद + त । ४.१७ से नकार का अनुस्वार-भिंद + त । ७.१ से त के स्थान पर इ-**भिंदइ** ।

२. **छिद्यते**—छिद् + त-प्रस्तुत सूत्र से द् के स्थान पर न्द-छिंद + त। ४.१७ से नकार का अनुस्वार-छिन्द + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**छिंदइ**।

## क्वथेर्ढः ।।२९।।

**पदच्छेद**—क्वथेः । ढः ।

**पदार्थ**—क्वथ्-के (अन्त्य वर्ण के) स्थान पर । ढः = ढ ।

**सू०अ०**—क्वथ् (धातु) के (अन्त्य वर्ण के) स्थान प ढ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्वथ निष्पाके, अस्य धातोन्त्यस्य ढो भवति। कढइ (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।३९।।**

**व्याख्या**—पूर्ववर्ती सूत्रे ८.३८ से अन्त्यस्य का यहाँ ग्रहण होता है। क्वथ् धातु के अन्त्य वर्ण थ् के स्थान पर ढ हो जाता है। जैसे-

१. **क्वथयति**—क्वथ् + तिप्-२.२ से वकार का लोप कथ् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से थ के स्थान पर ढ-कढ + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर ई-**कढई**।

## वेष्टेश्च ।।४०।।

**पदच्छेद**—वेष्टे । च ।

**पदार्थ**—वेष्ट् मे । च = भी ।

**सू०अ०**—वेष्ट् में भी (अन्त्य वर्ण के स्थान पर ढ हो जाता है)।

**वृत्तिः—वेष्ट् वेष्टने, अस्य धातोरन्त्यस्य ढो भवति। वेड्ढइ (ष्ट् = ढ, आदेशत्वात् ३-५० ढद्वित्वम्, ३-५१ ढ् = ड्, ति = इ)। योगविभाग उत्तरार्थः ।।४०।।**

**व्याख्या**—सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र में विहित ढ का ग्रहण होता है। लपेटना अर्थ वाली वेष्ट धातु में अन्त्य वर्ण के स्थान पर ढ हो जाता है। सूत्र के अलग निर्माण का प्रयोजन यह कि पूर्ववर्ती सूत्र ८.३९ में केवल एक वर्ण थ के स्थान पर ढ होने का आदेश है किन्तु प्रस्तुत सूत्र में दो वर्ण ष्ट् के संयोग के स्थल पर आदेश के रूप में प्राप्त होने के कारण ढ का द्वित्व भी ३.५० से हो जाता है। जैसे-

१. **वेष्टयति**—वेष्ट् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ष्ट् के स्थान पर ढ + वेढ + तिप्। ३.५० से ढकार का द्वित्व-वेढ्ढ + तिप्। ३.५१ से पूर्ववर्ती ढकार का डकार-वेड्ढ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वेड्ढइ**।

## उत्समोर्लः ।।४१।।

**पदच्छेद**—उत्समोः । लः ।

**पदार्थ**—उत्समोः उत् और सम् (उपसर्ग) से बाद में। लः = ल।

**सू० अ०**—उत् और सम् (उपसर्ग) से बाद वाले (वेष्ट् के अन्त्य वर्ण का) ल (हो जाता है)।

**वृत्तिः—उत्सम्भ्यामुत्तरस्य वेष्टरन्त्यस्य लो भवति। उव्वेल्लइ, संवेल्लइ (३-१ तलोपः, ३-५० वद्वित्वम्, ष्ट = ल, आदेशत्वात् ३-५० लद्वित्वम्, शेषं पूर्ववत्।।४१।।**

**व्याख्या**—जिस वेष्ट् धातु से पूर्व में उत् अथवा सम् उपसर्ग हो उस वेष्ट् के अन्त्य वर्ण के स्थान पर ल हो जाता है। जैसे-

१. **उद्वेष्टयति**—उद् + वेष्ट् + तिप्-३.१ से द् का लोप और ३.५० से वकार का द्वित्व-उव्वेष्टयति। प्रस्तुत सूत्र से ष्ट् के स्थान पर ल और ३.५० से लकार का द्वित्व-उव्वेल्लयति। ७.१ से तिप् का इ-उव्वेल्लइ।

२. **संवेष्टयति**—सम् + वेष्ट् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ष्ट् के स्थान पर लकार और ३.५० से लकार का द्वित्व-संवेल्लयति। ७.१ से तिप् का इ-संवेल्लइ।

## रूदेर्वः ।।४२।।

**पदच्छेद**—रुदेः। वः।

**पदार्थ**—रुदेः = रुद् धातु के। वः = व।

**सू० अ०**—रुद् धातु के (अन्त्य वर्ण के स्थान पर) व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—रुदिर् अस्य धातोरन्त्यस्य वो भवति। रुवइ (इरित्, द् = व्, ७-१ ति = इ) ।।४२।।**

**व्याख्या**—रोदन करना अर्थ वाली रुद् धातु के अन्त्य वर्ण द् के स्थान पर व हो जाता है। जैसे-

१. **रोदति**—रुद् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से द् का व = रुव + तिप्। ७.१० से तिप् का इ-**रूवइ**।

## उदो विजः ।।४३।।

**पदच्छेद**—उदः। विजः।

**पदार्थ**—उदः उत् (उपसर्ग) से बाद में। विजः = विज् के।

**सू० अ०**—उद् (उपसर्ग) से बाद में (विज् के अन्त्य वर्ण के स्थान पर) व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—उत्पूर्वस्य विजेरन्त्यस्य वकारो भवति। उव्विवइ (२-२ तलोपः,**

**३-५० वद्वित्वम्, शेषं पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।४३।।**

**व्याख्या**—यदि उद् उपसर्ग पूर्व में हो तो उद्विग्न होना अर्थ में विज् धातु अन्त्य वर्ण ज् के स्थान पर वि हो जाता है। जैसे-

**उद्वेजति**—उद् + विज् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से ज् के स्थान पर व-उद् + विव + तिप्। ४.६ से दकार का लोप-उ + विव + तिप्। ३.५० से वकार का द्वित्व-उद् + व्विव + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**उव्विइ**।

## वृधेर्ढः ।।४४।।

**पदच्छेद**—वृधेः। ढः।

**पदार्थ**—वृधेः = वृध् (धातु) के। ढः = ढ।

**सू०अ०**—वृध् (धातु) के (अन्त्य वर्ण ध् के स्थान पर) ढ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—वृधु वर्धने, अस्य धातोरन्त्यस्य ढो भवति। वड्ढइ (१-२७ ऋ = अ, ध् = ढ, तस्य आदेशत्वत् ३-५० द्वित्वम्, शेषं पूर्ववत्)।।४४।।**

**व्याख्या**—वर्धन अर्थ वाली वृध् धातु के अन्त्य वर्ण ध् के स्थान पर ढ हो जाता है। जैसे-

१. **वर्धयति**—वृध् + तिप्-१.२७ से ऋ के स्थान पर अ-वध् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ध् के स्थान पर ढ-वढ + तिप्। आदेश होने से ३.५० से ढ का द्वित्व-वढ्ढ + तिप्। ३.५१ से पूर्ववर्ती ढ का ड्-वड्ढ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वड्ढइ**।

## हन्तेर्म्मः ।।४५।।

**पदच्छेद**—हन्तेः। म्मः।

**पदार्थ**—हन्तेः। म्मः = म्म।

**सू०अ०**—हन् (धातु) के (अन्त्य वर्ण न् के स्थान पर) म्म (हो जाता है)।

**वृत्तिः—हन्तेरन्त्यस्य म्मो भवति। हम्मइ (स्पष्टम्) ।।४५।।**

**व्याख्या**—हिंसा (मारना) अर्थ वाली हन् धातु के अन्त्य वर्ण न् के स्थान पर म्म हो जाता है। जैसे-

१. **हनति**—हन् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से हन् के स्थान पर म्म-हम्म + तिप्। ७.१० से तिप् का इ-**हम्मइ**।

## रुषादीनां दीर्घता ।।४६।।

**पदच्छेद**—रुषादीनाम्। दीर्घता।

**पदार्थ**—रुषादीनाम् = रुष् इत्यादि धातुओं का। दीर्घता = दीर्घत्व।

**सू० अ०**—रुष् इत्यादि (धातुओं) का (स्वर) दीर्घ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—रुषादीनां दीर्घता भवति। रूसइ। तूसइ। सूसइ (२-४ ष = स, एवं सर्वत्र, शेषं स्पष्टम् पूर्ववत्)। रुष्यति। तुष्यति। शुष्यति।।४६।।**

**व्याख्या**—सुखाना अर्थ वाली रुष् इत्यादि अर्थात् रुष्, तुष् शुष् आदि धातुओं के स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे-

१. **रुष्यति**—रुष् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु स्वर की दीर्घता रुष् + तिप्। २.४३ से ष का स-रुस् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-रुस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**रूसइ**।

२. **शुष्यति**—शुष् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु स्वर की दीर्घता शूष् + तिप्। २.४३ से श और ष् का स-शूस् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-सूस + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**सूसइ**।

३. **तुष्यति**—तुष् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु-स्वर की दीर्घता तूष् + तिप्। २.४३ से ष् का स्-तूस् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-तूस + तिप्। ७.१० से तिप् का इ-**तूसइ**।

## च्चो व्रजनृत्योः ।।४७।।

**पदच्छेद**—च्चः। व्रजनृत्योः।

**पदार्थ**—व्रजनृत्योः = व्रज् और नृत् (धातुओ) में। च्चः = च्च।

**सू० अ०**—व्रज और नृत् (धातुओं) में (अन्त्य वर्ण के स्थान पर च्च) (हो जाता है)।

**वृत्तिः—व्रज, नृती, अनयोरन्त्यस्य च्चो भवति। वच्चइ (३-३ रलोपः, शेषं पूर्ववत्)। णच्चइ (१-२७ ऋ = अ, २-४२ न् = ण् त्र, शेषं स्पष्टम्, ति = इ पूर्ववत्)।।४७।।**

**व्याख्या**—जाना अर्थ वाली व्रज् और नाचना अर्थ वाली नृत् धातुओं में अन्त्य वर्ण के स्थान पर च्च हो जाता है। जैसे-

१. **व्रजति**—व्रज् + तिप्-३.३ से रेफ का लोप-वज् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से ज् का च्च-वच्च + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वच्चइ**।

२. **नृत्यति**—नृत् + तिप्-१.२७ से ऋ का अ और न् का ण्-णत् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से त् का च्च-णच्च + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**णच्चइ**।

## युधिबुध्योर्झः ।।४८।।

**पदच्छेद**—युधिवुध्योः । झः ।

**पदार्थ**—युधिबुध्योः = युघ् और बुघ् (धातुओं) में (अन्त्यवर्ण थ् के स्थान पर) झ (हो जाता है)।

**सू०अ०**—युध् और बुघ् (धातुओं) में (अन्त्यवर्ण) थ् के स्थान पर) झ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—युध सम्प्रहारे, बुध अवगमने, अनयोरन्त्यस्य झो भवति । जुज्झइ । बुज्झइ (घ् = झ्, आदेशत्वात् ३-५० झद्वित्वं, ३-५१ झ् तु, शेषं स्पष्टम्)।।४८।।**

**व्याख्या**—युद्ध करना अर्थ वाली युध् और जानना अर्थ वाली बुध् धातु के अन्त्य वर्ण ध् के स्थान पर झ हो जाता है। जैसे-

१. **युद्ध्यति**—युध् + तिप्-२.३१ से य का ज-जुध् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ध् के स्थान पर झ-जुझ् + तिप्। आदेश होने के कारण ३.५० से झ का द्वित्व-जुझ्झ + तिप् । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार जुज्झ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**जुज्झइ** ।

२. **बुद्ध्यति**—बुध् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ध् के स्थान पर झ-बुझ् + तिप्। आदेश होने से ३.५० से झ का द्वित्व-बुझ्झ + तिप् । ३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार बुज्झ + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**बुज्झइ** ।

## रुधेर्न्धम्भौ ।।४९।।

**पदच्छेद**—रुधेः । न्धम्भौ ।

**पदार्थ**—रुधेः = रुध् धातु के। न्धम्भौ = न्ध और म्भ ।

**सू०अ०**—रुध् धातु के (अन्त्य वर्ण के स्थान पर) न्ध और म्भ (हो जाते हैं)।

**वृत्तिः—रुधिर् (अस्य धातो) रन्त्यस्य न्ध-म्भौ भवतः । रून्धइ, रूम्भइ (इरित्, ध् = पर्यायेण न्ध्, म्भ, ७-१ ति = इ, ४-१७ वर्गान्तबिन्दुः) ।।४९।।**

**व्याख्या**—रोकना अर्थ वाली रुध् धातु के अन्त्य वर्ण धकार के स्थान पर न्ध और म्भ हो जाते है। जैसे-

१. **रुन्धति**—रुध् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु के ध् का न्ध और म्भ-रुन्ध रुम्भ + ति। ४.१७ से नकार तथा मकार का अनुस्वार-रुध, रुभ + तिप्। ८.१ से ति का इ-**रुंधइ, रूंभइ** । पक्ष में **रून्धाइ, रूम्भइ** ।

## मृदो लः ॥५०॥

**पदच्छेद**—मृदः । लः ।

**पदार्थ**—मृदः = मृद् के । लः = ल ।

**सू० अ०**—मृद् के (अन्त्य वर्ण के स्थान पर) ल हो जाता है ।

**वृत्तिः—मृदो क्षालने, अस्य धातोरन्त्यस्य लो भवति । मलइ (स्पष्टम्)॥५०॥**

**व्याख्या**—मर्दन करना, मसलना, पीसना इत्यादि अर्थ वाली मृद् धातु के अन्त्य वर्ण दकार के स्थान पर 'ल' हो जाता है । जैसे-

१. **मर्दति**—मृद् + तिप्–१.२७ से ऋ का मद् + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से द् का ल-मल + तिप् । ७.१ से तिप् इ-**मलइ** ।

## शद्लृपत्योर्डः ॥५१॥

**पदच्छेद**—शद्लृपत्योः । डः ।

**पदार्थ**—शद् और पत् के । डः = ड ।

**सू० अ०**—शद् और पत् (धातुओं) के (अन्त्य वर्ण के स्थान पर) ड (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—शद्लृ शातने, पत्लृ पतने, अनयोरन्त्यस्य डो भवति । सडइ, । पडइ (शेषं स्पष्टम्) ॥५१**

**व्याख्या**—दुःख देना, सताना अर्थ वाली शद् और गिरना अर्थ वाली पत् धातु के अन्त्य वर्ण के स्थान पर ड हो जाता है । जैसे-

१. **शीर्यते**—शद् + त-२४३ से श् का स्-सद् + त । प्रस्तुत सूत्र से द् का ड-सड + त । ७.१ से तिप् का इ-**सडइ** ।

२. **पतति**—पत् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से त् का ड-पड + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**पडइ** ।

## शकादीनां द्वित्वम् ॥५२॥

**पदच्छेद**—शकादीनाम् । द्वित्वम् ।

**पदार्थ**—शकादीनाम् = शक् इत्यादि के । द्वित्वम् = द्वित्व ।

**सू० अ०**—शक् इत्यादि (धातुओं) के (अन्त्य वर्ण का) द्वित्व (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—शक्लृ शक्तौ, इत्येवमादीनां द्वित्वं भवति । सक्कइ (७-१ ति = इ,**

**स्पष्टम्) । लग्गइ (७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्) । शक्नोति । लगति ।५२।।**

**व्याख्या**—संकना अर्थ में शक् इत्यादि धातुओं के अन्त्य वर्ण का द्वित्व हो जाता है । जैसे-

१. **शक्नोति**—शक् + तिप्-२.४३ से श् का-सक्-तिप् । प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त्य वर्ण क् का द्वित्व-सक्क् + तिप् । ८.७१ से अदन्त-शक्क + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**सक्कइ** ।

२. **लगति**—लग् + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त्य वर्ण ग् का द्वित्व-लग्ग् + तिप् । ८.७१ से अदन्त-लग्ग + ति । ७.१ से तिप् का इ-**लग्गइ** ।

## स्फुटिचल्योर्वा ।।५३।।

**पदच्छेद**—स्फुटिचल्योः । वा ।

**पदार्थ**—स्फुट् और चल् के । वा = विकल्प से ।

**सू०अ०**—स्फुट् और चल् (धातु) के (अन्त्य वर्ण का) विकल्प से (द्वित्व हो जाता है) ।

**वृत्तिः—स्फूट विकसने, चल कम्पने, अनयोरन्त्यस्य वा द्वित्वं भवति । फुट्टइ (३-१ सलोपः, टद्वित्वम्, ७-१ ति = इ), फुडइ (द्वित्वाभावे २-२० ट = ड, शेषं पूर्ववत्) । चल्लइ, चलइ ।।५३।।**

**व्याख्या**—विकसित होना अर्थ वाली स्फुट् और चलना अर्थ वाली चल् धातु के अन्त्य वर्ण का विकल्प से द्वित्व हो जाता है । जैसे-

१. **स्फुटति**—स्फुट् + तिप् । प्रस्तुत सूत्र से विकल्प से टकार का द्वित्व-फुट्ट + तिप् । ८.७१ से अदन्त-फुट्ट + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**फुट्टइ** । द्वित्वाभाव में २.२० से ट् का ड्-फुड् + तिप् । ८.७१ से अदन्त फुड + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**फुडइ** ।

२. **चलति**—चल् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से 'ल' का द्वित्व-चल्ल् + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**चल्लइ** । पक्ष में द्वित्वाभाव-**चलइ** । द्वित्वाभाव में ८.७१ से अदन्त-चल + तिप् । ७.१ से तिप् का इ-**चलइ** ।

## प्रादेर्मीलः ।।५४।।

**पदच्छेद**—प्रादेः । मीलः ।

**पदार्थ**—प्रादे = प्र इत्यादि से बाद में लः = मील (धातु) के ।

**सू०अ०**—प्र इत्यादि से बाद में मील् (धातु) के (अन्त्य वर्ण का विकल्प से द्वित्व हो जाता है) ।

**वृत्तिः—प्रादेरुत्तरस्य मिलोऽन्त्यस्य द्वित्वं भवति वा। पमिल्लइ (स्पष्टम् पूर्ववत्), पमीलइ (३-३ रलोपः, 'ह्रस्वः संयोगे' इति हेमसूत्रात् मी = मि, शेषं पूर्ववत्) (स्पष्टम्) ।।५४।।**

**व्याख्या**—प्र इत्यादि उपसर्ग हैं पूर्व में जिसके ऐसे मील् धातु के अन्त्य वर्ण लकार का द्वित्व हो जाता है। जैसे-

१. **प्रमिलति**—प्र + मील् + तिप्-३.३ से रेफ का लोप-प + मील् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र लकार का द्वित्व-प + मील्ल् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-प + मील्ल + तिप्। ४.१ से ईकार का इकार-प + मिल्ल् + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**पमिल्लइ**। पक्ष में द्वित्वा-भाव से **पमिलइ**।

## भुजादीनां क्त्वातुमुन्तव्येषु लोपः ।।५५।।

**पदच्छेद**—भुजादीनाम्। क्त्वातुमुन्तव्येषु। लोपः।

**पदार्थ**—त्त्वातुमुन्तव्येषु = क्त्वा, तुमुन् और तव्य बाद में होने पर। भुजादीनां = भुज् इत्यादि (धातुओं) के। लोपः = लोप।

**सू०अ०**—त्त्वा, तुमुन् और तव्य (प्रत्यय) बाद में होने पर भुज् इत्यादि (धातुओं के अन्त्य वर्ण) का लोप (हो जाता है)।

**वृत्तिः—भुज इत्येवमादीनां क्त्वातुमुन्तव्येषु परतोऽन्त्यस्य लोपो भवति। भोत्तूण (जलोपे, ३-१ कलोपे, गुणे, ३-५० तद्वित्वम्, ४-२३ क्त्वः शेषस्य वस्य स्थाने ऊणादेशः) भोत्तुं। भोत्तव्वं। विदः, वेत्तूण (दलोपे, ३-१ कलोपे, ३-५० तद्वित्वम्, ४-२३ त्त्वा = ऊण, गुणः पूर्ववत्)। वेत्तुं (पूर्ववद् गुणे कृते जलोपे ाच शेषभूततुमुनस्तकारस्य ३-५० द्वित्वम्, ४-१२ मबिन्दुः)। वेत्तव्वं (३-२ यलोपः, ३-५० वद्वित्वम्, ४-१२ मबिन्दुः)। रूदः, रोत्तूण, रोत्तुं, रोत्तव्वं (भोत्तुं-भोत्तव्वंवत्)। (भोत्तसावात्) ।।५५।।**

**व्याख्या**—त्त्वा, तुमुन् और तव्य प्रत्यय बाद में होने पर भुज् इत्यादि धातुओं के अन्त्य वर्ण का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **भुत्त्वा**—भुज् + त्त्वा-प्रस्तुत सूत्र से ज् का लोप-भु + त्त्वा। १.१६ से उ का ओ-भो + त्वा। ३.१ से क् का लोप-भो + त्वा। ३.५० से तकार का द्वित्व-भोत्त्वा। ४.३ से त्वा का तूण-**भोत्तूण**।

२. **भोक्तुम्**—भुज् + तुमुन्-प्रस्तुत सूत्र से ज् का लोप-भु + तुमुन्। १.१६ से उ का ओ-भो + तुमन्। **भोत्तुं**।

३. **भोक्तव्यम्**—भुज् + तव्यत् १.१६ से उ का ओ-भोज् + तव्यत् प्रस्तुत सूत्र से

जकार का लोप-भो + तव्यत् ३.२ से यकार का लोप-भो + तवत्। ३.५० से वकार का द्वित्व-भो + तव्वत् ५.५० से तकार का द्वित्व और ५.३० से त् का अनुस्वार **भोत्तव्वं**।

४. **विदित्वा**—विद् + त्त्वा-प्रस्तुत सूत्र से दकार का लोप-वि + त्त्वा। १.१६ से स्पे इ का ए वे + त्त्वा ४.२३ से त्त्वा का तूण-वित्तूण।

५. **वेत्तुम्**—विद् + तुमुन्-प्रस्तुत सूत्र से द का लोप-वे + तुमुन् ३.५० से तकार का द्वित्व-**वेत्तुं**।

६. **वेदितव्यम्**—विद् + तव्यत्-१.१६ से इकार का एकार-वेद् + तव्यत्। प्रस्तुत सूत्र से द् का लोप-वे + तव्यत्। ३.१ से यकार का लोप और ३.५० से वकार का द्वित्व-वेत्तव्वम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**वेत्तव्वं**।

## श्रुहुजिलूधुवां णोऽन्ते ह्रस्वः ।।५६।।

**पदच्छेद**—श्रुहुजिलूघावाम्। ञः। अन्ते। ह्रस्वः।

**पदार्थ**—श्रुहुजिलूघावाम् = श्रु, हु, जि, जू और धु (धातुओं) के। अन्ते = अन्त में। णः = ण।

**सू० अ०**—श्रु, हु, जि, लू और घु (धातुओं) के अन्त में ण (प्रत्यय होता है) और (दीर्घ स्वर का) ह्रस्व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—श्रु श्रवणो, हु दानादाने, जिजये, लूञ् छेदने धूञ् कम्पने, इत्येतेषामन्ते णः प्रयोक्तव्यः, दीर्घस्य ह्रस्वो भवति। सुणइ (२-४३ श् = स्, ३-३ रलोपः, ७-१ ति = इ, शेषं स्पष्टम्)। हुणइ। जिणइ। लुणइ। धुणइ। (स्पष्टाः पूर्ववत्) ।।५६।।**

**व्याख्या**—सुनना अर्थ वाली श्रु, आदान-प्रदान अर्थ वाली हु, जीतना अर्थ वाली जि, काटना अर्थ अर्थ वाली लू और हिलना (कम्पन करना) अर्थ वाली घू धातु के अन्त में ण प्रत्यय होता है तथा इनका दीर्घ स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे-

१. **शृणोति**—श्रु + तिप्। २.४३ से श का स और ३.३ से रेफ का लोप-सु + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में ण प्रत्यय-सुण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**सुणइ**।

२. **हूयते**—हु + त। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में ण प्रत्यय-हुण + त। ७.१ से त का इ-**हुणइ**।

३. **जयति**—जी + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में ण प्रत्यय तथा दीर्घ स्वर का ह्रस्व-जिण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**जिणइ**।

४. **लुनाति**—लू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में ण प्रत्यय तथा दीर्घ का ह्रस्व-लुण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**लुणइ**।

५. **धुनोति**—धू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में ण प्रत्यय तथा दीर्घ स्वर का ह्रस्व धुण + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**धुणइ**।

## भावकर्मणोर्व्वश्च ।।५७।।

**पदच्छेद**—भावकर्मणोः। व्वः। च।

**पदार्थ**—भावकर्मणोः = भाववाच्य और कर्मवाच्य में। व्वः = व्व। च = भी।

**सू०अ०**—भाववाच्य और कर्मवाच्य में (श्रु इत्यादि धातुओं के अन्त में) व्व (प्रत्यय) भी (होता है)।

**वृत्तिः—एषां भावकर्मणोरन्त्ये व्व-शब्दः प्रयोक्तव्यः, चकारात् णश्च। सुव्वइ (२-४३ श्= स्, ३-३ रलोपः, व्वप्रयोगे, संयोगे ८।८।२२७। हेम० ह्रस्व च, ७-१ ति = इ)। सुणिज्जइ (८-५६ णत्वे ह्रस्वे च कृते, ७-३३ अ = इ, इति सुण-इ = सुणि जाते, ७-२१ धातुप्रत्यययोर्मध्ये ज्ज, ७-१ त = इ)। हुव्वइ, हुणिज्जइ। लुव्वइ, लुणिज्जइ। धुव्वइ, धुणिज्जइ (पूर्ववत् सर्वेषां सिद्धिर्ज्ञेया) ।।५७।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्मवाच्य में श्रु, हु, जि, लू और घु धातु के अन्त में व्व प्रत्यय भी होता है। सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती सूत्र ८.५६ में विहित ण प्रत्यय होने ग्रहण है। इस प्रकार भाववाच्य तथा कर्मवाच्य में इन धातुओं के दो रूप बनते है)। धातु के अन्त में व्व प्रत्यय युक्त तथा (धातु के अन्त में ण प्रत्यय युक्त। जैसे-

१. **श्रूयते**—श्रु + त-२.४३ से श् का स् और ३.३ से रेफ का लोप-सु + त। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में व्व प्रत्यय-सुव्व + त्त। ७.१ से त का इ-**सुव्वइ**। पक्ष में–८.५६ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय करने पर-सुण + त। ७.३३ से अ का इ-सुणि + त। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य मे ज्ज का आगम-सुणिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**सुणिज्जइ**।

२. **हूयते**—हु + त। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में व्व प्रत्यय-हुव्व + त। ७.१ त का इ-**हुव्वइ**। पक्ष में–८.५६ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय करने पर–हुण + त। ७.३३ से अ का इ–हुणि + त। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-सुणिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**सुणिज्जइ**।

३. **जेते**—जि + त। प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त मे व्व प्रत्यय-जिव्व + त। ७.१ से त का इ-**जिव्वइ**। पक्ष में–८.५६ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय करने पर-

जिण + त। ७.३३ से अ का इ-जिणि + त। ७.२१ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-सुणिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**जिणिज्जइ**।

४. **लूयते**—लु + त-प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त में व्व प्रत्यय-लुव्व + त। ७.१ से त का इ-**लुव्वइ**। पक्ष में-८.५६ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय करने पर-लुण + त। ७.३३ से अ का इ-लुणि + त। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-लुणिज्ज + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**लुणिज्जइ**।

५. **धूयते**—धु + त-प्रस्तुत सूत्र से धातु से बाद व्व प्रत्यय-धुव्व + त। ७.१ से त का इ-**धुव्वइ**। पक्ष में-८.५६ से धातु के अन्त में ण प्रत्यय करने पर-धुण + त। ७.३३ से अ का इ-धुणि + त। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-धुणिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**धुणिज्जइ**।

## गमादीनां द्वित्वं वा ।।५८।।

**पदच्छेद**—गमादीनाम्। द्वित्वम्। वा।

**पदार्थ**—गमादीनाम् = गम् इत्यादि धातुओं के। वा = विकल्प से। द्वित्वम् = द्वित्व।

**सू० अ०**—गम् इत्यादि धातुओं के (अन्त्य वर्ण का) विकल्प से द्वित्व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—गमादीनां धातूनां द्वित्वं वा भवति। गम्मइ (स्पष्टम्), गमिज्जइ (७-३३ भविष्यति गमोऽकारस्येत्वं, ७-२१ मध्ये ज्ज, ७-१ त = इ, एवमुत्तरत्रापि ज्ञेयम्)। रम्मइ, रमिज्जइ। हस्सइ, हसिज्जइ। गम्यते। रम्यते। हस्यते ।।५८।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और वाच्य में गम् इत्यादि धातुओं के अन्त्य वर्ण का विकल्प से द्वित्व हो जाता है। जैसे-

१. **गम्यते**—गम् + त-प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त्य वर्ण म् का द्वित्व-गम्म् + त। ८.७१ से अदन्त-गम्म + त। ७.१ से त का इ-**गम्मइ**। पक्ष में ७.३३ से अ का इ-गमि + त। ७.२१ धातु तथा प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-गमिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**गमिज्जइ**।

२. **रम्यते**—रम् + त-प्रस्तुत सूत्र से धातु के अन्त्य वर्ण मकार का द्वित्व-रम्म् + त। ८.७१ से अदन्त-रम्म + त। ७.१ से त का इ-**रम्मइ**। पक्ष में ७.३३ से अ का इ-रमि + त। ७.२१ धातु तथा प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-रमिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**रमिज्जइ**।

३. **हस्यते**—हस् + त। प्रस्तुत सूत्र से धातुओं के अन्त्य वर्ण स् का द्वित्व-हस्स् + त। ८.७१ से अदन्त-हस्स + त। ७.१ से त का इ-**हस्सइ**। पक्ष में ७.३३ से अ

का इ-हसि + त। ७.२१ से धातु तथा प्रत्यय के मध्य मे ज्ज का आगम-हसिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**हसिज्जइ**।

## लिहेर्लिज्झः ।।५९।।

**पदच्छेद**—लिहे:। लिज्झ:।

**पदार्थ**—लिहे: = लिह् (धातु) के स्थान पर। लिज्झ: = लिज्झ।

**सू०अ०**—लिह् (धातु) के स्थान पर लिज्झ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—लिह आस्वादने, अस्य धातोर्लिज्झो भवति भावकर्मणोः। लिज्झइ (स्पष्टम् ७-१ त = इ) ।।५९।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्म वाच्य में चाटना अर्थ वाली लिह् धातु के स्थान पर लिज्झ हो जाता है। जैसे-

१. **लिह्यते**—लिह् + त-प्रस्तुत सूत्र से लिह् के स्थान पर लिज्झ-लिज्झ + त। ७.१ से त का इ-**लिल्झइ**।

## हृक्रोर्हीरकीरौ ।।६०।।

**पदच्छेद**—हृक्रो:। हीरकीरौ।

**पदार्थ**—हृक्रो: = हृ और कृ के स्थान पर। हीरकीरौ = हीर और कीर।

**सू०अ०**—हृ और कृ (धातुओं) के स्थान पर क्रमश: हीर और कीर (हो जाता है)।

**वृत्तिः—हृञ् हरणे, डुकृञ् करणे, अनयोर्हीरकीरौ भवतः भावकर्मणोरर्थयोः। हीरइ। कीरइ (स्पष्टम् पूर्ववत्) ।।६०।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्मवाच्य में हरण करना अर्थ वाली हृ धातु के स्थान पर हीर और करना अर्थ वाली कृ धातु के स्थान पर कीर हो जाता है। जैसे-

१. **ह्रियते**—हृ + त-प्रस्तुत सूत्र से हृ के स्थान पर हीर-हीर + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**हीरइ**।

२. **क्रियते**—कृ + त-प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर कीर-कीर + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**कीरइ**।

## ग्रहेर्दीर्घो वा ।।६१।।

**पदच्छेद**—ग्रहे:। दीर्घ:। वा।

**पदार्थ**—ग्रह् धातु (के स्वर) का। वा = विकल्प से। दीर्घ: = दीर्घ।

**सू०अ०**—ग्रह् (धातु के स्वर) का विकल्प से दीर्घ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ग्रहेर्धातोर्दीर्घो वा भवति भावकर्मणोरर्थयोः । गाहिज्जइ, गहिज्जइ (३-४ रलोपः, विकल्पेन दीर्घे कृते, अग्रे गमिज्जइवत्) ।।६१।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्मवाच्य में ग्रहण करना अर्थ वाली ग्रह् धातु के स्वर के स्थान पर दीर्घ हो जाता है। जैसे-

१. **गृहयते**—ग्रह् + त-३.४ से रेफ का लोप-गह् + त। प्रस्तुत सूत्र से स्वर का दीर्घ-गाह् + तिप्। ८.७१ से अदन्त-गाह + त। ७.३३ से अ के स्थान पर इ-**गाहिज्जइ**। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य मे ज्ज का आगम्-गाहिज्ज + इ-**गाहिज्जइ**। पक्ष में दीर्घाभाव-गह + त। ७.३३ से अ के स्थान पर इ-गहि + त। ७.२१ से धातु और प्रत्यय के मध्य में ज्ज का आगम-गहिज्ज + त। ७.१ से त का इ-**गहिज्जइ**।

## क्तेन दिण्णादयः ।।६२।।

**पदच्छेद**—क्तेन। दिण्णादयः।

**पदार्थ**—क्तेन = क्त (प्रत्यय के) सहित। दिण्णादयः = दिण्ण इत्यादि।

**सू०अ०**—(दा इत्यादि धातुओं के स्थान पर) क्त प्रत्यय के सहित दिण्ण इत्यादि (होते हैं)।

**वृत्तिः—दिण्ण-इत्येवमादयः क्तप्रत्ययेन सह निपात्यन्ते। डुदाञ् दाने, दिण्णं (स्पष्टम्) रुदिरि, रुण्णं (पूर्ववत् स्पष्टम्)। त्रसी, हित्थं (स्पष्टम्)। दह, दड्ढं। रञ्ज, रत्तं (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।६२।।**

**व्याख्या**—दा इत्यादि धातुओं के स्थान पर क्त प्रत्यय के सहित दिण्ण इत्यादि (होते हैं) जैसे-

१. **दत्तम्ः**—दा + क्त-प्रस्तुत सूत्र से क्त के सहित दा धातु के स्थान पर-**दिण्णं**।
२. **रोदितम्**—रुद् + क्त-प्रस्तुत सूत्र से क्त के सहित रुद् धातु के स्थान पर-**रुण्णं**।
३. **दग्धम्**—दह् + क्त-प्रस्तुत सूत्र से क्त के सहित दह् धातु के स्थान पर-**दड्ढं**।
४. **रञ्जितम्**—रञ्ज् + त्त-प्रस्तुत सूत्र से क्त के सहित रञ्ज् धातु के स्थान पर-**रत्तं**।
५. **त्रसितम्**—त्रस् + क्त-प्रस्तुत सूत्र से क्त के सहित त्रस् धातु के स्थान पर-**हित्थं**।

**विशेष**—सुबोधिनीकार और सञ्जीवनी काव्यकार ने ऐसे निपातन से होने वाले पदों की सूची दिया है जिसमें दान इत्यादि धातुओं के स्थान पर क्त प्रत्यय के सहित दिण्णं इत्यादि हो जाते हैं। वे इस प्रकार हैं—

दत्तमुक्तव्यतिक्रान्तत्रस्तानामुदितस्य च।
दिण्णं मुत्तं च वोलीणहित्थरूण्णा भवन्त्यमी ।।

रुष्टदग्धार्जितख्यातस्थापितानामिमे मताः ।
डक्कं दड्ढं विढत्तं च संखादं थाविअं तथा ।।
स्पृष्टास्वादितनष्टानां स्यात् प्रसारितलूनयोः ।
छिविअं चक्खिअं लुक्कं तथा विलविअं लुअम् ।।
आरब्धार्पितयोः स्यातां आढत्तं च विणाविअं ।
एवं दिण्णदयोऽन्ये दत्तादीनां निपातिताः ।।

इस प्रकार दत्तं = दिण्णं, मुक्तं = मुत्तं, व्यतिक्रान्तं = वोलीणं, त्रस्तं = हित्थं, मुदितं-रुण्णं, रुष्टं = डक्कं, दग्धं = दड्ढं, अर्जितं = विढत्तं, ख्यापितं = संखाअं, स्थापितं = थविअं । स्पृष्टं = छिविअं, स्वादितं = चक्खिअं, नष्टं = लुक्कं, प्रतारितं = विसविअं, लूनितं = लुअं, आरब्धं = आढत्तं, अर्पितं = विणाविअं-ये दिण्णा इत्यादि निपातन वाले पद है । इनसे अन्य भी निपातन वाले पद होते हैं ।

## खिदेर्विसूरः ।।६३।।

**पदच्छेद**—खिदेः । विसूरः ।

**पदार्थ**—खिदेः = खिद् (धातु) के स्थान पर । विसूरः = विसूर ।

**सू०अ०**—खिद् (धातु) के स्थान पर विसूर (होता है) ।

**वृत्तिः—खिद दैन्य, अस्य विसूरो भवति । विसूरइ (स्पष्टम् । अत्रोदाहरणभूते प्राकृतपद्यखण्डे 'विरहेण, बाला' इत्येतौ शब्दौ संस्कृते प्राकृतसमौ, शेषो महिलावत्?) । विरहेण विसूरइ बाला ।।६३।।**

**व्याख्या**—भाववाच्य और कर्मवाच्य में खिन्न होना अर्थ वाली खिद् धातु के स्थान पर विसूर (होता है) । जैसे-

१. **खिद्यते**—खिद् + क्त-प्रस्तुत सूत्र से खिद् के स्थान पर विसूर-विसूर + त । ७.१ से त के स्थान पर इ-**विसूरइ** ।

**विशेष**—विरहेण विसूरइ बाला-यह उदाहरण है जिसमें विरहेण और बाला-ये दोनों पर प्राकृत और संस्कृत में समान हैं ।

## क्रुधेर्जूरः ।६४।।

**पदच्छेद**—क्रुधेः । जूरः ।

**पदार्थ**—क्रुधेः = क्रुध् के स्थान पर । जूरः = जूर ।

**सू०अ०**—क्रुध् (धातु) के स्थान पर जूरः (होता है) ।

**वृत्तिः—क्रुध कोपे, अस्य जूरो भवति । जूरइ (पूर्ववत् ति, त = इ, शेषं स्पष्टम्) ।।६४।।**

**व्याख्या**—कर्मवाच्य और भाववाच्य में कोपन अर्थ वाली क्रुध धातु के स्थान पर जूरः होता है। जैसे-

१. **क्रुध्यते**—क्रुध् + त-प्रस्तुत सूत्र से क्रुध् के स्थान पर जूर-जूर + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**जूरइ**।

## चर्चेश्चम्पः ।।६५।।

**पदच्छेद**—चर्चेः। चम्पः।

**पदार्थ**—चर्च् के स्थान पर। चम्पः = चम्प।

**सू०अ०**—चर्च् के स्थान पर चम्प (हो जाता है)।

**वृत्तिः—चर्च अध्ययने, अस्य धातोश्चम्पो भवति। चम्पइ (स्पष्टम्) ।।६५।।**

**व्याख्या**—अध्ययन अर्थ वाली चर्च् धातु के स्थान पर चम्प होता है। जैसे-

१. **चर्च्यते**—चर्च् + त। प्रस्तुत सूत्र से चर्च् के स्थान पर चम्प-चम्प + त। ७.१ से त के स्थान पर इ-**चम्पइ**।

## त्रसेर्वज्जः ।।६६।।

**पदच्छेद**—त्रसेः। वज्जः।

**पदार्थ**—त्रस् के स्थान पर। वज्जः = वज्ज।

**सू०अ०**—त्रस् के स्थान पर वज्ज (होता है)।

**वृत्तिः—त्रसी उद्वेगे, अस्य धातोर्वज्जो भवति। वज्जइ (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।६६।।**

**व्याख्या**—भयार्थक त्रस् धातु के स्थान पर वज्ज होता है। जैसे-

१. **त्रस्यति**—त्रस् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से त्रस् के स्थान पर वज्ज-वज्ज + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**वज्जइ**।

## मृजेर्लुभसुपौ ।।६७।।

**पदच्छेद**—मृजेः। लुभ-सुपौ।

**पदार्थ**—मृजेः = मृज् के स्थान पर। लुभ-सुपौ = लुभ और सुप।

**सू०अ०**—मृज् (धातु) के स्थान पर लुभ और सुप (होते हैं)।

**वृत्तिः—मृजू शुद्धौ, अस्य धातोर्लुभ, सुप इत्यादेशौ भवतः। लुभइ, सुपइ (स्पष्टम्) ।।६७।।**

**व्याख्या**—शुद्ध्यर्थक मृज् धातु के स्थान पर लुभ और सुप होते हैं। जैसे-

१. **मर्ष्टि**—मृज् + तिप् प्रस्तुत सूत्र से मृज् के स्थान पर लुभ और सुप-लुभ सुप + तिप्। ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**लुभइ, सुपइ**।

## वुट्टखुप्पौ मस्जेः ।।६८।।

**पदच्छेद**—वुट्टखुप्पौ। मस्जेः।

**पदार्थ**—मस्जेः = मस्ज् के स्थान पर। वुट्टखुप्पौ = वुट्ट और खुप्प।

**सू०अ०**—मस्ज् के स्थान पर वुट्ट और खुप्प (होते हैं)।

**वृत्तिः—टुमस्जो शुद्धौ, अस्य धातोर्वुट्टखुप्पौ भवतः। वुट्टइ, खुप्पइ (पूर्ववत् स्पष्टम्) ।।६८।।**

**व्याख्या**—शुद्धयर्थक मस्ज् धातु के स्थान पर वुट्ट और खुप्प (होते है)। जैसे-

१. **मज्जति**—मस्ज् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से मस्ज के स्थान पर वुट्ट और खुप्प-वुट्ट, खुप्प + तिप्। ७.१ से ति के स्थान पर इ-**वुट्टइ, खुप्पइ**।

## दृशेः पुलअणिअक्कअवक्खाः ।।६९।।

**पदच्छेद**—दृशेः। पुलअणिअक्कअवक्खाः।

**पदार्थ**—दृशेः = दृश् के स्थान पर। पुलअणिअक्कअवक्खाः = पुलअ, णिअक्क और अवक्खः।

**सू०अ०**—दृश् (धातु) के स्थान पर पुलक्, णिअक्क, अवक्ख (होते हैं)।

**वृत्तिः—दृशिर् प्रेक्षणे, अस्य पुलअ-णिअक्क-अवक्खा भवन्ति। पुलअइ। णिअक्कइ। अवक्खइ (स्पष्टम्) ।।६९।।**

**व्याख्या**—देखना अर्थ वाली दृश् धातु के स्थान पर पुलअ, णिअक्ख और अवक्ख होते हैं। जैसे-

१. **पश्यति**—दृश् + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से दृश् के स्थान पर पुलअ, णिअक्क और अवलक्ख पुलअ, णिअक्क, अवक्ख + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-**पुलअइ, णिअक्कइ, अवलक्खइ**।

## शकेस्तरवअतीराः ।।७०।।

**पदच्छेद**—शकेः। तरवअतीराः।

**पदार्थ**—शकेः = शक् के स्थान पर। तरवअतीराः = तर, वअ और तीर।

**सू०अ०**—शक् के स्थान पर तर, वअ और तीर (होते है)।

**वृत्तिः—शक्लृ शक्तौ, अस्य धातोः तर, वअ, तीर इत्येत आदेशा भवन्ति। तरइ, वअइ, तीरइ ।।७०।।**

**व्याख्या**—सामर्थ्य अर्थ वाली शक् धातु के स्थान पर तर, वअ और तीर होते हैं । जैसे-

१. **शक्नोति**—शक् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से शक् के स्थान पर तर, वअ और तीर-तर, वअ, तीर-तिप् । ७.१ से तिप् के स्थान पर इ-**तरइ, वअइ, तीरइ** ।

## शेषाणामदन्तता ।।७१।।

**पदच्छेद**—शेषाणाम् । अदन्तता ।

**पदार्थ**—शेषाणाम्-(विधान करने से) अवशिष्ट (धातुओं) की । अदन्तता = अकारान्त होना ।

**सू०अ०**—(जिन धातुओं का विधान किया गया है उनसे अन्य) अवशिष्ट धातुओं को अकारान्त (जानना चाहिए) ।

**वृत्तिः—शेषाणां लुप्तानुबन्धानामदन्तता भवति । भमइ । चुम्बइ ।।७१।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य अष्टमः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—इस ग्रन्थ में भू इत्यादि धातुओं के स्थान पर हो इत्यादि होने का विधान इस अष्टम परिच्छेद में किया गया है । इन विहित धातुओं से अन्य जो व्यञ्जनान्त धातुएँ है उनके अन्त में अ जोड़कर उन्हें अकारान्त बना देना चाहिए । जैसे-

१. **भ्रम्**—३.३ से रेफ का लोप करने पर भम् होता है । यह व्यञ्जनान्त धातु है अत: इससे बाद में अ जोड़कर भम इस प्रकार अकारान्त बना देना चाहिए । तत्पश्चात् तिङन्त प्रत्यय के अनुसार कार्य करना चाहिए ।

२. **चुम्ब्**—यह भी व्यञ्जनान्त धातु है । भ्रम् के समान इसे भी अकारान्त कर लेना चाहिए ।

**विशेष**—प्राकृत में कोई भी धातु व्यञ्जनान्त नहीं मानी जाती है ।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का अष्टम परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# नवमः परिच्छेदः
## ( निपातविधानम् )

### निपाताः ।।१।।

**पदच्छेद**—निपाताः ।

**पदार्थ**—निपाताः = निपात ।

**सू० अ०**—(अब) निपात (कहे जा रहे हैं) ।

**वृत्तिः—अधिकारोऽयम् । वक्ष्यमाणा निपातसंज्ञका वेदितव्याः । संस्कृतानुसारेण निपातकार्यं वक्तव्यम् ।।१।।**

**व्याख्या**—यह अधिकार सूत्र है। इससे आगे जो विधान किया जाएगा उसे निपात जाना चाहिए। निपातों का कार्य संस्कृत के अनुसार ही कहा जाएगा।

### हुं दानपृच्छानिर्धारणेषु ।।२।।

**पदच्छेद**—हुं । दानपृच्छानिर्घारणेषु ।

**पदार्थ**—हुं = हु । दानपृच्छानिर्धारणेषु = दान, पूछना और निर्धारण (अर्थ) में ।

**सू० अ०**—दान, पूछना और निर्धारण (अर्थ में) हुं-(यह निपात होता है) ।

**वृत्तिः—हुं-इत्ययं शब्दो दानपृच्छानिर्धारणेष्वर्थेषु निपातसंज्ञो भवति । दाने यथा-हुं गेण्ह अप्पणो जीअं (गेण्ह ८-१५ सूत्रे स्पष्टम्, अप्पणो ५-४५ सूत्रे स्पष्टम्, जीइं २-२, ४-५ सूत्रे स्पष्टम्, शेषं सुगमम्) । पृच्छायाम्-हुं कधेहि साहुसु सब्भावं (कधेहि इति १२-३ शौरसेन्यां, थ = ध, ७-१८ विध्यादावेकत्वे सिप् = सुकृते ७-३४ लादेशे सति, एत्वम्, मध्यमे २-२७ ध् = ह्, २-४३ ष् = स् । अन्त्ये ३-२ दलोपः, ३-५० भद्वित्वम्, ३-५१ भ् = ब्, प्राय इति २-२ वलोपो न, ५-३ अमोऽकारलोपः, ४-१२ मबिन्दुः)। निर्धारणे-हुं हुवसु तुण्हिक्को (८-१ भू = हुव, ७-१८ सिप् = सु, अन्त्यः ३-५८ सूत्रे द्रष्टव्यः) । हुं गृहाणात्मनो जीवम् । हुं कथय साधुषु सद्भावनम् । हुं भव तूष्णीकः ।।२।।**

**व्याख्या**—हुं यह निपात दान, पूछना और निर्धारण (निश्चय) अर्थ मे प्रयुक्त होता है। जैसे-

१. हुं गृहीष्व आत्मनः जीवम् = हुं गेण्हं अप्पणो जीअं (मत अपना जीव लो)। यहाँ हुं-यह शब्द दानार्थ में प्रयुक्त है।

२. हुंकथय साधुषु सद्भावम् = हुं धेहि साहुसु सवभावं (सज्जनों का स्वभाव कहो) यहाँ हुं पूछना अर्थ में प्रयुक्त है।

३. हुं भव तूष्णीकः = हुं हुवसु तुण्हिको (शान्त हो जाओ)। यहाँ हुं निर्धारण अर्थ में प्रयुक्त है।

## विअ-वेअ अवधारणे ।।३।।

**पदच्छेद**—विअ-वेअ। अवधारणे।

**पदार्थ**—अवधारणे = निश्चय (अर्थ) में। विअ-वेअ = विअ और वेअ।

**सू०अ०**—निश्चय अर्थ में विअ और वेअ (ये निपात होते हैं)।

**वृत्तिः—विअ, वेअ इत्येताववधारणे निपातसंज्ञौ भवतः। एवं विअ। एवं वेअ। (एवं संस्कृतसमः, शेषं स्पष्टम्)। एवमेव ।।३।।**

**व्याख्या**—विअ और वेअ–इन दो निपातों का प्रयोग निश्चय अर्थ में होता है। जैसे-

१. **एवमेव**—(ऐसा ही है) **एवं विअ, एवं वेअ**।

## ओ सूचनापश्चत्तापविकल्पेषु ।।४।।

**पदच्छेद**—ओ। सूचनापश्चात्तापविकल्पेषु।

**पदार्थ**—सूचनापश्चात्तापविकल्पेषु = सूचना, पश्चाताप और विकल्प अर्थो में। ओ = ओ।

**सू०अ०**—सूचना, पश्चात्ताप और विकल्प-इन (अर्थो में ओ निपात होता है)।

**वृत्तिः—ओ-इत्ययं शब्दः सूचनापश्चात्तापविकल्पेषु निपातसंज्ञो भवति। ओ चिरअसि (२-२ यलोपः, ७-२ सि)। गाथासु द्रष्टव्यः ।।४।।**

**व्याख्या**—सूचना, पश्चात्ताप और विकल्प के अर्थों में ओ निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **ओ चिरयसि**-२.२ से यकार का लोप और २.२ से सिप् का सि-**ओ चिरअसि**।

## इरकिरकिला अनिश्चिताख्याने ।।५।।

**पदच्छेद**—इरकिरकिलाः। अनिश्चिताख्याने।

**पदार्थ**—अनिश्चिताख्याने = अनिश्चित अर्थ का कथन करने में। इरकिरकिलः = इर, किर और किल।

**सू०अ०**—अनिश्चित (अर्थ) का कथन करने में इर, किर और किल (निपात होते है)।

**वृत्तिः—इर, किर, किल इत्येते शब्दा अनिश्चिताख्याने निपातसंज्ञका भवन्ति। पेक्ख इर तेण हदो (आदिमः ६-५१ सूत्रे द्रष्टव्यः। तेण ४-६ तदोऽन्त्यलोपः, ५-१२ एत्वं ५-४ टा = ण। अन्त्य ४-६ हनाऽन्त्यलोपः, १२-३ त = द, ५-१ ओ)। अज्ज किर तेण ववसिओ। (व्यवसित इत्यत्र ३-२ यलोपः, प्राय इति २-२ वलोपो न, २-२ तलोपोः, ५-१ ओ, शेषं स्पष्टम्)। अअं किल सिविणओ (२-२ यलोपः, ४-१२ मबिन्दुः, शेषं स्पष्टम्। अन्त्यं १-३ सूत्रे द्रष्टव्यम्)। प्रेक्षस्व किल तेन हतः। अद्य किल तेन व्यवसितः। अयं किल स्वप्नः।।५।।**

**व्याख्या**—अनिश्चित अर्थ के कथन के लिए इर, किर और किल-इन तीन निपातों को प्रयोग होता है। जैसे-

१. **पश्य, किल तेन हतः**—(देखो उसने सम्भवतः मार ही दिया) **पेक्ख किर तेण हदो**। १२.१८ से दृश् का **पेक्ख**। प्रस्तुत सूत्र से किर। तेण-तत् + टा-४.६ से त का लोप-त + टा। ५.१२ से अ का ए-ते + टा। ५.४ से टा का ण-तेण। **हतः**- हन् + क्त। ४.६ से न् का लोप-ह + क्त। ३.२ से ककार का लोप-ह + त। १२.३ से त् का द्-५.१ से सु का ओ-हदो।

२. **अद्य किल तेन व्यवसितः—अज्ज किर तेण ववसिओ**। व्यवसितः-३.२ से य का लोप-ववसितः, २.२ से त का लोप-ववसिअः, ५.१ से सु का ओ-**ववसिओ**।

३. **अयं किल स्वप्नः**—अअं किल सिविणओ। अयं-२.२ से य का लोप-अअं। स्वप्नः—स्वप्न + सु। १.३ से आदिअकार इकार-स्विप्न + सु ३.६२ से विप्रकर्ष-सिविप्न + सु। ३.१ से पकार का लोप-सिविन + सु। २.४२ से नकार का णकार-सिविण + सु। ५.१ से सु का ओ-**सिविणओ**।

## हुं क्खु निश्चयवितर्कसम्भावनेषु ।।६।।

**पदच्छेद**—हुं क्खु। निश्चयवितर्कसम्भावनेषु।

**पदार्थ**—निश्चयवितर्कसम्भावनेषु = निश्चय, वितर्क, और सम्भावना (अर्थों) में। हुं क्खु = हुं और क्खु।

**सू०अ०**—निश्चय, वितर्क और सम्भावना (अर्थों) में हुं और क्खु (निपात होते हैं)।

**वृत्तिः—हुं, क्खु इत्येतौ निश्चयवितर्कसम्भावनेषु निपातसंज्ञकौ भवतः। हुं रक्खसो (हुं स्पष्टम्, ३-२९ क्ष = ख, ३-५० खद्वित्वम्, ३-५१ ख = क्, ४-१ ह्रस्वः, ५-१ ओ)। गुरुओ क्खु भारो (५-१ ओत्वम्, अन्यत्स्पष्टम्)। हुं राक्षसः। गुरुः खलु भारः ॥६॥**

**व्याख्या**—निश्चय, वितर्क (=विमर्श) और सम्भावना इन अर्थों में हुं और क्खु- इन दो निपातों का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **हुं राक्षसः**—हुं रक्खओ-राक्षसः-३.२९ से क्ष का ख-राखसः। ३.५० से ख का द्वित्व और ३.५१ से पूर्ववर्ती ख् क्-राक्खसः। ४.१ से आ का अ-रक्खसो। ५.१ से सु का ओ-**रक्खओ**।

२. **गुरुः खलु भारः**—गुरुओ क्खु भारो-गुरुः-गुरु + सु, सु का ओ-गुरुओ। भारः- भार + सु ५.१ से सु का ओ-भारो।

## णवरः केवले ॥७॥

**पदच्छेद**—णवरः केवले।

**पदार्थ**—केवले = केवल (अर्थ) में। णवरः = णवरः।

**सू० अ०**—केवल (अर्थ) में णवर (निपात होता है)।

**वृत्तिः—णवरः इत्ययं शब्दः केवलेऽर्थे निपातसंज्ञो भवति। णवर अण्णं (अन्नशब्दस्य २-४२ न् = ण्, ४-१२ मबिन्दुः) ॥७॥**

**व्याख्या**—केवल अर्थ में णव निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **केवलम् अन्नम्—णवर अण्णं**—२.४२ से नकार का णकार-अण्णम् ४.१२ से मकार का अनुस्वार-अण्णं।

## आनन्तर्ये णवरि ॥८॥

**पदच्छेद**—आनन्तर्ये। णवरि।

**पदार्थ**—आनन्तर्ये = आनन्तर्य (निरन्तर) (अर्थ) में। णगरि = णवरि।

**सू० अ०**—निरन्तरता के (अर्थ) में णवरि (निपात होता है)।

**वृत्तिः—णवरि इत्ययं शब्द आनन्तर्ये निपातसंज्ञो भवति। णवरि (स्पष्टम्) ॥८॥**

**व्याख्या**—निरन्तरता के अर्थ में णवरि निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

**निरन्तरम्** = णवीर।

## किणो प्रश्ने ।।९।।

**पदच्छेद**—किणः । प्रश्ने ।

**पदार्थ**—प्रश्ने = प्रश्न पूछने (के अर्थ) में । किणः = किण ।

**सू०अ०**—प्रश्न पूछने के अर्थ में किण (निपात होता है) ।

**वृत्तिः—किणो इत्ययं शब्दः प्रश्ने निपातसंज्ञो भवति । किणो धुव्वसि (८-४७ य = व्व, ७-२ थास् = सि) । किणो हससि (किणो स्पष्टम्, ७-२ सिप् = सि) । किन्नु धूयसे । किन्नु हससि ।।९।।**

**व्याख्या**—प्रश्न पूछने के अर्थ में किण निपात का प्रयोग होता है जैसे-

१. **किन्नु धूयसे—किण धुव्वसि**-धु + सिप्-८.५७ से य = व्व-धुव्व + सिप्-७.२ से सिप् का सि-**धुव्वसि** ।

२. **किन्नु हससि—किणो हसति** (स्पष्ट है) ।

## अब्बो दुःखसूचनासम्भावनेषु ।।१०।।

**पदच्छेद**—अब्बो । दुःखसूचनासम्भावनेषु ।

**पदार्थ**—दुःखसूचनासम्भावनेषु = दुःख, सूचना और सम्भावना (अर्थों) में । अब्बोः = अब्बो ।

**सू०अ०**—दुःख, सूचना और सम्भावना (अर्थों) में अब्वो (होता है) ।

**वृत्तिः—अब्बो इत्ययं शब्दो दुःखसूचनासम्भावेनेषु निपातसंज्ञो भवति । दुःखे निपात-अब्बो कज्जलरसरञ्जिएहिं अच्छीहिं (अब्बो स्पष्टम्, कज्जलरसेति संस्कृतसमः शब्दः, रञ्जितेत्यस्य २-२ तलोपः, ५-१२ अ = ए, ५-५ भिस् = हिं । अन्त्ये २-३० क्ष = छ, ३-५० छद्वित्वम्, ३-५१ च् = छ्, ४-२० स्त्रीत्वे ई, ५-५ भिस् = हिं) । सूचनायाम्-अब्बो अवरं विअ (२-२५ प = व, ५-३ अमोऽकारलोपः, ४-१२ मबिन्दुः, शेषं ९-३ सूत्रे स्पष्टम्) । सम्भावने-अब्बो णमिव अत्तुं (३-१ दलोपः, ३-५० तद्वित्वम्, ४-१२ मबिन्दुः)। अहो कज्जलरसरञ्जिताभ्यामक्षिभ्याम् । अहो अपरमिव । अहो एनमिवात्तुम् ।।१०।।**

**व्याख्या**—दुःख, सूचना और सम्भावना अर्थों में अब्बो निपात का प्रयोग होता है । जैसे-

१. **अहो कज्जलरसरञ्जिताभ्यामक्षीभ्याम्**—अब्बो कज्जलरसरञ्जिएहिं अ-च्छीहिंक-ज्जलरसरञ्जित + भिस् । तकार का लोप-कज्जलरसरञ्जिअ + भिस् । ५.१२ से अ के स्थान पर ए-कज्जलरसञ्जिए + भिस्- ५.५ से भिस का हिं-कज्जरस-रञ्जिएहिं ।

अच्छीहिं-अक्षि + भिस् २.३ से क्ष का छ-अछि + भिस्। ३.५० से छकार द्वित्व और ३.५१ से पूर्ववर्ती छ् का च्-अच्छि + भिस्। ४.२० से स्त्रीलिङ्ग होने से इ का ई और ५.५ से भिस् का हिं-अच्छीहिं।

२. **अहो अपरमिव—अब्बो अवरं विअ**—अवरं-अवर + अम्-५.३ से अम् के अकार का लोप और ४.१२ से मकार का अनुस्वार **अवां**। इव का ९.१६ से **विअ**।

३. **अहो एनमिवाप्तुम्**—अब्बो णमेव अत्तुं।

## अलाहि निवारणे ।।११।।

**पदच्छेद**—अलाहि। निवारणे।

**पदार्थ**—निवारणे = निवारण (रोकना) अर्थ में। अलाहि = अलाहि।

**सू० अ०**—निवारण (रोकना) अर्थ में अलाहि (निपात होता है)।

**वृत्तिः—अलाहि इत्ययं शब्दो निवारणे निपातसंज्ञो भवति। अलाहि कलहलेसेण। अलाहि कलहबन्धेण। (संस्कृतसमौ कलहो बन्धश्च, २-४३ श् = स्, ५-४ टा = ण, ५-१२ ए, शेषं स्पष्टम्)। अलं कलहलेशेन। अलं कलहबन्धेन ।।११।।**

**व्याख्या**—निवारा अर्थ में आलाहि निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

**१. अलं कलहलेशेन = अलाहि कलहलेसेण।**

**२. अलं कलहबन्धेन = अलाहि कलहन्धेण।**

## अइ-वले सम्भाषणे ।।१२।।

**पदच्छेद**—अइ-वले। सम्भाषणे।

**पदार्थ**—सम्भाषणे = सम्भाषण (वार्तालाप) में। अइ-वले = अइ और वले।

**सू० अ०**—सम्भाषण (अर्थ) में अइ और वले (निपात होते हैं)।

**वृत्तिः—अइ, वले इत्येतौ शब्दौ सम्भाषणे निपातसंज्ञकौ भवतः। अइ मूलं पसूसइ (अइ स्पष्टम्, मूलं संस्कृतसमः, शेषं ३-३ः, २-४३ श, ष् = स्, ३-२ यलोपः, ८-४६ उदीर्घः, ७-३१ ति = इ)। वले किं कलेसि (वले स्पष्टम्, किं संस्कृतसमः, २-२ यलोपः, ७-२ सिप् = सि, ७-३४ एत्वं कले, शेषं स्पष्टम्)। अपि मूलं प्रशुष्यति। वले किं कलयसि ।।१२।।**

**व्याख्या**—सम्भाषण (वार्तालाप) अर्थ मे अइ और वले निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **अपि मूलं प्रशुष्यति = अइ मूलं पसूसइ**—प्रशुष्यति-३.३ से रेफ का लोप-पशुष्यति-२.४३ से श का स-पसुस्यति। ८.४६ से उ का दीर्घ-पसूस्यति। २.२ से य का लोप-पसूसति। ७.१ से ति का इ-**पसूसइ**।

२. **वले किं कलयसि = वले किं कलेसि**—कलयसि-२.२ से य का लोप-कलसि। ७.३४ से अ का ए-कलेसि।

## णवि वैपरीत्ये ।।१३।।

**पदच्छेद**—णवि। वैपरीत्ये।

**पदार्थ**—वैपरीत्ये = विपरीतता (अर्थ) में। णवि = णवि।

**सू०अ०**—विपरीतता (अर्थ) में णवि (निपात होता है)।

**वृत्तिः—बाला (तह १-१० सूत्रे स्पष्टम्, ३-३ रलोपः, ७-१ ति = इ, बाला इति संस्कृति णवि इत्ययं शब्दो वैपरीत्ये निपातसंज्ञो भवति। णवि तह पहसइ। समः)। विपरीतं तथा-प्रहसति बाला ।।१३।।**

**व्याख्या**—विपरीतता अर्थ में णवि निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **विपरीतं तथा प्रहसति बाला = णवि तह पहसइ बाला**—तथा-२.२७ से थ् का ह तथा १.१० से आ का अ-**तह**। **प्रहसति**-३.३ से रेफ का लोप-पहसति। ७.१ से ति का इ-**पहसइ**।

## सू कुत्सायाम् ।।१४।।

**पदच्छेद**—सू। कुत्सायाम्।

**पदार्थ**—कुत्सायाम् = कुत्सा (अर्थ) में सू।

**सू०अ०**—कुत्सा (अर्थ) में सू (निपात होता है)।

**वृत्तिः—सू इत्ययं शब्दः कुत्सायां निपातसंज्ञो भवति। सू सिविणो (सिविणो १-३ सूत्रे स्पष्टम्)। धिक् स्वप्नः ।।१४।।**

**व्याख्या**—कुत्सा (निन्दा या घृणा) अर्थ में सू निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **धिक् स्वप्नः = सू सिविणो**—(सिविणो के लिए द्रष्टव्य १.३ का उदाहरण-३)।

## रे-अरे-हिरे सम्भाषणरतिकलहाक्षेपेषु ।।१५।।

**पदच्छेद**—रे-अरे-हिरे। सम्भाषणरतिकलह। क्षेपेषु।

**पदार्थ**—सम्भाषणरतिकलहाक्षेपेषु = सम्भाषण, रति-कलह और आक्षेप (तिरस्कार) अर्थों में। रे-अरे-हिरे = रे, अरे और हिरे।

**सू०अ०**—सम्भाषण, रतिकलह और तिरस्कार अर्थों में रे, अरे और हिरे (होता है)।

**वृत्तिः—रे, अरे, हिरे इत्येते शब्दाः सम्भाषण-रतिकलहा-क्षेपेषु निपात-संज्ञा भवन्ति यथासंख्यम्। रे मा करेहि। णाओसि अरे। दिट्ठोसि हिरे (रे स्पष्टम्, संस्कृतसमो मा-शब्दः, १२-१५ कृञ्= कर, ७-३४ एत्वं, १२-२७ परस्मैपदं, संस्कृतवत् लोटः सेर्हिः)। (२-४२ न् = ण, २-२ गलोपः, ७-६ स्पष्टम् सि, अरे स्पष्टम्)। (१-१८ ऋ = इ, ३-१० ष्ट = ठ, ३-३५ ठद्वित्वम्, ३-५१ ठ-ट, ५-१ ओ)। रे मा कुरुष्व। नागोसि अरे। दृष्टोऽसि हिरे॥१५॥**

**व्याख्या**—सम्भाषण (वार्तालाप) अर्थ में, रतिकलह के अर्थ में और तिरस्कार के अर्थ में रे, अरे और हिरे निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **रतिकलह अर्थ में-मा कुरुष्व = मा करेहि**—करेहि-कृ + लोट् + सिप्-१२.१५ से कृ का कर, ७.३४ से अ का ए करे, १२.२६ से लोडर्थ सि का हि-**करेहि**।
२. **तिरस्कार अर्थ में**—नागोसि अरे = णाओसि अरे।
३. **सम्भाषण अर्थ में**—दृष्टोसि हिरे = दिट्ठोसि हिरे।

## म्मिवमिवविआ इवार्थे॥१६॥

**पदच्छेद**—म्मिवमिवविआः। इवार्थे।

**पदार्थ**—इवार्थे = इव के अर्थ में। म्मिवामिवाविआः = म्मिव, मिव और विअ।

**सू०अ०**—इव के अर्थ में म्मिव, मिव और विअ (निपात होते हैं)।

**वृत्तिः—म्मिव, मिव, विअ इत्येते शब्दा इवार्थे निपातसंज्ञका भवन्ति। गअणं म्मिव, गअणं मिव, गअणं विअ। कसणं (२-२ गलोपः, २-४२ न् = ण्, ५-३० बिन्दुः), (अन्त्ये ३-६१ वर्णे नित्यं विप्रकर्षः। पूर्वस्य तत्स्वरता च)। गगनमिव कृष्णम्॥१६॥**

**व्याख्या**—इव के अर्थ में म्मिव, मिव और विअ-इन तीन निपातों का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **गगनम् इव**—२.२ से ग् का लोप-गअनम् इव। २.४२ से न् का ण् और ५.३० से मकार का अनुस्वार-गअणं प्रस्तुत सूत्र से इव के स्थान पर म्मिव, मिव और विअ-**गअणं म्मिव, गअणं मिव, गअणं विअ**।

## अज्ज आमन्त्रणे॥१७॥

**पदच्छेद**—अज्ज। आमन्त्रणे।

**पदार्थ**—आमन्त्रणे = आमन्त्रण (सम्बोधन अर्थ में)। अज्ज = अज्ज।

**सू०अ०**—सम्बोधन (अर्थ) में अज्ज (निपात होता है)।

**वृत्तिः—अज्ज इत्ययं शब्द आमन्त्रणे निपात्यते। अज्ज महाणुहाव! किं करेहि (अज्ज स्पष्टम्, २-४२ न् = ण्, २-भ = ह, प्राय इति २-२ वलोपो न। ७-२ सि, शेषं ९-१५ सूत्रे स्पष्टम्)। अहो महानुभाव! किं करोषि ।।१७।**

**व्याख्या**—सम्बोधन के अर्थ में अज्ज इस निपात का प्रयोग होता है। जैसे-

**१. अहो महानुभावः किं करोषि? =** अज्ज महाणुहाव!किं करेसि? । महानुभाव-२.४२ से न का ण और २.२७ से भ का ह = महाणुहाव! करेहि = कृ + लोट् + सिप्-१२.१५ से कृ का कर-कर + लोट् + सिप्। ७.३४ से अ का ए-करे + लोट् + सिप्। १२.२७ से लोडर्थ सिप् का हि-**करेहि**।

## शेषः संस्कृतात् ।।१८।।

**पदच्छेद**—शेषः। संस्कृतात्।

**पदार्थ**—शेषः = अवशिष्ट (निपात)। संस्कृतात् = संस्कृत से।

**सू०अ०**—अवशिष्ट (निपात) संस्कृत (के निपात) से (समझ लेना चाहिए)।

**वृत्तिः—उक्तादन्यःशेषः। प्रत्ययसमासतद्धितलिङ्गवर्णादिविधिः शेषः संस्कृतादवगन्तव्यः। इह ग्रन्थविस्तरभयान्न दर्शितः ।।१८।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य नवमः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—नवम परिच्छेद में प्राकृत के निपातों का विधान किया गया है। इन विहित निपातों से अन्य निपातों को संस्कृत के अनुसार समझ लेना चाहिए। ग्रन्थ के विस्तार के भय से उनका यहाँ विधान नहीं किया गया है।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का नवम परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# दशमः परिच्छेदः
## (पैशाची वैशिष्ट्यम्)

### पैशाची ।।१।।

**पदच्छेद**—पैशाची ।

**पदार्थ**—पैशाची = पैशाची ।

**सू० अ०**—(अब) पैशाची (भाषा विषयक विशेषताओं को) (कहा जाएगा) ।

**वृत्तिः—पिशाचानां भाषा पैशाची, सा च लक्ष्यलक्षणाभ्यां स्फुटीक्रियते। १।**

**व्याख्या**—जातिविशेष अथवा योनिविशेष को पिशाच कहा जाता है । उन पिशाच लोगों की भाषा को पैशाची कहते हैं । इस परिच्छेद में पैशाची भाषा की विशेषताओं का विधान किया जाएगा ।

### प्रकृतिः शौरसेनी ।।२।।

**पदच्छेद**—प्रकृतिः । शौरसेनी ।

**पदार्थ**—शौरसेनी = शौरसेनी । प्रकृतिः = प्रकृति (मूल) ।

**सू० अ०**—(पैशाची की) प्रकृति (मूल) शौरसेनी है ।

**वृत्तिः—अस्याः पैशाच्याः प्रकृतिः शौरसेनी । स्थितायां शौरसेन्यां पैशाचीलक्षणं प्रवर्त्तयितव्यम् ।।२।।**

**व्याख्या**—पैशाची भाषा का मूल आधार शौरसेनी प्राकृत है । अतः शौरसेनी के विधानों के अनुसार पैशाची के पदों में भी कार्य होते हैं । तात्पर्य यह है कि पैशाची भाषा शौरसेनी के समान ही होती है ।

### वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोरयुजोरनाद्योराद्यौ ।।३।।

**पदच्छेद**—वर्गाणाम् । तृतीयचतुर्थयोः । अयुजोः । अनाद्योः । आद्यौ ।

**पदार्थ**—अयुजोः = असंयुक्त । अनाद्योः = पदादि में स्थित न होने पर । वर्गाणाम् = स्पर्श-वर्गों के । तृतीयचतुर्थयोः = तृतीय और चतुर्थ (स्पर्श) के स्थान पर । आद्यों = आदि वाले (प्रथम और द्वितीय) ।

**सू०अ०**—असंयुक्त और पदादि में स्थित न होने पर वर्गों के तृतीय और चतुर्थ (स्पर्श) के स्थान पर आदि वाले (हो जाते हैं)।

**वृत्तिः—वर्गाणां तृतीयचतुर्थयोवर्णयोरयुक्तयोरनादौ वर्तमानयोः स्थाने आद्यौ प्रथमद्वितीयौ भवतः। गकनं (५-३० सोर्बिन्दुः, २.२ सूत्रबाधः। एवम्अग्रेऽपि यथास्थानेषु पूर्वसूत्राणां बाधो ज्ञेयः)। मेखो। राचा। णिच्छरो। वटिसं। दसवतनो। माथवो। गोविन्तो। सरफसं। सलफो। णिज्झरो (३-५१ सूत्रे स्पष्टम्, अत्र ज् = च्, झ् = छ)। वटिसं (२-३३ सूत्रे स्पष्टम्, अत्र ड = ट, शेषं स्पष्टम्)। (दसवतन-केसव-सलफ इत्येतेषु २-४३ श = स, अन्यत्सर्वं स्पष्टम्। विभक्तयः पञ्चमपरिच्छेदस्थसूत्रैर्यथालक्षणं साधनीयाः। शेषं स्पष्टम्)। अयुजोरित किम्? संग्गामो (३-३ रलोपः, ३-५० गद्वित्वम्, ५-१ ओ)। संग्रामः। वग्घो इत्यादि (३-२ यलोपः, ३-५०घद्वित्वम्, ३-५१ घ् = ग्, ४-१ ह्रस्वः, ५-१ ओ)। अनादाविति किम्? गमनं (स्पष्टम्) इत्यादि। गगनम्, मघः, राजा, निर्झरः, बडिशम्, दशवदनः, माघवः, गोविन्दः, केशवः, सरभसम्, शलभः, संग्रामः, व्याघ्रः, गमनम्॥३॥**

**व्याख्या**—यदि वर्गों के तृतीय और चतुर्थ स्पर्श पद के आदि में स्थित नहीं है और संयुक्त नहीं है तो उनके स्थान पर आदि वाले स्पर्श अर्थात् तृतीय के स्थान पर प्रथम और चतुर्थ के स्थान पर द्वितीय हो जाता है। जैसे-

१. **गगनम्**—प्रस्तुत सूत्र से ग के स्थान पर क-गकनम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार **गकनं**। यहाँ २.२ से ग का लोप बाधित हो जाता है।

२. **मेघः**—प्रस्तुत सूत्र से घ के स्थान पर ख-मेखः। ५.१ से सु का ओ **मेखो**।

३. **राजा**—प्रस्तुत सूत्र से ज के स्थान पर च-राचा। यहाँ २.२ से ज का लोप बाधित है।

४. **निर्झरः**—प्रस्तुत सूत्र से झ का छ-निर्छरः। ३.३ से रेफ का लोप-निछरः।

५. **वडिसम्**—प्रस्तुत सूत्र से ड का ट-वटिसम्: ५.३० से म का अनुस्वार-**वटिसं**।

६. **दशवदनः**—२.४३ से श का स-दसवदनः। प्रस्तुत सूत्र से द् का त्-दसवतनः। ५.१ से सु का ओ-दसवतनो।

७. **माधवः**—प्रस्तुत सूत्र से ध का थ-माथवः-५.१ से सु का ओ-**माथवो**।

८. **गोविन्दः**—प्रस्तुत सूत्र से द् का त-गोविन्तः। ५.१से सु का ओ-**गोविन्तो**।

९. **सरभसम्**—प्रस्तुत सूत्र से भ का फ-सरफसम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-सरफसं।

**१०.शलभः**—२.४३ से श का स-सलभः। प्रस्तुत सूत्र से भ का फ-सलफः। ५.१ से सु का ओ-**सलफो**।

**विशेष**—

**१.** प्रथम और द्वितीय स्पर्श को प्राप्त होने वाले तृतीय और चतुर्थ स्पर्श को संयोग में नहीं होना चाहिए। संयोग में होने यह परिवर्तन नहीं होता है। जैसे-

**(क) सङ्ग्रामः**—५.१२ से ङ् का अनुस्वार-संग्रामः। ३.३ से रेफ का लोप-संगामः। ३.५० से ग् का द्वित्व-संग्गामः। ५.१ से सु का ओ-**संग्गामो**। यहाँ संयोग में होने से ग् का क् नहीं हुआ है।

**(ख) वध्यः**—३.२ से यकार का लोप-वधः। ३.५० से धकार का द्वित्व वध्धः। ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार का दकार-**वद्धः**। ५.१ से सु का ओ-वद्धो।

**२.** प्रथम और द्वितीय स्पर्श में परिवर्तन होने वाले क्रमश; तृतीय और चतुर्थ स्पर्श को पदादि में नहीं होना चाहिए। पदादि में होने पर यह परिवर्तन नहीं होता है जैसे-

**(क) गमनम्**— २.४२ से नकार का णकार-गमणम्। ५.३० से मकार का अनुस्वार-**गमणं**। यहाँ पदादि में होने के कारण गकार का नहीं हुआ है।

## इवस्य पिवः ।।४।।

**पदच्छेद**—इवस्य । पिवः।

**पदार्थ**—इवस्य = इव के स्थान पर। पिवः = पिव।

**सू०अ०**—इव के स्थान पर पिव (हो जाता है)।

**वृत्तिः—इवशब्दस्य स्थाने पिव इत्ययमादेशो भवति। कमलं पिव मुखं (कमलं, मुखं संस्कृतसमौ शब्दौ, शेषं स्पष्टम्) ।।४।।**

**व्याख्या**—पैशाची में इव के स्थान पर पिव होता है। जैसे-

**कमलम् इव मुखम्—कमलं पिव मुखं**। प्रस्तुत सूत्र से इव के स्थान पर पिव। अन्य कमलं और मुखं संस्कृत के ही समान है।

## णो नः ।।५।।

**पदच्छेद**—णोः। नः।

**पदार्थ**—णोः = णकार के स्थान पर। नः = नकार।

**सू०अ०**—णकार के स्थान पर नकार (होता है)।

**वृत्तिः—णकारस्य स्थाने न इत्ययमादेशो भवति। तलुनी (स्पष्टम्)। तरूणी ।।५।।**

**व्याख्या**—सर्वत्र णकार के स्थान पर नकार होता है। इस प्रकार इसमें णकार का अभाव होता है। जैसे-

१. **तरूणी**—२.३० से रेफ का लकार तलुणी। प्रस्तुत सूत्र से णकार का नकार-**तलुनी**।

## ष्टस्य सटः ।।६।।

**पदच्छेद**—ष्टस्य। सटः।

**पदार्थ**—ष्टस्य = ष्ट के स्थान पर। सटः = सट।

**सू०अ०**—ष्ट के स्थान पर सट (होता है)।

**वृत्तिः—ष्ट इत्यस्य स्थाने सट इत्ययमादेशो भवति। कसटं मम वट्टइ (५-३० बिन्दुः, मम तत्समः, ३-२२ र्तस्य टः, ३-५० टद्वित्वम्, ७-१ त = इ)। कष्टं मम वर्तते ।।६।।**

**व्याख्या**—षकार और टकार के संयोग के स्थान में षकार और टकार दोनों पृथक्-पृथक् हो जाते हैं और षकार के स्थान पर सकार हो जाता है। जैसे–

१. **कष्टम्**—प्रस्तुत सूत्र से ष्ट के स्थान पर सट–कसटम्। ५.१२ से मकार का अनुस्वार–**कसटं**।

## स्नस्य सनः ।।७।।

**पदच्छेद**—स्नस्य। सनः।

**पदार्थ**—स्नस्य = स्न के स्थान पर। सनः = सन।

**सू०अ०**—स्न के स्थान पर सन (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्न इत्यस्य स्थाने सन इत्ययमादेशो भवति। सनानं। सनेहो (स्पष्टम् पूर्ववत् विभक्तिः साध्या)। स्नानम्। स्नेहः ।।७।।**

**व्याख्या**—स्न इस सकार और नकार के संयोग स्थान सन हो जाता है। जैसे-

१. **स्नानम्**—प्रस्तुत सूत्र से स्न के स्थान पर सन-सनानम्। ५.१२ से मकार का अनुस्वार **सनानं**।

२. **स्नेहः**—प्रस्तुत सूत्र से स्न के स्थान पर सन-सनेहः। ५.१ से सु का ओ-सनेहो।

## र्यस्य रिअः ।।८।।

**पदच्छेद**—र्यस्य रिअः ।

**पदार्थ**—र्यस्य = र्य के स्थान पर । रिअः = रिअ ।

**सू०अ०**—र्य के स्थान पर रिअ (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—र्य इत्यस्य स्थाने रिअ इत्ययमादेशो भवति । भारिआ । भार्या ।।८।।**

**व्याख्या**—रेफ और यकार के संयोग र्य के स्थान पर रिअ हो जाता है । जैसे-

**भार्या**—प्रस्तुत सूत्र से र्य के स्थान पर रिअ-**भारिआ** ।

## ज्ञस्य ञ्ञः ।।९।।

**पदच्छेद**—ज्ञस्य । ञ्जः ।

**पदार्थ**—ज्ञस्य = ज्ञ के स्थान पर । ञ्ज = ञ्ञ ।

**सू०अ०**—ज्ञ के स्थान पर ञ्ज (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ज्ञ इत्यस्य स्थाने ञ्ञ इत्ययमादेशो भवति । विञ्ञातो (५-१ ओ, शेषं स्पष्टम्) । सव्वञ्ञ (३-३ रलोपः, ३-५० वद्वित्वम्, शेषं स्पष्टम् पूर्ववत्) । विज्ञातः । सर्वज्ञः ।।९।।**

**व्याख्या**—जकार और ञकार के संयोग ञ्ज = ज्ञ के स्थान पर ञ्ज हो जाता है । जैसें-

१. **विज्ञातः**—प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ के स्थान पर ञ्ज-विञ्जातः । ५.१ से सु का ओ-विञ्जातो ।

२. **सर्वज्ञः**—३.३ से रेफ का लोप-सवज्ञः । ३.५० से वकार का द्वित्व-सव्वज्ञः । प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ का ञ्ञ-सव्वञ्ञः । ५.१ से सु का ओ-सव्वञ्ञो ।

## कन्यायां न्यस्य ।।१०।।

**पदच्छेद**—कन्यायाम् । न्यस्य ।

**पदार्थ**—कन्यायाम् = कन्या (इस पद) में । न्यस्य = न्य के स्थान पर ।

**सू०अ०**—कन्या (इस पद) में न्य के स्थान पर (ञ्ञ होता है) ।

**वृत्तिः—कन्याशब्दे न्यस्य स्थाने ञ्ञ इत्ययमादेशो भवति । कञ्ञा (स्पष्टम्) ।।१०।।**

**व्याख्या**—कन्या इस पद में नकार और यकार के संयोग = न्य के स्थान पर ञ्ञ हो जाता है । जैसे-

१. **कन्या**—प्रस्तुत सूत्र से न्य के स्थान पर ञ्ञ-**कञ्ञा** ।

## ज्ज च्च ।।११।।

**पदच्छेद**—ज्ज। च।

**पदार्थ**—ज्ज = ज्ज के स्थान पर च्च। च्च = भी।

**सू०अ०**—(ज्ज के स्थान पर) च्च भी (होता है)।

**वृत्तिः—ज्जशब्दस्य शौरसेनीसाधितस्य स्थाने च्च इत्ययमादेशो भवति। कच्चं। कार्यम् ।।११।।**

**व्याख्या**—कन्या इस पद मे नकार और यकार के संयोग र्न्य के स्थान पर होने वाले ज्ज के स्थान पर सौरसेनी प्राकृत में च्च होता है। जैसे-

१. **कार्यम्**—३.१७ से र्य् का ज् काजम्। ३.५० से जकार का द्वित्व-काज्जम्। प्रस्तुत सूत्र से ज्ज का च्च-काच्चम्। ५.३० से मकार अनुस्वार और ४.१ से आकार का अकार-कच्चं।

## राज्ञो राचि टाङसिङस्ङिषु वा ।।१२।।

**पदच्छेद**—राज्ञः। राचि। टाङसिङस्ङिषु वा।

**पदार्थ**—टाङसिङस्ङिषु = टा, ङसि, ङस् और ङि बाद में होने पर। राज्ञः = राजन् के स्थान पर। वा = विकल्प से राचि = राचि।

**सू०अ०**—टा, ङसि, ङस् और ङि बाद में होने पर राजन् के स्थान पर विकल्प से राचि (हो जाता है)।

**वृत्तिः—राजन्-शब्दस्य टा, ङसि, ङस्, ङि-इत्येतेषु परतो राचि इत्ययमादेशो वा भवति। राचीना (५-४१ टा = णा कृते, १०-५ णा = ना, शेषं स्पष्टम्)। रञ्ञा (राज्ञा अत्र १०-९ ज्ञा = ञ्ञा, ह्रस्वः, एवमग्रेऽपि)। राचिनो (५-३८ ङसि, ङस् = णो, १०-५ णो = नो)। रञ्ञो। राचिनि, रञ्ञि। (राचि = ङि, ५-२८ ङि = णो, शेषं पूर्ववत्)। राज्ञः। राज्ञि। एतेष्विति किम्? राचा। राचानं। रञ्ञो (राजा इत्ययुक्तस्य १०-३ सूत्रे जा = चा, एवं राजानं = राचानं। राज्ञः १०-९ ज्ञ = ञ्ञ) ।।१२।।**

**व्याख्या**—तृतीया एकवचन का प्रत्यय टा, पञ्चमी एकवचन का प्रत्यय ङसि, षष्ठी एक वचन का प्रत्यय ङस् और सप्तमी एक वचन का प्रत्यय ङि बाद में है जिसके ऐसे राजन् इस प्रातिपादिक के स्थान पर विकल्प से राचि हो जाता है। जैसे-

१. **राज्ञा**—राजन् + टा-प्रस्तुत सूत्र से राजन् के स्थान पर राचि-राचि + टा। ५.४१ से टा के स्थान पर णा प्राप्त होने पर १०.५ से णा के स्थान पर ना-राचीना। पक्ष में से ज्ञ का ञ्ञ-राञ्ञा। ४.१ से हस्व-**रञ्ञा**।

२. **राज्ञः**—राजन् + ङसि-प्रस्तुत सूत्र से राजन् के स्थान पर राचि-राचि + ङसि् । ५.३८ से ङसि के स्थान पर णो-राचिणो । १०.५ से ण का न-**राचिनो** । पक्ष में १०.९ से ज्ञा के स्थान पर ञ्ञ-राञ्ञः । ४.१ से आ का ह्रस्व-रञ्ञः । ५.१ से सु का ओ-**रञ्ञो** ।

३. **राज्ञः**—राजन् + ङस-इसी सूत्र के उदाहरण राज्ञः के समान ङस् का णो-राचिणो । १०.५ से ण का न-**राचिनो** । पक्ष में-१०.९ से ज्ञ का ञ्ञ-राञ्ञः । ४.१ से आ का अ-रञ्ञः । ५.१ से सु का ओ-**रञ्ञो** ।

४. **राज्ञि**—राजन् + ङि-प्रस्तुत सूत्र से राजन् का राचि + ङि । ५.२८ से ङि का णो-**राचिणो** । पक्ष में १०.९ से ज्ञ का ञ्ञ-**राञ्ञि** ।

**विशेष**—राजन् के स्थान पर राचि उसी समय होता है जब उस से बाद में टा, ङसि, ङस् ङस, अथवा ङि हो । ये बाद में नहीं होने पर राचि नहीं होगा । जैसे-

१. **राजा**—राजन् + सु-यहाँ १०.३ से ज् का च्-**राचा** ।

२. **राजानम्**—राजन् + अम् । यहाँ १०.३ से ज् का च्-राचानम् और ५.३० से मकार का अनुस्वार-**राचानं** ।

## क्त्वस्तूनं ।।१३।।

**पदच्छेद**—त्त्वः । तृनंम् ।

**पदार्थ**—त्त्वा के स्थान पर तूनं = तृनं ।

**सू०अ०**—त्त्वा के स्थान पर तूनं (होता है) ।

**वृत्तिः—क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने तूनं इत्ययमादेशो भवति । दातूनं (दाधातोः क्त्वास्थाने तूनमादेशः) । कातूनं (८-१७ कृञ् का, शेषं स्पष्टम्) । घेत्तूनं (८-१६ ग्रह = घेत्, शेषं स्पष्टम्) ।।१३।।**

**व्याख्या**—पैशाची में त्त्वा के स्थान पर तूनं होता है । जैसे-

१. **कृत्वा**—कृ + त्त्वा-८.७१ से कृ के स्थान पर का-का + त्त्वा । प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का तूनं-कातूनं ।

२. **गृहीत्वा**—ग्रह + त्वा-८.१६ से ग्रह का घेत् + त्त्वा । प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का तूनं-**घेत्तूनं** ।

## हृदयस्य हितअकं ।।१४।।

**पदच्छेद**—हृदयस्य । हितअकं ।

**पदार्थ**—हृदयस्य = हृदय के स्थान पर + हितअकं = हितअक ।

**सू० अ०**—हृदय के स्थान पर हितअक (होता है)।

**वृत्तिः—हृदयशब्दस्य हितअकं निपात्यते। हितअकं हरसि मे तलुनि (१-२७ ऋ = क, ७-२ थास्, सि। मे तत्समः, तुलनि ५-२९ ह्रस्वः, शेषं १०-५ सूत्रे स्पष्टम्) ।।१४।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्य दशमः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—पैशाची में हृदय के स्थान पर हितअकं होता है। जैसे-

**हृदयम्**—प्रस्तुत सूत्र से-**हितअकं**।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश'
का दसवाँ परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# एकादशः परिच्छेदः

## ( मागधी वैशिष्ट्यम् )

### मागधी ।।१।।

**पदच्छेद**—मागधी ।

**पदार्थ**—मागधी = मागधी ।

**सू०अ०**—(अब) मागधी (से सम्बन्धित विशेषताओं को कहा जा रहा है) ।

**वृत्तिः—मागधानां भाषा मागधी, लक्ष्यलक्षणाभ्यां स्फुटीक्रियते ।।१।।**

**व्याख्या**—मगध के निवासियों की भाषा मागधी कहलाती है । इस परिच्छेद में मागधी की विशेषताओं का विधान किया जा रहा है । यह अधिकार सूत्र है । इसके आगे जो भी कहा जाएगा उसे मागधी प्राकृत में समझना चाहिए ।

### प्रकृतिः शौरसेनी ।।२।।

**पदच्छेद**—प्रकृतिः । शौरसेनी ।

**पदार्थ**—शौरसेनी = शौरसेनी । प्रकृतिः = प्रकृति (मूल)

**सू०अ०**—शौरसेनी (इस भाषा की) प्रकृति (मूल है) ।

**वृत्तिः—अस्या मागध्याः प्रकृतिः शौरसेनी-इति वेदितव्यम् ।।२।।**

**व्याख्या**—पैशाची भाषा के समान मागधी भाषा की भी मूल शौरसेनी प्राकृत ही है । शौरसेनी भाषा के विधानों से प्राप्त पदों में इस परिच्छेद में विहित नियमों द्वारा परिवर्तन का देने पर मागधी प्राकृत बन जाती है ।

### षसोः शः ।।३।।

**पदच्छेद**—षसोः । शः ।

**पदार्थ**—षसोः = षकार और सकार के स्थान पर । शः = शकार ।

**सू०अ०**—षकार और सकार के स्थान पर शकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—षकारसकारयोः स्थाने शो भवति । माशे । विलाशे । (स्पष्टम्) । माषः । विलासः ।।३।।**

**व्याख्या**—मागधी प्राकृत षकार तथा सकार नहीं होते । उनके स्थान पर शकार ही रहता है । जैसे-

१. **माषः**—प्रस्तुत सूत्र से षकार का शकार-**माशः** । ११.१० से अ का ए और ४.६ से सु का लोप-**माशे** ।

२. **विलासः**—प्रस्तुत सूत्र से सकार-विलाशः । ११.१० से अ के सहित सु का ए-**विलाशे** ।

## जो यः ।।४।।

**पदच्छेद**—जोः । यः ।

**पदार्थ**—जोः = जकार के स्थान पर । यः = यकार ।

**सू०अ०**—जकार के स्थान पर यकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—ज़कारस्य यकारो भवति । यायदे (प्रयोग्रहणात् २-२ यलोपो न, १२-२ त् = द्) । जायते ।।४।।**

**व्याख्या**—मागधी प्राकृत में जकार के स्थान पर यकार हो जाता है । जैसे-

**जायते**—प्रस्तुत सूत्र से जकार का यकार-यायते । १२.३ से तकार का दकार-**यायदे** ।

**चवर्गस्य स्पष्टता तथोश्चारणः ।।५।।**

**पदच्छेद**—चवर्गस्य । स्पष्टता । तथोच्चारणः ।

**पदार्थ**—चवर्गस्स = चवर्ग (के वर्णों) की । स्पष्टता-स्पष्टता । तथोच्चारणम् = उसी प्रकार का उच्चारण ।

**सू०अ०**—चवर्ग (जिस प्रकार) स्पष्ट सुनायी पड़े, उसी प्रकार उच्चारण (होता है)।

**वृत्तिः—चवर्गो यथास्पष्टस्तथोश्चारणो भवति । पलिचए (रसोर्लशौ ८।४।२८० हेम० सूत्र र् = ल्, २-२ यलोपः, एत्वं पूर्ववत्) । गहिदच्छले (२-२७ ऋ = अ, १२-३ त = द, शेषं पूर्ववत्) । वियले (११-४ ज = य, शेषं पूर्ववत्)। णिज्झिले (पूर्ववत्, शेषं ३-५१ सूत्रे स्पष्टम्)। परिचयः। गृहीत-च्छलः । विजलः । निर्झरः ।।५।।**

**व्याख्या**—प्राकृत भाषा में चवगीर्य वर्णों के उच्चारण दो प्रकार से होते है-स्पष्ट रूप से, और अस्पष्ट रूप से । मागधी में चवर्गीय वर्णों का उच्चारण स्पष्ट रूप से होता है । जैसे-

१. **परिचयः**—२.३० से रेफ का लकार-पलिचयः। २.२ से यकार का लोप-पलिचअ। ११.१० से अकार के सहित सु का एकार-**पलिचए**।

२. **गृहीतच्छलः**—२.२७ से ऋ का अ-गहीतच्छलः। १२.३ से त् का द्-गहीदच्छलः। ११.१० से अकार सहित सु का एकार **गहीदच्छले**।

३. **विजलः**—११.४ से ज् का य्-वियलः। ११.१० से अ के सहित सु का ए-**वियले**।

४. **निर्झरः**—२.४२ से न् का ण-णिर्झरः। ३.३ से रेफ का लोप-णिझरः। ३.५० से झ का द्वित्व णिझ्झरः।३.५१ से पूर्ववर्ती झकार का जकार-णिज्झरः। २.३० से रेफ का लकार-णिज्झलः। ११.१० से अकार के सहित सु का ए-**णिज्झले**।

## हृदयस्य हडक्कः ।।६।।

**पदच्छेद**—हृदयस्य। हडक्कः।

**पदार्थ**—हृदयस्य हृदय के स्थान पर। हडक्कः = हडक्क।

**सू०अ०**—हृदय के स्थान पर हडक्क (हो जाता है)।

**वृत्तिः—हृदयस्य स्थाने हडक्को भवति। हडक्के आलले मम (स्पष्टम्) ।हृदये आदरो मम ।।६।।**

**व्याख्या**—मागधी प्राकृत में हृदय के स्थान पर हडक्क का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

१. **हृदये**—प्रस्तुत सूत्र से **हडक्के**।

## र्यर्जयोर्य्यः ।।७।।

**पदच्छेद**—र्यर्जयोः। य्यः।

**पदार्थ**—र्यर्जयोः = र्य और र्ज के स्थान पर। य्यः = य्य।

**सू०अ०**—र्य और र्ज के स्थान पर य्य (हो जाता है)।

**वृत्तिः—र्यकारर्जकारयोः स्थाने य्यो भवति। कय्ये (संयोगे ह्रस्वः, ११-१० एत्वम्) । दुय्यणे (२-४२ न् = ण, पूर्ववत् एत्वम्) । कार्य्यम्। दुर्जनः ।।७।।**

**व्याख्या**—रेफ और यकार के संयोग र्य तथा रेफ और जकार के संयोग र्ज के स्थान पर मागधी प्राकृत में य्य हो जाता है। जैसे-

१. **कार्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से र्य के स्थान पर य्य-काय्यम्। ४.१ से आ का अ-कय्यम् ११.१० से अ का ए और ४.६ से सु का लोप-**कय्ये**।

२. **दुर्जनः**—प्रस्तुत सूत्र से र्ज का य्य-दुय्यनः। २.४२ से न का ण-दुय्यणः। ११.१० से अ के सहित सु का-**दुय्यणे**।

## क्षस्य स्कः ।।८।।

**पदच्छेद**—क्षस्य। स्कः।

**पदार्थ**—क्षस्य = क्ष के स्थान पर। स्कः = स्क।

**सू०अ०**—क्ष के स्थान पर स्क (हो जता है)।

**वृत्तिः—क्षस्य स्थाने स्ककारो भवति। लस्कशे। दस्के (पलिचए-वत् र = ल, ११-३ स = श, एत्वं माशेवत् = एवं दस्के)। राक्षसः। दक्षः ।।८।।**

**व्याख्या**—मागधी प्राकृत में क्ष के स्थान पर स्क होता है। जैसे-

१. **राक्षसः**—२.३० से रेफ का लकार-लाक्षसः। प्रस्तुत सूत्र से क्ष का स्क-लास्कसः। ४.१ से आ का अ-लस्कसः। ११.३ से स का श-लस्कशः। ११.१० से अ का ए और ४.६ से सु का लोप-**लस्कसे**।

२. **दक्षः**—प्रस्तुत सूत्र से क्ष का स्क-दस्कः। ११.१० से अ के सहित सु का ए दस्के।

## अस्मदः सौ हके-हगे-अहके ।।९।।

**पदच्छेद**—अस्मदः। सौ। हके-हको-अहके।

**पदार्थ**—सौ = सु बाद में होने पर। अस्मदः = अस्मद् के स्थान पर। हके-हगे-अहके = हके, हगे और अहके।

**सू०अ०**—सु बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर (सु सहित) हके, हगे और अहके (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्मदः स्थाने सौ परतो हके, हगे, अहके इत्येत आदेशा भवन्ति। हके, हगे, अहके भणामि। (स्पष्टम्) अहं भणामि ।।९।।**

**व्याख्या**—प्रथमा विनक्ति के एकवचन का प्रत्यय सु बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर सु के सहित हके, हगे और अहके हो जाता है। जैसे-

१. **अहम्**— अस्मद् + सु-प्रस्तुत सूत्र से **हके हगे** और **अहके**।

## अत इदेतौ लुक् च ।।१०।।

**पदच्छेद**—अतः। इदेतौ। लुक। च।

**पदार्थ**—अतः = अकार से बाद में। इदेतौ। इकार, एकार। लुक् च = और लोप।

**सू०अ०**—अ से बाद में (सु होने पर) (अ के सहित सु के स्थान पर इ, ए होते है) और (पक्ष में सु) का लोप भी हो जाता है। :

**वृत्तिः—सावित्यनुवर्तते। अकारान्ताच्छब्दात्सौ परत इकारैकारौ भवतः, पक्षे-लोपश्च। एशि (एतत्सूत्रेण इकारैकारौ। पक्षे लुप्यते, ११-३ ष = श)। लाआ (राजा इत्यत्र इरसोर्लशौ इति हेम० व्याकरणानुसारं र = ल, शेषं ५-३६ सूत्रे स्पष्टम्)। एशे (एशिवत् शकारः, शेषं स्पष्टम्)। पुलिशे (लाआवत् लकारः, शेषं पूर्ववत्)। एध राजा। एष पुरुषः ।।१०।।**

**व्याख्या**—यदि अदन्त प्रातिपादिक से बाद में सु हो तो तीन स्थियाँ बनती है- अकार सहित सु का इ हो जाता है अथवा एकार हो जता है अथवा सु का लोप हो जाता है। जैसे-

१. **एषः**—एतद् + सु-६.२२ से पूर्ववर्ती तकार का सकार-एतद् + सु। ४.६ से अन्त्य द् का लोप एस + सु। ११.३ से स् का श्-एश + सु। प्रस्तुत सूत्र से अ का इ तथा ए और सु का लोप-**एशि, एशे**।

२. **पुरुषः**—पुरूष + सु-रेफ का लकार-पुलुष + सु। १.३३ से उ का इ-पुलिष + सु। ११.३ से ष का श-पुलिश + सु। प्रस्तुत सूत्र से अकार का एकार और सु का लोप-**पुलिशे**।

३. **राजा**—राजन् + सु-रेफ का लकार-लाजन् + सु ५.३६ से अकार का दीर्घ लाजान् + सु। ४.६ से नकार का लोप-लाजा + सु। २.२ से ज़ का लोप-लाआ। ४.६ से सु का लोप-राआ।

## क्तान्तादुश्च ।।११।।

**पदच्छेद**—क्तान्तात्। उः। च।

**पदार्थ**—क्तान्तात् = क्त है अन्त में जिसके ऐसे (प्रातिपदिक) से बाद में। उः = उकार। च = भी।

**सू०अ०**—क्त है अन्त में जिसके प्रातिपदिक से बाद में (सु होने पर) उकार भी (होता है और सु का लोप हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्तप्रत्ययनन्ताच्छब्दात्सौ परतः उकारश्च भवति, चकाराद् इदेतौ लुक् च। हशिदु, हशिदि, हशिदे, हशिद। (शकारः पूर्ववत्, शेषं पूर्ववत् स्पष्टम्)। हसितः ।।११।।**

**व्याख्या**—क्त है अन्त में जिसके ऐसे प्रातिपदिक से बाद में सु होने पर पदान्त अ को उ भी हो जाता है और सु का लोप हो जाता है। सूत्र में प्रयुक्त च से पूर्ववर्ती

सूत्र में विहित इ और ए होने का भी ग्रहण होता है। जैसे-

१. **हसितः**—हस् + क्त + सु। ७.७१ से हस् का अदन्त-हस + क्त + सु। ११.३ से स का श-हश + क्त + सु। ३.१ से क का लोप-हश + त + सु। ४.१ से अ का इ-हशित + सु। १२.३ से त का द-हशिद + सु। प्रस्तुत सूत्र से अन्त्य अकार का उकार और सु का लोप-**हशिदु**। पक्ष में ११.१० से अकार का इकार और एकार भी-**हशिदि, हशिदे**।

## ङसो हो वा दीर्घत्वं च ।।१२।।

**पदच्छेद**—ङसः। हो। वा। दीर्घत्वम्। च।

**पदार्थ**—ङसः = ङस् के स्थान पर। वा = विकल्प से। हो = हो। दीर्घत्वं च = और (पूर्ववर्ती स्वर का) दीर्घ भी।

**सू०अ०**—ङस् के स्थान पर विकल्प से हो (हो जाता है) और (पूर्ववर्ती स्वर) दीर्घ का (हो जाता है)।

**वृत्तिः—ङसः षष्ठ्येकवचनस्य स्थाने हकारदेशो वा भवति। तत्संयोगे च दीर्घत्वम्। पुलिशाह (पुलिशवत् र = ल, शकारश्च, शेषं स्पष्टम्)। घणे (२-४२ न् = ण्, एत्वं माशेवत्)। पक्षे-पुलिशश्श घणे (५-८ ङस् = स्स, ११-३ स्स = श्श, शेषं पूर्ववत्)। पुरुषस्य धनम्।।१२।।**

**व्याख्या**—षष्ठी एक वचन के प्रत्यय ङस् के स्थान पर हो हो जाता है और ङस् का हो होने पर पूर्ववर्ती स्वर का दीर्घ भी हो जाता है। विकल्प-कथन से न होने पर ५.८ से ङस् के स्थान पर स्स होता है। जैसे-

१. **पुरुषस्य**—पुरुष + ङस्-रेफ का लकार करने पर पुलुष + ङस्। १.३३ से पुलिष + सु। ११.३ से ष का श-पुलिश + ङस्। प्रस्तुत सूत्र से ङस् का हो और पूर्ववर्ती स्वर दीर्घ-**पुलिशाहो**। पक्ष में ५.८ से ङस् के स्थान पर स्स-पुलिशस्स।

## अदीर्घः सम्बुद्धौ ।।१३।।

**पदच्छेद**—अदीर्घः। सम्बुद्धौ।

**पदार्थ**—सम्बुद्धौ = सम्बोधन में। अदीर्घः = अकार का दीर्घ।

**सू०अ०**—सम्बोधन में अकार का दीर्घ होता है।

**वृत्तिः—अदन्तादित्येव। अदन्ताच्छब्दादकारो दीर्घो भवति सम्बुद्धौ। पुलिशा आगच्छ। माणुशा (२-४२ न = ण, ११-३ ष = श, ५-२ जसो लोपः) आगच्छ। सम्बुद्धाविति किम्बम्हणश्श घणे (५-४७ सूत्रे स्पष्टम्, शेषं पुलिशश्शवत्)। ब्राह्मणस्य धनम्।।१३।।**

**व्याख्या**—सम्बोधन में सु से पूर्ववर्ती अकार का दीर्घ होता है। जैसे-

१. **हे पुरुष**—रेफ का लकार करने पर-पुलुष + सु। १.३३ से उ का इ-पुलिष + सु। ११.३ से ष का श-पुलिश + सु। ४.६ से सु का लोप-पुलिश। प्रस्तुत सूत्र से अकार का दीर्घ-पुलिशा।

२. **हे मानुष**—२.५२ से न का ण-माणुष + सु। ११.३ से ष का श-माणुश। ४.६ से सु का लोप और प्रस्तुत सूत्र से अकार का दीर्घ-माणुशा।

## चिट्ठस्य चिष्ठः ।।१४।।

**पदच्छेद**—चिट्ठस्य। चिष्ठः।

**पदार्थ**—चिट्ठस्य = चिट्ठ के स्थान पर। चिष्ठ = चिष्ठ।

**सू०अ०**—चिट्ठ के स्थान पर चिष्ठ (होता है)।

**वृत्तिः—चिट्ठस्य स्थाने चिष्ठ इत्ययमादेशो भवति। पुलिशे चिष्ठदि। (पुलिशे व्याख्यातः, १२-१६ चिट्ठस्य चिष्ठः, १२-३ ति = दि)। पुरुषस्तिष्ठति ।।१४।।**

**व्याख्या**—मागधी में चिट्ठ के स्थान पर चिष्ठ होता है। स्था + ति-१२.१६ से स्था के स्थान पर चिट्ठ होने की प्राप्ति होती है जिसका यहाँ निवारण किया गया है। जैसे-

१. **तिष्ठति**—स्था + तिप्-१२.१६ से स्था के स्थान पर प्राप्त चिट्ठ का चष्ठ-चष्ठ + तिप्। ४.६ से पकार का लोप-चिष्ठ + ति। १२.३ से ति का दि-**चिष्ठदि**।

## कृञ्मृङ्गमां क्तस्य डः ।।१५।।

**पदच्छेद**—कृञ्मृङ्गमाम्। क्तस्य। डः।

**पदार्थ**—कृञ्मृङ्गमाम् = कृ, मृ और गम् (धातु) से बाद वाले। क्तस्य = क्त (प्रत्यय) के स्थान पर। डः = ड।

**सू०अ०**—कृ, मृ और गम् (धातु) से बाद वाले क्त (प्रत्यय) के स्थान पर ड (हो जाता है)।

**वृत्तिः—डुकृञ् करणे, मृङ् प्राणत्यागे, गम्लृ गतौ एतेषां क्तप्रत्ययस्य स्थाने डकारो भवति। कडे। मडे। गडे (१-२७ ऋ = अ, एत्वं, सोर्लोपश्च माशेवत्, शेषं स्पष्टम्)। कृतः। मृतः। गतः ।।१५।।**

**व्याख्या**—करना अर्थ वाली कृ, मरना अर्थ वाली मृ और जाना अर्थ वाली गम्-

इन धातुओं से बाद वाले क्त प्रत्यय के स्थान पर ड हो जाता है। जैसे-

१. **कृतः**—कृ + क्त + सु-१.२७ से ऋ का अ-क + क्त + सु। प्रस्तुत सूत्र से क्त का ड-क + ड + सु। ११.१० से प्रातिपादिक कड के अन्त्य अकार का एकार और सु का लोप-**कडे**।

२. **मृतः**—मृ + क्त + सु-१.२७ से ऋ का अ-क + क्त + सु। प्रस्तुत सूत्र से क्त का ड-म + ड + सु। ११.१० से प्रातिपादिक मड के अन्त्य अकार का एकार और सु का लोप-**मडे**।

३. **गतः**—गम् + क्त + सु-४.६ से मकार का लोप और प्रस्तुत सूत्र से क्त का ड-ग + ड + सु। ११.१० से प्रातिपादिक गड के अन्त्य अकार का एकार और सु का लोप-**गडे**।

## क्त्वो दाणिः ।।१६।।

**पदच्छेद**—त्त्वोः। दाणिः।

**पदार्थ**—त्त्वा के स्थान पर। दाणिः = दाणि।

**सू०अ०**—त्त्वा के स्थान पर दाणि (होता है)।

**वृत्तिः—क्त्वाप्रत्ययस्य स्थाने दाणि इत्ययमादेशो भवति। शहिदाणि गडे (११-३ स = श, ७-३३ इत्वं, शेषं स्पष्टम्)। करिदाणि (१२-१५ कृञ् = कर, इकारः, पूर्ववत् शेषं स्पष्टम्)। आअडे (२-२ गलोपः, शेषं पूर्ववत्)। सोढ्वा गतः। कृत्वाऽऽगतः ।।१६।।**

**व्याख्या**—मागधी में त्त्वा के स्थान पर दाणि हो जाता है। जैसे-

१. **कृत्वा**—कृ + त्त्वा। १२.१५ से कृ का कर–कर + त्त्वा। ६.३ से धातु के अन्त्य अ का इ–करि + त्त्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का दाणि–**करिदाणि**।

२. **सोढ्वा**—सह् + त्त्वा। ११.३ से स् का श् = शह् + त्त्वा। ७.७१ से अदन्त-शह + त्त्वा। ७.३३ से धातु के अन्त्य अ का इ–शहि + त्त्वा–प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का दाणि–**शहिदाणि**।

## शृगालशब्दस्य शिआलाशिआलकाः ।।१७।।

**पदच्छेद**—शृगालशब्दस्य। शिआलाशिआलकाः।

**पदार्थ**—शृगाल-इस शब्द के स्थान पर। शिआलाशिआलकाः = शिआला और शिआलक।

**सू०अ०**—शृगाल-इस शब्द के स्थान पर शिआला और शिआलक (हो जाता है)।

**वृत्तिः—श्रृगालशब्दस्य स्थाने शिआलादय आदेशा भवन्ति। शिआले आयच्छदि। शिआलके आअच्छदि (आङ्पूर्वक-गमेः २-६ गलोपः, स्पष्टम्)। श्रृगाल आगच्छति ।।१७।।**

**।। इति प्राकृतप्रकाशस्यैकादशः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—शृगाल के स्थान पर मागधी में शिआला और शिआलक होता है। जैसे-

१. **शृगालः**—शृगाल + सु। प्रस्तुत सूत्र से शृगाल के स्थान पर शिआला और शिआलक - शिआला, शिआलक + सु। ११.१० से प्रातिपदिक के अन्त्य स्वर का ए और सु का लोप-**शिआले, शिआलके**।

।। इस प्रकार 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या में 'प्राकृत-प्रकाश' का एकादश परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

# द्वादशः परिच्छेदः

## ( शौरसेनी-वैशिष्ट्यम् )

### शौरसेनी ।।१।।

**पदच्छेद**—शौरसेनी ।

**पदार्थ**—शौरसेनी = शौरसेनी ।

**सू० अ०**—(अब) शौरसेनी (प्राकृत की विशेषताओं को कहा जा रहा है) ।

**वृत्तिः—शूरसेनानां भाषा शौरसेनी । सा च लक्ष्यलक्षणाभ्यां स्फुटीक्रियते इति वेदितव्यम् । अधिकारसूत्रमेतदापरिच्छेदसमाप्तेः ।।१।।**

**व्याख्या**—इस परिच्छेद में शौरसेनी प्राकृत से सम्बन्धी विशेषताओं का विधान किया जा रहा है । शूरसेन प्रान्त में बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी प्राकृत कहलाती है । यह अधिकार सूत्र है । इसका अधिकार परिच्छेद की समाप्ति तक चलेगा ।

### प्रकृतिः संस्कृतम् ।।२।।

**पदच्छेद**—प्रकृतिः । संस्कृतम् ।

**पदार्थ**—प्रकृतिः = प्रकृति (मूल) । संस्कृतम् = संस्कृत ।

**सू० अ०**—शौरसेनी (प्राकृत) की प्रकृति (मूल) संस्कृत है ।

**वृत्तिः—शौरसेन्यां ये शब्दास्तेषां प्रकृतिः संस्कृतम् ।।२।।**

**व्याख्या**—इस परिच्छेद में विहित विधानों द्वारा संस्कृत के पदों में इस परिच्छेद में विहित विधानों द्वारा परिवर्तन करने पर शौरसेनी प्राकृत हो जाती है ।

### आनादावयुजोस्तथयोर्दधौ ।।३।।

**पदच्छेद**—अनादौ । अयुजोः । तथयोः । दधौ ।

**पदार्थ**—अनादौ = (पद के) आदि में स्थित न होने पर । अयुजोः = असंयुक्त तथयोः = तकार और थकार के स्थान पर । दधौ = दकार और धकार ।

**सू० अ०**—(पद के) आदि में स्थित न होने पर असंयुक्त तकार और थकार के स्थान पर क्रमशः दकार और धकार (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—अनादौ वर्तमानयोरसंयुक्तयोस्तथयोर्दधौ भवतः । तस्य-मारूदिना मन्तिदो (त = द, शेषं संस्कृतवत्, ३-३ रलोपः, ५-१ ओ) थस्य-करेध (१२-१५ कृञ् = कर, ७-३४ एत्वम्) । तधा (स्पष्टम्) । असंयुक्तयोरित्येव । तेन अज्जउत्त-हला सउनतले, इत्यादौ न । अनादाविति किम्? तस्स । मारुतिना मन्त्रितः । कुरुथ । तथा । आर्यपुत्र-हला शकुन्तले । तस्य ।।३।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में असंयुक्त तकार के स्थान पर दकार और थकार के स्थान पर धकार हो जाता है, यदि वे तकार और थकार पद के आदि में स्थित न हों । जैसे-

**१. तकार का—**

**(क) मारुतिना**—प्रस्तुत सूत्र से तकार का दकार-**मारूदिना** ।

**(ख) मन्त्रितः**—३.३ से रेफ का लोप-मन्तितः । प्रस्तुत सूत्र से तकार का दकार मन्तिदः । ५.१ से सु का ओ-मन्तिदो ।

**२. थकार का—**

**(क) कुरुथ**—१२.१५ से कृ का कर-करथ ७.३४ से धातु के अन्त्य अकार का एकार करेथ । प्रस्तुत सूत्र से थ का ध-करेध ।

**(ख) तथा**—प्रस्तुत सूत्र से थ का ध-तधा ।

**विशेष—**

१. तकार के स्थान पर दकार और थकार के स्थान पर धकार तभी होता है जब ये संयुक्त न हो । संयुक्त होने पर यह परिवर्तन नहीं होता । जैसे-

**(क) शकुन्तले**—२.४३ से श का स-सकुन्तले । २.२ से का का लोप-सउन्तले । यहाँ तकार संयुक्त है अतः उसके स्थान पर दकार नहीं हुआ है ।

२. दकार के रूप में परिवर्तन होने वाले तकार तथा धकार के रूप में परिवर्तन होने वाले थकार को पद के आदि में नहीं होना चाहिए । पद के आदि में होने पर यह परिवर्तन नहीं होता है । जैसे-

**(क) तस्य**—५.८ से ङस् का स्स-तस्स । यहाँ तकार का दकार नहीं हुआ है क्योंकि वह पद के आदि में है ।

## व्यापृते डः ।।४।।

**पदच्छेद**—व्यापृते । डः ।

**पदार्थ**—व्यापृत में (तकार के स्थान पर) डः = डकार ।

**सू०अ०**—व्यापृत में (तकार के स्थान पर) डकार (हो जाता है)।

**वृत्तिः—व्यापृतशब्दे तस्य डो भवति। पूर्वसूत्रापवादः। वावडो (३-२ यलोपः, २-१५ प-व, ५-१ ओ)। व्यापृतः ॥४॥**

**व्याख्या**—यह सूत्र १२.३ का अपवाद है। व्यापृत में तकार दकार नहीं होता है। प्रयुक्त डकार हो जाता है। जैसे-

**(क) व्यापृतः**—३.३ से यकार का लोप-व्यापृतः। १.२७ से ऋ का अ-वापतः। २.१५ से प का व-वावतः। प्रस्तुत सूत्र से त का ड-वावडः ५.१ से सु का ओ-**वावडो**।

## पुत्रेऽपि क्वचित् ॥५॥

**पदच्छेद**— पुत्रे। अपि। क्वचित्।

**पदार्थ**—क्वचित् = कहीं कहीं। पुत्रे अपि = पुत्र में भी।

**सू०अ०**—कहीं कहीं पुत्र में भी (तकार का डकार हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्वचित् पुत्रशब्देऽपि तस्य डो भवति। पुडो (३-३ रलोपः)। पक्षेपुत्तो (३-३ रलोपः, ३-५० तद्वित्वम्, ५-१ ओ) ॥५॥**

**व्याख्या**—इस सूत्र में पूर्ववर्ती सूत्र से ड होने का ग्रहण होता है। पुत्र-इसमें भी कहीं-कहीं तकार का डकार होता है। सूत्र में कहीं-कहीं करने से स्पष्ट है कि सर्वत्र नहीं होता अन्यत्र ३.३ से रेफ का लोप और ३.५० से तकार का द्वित्व हो जाता है। जैसे-

**(क) पुत्रः**—पुत्र + सु-३.३ रेफ का लोप-पुत्रः। प्रस्तुत सूत्र से त का ड-पुड + सु-५.१ से सु का ओ-**पुडो**। पक्ष में ३.३ से रेफ का लोप और ३.५० से तकार का द्वित्व-पुत्त + सु। ५.१ से सु का ओ-पुत्तो।

## इ गृध्रसमेषु ॥६॥

**पदच्छेद**—इः। गृध्रसमेषु।

**पदार्थ**—गृध्रसमेषु-गृध्र और उसके समान (पदो) में। इः = इ।

**सू०अ०**—गृध्र और उसके समान पदों में (ऋ के स्थान पर) इ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—गृध्रमेषु ऋकारस्य इर्भवति। गिद्धो (३-३ रलोपः, ३-१ दलोपः, ३-५० घद्वित्वम्, ३-५१ ध् = द्, ५-१ ओ)। गृध्रः ॥६॥**

**व्याख्या**—गृध्र और उसके समान अन्य पदों मृध इत्यादि में ऋ के स्थान पर इ हो जाता है। जैसे-

**(क) गृधः**—प्रस्तुत सूत्र से ऋ का इ-गिध्रः । ३.३ से रेफ का लोप-गिधः । ३.५० से धकार का द्वित्व-गिध्धः । ३.५१ से पूर्ववर्ती धकार का दकार-गिद्धः । ५.१ से सु का ओ-गिद्धो ।

## ब्रह्मण्यविज्ञयज्ञकन्यकानां ण्यज्ञन्यानां ञ्जो वा ।।७।।

**पदच्छेद**—ब्रहमण्यविज्ञयज्ञकन्यकानाम् । ण्यज्ञन्यानां । ञ्जः । वा ।

**पदार्थ**—ब्रहमण्यविज्ञयज्ञकन्यकानाम् = ब्रहमण्य, विज्ञ, यज्ञ और कन्या के । ण्यज्ञन्यानां = ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान पर । वा = विकल्प से । ञ्जः = ञ्ज ।

**सू० अ०**—ब्रहमण्य, विज्ञ, यज्ञ और कन्या (इन) के ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान पर विकल्प से ञ्ज (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतेषां ण्यज्ञन्यानां ञ्जो वा भवति । पैशाच्यां तु नित्यमिति विशेषः । बम्हञ्जो (३-३ रलोपः, ३-८ हमस्य विपर्ययः, ५-१ ओ) विञ्जो, जञ्जो, कञ्जा (एते १०-९, १०-१० सूत्रयोः स्पष्टम्) । पक्षे-बम्हण्णो, विण्णो, जण्णो, कण्णा (३.४४ सूत्रे द्रष्टव्यम्) ।।७।।**

**व्याख्या**—ब्रहमण्य के ण्य, विज्ञ के ज्ञ, यज्ञ के ज्ञ और कन्या के न्य के स्थान पर विकल्प से ञ्ज होता है । जैसे-

१. **ब्रह्मण्यः**—३.३ से रेफ का लोप-बह्मण्य । ३.८ से ह्म का म्ह-बम्हण्यः प्रस्तुत सूत्र से ण्य का ञ्ज्-बम्हञ्जः । ५.१ से सु का ओ-**बम्हञ्जो** । पक्ष में ३.३ से रेफ का लोप और ३.८ से वर्ण परिवर्तन ब्रम्हण्यः ३.१ से य का लोप-बम्हण-३.५० से ण का द्वित्व-बम्हण्णः । ५.१ से सु का ओ-**बम्हण्णो** ।

२. **विज्ञः**—प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ का ञ्ज और ५.१ से सु का ओ-**विञ्जो** । पक्ष में-३.४४ से ज्ञ का ण-विणः । ३.५० से ण का द्वित्व-विण्णः । ५.१ से सु का ओ-**विण्णो** ।

३. **यज्ञः**—३.३१ से य् का ज्-जज्ञः (प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ का ञ्ज-जञ्ञः । ५.१ से सु का ओ-**जञ्जो** । पक्ष में ३.४४ से ज्ञ का ण और ३.५० से ण का द्वित्व-जण्णः । ५.१ से सु का ओ-**जण्णो** ।

४. **कन्या**—प्रस्तुत सूत्र से न्य का ञ्ज-**कञ्जा** । पक्ष में ३.२ से यकार का लोप-कना । ३.५० से न का द्वित्व-कन्ना । ३.४२ से न का ण-**कण्णा** ।

## सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोर्णः ।।८।।

**पदच्छेद**—सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोः । णः ।

**पदार्थ**—सर्वज्ञेङ्गितज्ञयोः = सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ में । णः = ण ।

**सू० अ०**—सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ में (ज्ञ के स्थान पर ण हो जाता है) ।

**वृत्तिः—एतयोः संयुक्तस्यान्त्ययोर्णो भवति । सव्वण्णो (३-२ रलोपः, ३-५० वणयोर्द्वित्वं, ५-१ ओ) । इङ्गिअण्णो (२-२ तलोपः, शेषं पूर्ववत्) ।।८।।**

**व्याख्या**—सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ के ज्ञ का ण हो जाता है। जैसे-

१. **सर्वज्ञः**—३.३ से रेफ का लोप और ३.५० से वकार का द्वित्व-सव्वज्ञः। प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ का ण और ३.५० से ण का द्वित्व-सव्वण्णः। ५.१ से सु का ओ-**सव्वण्णो**।

२. **इङ्गितज्ञः**—२.२ से तकार का लोप-इङ्गिअज्ञः। प्रस्तुत सूत्र से ज्ञ का ण और ३.५० से ण का द्वित्व-इङ्गिअण्णः। ५.१ से सु का ओ-**इङ्गिअण्णोः**।

## क्त्व इअः ।।९।।

**पदच्छेद**—त्त्वः। इअः।

**पदार्थ**—त्त्वः = त्त्वा के स्थान पर। इअः = इअ।

**सू०अ०**—त्त्वा के स्थान पर इअ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—क्त्वा इत्यस्य इअ आदेशः । भणिअ । भविअ (स्पष्टम्) । भणित्वा । भूत्वा ।।९।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में त्त्वा के स्थान पर इअ हो जाता है। जैसे-

१. **भूत्वा**—भू + त्त्वा-७.१ से भू का भव-भवत्त्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का इअ। **भविअ**।

२. **भणित्वा**—प्रस्तुत सूत्र स त्वा का इअ-**भणिअ**।

## कृगमोर्दुअः ।।१०।।

**पदच्छेद**—कृगमोः। दुअः।

**पदार्थ**—कृ और गम् से बाद में। दुअः = दुअ।

**सू०अ०**—कृ और गम् से बाद में (त्त्वा के स्थान पर) दुअ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—आभ्यां परस्य क्त्वाप्रत्ययस्य दुअ इत्यादेशः । कदुअ = कृत्वा । गदुअ = गत्वा (स्पष्टम्) ।।१०।।**

**व्याख्या**—करना अर्थ वाली कृ और जाना अर्थ वाली गम् से बाद मे त्त्वा के स्थान पर दुअ हो जाता है। जैसे-

१. **कृत्वा**—१.२७ से ऋ का अ-कत्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्त्वा का दुअ-**कदुअ**।

२. **गत्वा**—गम् + त्वा-४.६ से म् का लोप-ग + त्वा। प्रस्तुत सूत्र से त्वा का दुअ-**गदुअ**।

## णिर्ज्जश्शसोर्वा क्लीवे स्वरदीर्घश्च ।।११।।

**पदच्छेद**—णिः । ज्जश्शसोः । वा । क्लीवे । स्वरदीर्घः । च ।

**पदार्थ**—क्लीवे = नपुंसक लिङ्ग में । जश्शसः = जस् और शस् का । वा = विकल्प से । णिः = णि । स्वरदीर्घः = स्वर का दीर्घ । च = भी ।

**सू०अ०**—नपुंसक लिङ्ग में जस् और शस् के स्थान पर विकल्प से णि (हो जाता है) और (पूर्ववर्ती) स्वर दीर्घ (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—नपुंसके वा जश्शसार्णिर्भवति, पूर्वस्य स्वरस्य दीर्घश्च । वणाणि, धणाणि = वनानि, धनानि (२-४२ न् = ण्, शेषं स्पष्टम्) ।।११।।**

**व्याख्या**—नुपंसक लिङ्ग में प्रातिपदिक से परवर्ती जस् और शस् के स्थान पर विकल्प से णि हो जाता है और प्रातिपदि का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है । जैसे-

१. **वनानि**—वन + जस्, शस्-२.४२ से न का ण-वण + जस्, शस् । प्रस्तुत सूत्र से जस् और शस् का णि तथा प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ-**वणाणि, वणाणि** ।

२. **धनानि**—धन + जस्, शस्-२.४२ से न का ण-धण + जस, शस् । प्रस्तुत सूत्र से जस् और शस् का णि तथा प्रातिपदिक का अन्त्य स्वर दीर्घ-**धणाणि, धणाणि** ।

## भो भुवस्तिङि ।।१२।।

**पदच्छेद**—भोः । भुवः । तिङि ।

**पदार्थ**—तिङि = तिङ् बाद में होने पर । भुवः = भू के स्थान पर । भो = भो ।

**सू०अ०**—तिङ् बाद में होने पर भू के स्थान पर भो (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—भूधातोर्भो भवति तिङि । भोमि = भवामि ।।१२।।**

**व्याख्या**—तिङ् प्रत्यय बाद में होने पर भू धातु के स्थान पर भो हो जाता है । जैसे-

१. **भवति**—भू + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू का भो-भो + तिप् । ४.६ से पकार का लोप-**भोति** ।

२. **भवसि**—भू + सिप्-प्रस्तुत सूत्र से भू का भो-भो + तिप् । ४.६ से प् का लोप-**भोसि** ।

३. **भवामि**—भू + मिस्-प्रस्तुत सूत्र से भू का भो-भो + मिस् । ४.६ से स् का लोप-**भोमि** ।

## न लृटि ।।१३।।

**पदच्छेद**—न । लृटि ।

**पदार्थ**—लृटि = लृट् लकार में । न = नहीं ।

**सू०अ०**—लृट् लकार में (भू का भो) नहीं (होता) ।

**वृत्तिः—भूधातोर्लृटि भो भवति । भविस्सदि = भविष्यति ।।१३।।**

**व्याख्या**—यह सूत्र १२.१३ का अपवाद है १२.१२ से अनुसार तिङ् बाद में होने पर भू धातु का भो हो जाता है किन्तु प्रस्तुत सूत्र के अनुसार लृट् लकार में भू का भो नहीं होता है । जैसे-

१. **भविष्यति**—भू + लृट् + तिप्-२.४२ से ष् का स्-भविस्यति । ३.२ से य का लोप-भविसति । ३.५० से स् का द्वित्व-भविस्सति । १२.३ त् का द्-**भविस्सदि** ।

## ददातेर्दे दइस्स लृटि ।।१४।।

**पदच्छेद**—ददातेः । देः । दइस्स । लृटि ।

**पदार्थ**—ददातेः = दा (धातु) के स्थान पर । देः = दे । लृटि = लृट् लकार में दइस्सः = दइस्स ।

**सू०अ०**—(तिङ् बाद में होने पर) दा (धातु) के स्थान पर दे (होता है) और लृट् लकार में दइ स्स (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—दाधातोर्दे आदेशो भवति तिङि, दइस्स इति लृटि च । देमि = ददामि । दइस्स = दास्यामि ।।१४।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर दा धातु के स्थान पर दे होता है और लृट् (लकार) में दइस्स हो जाता है । जैसे-

१. **ददामि**—प्रस्तुत सूत्र से दा धातु के स्थान पर दे-**देमि** ।

२. **दास्यामि**—प्रस्तुत सूत्र से लृट् लकार में **दइस्स** ।

## डुकृञः करः ।।१५।।

**पदच्छेद**—डुकृञः । करः ।

**पदार्थ**—डुकृञः = कृ (धातु) के स्थान पर । करः = कर ।

**सू०अ०**—कृ धातु के स्थान पर कर (हो जाता है) ।

**वृत्तिः—डुकृञ्-धातोः कर आदेशो भवति । करेमि = करेमि (६-४१ सूत्रे स्पष्टम्) ।।१५।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर करना अर्थ वाली कृ धातु के स्थान पर कर होता है। जैसे-

१. **करोमि**—कृ + मिस्-प्रस्तुत सूत्र से कृ के स्थान पर कर-कर + मिस्। १.२.२८ से धातु के अन्त्य अकार का एकार-करे + मिस्। ७.४ से मिस् के स्थान पर मि-**करेमि**।

## स्थश्चिट्ठः ।।१६।।

**पदच्छेद**—स्थः। चिट्ठः।

**पदार्थ**—स्थः = स्था (धातु) के स्थान पर। चिट्ठः = चिट्ठ।

**सू०अ०**—स्था धातु के स्थान पर चिट्ठ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—तिङि। एशे चालुदत्ते रुक्खवाडिआए चिट्ठदि = एष चारुदत्तो वृक्ष-वाटिकायां तिष्ठति। (स्पष्टम्) ।।१६।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर रूकना अर्थ वाली स्था धातु के स्थान पर चिट्ठ हो जाता है। जैसे-

१. **तिष्ठति**—स्था + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से स्था के स्थान पर चिट्ठ-चिट्ठ + तिप्। ४.६ से प का लोप-चिट्ठ + ति। १२.३ से त् का द्-**चिट्ठदि**।

## स्मरतेः सूमरः ।।१७।।

**पदच्छेद**—स्मरतेः। सुमरः।

**पदार्थ**—स्मरतेः = स्मृ के स्थान पर। सुमरः = सुमर।

**सू०अ०**—स्मृ (धातु) के स्थान पर सुमर (हो जाता है)।

**वृत्तिः—तिङि स्मृधातोः केवलं सुमर इत्यादेशो भवति। स्मरतेर्भरसुमरौ प्राप्तौ, तदेकं भरादेशं निवर्तयति। सुमरइ = स्मरति (८-१४ सूत्रे स्पष्टम्) ।।१७।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर स्मरण करना अर्थ वाली स्मृ के स्थान पर सुमर हो जाता है। ८.१८ से स्मृ के स्थान पर भर और सुमर होना प्राप्त होता है किन्तु यहाँ भर होने का निषेध है क्योंकि शौरसेनी प्राकृत में भर नहीं प्रयुक्त होता, केंवल समर ही प्रयोग में प्राप्त होता है। जैसे-

१. **स्मरति**—स्मृ + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से स्मृ के स्थान पर सुमर-सुमर + तिप्। ७.१ से ति का इ-**सुमरइ**।

## दृशेः पेक्खः ।।१८।।

**पदच्छेद**—दृशेः। पेक्खः।

**पदार्थ**—दृशेः = दृश् के स्थान पर। पेक्खः = पेक्ख।

**सू०अ०**—दृश् (धातु) के स्थान पर पेक्ख (हो जाता है)।

**वृत्तिः—दृश् धातोः पेक्खादेशस्तिङि। पेक्ख = पश्य। अरे रे पेक्ख पेक्ख ओहिराओ पवहणो वश्चइ मज्झेण राअमग्गस्स। एदं ताव विआरह-कस्स कहिं पवसिओ पवहणोत्ति।।१८।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर देखना अर्थ वाली दृश् धातु के स्थान पर पेक्ख हो जाता है। जैसे-

१. **पश्यति**—दृश् + तिप्-प्रस्तुत सूत्र से दृश् के स्थान पर पेक्ख-पेक्ख + तिप्। ७.१ से तिप् का इ-पेक्खइ।

२. **पश्य**—प्रस्तुत सूत्र से-पेक्ख।

## अस्तेरच्छः ।।१९।।

**पदच्छेद**—अस्तेः। अच्छः।

**पदार्थ**—अस्तेः = अस् के स्थान पर। अच्छः = अच्छ।

**सू०अ०**—अस् धातु के स्थान पर अच्छ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—असूधातोस्तिङि अच्छादेशो भवति।।१९।।**

**व्याख्या**—तिङ् बाद में होने पर सत्ता अर्थ वाली अस् धातु के स्थान पर अच्छ होता है। जैसे-

१. **असि**—अस् + सिप्। प्रस्तुत सूत्र से अस् के स्थान पर अच्छ-अच्छ + सिप्। ७.२ से सिप् का सि-**अच्छसि**।

## तिपा त्थि ।।२०।।

**पदच्छेद**—तिपा। त्थिः।

**पदार्थ**—तिपा = तिप् के साथ। त्थिः = त्थि।

**सू०अ०**—(अस् धातु के स के स्थान पर) तिप् (प्रत्यय) के सहित त्थि हो जाता है।

**वृत्तिः—अस्तेस्तिपा सह त्थि इत्यादेशो भवति। अत्थि = अस्ति। पसंसिदुं णात्थि मे वाआविहवो। प्रशंसितु नास्ति मे वाग्विभवः।।२०।।**

**व्याख्या**—यदि अस् धातु से बाद में प्रथमपुरुष एकवचन वाला तिप् प्रत्यय है तो तिप् सहित अस् धातु के स् के स्थान पर त्थि हो जाता है। जैसे-

१. **अस्ति**—अस् + तिप्-अत्थि। ३.१ से स का लोप। अथि। ३.५० से थकार का द्वित्व-अथ्थि। ३.५१ से पूर्ववर्ती थकार का तकार-अत्थि।

## भविष्यति मिपा स्सं वा स्वरदीर्घत्वं च ।।२१।।

**पदच्छेद**—भविष्यति। मिपाः। स्सं। वा। स्वरदीर्घत्वं च।

**पदार्थ**—भविष्यति = भविष्यत् काल में। मिपाः = मिप् के स्थान पर। वा = विकल्प से।

**सू०अ०**—भविष्यत् काल में (अस् धातु के सकार का) मिप् के सहित विकल्प से स्सं (हो जाता है) और धातु का स्वर दीर्घ (हो जाता है)।

**वृत्तिः—अस्तेर्मिपा सह स्सं इत्यादेशः, पक्षे धातोः स्वरदीर्घत्वं च। स्सं, आस्सं = भविष्यामि ।।२१।।**

**व्याख्या**—भविष्यत् काल में यदि उत्तम पुरुष एकवचन वाला प्रत्यय मिप् बाद में तो अस् धातु के स के स्थान पर प्रत्यय मिप् के सहित स्सिं होता है और धातु का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे-

१. **भविष्यामि**—अस् + मिस्-प्रस्तुत सूत्र से मिस् सहित अस् के सकार का स्सिं और धातु के स्वर का दीर्घ-**आस्सिं**।

## स्त्रियामित्थी ।।२२।।

**पदच्छेद**—स्त्रियाँ। इत्थी।

**पदार्थ**—स्त्रियाँ = स्त्री के स्थान पर इत्थी = इत्थी।

**सू०अ०**—स्त्री के स्थान पर इत्थी (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्त्रीशब्दस्य स्थाने इत्थी इत्यादेशो भवति। इत्थी = स्त्री ।।२२।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में स्त्री के स्थान पर इत्थी हो जाता है। जैसे-

१. **स्त्री**—प्रस्तुत सूत्र से **इत्थी**।

## एवस्य जेव्व ।।२३।।

**पदच्छेद**—एवस्य। जेव्व।

**पदार्थ**—एवस्य = एव के स्थान पर। जेव्व = जेव्व।

**सू०अ०**—एव के स्थान पर जेव्व (हो जाता है)।

**वृत्तिः—स्पष्टम्। जेव्व = एव ।।२३।।**

**व्याख्या**—एव के स्थान पर जेव्व हो जाता है। जैसे-

१. **एव**—प्रस्तुत सूत्र से **जेव्व**।

## इवस्य विअ ।।२४।।

**पदच्छेद**—इवस्य । विअ ।

**पदार्थ**—इवस्य = इव के स्थान पर । विअ = विअ ।

**सू०अ०**—इव के स्थान पर विअ (होता है) ।

**वृत्तिः—सुगमम् । विअ = इव ।।२४।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में इव के स्थान पर विअ हो जाता है । जैसे-

**इव**—प्रस्तुत सूत्र से **विअ** ।

## अस्मदो जसा वअं च ।।२५।।

**पदच्छेद**—अस्मदः जसा । वअं च ।

**पदार्थ**—अस्मदः = अस्मद् के स्थान पर । जसा = जस् के सहित । वअं च = वअं भी ।

**सू०अ०**—(जस् बाद में होने पर) अस्मद् के स्थान पर जस् के सहित वअम् भी (होता है) ।

**वृत्तिः—अस्मदो जसा सह वअं इत्यादेशः, चकारात् अम्हेऽपि भवति । वअं, अम्हे = वयम् ।।२५।।**

**व्याख्या**—प्रथमा बहुवचन का प्रत्यय जस् बाद में होने पर अस्मद् के स्थान पर जस् के सहित वअम् होता है । सूत्र में प्रयुक्त से ६.४३ से जस् के सहित अस्मद् के स्थान पर अम्हे होने का भी ग्रहण होता है । इस प्रकार शौरसेनी में अस्मद् के स्थान पर प्रथमा बहुवचन में दो रूप प्राप्त होते हैं–वअम् और अम्हे । जैसे–

१. **वयम्**—अस्मद् + जस्-प्रस्तुत सूत्र से **वअम्** और ६.४३ से **अम्हे** ।

## सर्वनाम्नां ङे सित्वा ।।२६।।

**पदच्छेद**—सर्वनाम्नानाम् । ङेः । सित्वा ।

**पदार्थ**—सर्वनाम्नाम् = सर्वनाम (प्रातिपादिकों) के । ङेः = ङे के स्थान पर । सित्वा = सित्वा ।

**सू०अ०**—सर्वनाम (प्रातिपादिकों) के ङि के स्थान पर सित्वा होता है ।

**व्याख्या**—सर्वनाम प्रातिपादिक से बाद में यदि सप्तमी एकवचन का प्रत्यय ङि हो तो ङि के स्थान पर सित्वा हो जाता है । जैसे-

१. **सर्वस्मिन्**—सर्व + ङि-प्रस्तुत सूत्र से ङि के स्थान पर सित्वा-**सर्वसित्वा** ।

२. **इतरस्मिन्**—इतर + ङि-प्रस्तुत सूत्र से ङि के स्थान पर सित्वा-इतरसित्वा। १२.३ से तकार का दकार-**इदरसित्वा**।

## धातोर्भावकर्तृकर्मसु परस्मैपदम् ।।२७।।

**पदच्छेद**—धातोः। भावकर्तकर्मसु। परस्मैपदम्।

**पदार्थ**—भावकर्तृकर्मसु = भाववाच्य, कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में। धातोः = धातु से। परस्मैपदम् = परस्मैपद।

**सू०अ०**—भाववाच्य, कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में धातु से परस्मैपद होता है।

**वृत्तिः—शौरसेन्यामेव। भावे-सासाअसि। किं दाणिं दासीएपुत्ता! दुब्भिक्खकाले रुढरंको विअ उद्धकं सासाअसि ऐसा सा सेत्ति। किमिदानीं दास्याः पुत्र! दुर्भिक्षकाले वृद्धरङ्क इव ऊद्ध्र्वकं श्वासायसे, एषा सा सेति। कर्तरि-अज्ज वन्दामि = आर्य्य वन्दे। कर्मणि-कामीअदि। अदोज्जेव कामी-अदि = अत एव काम्यते ।।२७।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में आत्मनेपद नहीं होता। कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य-तीनों में ही परस्मैपद का प्रयोग होता है। जैसे-

१. **भाव अर्थ में**—

**श्वासायसे**—२.४३ से श का स-स्वासायसे ३.३ से वकार तथा यकार का लोप-सासाअसे-७.२ से सिप् का सि-**सासाअसि**।

सासाअसि के प्रयोग के सन्दर्भ में भामह ने एक वाक्य ही उद्घृत किया है। किं दाणि दासीएपुत्ताः दुब्भिक्खकाले रुढरंको विअ उद्धकं सासाअसि। एसा सा सेत्ति = किमिदानीं दास्याः पुत्रः दुर्भिक्षकाले वृद्धरङ्क इव उद्ध्र्वकं श्वासायते, एषा सा सेति।

२. **वन्दे**—वन्द + मिप्-७.३ से मिप् का मि-**वन्दामि**।

३. **काम्यते**—कामय + तिप्। ४.१ से अ का ई-कामीअ + तिप्। २.२ से यकार का लोप-कामीअ + तिप्-४.६ से पकार का लोप-कामीअति। १२.३ से त् का द्-**कामीअदि**।

## अनन्त्य एश्च ।।२८।।

**पदच्छेद**—अनन्त्ये। एत्। च।

**पदार्थ**—अन्त्य से अन्य में। एत् = एत्। च = भी।

**सू०अ०**—अन्त्य से अन्य में एकार (का आगम) भी (होता है)।

**वृत्तिः—अन्त्यभिन्ने वर्णे एत्वं च भवति। करेदि ।।२८।।**

**व्याख्या**—यदि धातु से बाद में तिङ् हो तो धातु के अन्तिम अक्षर से पहले एकार का आगम होता है। जैसे-

१. **करोति**—कृ + तिप्। १२.१५ से कृ का कर-कर + तिप्। प्रस्तुत सूत्र से ए का आगम-करे + तिप्। ४.६ से प का लोप-करे + ति। १२.३ से त का द-**करेदि**।

## मिपो लोटि च ।।२९।।

**पदच्छेद**—मिपः। लोटि। च।

**पदार्थ**—मिपः = मिप् के स्थान पर। लोटि च = और लोट् लकार में।

**सू०अ०**—लोट् लकार में भी मिप् के स्थान पर (ए होता है)।

**वृत्तिः—मिपश्चैत्वं भवति लोटि परतः ।।२९।।**

**व्याख्या**—लोट् लकार में मिप् के स्थान पर ए होता है। जैसे-

१. **करोमि**—कृ + लोट् + मिप्-१२.१५ से कृ के स्थान पर कर-कर + लोट् + मिप्। लोडर्थ मिप् के स्थान पर ए-**करए**।

## आश्चर्यस्याच्चरिअं ।।३०।।

**पदच्छेद**—आश्चर्यस्य। अच्चरिअं।

**पदार्थ**—आश्चर्यस्य = आश्चर्य के स्थान पर। अच्चरिअं = अच्चरिअं।

**सू०अ०**—आश्चर्य के स्थान पर अच्चरिअं (होता है)।

**वृत्तिः—आच्चर्य इत्यस्य अच्चरिअमित्यादेशः। अहह, अच्चरिअं अश्चरिअं। ३०।**

**व्याख्या**—शौरसेनी प्राकृत में आश्चर्य के स्थान पर अच्चरिअं होता है। जैसे-

**आश्चर्यम्**—प्रस्तुत सूत्र से **अच्चरिअं**।

## प्रकृत्या दोलादण्डदशनेषु ।।३१।।

**पदच्छेद**—प्रकृत्या। दोलादण्डदशनेषु।

**पदार्थ**—दोलादण्डदशनेषु = दोला, दण्ड और दशन में। प्रकृत्या = प्रकृति भाव से।

**सू०अ०**—दोला, दण्ड और दशन में प्रकृतिभाव रहता है।

**वृत्तिः—दोलादिषु प्रकृतिवद्भावो भवति ।।३१।।**

**व्याख्या**—शौरसेनी में दोला, दण्ड और दशन अपरिवर्तित अपने मूलरूप में रहते हैं। जैसे-

१. **दोला**—दाला + सु-४.६ से सु का लोप-**दोला**।

२. **दण्डः**—दण्ड + सु-५.१ से सु का ओ-**दण्डो**।

३. **दशनः**—दशन + सु-५.१ से सु का ओ-**दशनो**।

## शेषं महाराष्ट्रीवत्।।३२।।

**पदच्छेद**—शेषम्। महाराष्ट्रीवत्।

**पदार्थ**—शेषं = अवशिष्ट। महाराष्ट्रीवत् = महाराष्ट्री के समान।

**सू०अ०**—(शौरसेनी में) अवशिष्ट (कार्य) महाराष्ट्री के समान (होते हैं)।

**वृत्तिः—अनुक्तं कार्यं महाराष्ट्रीवज्ज्ञेयम्। महाराष्ट्रीपदेनात्र प्राकृतस्य ग्रहणं बोध्यम्।३२।।**

**।। इति श्रीवररुचिकृतेषु सूत्रेषु द्वादशः परिच्छेदः ।।**

**व्याख्या**—ग्रन्थ में प्रथम से नवम परिच्छेद तक महाराष्ट्री प्राकृत से सम्बन्धित विधान किये गये हैं। शौरसेनी प्राकृत में इस द्वादश परिच्छेद में विहित भिन्नताएँ होतीं है। इनसे अतिरिक्त सभी कार्य महाराष्ट्री में होने वाले विहित कार्यों के समान होते हैं।

।। इस प्रकार श्रीवररुचिविरचित सूत्रों में 'शशिप्रभा' हिन्दी व्याख्या का
द्वादश परिच्छेद पूर्ण हुआ ।।

।। प्राकृत-प्रकाश की हिन्दी-व्याख्या पूर्ण हुआ ।। ।।

# परिशिष्टः

# परिशिष्ट- १

## शब्दरूपावलिः

### १. अकारान्त पुल्लिङ्ग वच्छ (= वृक्ष)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | वच्छो | वच्छा, वच्छे |
| द्वितीया | वच्छं | वच्छा, वच्छे |
| तृतीया | वच्छेण | वच्छेहिं वच्छेहिहिं, वच्छेहि |
| पञ्चमी | वच्छादु, वच्छाहि, वच्छाआ, वच्छादो | वच्छत्तो, वच्छाउ, वच्छाहिंत्तो, वच्छासुन्तो, वच्छेहिन्तो, वच्छेसुंतो |
| षष्ठी | वच्छस्स | वच्छाण, वच्छाणं |
| सप्तमी | वच्छे, वच्छम्मि | वच्छेहिं, वच्छेसु, वच्छेसुं |
| सम्बोधन | हे वच्छ, वच्छ | हे वच्छा, वच्छे |

**नोट**—देव, कषण, वत्स इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

### २. अकारान्त पुल्लिङ्ग पुरिस (= पुरुष)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | पुरिसो | पुरिसा, पुरिसे |
| द्वितीया | पुरिसं | पुरिसा, पुरिसे |
| तृतीया | पुरिसेण | पुरिसेहिं, पुरिसेहि, पुरिसेहिहिं |
| पञ्चमी | पुरिसा, पुरिसादो, पुरिसादु, पुरिसाहि | पुरिसहिन्तो पुरिससुंतो, पुरिसेहिन्तो, पुरिसेसुन्तो, पुरिसत्तो, पुरिसाउ |
| षष्ठी | पुरिसस्स | पुरिसाण, पुरिषाणं |
| सप्तमी | पुरिसे, पुरिसम्मि | पुरिसेसु, पुरिसेसुं, पुरिसेहिं |
| सम्बोधन | हे पुरिस, पुरिसो | हे पुरिसा, पुरिसे |

### ३. इकारान्त पुल्लिङ्ग अग्गि (= अग्नि)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | अग्गी | अग्गीओ, अग्गिणो |
| द्वितीया | अग्गिं | अग्गिणो, अग्गीओ |

| | | |
|---|---|---|
| तृतीय | अग्गिणा | अग्गीहि, अग्गीहिं |
| पञ्चमी | अग्गीदु, अग्गिहि, अग्गीदो | अग्गीहिन्तो, अग्गीसुन्तो |
| षष्ठी | अग्गिस्स अग्गिणो | अग्गीणं, अग्गीण |
| सप्तमी | अग्गिम्मि | अग्गीसु, अग्गीसुं |
| सम्बोधन | हे अग्गि | हे अग्गीओ, अग्गिणो |

**नोट**—गिरि, अहि इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

### ४. उकारान्त पुल्लिङ्ग वाऊ (= वायु)

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| प्रथमा | वाऊ | वाउणो, वाउओ, वाऊओ |
| द्वितीया | वाउं | वाउणो, वाउओ, आऊओ |
| तृतीया | वाउणा | वाउहि, वाऊहिं |
| पञ्चमी | वाउदो, वाउदु, वाउहि | वाउहिन्तो, वाउसुन्तो |
| षष्ठी | वाउस्स, वाउणो | वाउणं, वाउण |
| सप्तमी | वाउम्मि | वाउसु, वाउसुं |
| सम्बोधन | हे वाउ | हे वाउओ, वाऊओ, वाउणो, वाऊणो |

**नोट**—कारु, गुरु इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

### ५. ऋकारान्त पुल्लिङ्ग पिअर (= पितृ)

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| प्रथमा | पिआ (सौरसेनी पिदा), पिअरो | पिअरो, पिअरा |
| द्वितीया | पिअरं (सौरसेनी पिदरं) | पिअरे (सौरसेनी पिदुणो) |
| तृतीया | पिअरेण (सौरसेनी पिदुणा) | पिअरेहि, पिअरेहिं |
| पञ्चमी | पिअरा, पिअरादो, पिअरादु, पिअराहि | पिअरहिन्तो, पिअरसुन्तो (सौरसेनी पिदुहिंतो पिदुसुन्तो) |
| षष्ठी | पिउरस्स (सौरसेनी पिदुणो) | पिअराणं, पिअराण (सौरसेनी पिदुणं) |
| सप्तमी | पिअरे, पिअरम्मि, (सौरसेनी पिदुम्मि) | पिअरेसु, पिअरेसुं (सौरसेनी पिदिसु, पिदुसुं) |
| सम्बोधन | हे पिअ, पिअर | हे पिअरा |

**नोट**—जामातृ, भ्रातृ इत्यादि पदों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

## ६. ऋकारान्त पुल्लिङ्ग भत्तार (= भर्तृ)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | भत्तारो | भत्तारा, भत्तुणो |
| द्वितीया | भत्तारं | भत्तारे, भत्तुणो |
| तृतीया | भत्तारेण, भत्तुण | भत्तारेहिं, भत्तारेहि, भत्तुहिं |
| पञ्चमी | भत्तारा, भत्तारादु, भत्ताराहि, | भत्तुहिन्तो, भत्तुसन्तो, भत्ताराहिन्तो, भत्तारादौ, भत्तुणो भत्तारासुन्तो |
| षष्ठी | भत्तारस्स, भत्तुणो | भत्ताराण, भत्तुणं |
| सप्तमी | भत्तारम्मि, भत्तुम्मि, भत्तारे | भत्तारेसु, भत्तारेसुं, भत्तुसु, भत्तुसुं। |
| सम्बोधन | हे भत्तार | हे भत्तारा, भत्तुणो |

**नोट**—कर्तृ, होतृ इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

## ७. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग माला

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | माला | माला, मालाउ, मालाओ |
| द्वितीया | मालं | माला, मालाउ, मालाओ |
| तृतीया | मालाइ, मालाअ, मालाआ, मालाए | मालादि, मालाहिं |
| पञ्चमी | मालाए, मालादु, मालाहि, मालादो | मालाहिन्तो, मालासुन्तो |
| षष्ठी | मालाइ, मालाए | मालाण, मालाणं |
| सप्तमी | मालाइ, मालाए | मालासु, मालासुं |
| सम्बोधन | हे माले | हे मालाओ। |

**नोट**—बाला, लता, छाहा, हलद्दा आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं। स्वसृ, ननान्दृ, दुहितृ के स्थान पर आदेश से प्राप्त ससा, नणंदा, दुहिआ के भी रूप इसी प्रकार चलते हैं।

## ८. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग मति

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | मती | मतिओ, मतिउ, मती |
| द्वितीया | मतिं | मतिओ, मतिउ, मती |
| तृतीया | मतिए, मतिइ, मतिआ, मतिअ | मतीहि, मतीहिं |
| पञ्चमी | मतीअ, मतीआ, मतीए, मतीइ | मीहिन्तो, मतीसुन्तो |

| | | |
|---|---|---|
| षष्ठी | मतीए, मतीइ, मतीआ | मतीहिन्तो, मतीसुन्तो |
| सप्तमी | मतीए मतीइ, मतीअ, मतआ | मतीण, मतीणं |
| सम्बोधन | हे मती | हे मतीआ |

**नोट**—रुचि, बुद्धि इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार चलते हैं।

## ९. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग णई ( =नदी)

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| प्रथमा | णई, णईआ. नई, नइआ | णईओ, णईआ, नईओ, नईआ |
| द्वितीया | णइं, नइं | णई, णईओ, णईआ, नई, नईओ, नईआ |
| तृतीया | णईए, णईइ, णईअ, णईआ नईइ, नईअ, नईआ | णईहि, णईहिं, नईहि, नईहिं |
| पञ्चमी | णईए, णईइ, णईअ, णईआ नईइ, नईअ, नईआ, नईए | णई, णईहिंतो, णईसुंतो, नई, नईहिंतो, नईसुंतो |
| षष्ठी | णईए, णईइ, णईअ, णइआ, नईए, नईइ, नईअ, नईआ | णईण, णईणं, नईण, नईणं |
| सप्तमी | णईए, णईइ, णईअ, णइआ, नईए, नईइ नईअ, नईआ | णईसु, णईसुं, नईसु, नईसुं |
| सम्बोधन | हे णई, हे नइ | हे णईओ, णईआ, नईओ, नईआ |

नोट—गौरी, छाही, हलद्दी इत्यादि शब्दों का रूप इसी प्रकार चलते हैं।

## १०. उकारान्तस्त्रीलिङ्ग धेणु (= धेनु)

| **विभक्ति** | **एकवचन** | **बहुवचन** |
|---|---|---|
| प्रथमा | धेणू | धेणू, धेणूओ, धेणूउ |
| द्वितीया | धेणुं | धेणू, धेणूओ, धेणूउ |
| तृतीया | धेणूए, धेणूइ, धेणूअ, धेणूआ | धेणूहिंतो धेणूसुंतो |
| पञ्चम | धेणूदो, धेणूइ, धेणूए धेणूअ, धेणूआ | धेणूहिंतो धेणूसुंतो |
| षष्ठी | धेणूए, धेणूइ, धेणूअ, धेणूआ | धेणूण, धेणूणं |
| सप्तमी | धेणूए धेणूइ, धेणूअ, धेणूआ | धेणूसु, धेणुसुं |
| सम्बोध | हे धेणु, धेणू | हे धेणू, धेणुओ, धेणुउ |

**नोट**—उकारान्त स्त्रीलिङ्ग तनु, रज्जु, प्रियङ्गु इत्यादि शब्दों के रूप इसी प्रकार होतें हैं।

## ११. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग वहू (= वधू)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | वहू | वहू, तहूओ, बहुउ |
| द्वितीया | वहूं | बहू, वहूओ, वहूउ |
| तृतीया | वहूए, बहूइ, वहूअ, वहूआ | वहूहि, वहूहिं |
| पञ्चमी | वहूदो, वहूए, वहूअ, वहूआ, वहूइ | वहूहिंतो, वहूसुंतो |
| षष्ठी | वहूए वहूइ, वहूअ, बहूओ | वहूण, वहूणं |
| सप्तमी | वहूए, वहूइ, वहूअ, वहूआ | वहूसु, वहुसुं |
| सम्बोधन | हे वहू | हे वहू, वहूओ, वहुउ |

**नोट**—वामोरू इत्यादि ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

## १२. ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग माअ (= मातृ)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | माआ | माआ |
| द्वितीया | माअं | माए |
| तृतीया | माआइ, माआअ, माआआ, माआए | माएहि, माआहि |
| पञ्चमी | माआदो, माआए, माआअ, माआआ | माआहिंतो, माआसुंतो |
| षष्ठी | माआइ, माआए, माआअ, माआआ | माआणं, माआण |
| सप्तमी | माआइ, माआए, माआअ, माआआ | माआसु, माआसुं |
| सम्बोधन | हे माअ | हे माआ |

## १३. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग वण (= वन)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | वणं | वणाणि, वणाइ, वणाइं |
| द्वितीया | वणं | वणाणि, वणाइ, वणाइं |

**नोट**—शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिङ्ग वच्छ के समान होते हैं।

## १४. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग दहि (= दधि)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | दहिं, दहि | दहीणि, दहीइं, दहीइ |
| द्वितीया | दहिं, दहि | दहीणि, दहीइं, दहीइ |

**नोट**—शेष विभक्तियों के रूप इकारान्त पुल्लिङ्ग अग्गि के समान होते हैं।

## १५. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग महु (= मधु)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | महु | महूणि, महूइ, महुइं |
| द्वितीया | महु | महूणि, महूइ, महूइं |

**नोट**—शेष विभक्तियों के रूप उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द वाउ के समान होते हैं।

## १६. नकारान्त पुल्लिङ्ग आत्मन्

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | अत्ता, अत्ताणो, अप्पा, अप्पाणो | अप्पाणा, अप्पाणो, अप्पाण |
| द्वितीया | अप्पाणं, अप्पं, अप्पअं | अप्पाणु, अप्पु, अप्पणो, अप्पाणो |
| तृतीया | अप्पइणा, अप्पणा, अप्पणि, अप्पेण, अप्पहो | अप्पाणेहिं, अप्पेहि |
| पञ्चमी | अप्पणाओ, अप्पणो, अप्पाओ, अप्पादो, अप्पादु, अप्पाहि | अप्पाहिंतो, अप्पासुंतो, अप्पाणाहिंतो, अप्पाणासुंतो |
| षष्ठी | अप्पाणस्स, अप्पाणो | अप्पाणाणं अप्पाणं |
| सप्तमी | अप्पाणम्मि, अप्पे | अप्पाणेसु, अप्पाणेसुं, अप्पसु |
| सम्बोधन | हे अप्पं | हे अप्पाणा, अप्पाणो, अप्पाण |

## १७. नकारान्त पुल्लिङ्ग राअ (= राजन्)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | राय, राआ | राया, राआ, रायाणो, राआणो, राइणो |
| द्वितीया | रायं राअं | राया, रायाणो, राए, राआणो |
| तृतीया | राइणा, राएण, रण्णा, रायिना रञ्ञा | राइहि, राइहिं रायाणेहिं, राआणेहिं |
| पञ्चमी | रण्णो, रायाउ, राजादो, राजादु, राआहि | राईहिन्तो, राईसुन्तो, राआहिन्तो राआसुन्तो |
| षष्ठी | राइणो, रण्णो, राअस्स, रायस्स | राआणं, राईणं, रायाणं |
| सप्तमी | राइम्मि, राअम्मि, राए | राइसु, राएसु, राएसुं |
| सम्बोधन | हे राआ, राअं, रायं | हे राया, राआ, रायाणो, राआणो, राइणो |

**नोट**—इसी प्रकार युवन्, अध्वन् इत्यादि शब्दों के रूप होते हैं।

## १८. सर्वनाम सव्व (= सर्व)

### (पुल्लिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथम | सव्वो | सव्वे |
| द्वितीया | सव्वं | सव्वे |
| तृतीया | सव्वेण | सव्वे |
| पञ्चमी | सव्वादो, सव्वत्तो, सव्वादु, सव्वाहि, सव्वदो, सव्वदु, सव्वहि | सव्वोहिंतो सव्वोसुंतो |
| षष्ठी | सव्वस्स, सव्वहिं | सव्वाणं सव्वाण सव्वेसिं |
| सप्तम | सव्वस्सिं, सव्वम्मि, सव्वत्य, सव्वहिं | सव्वेसु, सव्वेसुं |

### (स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | सव्वा | सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ |
| द्वितीया | सव्वं | सव्वा, सव्वाउ, सव्वाओ |
| तृतीया | सव्वाइ, सव्वाअ, सव्वाआ, सव्वाए | सव्वाहि, सव्वाहिं |
| पञ्चमी | सव्वाए, सव्वादु, सव्वाहि, सव्वादो | सव्वाहिंतो, सव्वासुंतो |
| षष्ठी | सव्वाइ, सव्वाए | सव्वाण, सव्वाणं |
| सप्तमी | सव्वाइ, सव्वाए | सव्वासु, सव्वासुं |

### (नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | सव्वं | सव्वाहं |
| द्वितीया | सव्वं | सव्वाहं |

**नोट**—शेष पुल्लिङ्ग के समान।

### त ( तत् ) पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | स, सो, सु | ति, ते |
| द्वितीया | तं | ते |
| तृतीया | णेण, तिणा, तेण, तेणं, नेन | णेहिं, तेहि, तेहिं |
| पञ्चमी | तम्हा, तत्तो | तत्तो, तो |
| षष्ठी | तस्स, तसु, तासु | ताण, ताणं, तास, तेसिं |
| सप्तमी | तम्मि, तस्सिं तहिं | तेसु, तेसुं |

( स्त्रीलिङ्ग )

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | सा | ता, ताओ, ताउ, तीओ |
| द्वितीया | तं | ता, ताओ, ताउ, तीओ |
| तृतीया | णाए, तिअ, नाइ, | ताहि, ताहिं |
| पञ्चमी | तहा, ता, ताओ | तत्तो, तो |
| षष्ठी | तहे, तास, ताए, तिस्सा, तीइ, तीए, तीसे | ताण |
| सप्तमी | तांहिं | तीए, तासु |

(नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथम | त, तं | ताइं |
| द्वितीया | त, तं | ताइं |

(शेष पुल्लिङ्ग के समान)

(पुल्लिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | जो, जु | ज, जि |
| द्वितीया | जं | जे |
| तृतीया | जिणा, जेण | जेहि, जेहिं |
| पञ्चमी | जम्हा, जंतो, जदो | जाहिन्तो, जासुन्तो |
| षष्ठी | जसु, जाहं, जेसि, जस्स | जाण, जास |
| सप्तमी | जम्मि, जस्सिं, जहिं | जदा, जेसु |

(स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | जा, जी | जाओ, जीओ, जा, जाऊ |
| द्वितीया | जं | जाओ, जीओ, जा, जाउ |
| तृतीया | जीस, जाए | जाहि, जाहिं |
| पञ्चमी | जहा, जा, जाओ | जत्तो, जो |
| षष्ठी | जहे, जास, जाए, जिस्सा, जीइ, जीए, जीसे | जाण |
| सप्तमी | जहिं | जीए, जासु |

(नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | ज, जं | जाइं |
| द्वितीया | ज, जं | जाइं |

(शेष पुल्लिङ्ग के समान)

क (= किम्) पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | को | के |
| द्वितीया | कं | के |
| तृतीया | किणा, केण | केहि, केहिं |
| पञ्चमी | कम्हा, कदा, कत्तो | कहिन्तो, कसुन्तो, काहिन्तो, कासुन्तो |
| षष्ठी | कासु, कासु, कास, कस्स काहे, कइआ | कास, केसिं, काणं |
| सप्तमी | कहिं, कस्सिं, कम्मि, कत्थं, | केसु, केसुं |

(स्त्रीलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | का, की | का ओ, काउ, का |
| द्वितीया | कं | का, ओ, काउ, का: |
| तृतीया | काइ, काए, कीइ, कीए | काहिं, काहि |
| पञ्चमी | काओ, किणो, किहे, कीस | कहिंतो, कसुंतो |
| षष्ठी | कास, काए, काइ, कहे, किस्सा, कास, कीअ कीआ कीइ कीए | काण |
| सप्तमी | काहे, कीहिं, कीए | कासु, कीसु |

इम (= इदम्) पुल्लिङ्ग

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | अअं, अयं, इमो | इमे |
| द्वितीया | इणं, इममो, इदं | इमे |
| तृतीया | इमिणा, इमेण, णेणं, इमणं | इमेहिं, एहिं, णेहिं |
| पञ्चमी | इदो, इमादो, इत्तो | इमेहिंतो इमेसुंतो |
| षष्ठी | अस्स, अमहो, इमस्स, से | इमाण, इमाणं |
| सप्तमी | अस्सिं, इमम्मि, इमस्सिं | इमेसुं, इमेसु, एसु |

(नपुंसकलिङ्ग)

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | इदं इणं, इणमो | इमाइं, इमाणि |
| द्वितीया | इदं, इणं, इणमो | इमाइं, इमाणि |

(शेष पुल्लिङ्ग के समान)

**अमु (= अदस्)**

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | अह, अमू | अमुणो, अमूओ |
| द्वितीया | अमुं | अमुणो, अमू |
| तृतीया | अमुणा | अमूहिं, अमूहि |
| पञ्चमी | अमूदो, अमूद, अमूहि | अमूहिन्तो, अमूसुन्तो |
| षष्ठी | अमुणो, अमुस्स | अमूणं, अमूण |
| सप्तमी | अमुस्सिं अमुम्मि, अमुत्थ | अमूसुं, अमूसु |

**एद (= एतद्)**

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | एस, एसो | एदे |
| द्वितीया | एदं | एदे |
| तृतीया | एदेण, एदिणा | एदेहिं, एदेहि |
| पञ्चमी | एत्तो, एदादो, एदादु, एदाहि | एताहिन्तो, एतासुन्तो |
| षष्ठी | एदस्स | एदेसिं एदाणं, एदाण |
| सप्तमी | एदस्सिं एदाम्मि, एत्थ | एदेसुं एदेसु |

**अस्मद्**

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | अहं, हं, अहअं, अहम्मि, अम्मि, अम्हि | अम्हे, अम्हो, वअं, अम्हइ, इम्ह |
| द्वितीया | मं, मयं, अहअं, अहम्मि, अम्मि, अम्हि | अम्हे, णो, अम्ह, अम्मह, अम्हो |
| तृतीया | मे, मए, मइ, ममाइ, ममए, मयाइ | अम्हेहिं, अम्ह, अम्हे, णे |
| पञ्चमी | मत्तो, मइत्तो, ममादो, ममादु, ममाहि, मज्झतो ममत्तो, महत्तो | अमत्तो, अम्हहं, अम्हेहिन्तो, अम्हेसुन्तो |

| | | |
|---|---|---|
| षष्ठी | मे, मम, मह, मज्झ, मज्झु, मज्झं | अम्ह, अम्हाणं, अम्हे, मज्झ, णो, मज्झाण, मज्झाणं |
| सप्तमी | मइ, मए, ममम्मि, ममस्सिं, महम्मि, ममाइ | अम्हेसु, मज्झेसु, ममेसु, महेसु |

**तुम्ह (= युष्मद्)**

| विभक्ति | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथमा | तुमं, तं | तुज्झे, तुम्हे |
| द्वितीया | तुम, तुमं, तं | तुज्झे, तुम्हे, वो |
| तृतीया | तइ, तए, तुए, तुमए, तुमे, से, दे, तुमाइ | तुम्हेहि, तुम्हेहिं, तुज्झेहि, तुज्झेहिं |
| पञ्चमी | तत्तो, तइत्तो, तुमादो, तुमादु, तुमाहि | तुम्हाहिन्तो तुम्हासुन्तो |
| षष्ठी | तुमो, तुह, तुज्झ, तुम्म, तुम्ह, ते, दे, तुव | वो, तुज्झाणं, तुम्हाणं |
| सप्तमी | तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमए, तुमम्मि, तुमस्सिं | तुम्हेसु, तुज्झेसु |

**संख्यावाचक दो (= द्वि)**

| | |
|---|---|
| प्रथमा | दो, दुवे, दोणि, |
| द्वितीया | दो, दुवे, दोणि |
| तृतीया | दोहिं |
| पञ्चमी | दोहिन्तो, दोसुन्तो |
| षष्ठी | दोण्हं |
| सप्तमी | दोसु |

**(त्रि)**

| | |
|---|---|
| प्रथमा | तीण्हि |
| द्वितीया | तीण्हि |
| तृतीया | तीहिं |
| पञ्चमी | तीहिन्तो, तीसुन्तो |
| षष्ठी | तिण्हं, तिण्णं |
| सप्तमी | तीसु |

**(चतुर्)**

| | |
|---|---|
| प्रथमा | चत्तारो, चत्तारि |
| द्वितीया | चत्तारो, चत्तारि |
| तृतीया | चऊहिं, चतूहिं |
| पञ्चमी | चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चहिन्तो, चसुन्तो |
| षष्ठी | चउण्हं, चतुण्हं |
| सप्तमी | चऊसु, चतूसु |

**(पञ्च)**

| | |
|---|---|
| प्रथमा | पञ्चे, पञ्च |
| द्वितीया | पञ्चे, पञ्च |
| तृतीया | पञ्चेहिं |
| पञ्चमी | पञ्चेहिन्तो, पञ्चेसुन्तो |
| षष्ठी | पञ्चण्ह |
| सप्तमी | पञ्चेसु । |

# परिशिष्ट- २

## धातुरूपावलिः

### हो (= भू सत्तायाम्)

#### (वर्तमान-काल)

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्रथम पुरुष- | होइ, हुवइ, होए, हुवए, हुवइ, हवति, हवेइ, भोदि, होज्जइ, होज्जा, होज्जाइ | होन्ति, हुवन्ति |
| मध्यम पुरुष- | होसि, होसे, हुवसि, हुवसे, हुवेसि | होह, होहित्थ, हुवह, हुवहित्था |
| उत्तम पुरुष- | होमि, हुवामि, हुवेमि | होमो, होमु, हुवामो, हुवामु |

#### (भूतकाल)

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्र०पु० | होहीअ, हुवीअ | होहीअ, हुवीअ |
| म०पु० | होहीअ, हुवीअ | होहीअ, हुवीअ |
| उ०पु० | होहीअ, हुवीअ | होहीअ, हुवीअ |

#### (भविष्यत्काल)

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्र०पु० | होहिइ हवहिइ, होज्ज, होज्जा, होज्जहिइ, होज्जाहिइ, होसइ, होही | होहिन्ति, हुविहिन्ति |
| म०पु० | होहिसि, हुविहिहि, हुविसि, होहिहि | होहित्था, होहिह्न, हुवित्था, हविहिइ |
| उ०पु० | होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्स, होहिसो | होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामरे, होहामु, होहाम, होस्सामो, होस्सामु, होस्साम |

**( विध्यादि में )**

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्र०पु० | होउ, भोदु, होदु, हुवउ, हुवदु, हुज्ज, होज्ज, होज्जउ, होज्जा, होज्जाउ | होन्तु, हुवन्तु, हवन्तु |
| म०पु० | होसु, हुविहि, हुवसु, हवेहि, होज्जसु, होज्जासु, होज्ज, होज्जा | होह, हुवह, होज्ज, होज्जा, होज्जाइ, होज्जइ |
| उ०पु० | होमु, हुवमु, होज्ज, होज्जा, होज्जमु होज्जामु | होमो, हुवमो, होज्जामो, होज्जमो, होज्जा, होज्ज |

**( हेतुहेतुमद्भाव में )**

| पुरुष | एकवचन | बहुवचन |
|---|---|---|
| प्र०पु० | होज्ज, होमाणं | होज्ज, होज्जा, होहिन्ति, हुविहिन्ति (इत्यादि) |
| म०पु० | होज्ज, होज्जा, होहिहिसि, हुविहिसि, होमाणं (इत्यादि) | होज्ज, होज्जा, होहित्था, होमाणां (इत्यादि) |
| उ०पु० | होज्ज, होज्जा, होस्सामो, होमाण (इत्यादि) | होता, हमज्जा होज्ज। |

# परिशिष्ट - ३

## शब्दानुक्रमणी

**थ**



**द**

**य**



**र**

### श



### स

# परिशिष्ट - ४

## वर्णक्रमानुसार सूत्रानुक्रमणी

**स**



**ह**

# सरल संस्कृत व्याकरण

लेखक—पं. द्वारकाप्रसाद मिश्र, शास्त्री

**( बिना रटे संस्कृत को समझने, पढ़ने, लिखने और बोलने का ज्ञान कराने वाली पुस्तक )**

संस्कृत भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक विधि से बनाये गये नियमों पर आधारित है। ये नियम सूत्र शैली द्वारा आठ अध्यायों में महाविद्वान् पाणिनि ने बनाये हैं। इसको अष्टाध्यायी कहते हैं। इसके आधार पर ही भट्टोजि दीक्षित ने वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी की रचना की। इन दोनों ग्रन्थों के द्वारा व्याकरण का ज्ञान होने में बहुत समय लगता है। सामान्य व्यक्ति को संस्कृत भाषा को थोड़े समय में सीखने के लिए एक सरल वैज्ञानिक विधि होनी चाहिये। इसमें संस्कृत के शब्दों की साधना प्रक्रिया को छोड़ देना उचित है क्योंकि इससे घबड़ा कर सीखने वाले व्यक्ति संस्कृत भाषा को कठिन बता कर सीखना छोड़ देते हैं।

संस्कृत भाषा के व्याकरण के नियमों द्वारा शब्दों का श्रेणीकरण किया गया है। इनके परस्पर सम्बन्धों को बताया गया है। व्याकरण उनके भिन्न प्रकारों के पहिचानने की रीति बताता है। संस्कृत का व्याकरण बहुत स्पष्ट है। इसको समझने पर संस्कृत भाषा का ज्ञान प्राप्त करने में सरलता होती है। अत: संस्कृत के शब्दों की श्रेणियों और उनके परस्पर सम्बन्धों को समझना चाहिए। विभिन्न श्रेणियों के शब्दों की साधना प्रक्रिया की समीक्षा कर देनी चाहिये।

ऐसा ज्ञान प्राप्त करके उसका अभ्यास छोटी-छोटी संस्कृत की पाठ्यपुस्तकों, श्लोकों, गीता, मूल रामायण आदि को पढ़ते हुए प्रत्येक शब्द का अर्थ समझते हुए पूरे श्लोक का गद्यांश में अर्थ समझना चाहिये।

इस पुस्तक को इसी उद्देश्य से लिखा गया है। यह व्याकरण की अन्य पुस्तकों से सर्वथा भिन्न है। न इसमें सूत्र है न लकार है। केवल प्रत्ययों को अपनाया गया है जो शब्दों का वैज्ञानिक विधि से श्रेणीकरण करते हैं। **मूल्य : ११०.००**




ISBN : 81-218-0230-X Price : Rs. 200.00